आधुनिक आर्थिक

व

वाणिज्य भूगोल

लेखक

ए० दास गुप्ता, एम० ए०, बी० कॉम, एफ० आर० जी० एस० (लन्दन),
अध्यक्ष वाणिज्य विभाग, दिल्ली पॉलीटेकनिक, दिल्ली ।
भूतपूर्व भूगोल अध्यापक, विद्यासागर कालेज, कलकत्ता,
विभिन्न विश्वविद्यालयों के भूगोल परीक्षक और लेखक
'Economic and Commercial Geography' तथा
'Economic and Commercial Geography of India and Pakistan'

और

अमरनाथ कपूर, एम० ए०, डी० फिल, अध्यापक, वाणिज्य विभाग, दिल्ली
पॉलीटेकनिक, दिल्ली । भूतपूर्व अध्यापक, एस० एम० कालेज,
चन्दौसी (यू० पी०) लेखक—'भारत का आर्थिक व
वाणिज्य भूगोल' तथा 'भूमण्डल का आर्थिक व
वाणिज्य भूगोल' ।

प्रीमियर पब्लिशिंग कम्पनी

फव्वारा : दिल्ली

प्रकाशक
गौरीशंकर शर्मा मैनेजर
प्रीमियर पब्लिशिंग कम्पनी
फव्वारा, दिल्ली

इन्हीं लेखकों द्वारा
भारत व पाकिस्तान — आर्थिक व वाणिज्य भूगोल :
एक नवीन अध्ययन, मूल्य ५)

१९५३
मूल्य
७॥) रुपये

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
१० दरियागंज,
दिल्ली

पाठकों के प्रति

आज समस्त संसार औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील है, मनुष्य का पूरा जीवन आर्थिक व व्यावसायिक वातावरण से ओतप्रोत है। प्रत्येक राष्ट्र के सामने अपने प्राकृतिक साधनों से पूरा लाभ उठाने, बने हुए सामान के लिए नई मण्डियाँ खोजने और अपना उत्पादन बढ़ाने के प्रश्न उपस्थित हैं। ऐसी दशा में आर्थिक व वाणिज्य भूगोल के अध्ययन का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है और इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमारे शिक्षा-शास्त्रियों ने विविध विश्वविद्यालयों के पाठ्य-क्रम में इस विषय को स्थान दिया है।

किन्तु यह खेद का विषय है कि अभी तक अपनी भाषा में इस विषय पर कोई भी उपयुक्त पाठ्य पुस्तक नहीं थी। फलतः विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में और विदेशी आर्थिक परिस्थितियों के दृष्टिकोण से लिखी हुई बेंगटसन (Bengtson), चिज़ोल्हम (Chisholm), स्टाम्प (Stamp), जोन्स (Jones), जिमरमैन (Zimmerman), व्हिटबेक (Whitbeck), फिंच (Finch), क्लिम (Klimm) और रसल स्मिथ (Russel Smith) प्रभृति विशेषज्ञों की विस्तृत पुस्तकों का ही सहारा लेना पड़ता था। ऐसा करने में कभी कभी बड़ी असुविधा होती थी। बहुधा विद्यार्थियों को यही नहीं समझ पड़ता था कि उन पुस्तकों से अपने काम का ज्ञान किस प्रकार निकालें। इसी कमी को पूरा करने के लिए यह पुस्तक लिखी गई है।

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों के हायर सेकण्डरी, इण्टरमीडियट, बी० ए० और बी० कॉम परीक्षाओं में आर्थिक भूगोल के पाठ्य-क्रम के अनुसार तथा इन विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है। वैसे तो विविध भारतीय लेखकों द्वारा तैयार की हुई अनेक पुस्तकें मिलती हैं पर उनमें बहुत-सी विवेचनात्मक कमी है। वाणिज्य भूगोल के दृष्टिकोण से वे पुस्तकें अधूरी-सी हैं। या तो उनमें भौगोलिक तथ्यों की अपेक्षा आर्थिक तथ्यों को अधिक महत्त्व दिया गया है या भौगोलिक परिस्थितियों के निरूपण को प्रथम स्थान देकर आर्थिक तत्त्वों को गौण स्थान दिया है। ये दोनों ही दृष्टिकोण गलत हैं। वास्तव में प्रस्तुत पुस्तक का ध्येय—"मनुष्य के आर्थिक प्रयत्नों—उत्पादन, यातायात व वितरण—तथा वाणिज्य पर उसकी स्थिति, जलवायु, वनस्पति आदि भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन" करना है और इसीलिए हम इसे सम्पूर्ण, व्यापक व सार्वभौमिक कह सकते हैं।

इस पुस्तक को तैयार करने में आधुनिक भूगोल विशेषज्ञों द्वारा स्वीकृत भौगोलिक निरूपण के सिद्धान्तों को बराबर ध्यान में रखा गया है। इस पुस्तक में दिए

हुए आकड़े विश्वसनीय सूत्रों से लिये गये है और कहीं भी बेकार आकड़े नहीं दिये गये हैं। केवल उन्हीं आंकड़ों को दिया गया है जो इस पुस्तक में लिखित विविध विषयों से सम्बन्धित है या विषय सम्बन्धी आर्थिक दशाओं के द्योतक है। विद्यार्थियों को विषय का पूर्ण ज्ञान कराने के लिए प्रस्तुत पुस्तक में अनेकों चित्र, चार्ट व नक्शे भी दे दिये गये है।

पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पहले भाग में मनुष्य की परिस्थितियों और उसके आर्थिक प्रयत्नों का सामान्य विवरण है और दूसरे भाग में मनुष्य के आर्थिक, व्यापारिक व व्यावसायिक जीवन का प्रादेशिक अध्ययन। पुस्तक के अन्त में अनेक भौगोलिक शब्दों की सूची भी दी गई है और उनमें केवल भावान्तर ही नहीं है बल्कि वे व्याख्यायें भी दी गई है जिन्हें British Association की Geographical Glossary Committee ने स्वीकार कर लिया है। यह भी अपने ढग की नई चीज है जो आर्थिक भूगोल के विद्यार्थियों को विषय ज्ञान कराने में बडी सहायक होगी। हमें पूर्ण आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा साधारण योग्यता के शिक्षित व्यक्तियों के लिए बडी उपयोगी सिद्ध होगी।

अन्त में हम निम्नलिखित सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते, जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचारों व आदेशों द्वारा इस पुस्तक के तैयार होने में बडी सहायता दी है —श्री बलवन्त सिंह, डी ए वी कालेज, कानपुर, श्री एम पी ठाकुर, कैम्प कालेज, नई दिल्ली, डा विश्वम्भर नाथ, योजना कमीशन, नई दिल्ली, श्री डी एन मेहता, कर्माशियल हायर सेकण्डरी स्कूल, दिल्ली, श्री एस पी श्रीवास्तव, अग्रवाल विद्यालय इन्टर कालेज, प्रयाग।

उत्पादन व क्षेत्रफल के आकड़ों के लिये हमने सयुक्त राष्ट्रसघ की विविध रिपोर्टों, सरकारी विज्ञप्तियों तथा अन्य बहुत से विश्वसनीय पत्र पत्रिकाओं से सहायता ली है। उन सभी के प्रति हम अनुगृहीत है।

दिल्ली,
ता० २२ जनवरी १९५३

ए दास गुप्ता
अमरनाथ कपूर

विषय सूची

प्रादेशिक भूगोल

परन्तु राजनीतिक भूगोल परिवर्तनशील है और इस के द्वारा पाये गये तथ्य शीघ्र बदल जाते हैं। पर इन सब से जल्दी बदलने वाली रूप-रेखा आर्थिक व वाणिज्य भूगोल के तथ्यों की है। अतः किसी देश की उपज, व्यापार व आर्थिक प्रगति का वर्णन देते समय उसका काल केवल वर्षों की संख्या में दिया जाता है।

इन सब के अलावा अर्थ-शास्त्र मानव-शास्त्र समाज-शास्त्र इतिहास, वनस्पति-विज्ञान जीव शास्त्र रसायन-शास्त्र और भौतिक विज्ञान आदि के अध्ययन से भी आर्थिक भूगोल को समझने में सहायता मिलती है। सारांश में यह कहा जा सकता है कि विभिन्न ज्ञान विज्ञान के अध्ययन व तथ्यों का सामंजस्य ही आर्थिक भूगोल है।

अध्याय :: एक

मनुष्य तथा उसकी परिस्थिति

विभिन्न प्रदेशो के जीवन मे विभिन्नता—**किसी देश के निवासियो के रहन-सहन का ढग केवल सयोग की बात नहीं हैं बल्कि वहां की परिस्थितियों की देन व परिणाम है।** मनुष्य की आवश्यकतायें, उपज, स्वभाव और रहनसहन का ढग एव आर्थिक प्रकृति उसकी परिस्थितियो पर निर्भर करती हैं। भूमडल पर स्थित विभिन्न देशों ने अलग-अलग उन्नति की है। कुछ भागों के निवासी क्रियाशील, प्रगतिशील, उद्यमशील तथा कुशल व्यापारी हैं तो कही के निवासी अकर्मण्य व पिछडे हुए हैं। यदि कुछ देश कृषि-प्रधान है तो कुछ व्यवसाय-प्रधान। आर्थिक क्रियाओ व उन्नति की यह भिन्नता मनुष्य और उसकी परिस्थिति के पारस्परिक अध्ययन से समझ मे आ सकती हैं। पर एक विशेष बात और भी है कि समान परिस्थितियो मे निवास करने वाले भिन्न-भिन्न लोगो का जीवन-प्रवाह एक-सा होना जरूरी नही है। वास्तव में सच बात तो यह है कि परिस्थितियां मनुष्य को आर्थिक उन्नति करने के लिये केवल अवसर प्रदान करती हैं। उस अवसर का उपयोग करना या न करना, प्रकृतिदत्त साधनो से लाभ उठाना न उठाना, वहा के निवासियो की प्रतिभा, बुद्धि, सस्कृति और ज्ञान पर निर्भर करता है।

परिस्थिति के प्रकार—परिस्थितियाँ दो प्रकार की होती हैं—(१) प्राकृतिक (Physical)। (२) मानवी या सामाजिक (Non-Physical)। आर्थिक-भूगोल का सम्बन्ध केवल प्राकृतिक अथवा भौगोलिक परिस्थितियों से ही नही है बल्कि उन मानवी परिस्थितियो से भी है, जो किसी देश के आर्थिक-साधनो के वितरण व विकास को निर्धारित करती है।

अ—वाणिज्य को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक परिस्थितियां

१ भौगोलिक स्थिति—**किसी देश के वाणिज्य विकास मे वहाँ की भौगोलिक स्थिति का विशेष महत्व होता है।** एक प्रदेश विशेष की स्थिति निम्नलिखित किसी एक प्रकार की हो सकती है। (१) महाद्वीपीय (Continental), (२) तटवर्ती (Littoral), (३) सल्मयोजकवर्ती (Isthunian), (४) द्वीपवर्ती (Insular), (५) प्रायद्वीपवर्त्ती (Peninsular)। रूस, पोलैण्ड, बोलीविया और जेकोस्लोवाकिया महाद्वीपीय स्थिति के उदाहरण हैं। ससार के मुख्य व्यापारी मार्गों से ये देश बहुत दूर है, अत सुगम नही हैं। नार्वे, स्वीडन तथा बाल्टिक रियासतो की स्थिति तटवर्त्ती हैं। इसलिए वहाँ से ससार के व्यापारिक मार्ग

बहुत अंशों में सुगम है। ब्रिटिश द्वीप, जापान व न्यूफाउंडलैंड की स्थिति द्वीपवर्ती है और इटली व भारतवर्ष प्रायद्वीपवर्ती स्थिति के उदाहरण हैं। इन प्रदेशों के चारों ओर अथवा तीन ओर जलसमूह होने से ये प्रदेश संसार के व्यापारिक मार्गों के अत्यन्त समीप हैं।

इसलिए किसी देश की स्थिति तभी अनुकूल मानी जाती है जब कि वहाँ की सीमान्त रेखायें प्राकृतिक हों, जलवायु सम हो, संसार के व्यापारिक देश सन्निकट हों और वहाँ सरल से यातायात की सुविधायें वर्तमान हों।

सीमान्त रेखायें—सुरक्षा, वाणिज्य व राष्ट्रीयता के विचार से सीमाओं का बड़ा महत्त्व होता है। सीमान्त रेखायें प्रायः दो प्रकार की होती हैं

१ प्राकृतिक और २ मनुष्यकृत।

सागर, पर्वत, मरुभूमि, दलदल और नदियाँ विभिन्न देशों के बीच प्राकृतिक सीमायें बनाती हैं। इनसे शत्रु के आक्रमण के प्रति निश्चिन्तता एवं स्वतंत्रता की भावना उत्पन्न होती है। समुद्र से घिरे होने के कारण ब्रिटिश द्वीप की सीमान्त रेखाओं में युद्ध अथवा राजनीतिक क्रान्ति द्वारा होने वाले परिवर्तनों की आशंका नहीं है और इसीलिए यहाँ की आर्थिक दशा सीमा-परिवर्तन द्वारा होने वाले प्रभावों से मुक्त है। यूरोप में जहाँ मरुभूमि सीमान्त नहीं हैं वहाँ साधारणतः नदियों द्वारा सीमा निर्धारित हुई है। जैसे, मध्य राइन से फ्रांस व जर्मनी की, मध्य डैन्यूब से हंगरी और जैकोस्लोवाकिया की, ड्रेव नदी से हंगरी तथा यूगोस्लाविया की, और निचली डैन्यूब से रूमानिया और बल्गारिया की सीमायें बनती हैं।

मनुष्यकृत सीमान्त रेखायें—प्रायः स्थली होती हैं। इनमें पर्वतों, मरुभूमियों आदि प्राकृतिक स्पष्ट विभाजन-रेखाओं का अभाव होता है। ये ऐतिहासिक परिस्थितियों, सन्धियों, युद्धों अथवा स्वीकृति पत्रों द्वारा निर्धारित की जाती हैं। पोलैंड, जैकोस्लोवाकिया, रूमानिया आदि की ऐसी ही सीमायें हैं। अतः इन पर राजनीतिक परिवर्तनों आदि का असर पड़ता है। सन् १९३८ से १९४८ तक जर्मनी, पोलैंड, रूस और इटली आदि कितने ही यूरोपीय देशों की सीमान्त रेखाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके हैं। वर्तमान पोलैंड की सीमायें सन् १९३८ की सीमाओं से नितान्त भिन्न हो गई हैं क्योंकि इसका ७०,००० वर्गमील पूर्वी प्रदेश रूस में मिला दिया गया है और जर्मनी का ३९,००० वर्गमील प्रदेश इसके पश्चिमी भाग में मिला दिया गया है। जर्मनी का यह भाग खनिज पदार्थों, उद्योगधंधों तथा कृषि-सम्पत्ति से समृद्ध व परिपूर्ण है। अतः इसके द्वारा पोलैण्ड की व्यावसायिक व आर्थिक उन्नति अवश्यम्भावी है। इसी प्रकार दूसरी लड़ाई के बाद रूस ने उत्तर पश्चिम में बाल्टिक राज्यों को मिलाकर, पूर्वी एशिया पर अधिकार करके तथा सन्धि द्वारा फिनलैंड, पोलैंड और जैकोस्लोवाकिया द्वारा प्रदत्त प्रदेशों को सम्मिलित कर के अपनी सीमाओं को अत्यन्त विस्तृत कर लिया है। इस सीमा-

परिवर्तन के परिणामस्वरूप इन देशोंके व्यापार तथा व्यवसाय में अनेक हेर-फेर हो गए हैं।

व्यापारिक केन्द्रों के मध्य स्थिति का प्रभाव—किसी देश की स्थिति संसार के व्यापारिक केन्द्र में होने से वहा के वैदेशिक व्यापार में कितनी महत्वपूर्ण उन्नति हो सकती है, ब्रिटेन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। संसार का कोई भी व्यवसायी देश इससे अधिक दूर नहीं तथा यातायात और आवागमन की सभी सुविधायें इसको प्राप्त हैं। इसी प्रकार पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य भाग में स्थित होने तथा तीन ओर समुद्री व्यापार की सुविधाओ के कारण भारतवर्ष की स्थिति भी व्यापार तथा वाणिज्य के लिए महत्वपूर्ण है। प्रशान्त महासागर में होने के कारण जापान की भी आदर्श स्थिति है।

सांस्कृतिक सम्पर्क का प्रभाव—मानव-विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के साथ सम्पर्क होना है। अत ऐसी स्थिति जिसमें अन्य देशों के साथ सम्पर्क व गमनागमन की सुविधा हो, देश की भौतिक समृद्धि तथा सांस्कृतिक उन्नति में सहायक होती है। व्यवसायी क्षेत्रों के समीपवर्ती देश भी वाणिज्य और व्यापार में शीघ्र उन्नत हो जाते हैं। इटली पहले अवनत दशा में था परन्तु १९ वी सदी में निकटवर्ती व्यावसायिक देशों से उसकी उद्योग-सम्बन्धी भावनाओं तथा कला-सम्बन्धी व्यापारों को प्रेरणा मिली। फलत इटली एक समृद्धिशाली उद्योगशील देश बन गया। इसके विपरीत वह देश, जिसको बाह्य संसार से सम्बन्ध स्थापित करने में बाधायें हों सीमित ही रह जाता है और विदेशों से व्यापारिक सम्पर्क स्थापित नहीं कर पाता। १९ वी शताब्दी तक चीन देश विशाल पर्वतों, विस्तृत मरुस्थलों तथा महासागरों की बाधाओं के कारण ही अन्य देशों से अलग रहा इसी प्रकार साइबेरिया, तिब्बत, ग्रीनलैंड तथा अलास्का की स्थिति भी विचार विनिमय तथा व्यापारिक उन्नति में बाधक रही है।

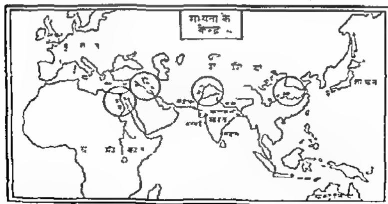
२ तट-रेखा—मनुष्य के आर्थिक व्यापारों पर दूसरा प्रभाव तटरेखा की आकृति का पड़ता है। केवल कुछ देशों—अफगानिस्तान स्वीटजरलैंड, बोलीविया आदि-को छोड़कर प्राय सभी देशों के तट हैं। वास्तव में समुद्रतट का देश की उन्नति-अवनति पर विशेष प्रभाव पड़ता है। तटरेखा कई प्रकार की हो सकती है—सपाट या कटीफटी, ऊँची या नीची। व्यापारिक सुविधाओं के दृष्टिकोण से तट का कटाफटा होना जरूरी है, जिससे समुद्र देश के भीतर तक प्रविष्ट हो सके। तरंगो के वेग को मन्द करने, जल्यानों को सुरक्षा प्रदान करने तथा देश के भीतरी भागों तक उनका मार्ग सुगम बनाने के कारण, कटीफटी तटरेखा बन्दरगाहों और पोताश्रयों की उन्नति में सहायक होती है। इसके फल-स्वरूप आयात निर्यात व्यापार की सुविधा और उद्योगधन्धों की उन्नति होती है। ब्रिटेन का तट अधिक कटाफटा है। और उसका भीतरी से भीतरी भाग समुद्र से केवल १०० मील दूर है। इस कारण निर्यात की जाने वाली वस्तुओं को समुद्र तक ले जाने और आयात वस्तुओं को पोत द्वारा भीतर के किसी भी भाग तक पहुँचाने में अल्पतम व्यय होता है। इंग्लैंड की व्यापारिक महत्ता वहाँ के कटे किनारों का ही परिणाम है।

कटीफटी तटरेखा और उसका प्रभाव—समुद्र तटों के कारण ही इन लोग इतने कुशल व्यापारी हो सके। समुद्र के निरन्तर सम्पर्क में रहने से ही वे निर्भीक उत्साही तथा वीर नाविक बन सके हैं। परन्तु केवल तटरेखा का सुविधाजनक होना किसी देश को उन्नत नहीं कर सकता। या यूँ कहा जा सकता है कि तटरेखा केवल अन्य सुविधाओं को परिपालन कर देती है। अन्यथा कटफट तट सम्बन्धी लाभ अन्य अवगुणों के कारण निरर्थक भी हो जाया करते थे। यूनान का तट कटाफटा है पर फिर भी अन्य असुविधाओं के कारण प्राचीनकाल में यूनानी लोग इसका लाभ उठाने में असफल रहे। अब वे न तो कुशल नाविक ही हैं और न व्यापारी ही।

जिस देश की तटरेखा सपाट अथवा ऊँची होती है वहाँ पोताश्रय कठिनता से बनते हैं। अतः वहाँ पर व्यापार या उद्योग-धन्धों की उन्नति नहीं हो पाती। भारत के तट पर इसी कारण अधिक पोताश्रय नहीं बन सकते।

सपाट तटरेखा का प्रभाव—इसका पश्चिमी तट सपाट है और मानसून हवाओं के वेग से सुरक्षित नहीं है। इसके पूर्वी तट पर प्रबल तरंगों का जोर रहता है। अतः बम्बई, मद्रास, कलकत्ता और विज़ागापटम को छोड़ कर बड़े-बड़े व्यापारी बन्दरगाह थोड़े ही हैं। अफ्रीका के तट की भी यही दशा है। नार्वे का तट यद्यपि कटापटा है परन्तु ढालू और पहाड़ी है। ऊँची पर्वतश्रेणियों के कारण निर्यात वस्तुओं को इकट्ठी करने तथा आयात पदार्थों को भीतरी भागों तक पहुँचाने की सुविधायें भी नहीं हैं।

३. **नदियाँ**—मनुष्य की प्रगति और सभ्यता के विकास में भौगोलिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा हाथ है और इनमें नदियों का काम सब से महत्वपूर्ण है। नील-फरात,



चित्र नं० १

नील-गंगा ह्वांगहो और दजला फरात की घाटियों में सभ्यता के विकास के लिए अनुकूल भौगोलिक दशायें हैं, जैसे उर्वरा भूमि, स्वास्थ्यप्रद जलवायु और प्राकृतिक सुरक्षा।

दजला, गंगा-सिंधु तथा ह्वांगहो आदि चार नदियों की घाटियाँ ही सभ्यता की जन्मभूमि रही हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान तक सामान ले जाने के लिए भी नदियाँ प्राकृतिक साधन प्रदान करती हैं। परन्तु विपरीत और अनावश्यक दिशा में बहने वाली नदियाँ उपयोगी नहीं होतीं। कनाडा या रूस की अनेक नदियाँ या तो भीतरी समुद्रों में गिरती हैं या शीतप्रधान देशों की ओर बहती हैं। अतः वे साल के अधिकतर भाग में बेकार-सी रहती हैं।

यातायात की सुविधा के लिए निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है—

(१) हिम से मुक्ति—नहीं तो कनाडा तथा रूस की नदियों की भांति उनमें यातायात का कार्य असम्भव हो जाता है।

(२) पर्याप्त गहराई—ताकि बड़े जहाज भी चलाये जा सकें। कांगो, जैम्बीसी और अमेजन काफी गहरी नहीं हैं। इससे उनमें यातायात की कठिनाई है।

(३) जल काफी होना चाहिए और तीव्र धारा से मुक्त होना चाहिए।

(४) नदियां हिमपोषित होनी चाहिए।

हिमपोषित व वर्षापूरित नदियां—हिमपोषित और वर्षापूरित नदियों का अन्तर भलीभाँति समझ लेना चाहिए। हिमपोषित नदियां सदैव जलपूर्ण रहती हैं। परन्तु वर्षापूरित नदियां केवल वर्षाऋतु में ही। उत्तर भारत की गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, नदियां नौका-सचालन के लिए बड़ी सुगम हैं। वे माल ले जाने के लिए उत्तम जलमार्ग हैं तथा जिन विशाल भागों में से होकर बहती हैं उन्हें धनवान और समृद्ध बनाती हैं। इन नदियों पर बाँध बनाकर हजारों मील लम्बी नहरें व नालियाँ बनाई गई हैं जिनसे लाखों एकड़ भूमि की सिचाई होती है। इसके विपरीत दक्षिण भारत की नदियाँ ग्रीष्मकाल में सूख जाती हैं, उनमें जलप्रपात हैं तथा उनकी धारा तेज है। अतः यातायात के लिए सर्वथा अयोग्य हैं। ब्राजील, चीन, कोलम्बिया तथा रूस में रेलमार्गों की कमी के कारण यातायात का कार्य नदियों पर ही निर्भर है। फ्रांस, जर्मनी संयुक्तराष्ट्र अमरीका आदि उन्नत देशों में रेलों के साथ-साथ नदियों द्वारा भी यातायात होती है।

नदियों के अन्य लाभ—यातायात के उत्तम साधन होने के अतिरिक्त नदियों के और भी अनेक लाभ हैं। जिन घाटियों से होकर वे बहती हैं उन्हें उर्वरा बनाती हैं। नदियों के किनारे की समतल भूमि में सभी प्रकार की वनस्पति व व्यापारिक और खाद्य फसलें होती हैं। उत्तरी भारत की नदियां मैदानों के लिए उत्तम भूमि, खाद, जल तथा जलमार्ग प्रदान करके समृद्धिशाली बनाती हैं। यदि ये उत्तम नदियां न होतीं तो संसार के अनेक देश कृषि उद्योग में अवनत ही रह जाते। मिश्र देश को "नील नदी का वरदान" कहा जाता है। यदि नील न होती तो मिश्र भी सहारा प्रदेश की तरह मरुस्थल होता। परन्तु आज इसी नदी के कारण मिश्र सम्पूर्ण अफ्रीका का अन्नभण्डार बन गया है। यहाँ गेहूं, कपास, फल और जौ आदि प्रचुर मात्रा में पैदा होते हैं। नील नदी

अपेक्षा वहीं पिछड़ा हुआ होता है।

पर्वतों से लाभ—परन्तु पर्वतों से अनेक लाभ भी हैं। उनमें कुछ तो प्रत्यक्ष हैं पर अधिकतर अप्रत्यक्ष ही होते हैं। (१) बहुत से देशों में पर्वतों के होने से ही वर्षा होती है या वर्षा की मात्रा बढ़ जाती है। वे हवाओं को रोक कर या उनमें द्रवीभवन की क्रिया को शीघ्रतर करके जलवायु पर असर डालते हैं। यह बात हिमालय को देखने से स्पष्ट हो जाती है। हिमालय शीत ऋतु में उत्तर की ठंडी हवाओं को भारत आने से न केवल रोकता ही है बल्कि वर्षा ऋतु में दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाएँ इसकी श्रेणियों से टकरा कर वर्षा करती हैं। (२) पर्वतों से नदियाँ निकलती हैं। उत्तरी भारत की नदियों का उद्गम स्थान हिमालय ही है। (३) पर्वतीय प्रदेश चरागाहों के उत्तम साधन हैं। समशीत कटिबन्ध स्थित पर्वतीय प्रदेशों में पशुपालन करने वाले हजारों निवासियों के जीवन का एकमात्र आधार वहाँ के मैदान व चरागाह हैं। (४) पर्वतों के ढालों पर सघन वन होते हैं जिनसे अनेक उद्योगों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का कच्चा माल प्राप्त होता है। (५) ये पर्वत प्रदेश खनिज सम्पत्ति के अपार भंडार होते हैं—कनाडा, संयुक्तराष्ट्र अमरीका, मेक्सिको और रूस की मुख्य खानें पर्वतीय प्रदेशों में ही पाई जाती हैं। (६) फिर इन पर्वतीय प्रदेशों की स्वास्थ्य-वर्धक वायु और मनोहर दृश्यों से आकर्षित होकर हजारों की संख्या में लोग वहाँ पर आमोद-प्रमोद के लिए जाते हैं। अतः इन प्रदेशों में बहुत से विहार-स्थल और स्वास्थ्य-केन्द्र बन जाते हैं। सातवाँ और अन्तिम लाभ यह है कि उनमें जलप्रपात होते हैं जिनसे जल विद्युत उत्पन्न की जाती है और उससे उद्योगधन्धों को शक्ति मिलती है। नार्वे, स्वीडन, स्पेन, स्विट्जरलैण्ड और इटली में ऐसे बहुत से जलप्रपातों से बिजली पैदा की जाती है।

यह सर्वथा सत्य है कि मनुष्य और उसके कार्यों पर असर डालने वाली सभी भौगोलिक परिस्थितियों में पर्वतों का प्रभाव सबसे महत्त्वपूर्ण है। पर्वतों की जलवायु स्वास्थ्यप्रद व पाचक होने से वहाँ के निवासियों का स्वास्थ्य उत्तम और कार्यशक्ति मैदान के निवासियों से कहीं बढ़कर होता है। पहाड़ी लोग अधिकतर रूढ़िवादी और उद्यमी होते हैं। बाह्य संसार के प्रभावों से अलग होने के कारण वे अपनी परम्पराओं के भक्त होते हैं। अतः स्वभावतः ये लोग सच्चे और ईमानदार होते हैं। परन्तु अब धीरे-धीरे मैदानों से पृथक्ता कम होती जा रही है और दोनों प्रदेशों के निवासियों में घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित होता जा रहा है।

मैदानों का प्रभाव व लाभ—यद्यपि मैदान पृथ्वी के धरातल के केवल आधे भाग में ही फैले हुए हैं परन्तु संसार की ९० प्रतिशत जनसंख्या इन्हीं मैदानों में निवास करती है। जिन मैदानों में मरुस्थल या दलदल नहीं होती उनमें अधिक मनुष्य रहते हैं और सारे भाग में घनी आबादी हो जाती है। अनेक सुविधाओं के कारण लोगों के आर्थिक कार्य अधिकतर मैदानों में ही केन्द्रित हैं। धरातल की समता के कारण कृषिकार्य और

यातायात की सुगमता होती है। संसार के ८५ प्रतिशत रेलमार्ग मैदानों में ही बने हैं। मंद प्रवाह के कारण मैदानी नदियाँ भी नाव चलाने योग्य होती हैं। यूरोप की राइन, ऐल्ब, रोन, डेन्यूब, नीपर तथा डौन, संयुक्त राष्ट्र अमरीका की मिसीसीपी, भारत की गंगा और ब्रह्मपुत्र तथा पाकिस्तान की सिंधु नदियाँ समतल भूमि पर बहने के कारण ही नाव चलाने योग्य हैं। जलवायु व भूमि की समता के कारण संसार के मुख्य कृषि-प्रधान देश मैदानों में ही स्थित हैं। मैदानों में गमनागमन की सुविधा के कारण माल तथा विचारों का आदान-प्रदान सुविधापूर्वक हो सकता है। अतः मैदानों में कृषि, व्यवसाय, उद्योग-धन्धों, यातायात और व्यापार का महत्वपूर्ण विकास हुआ है और संसार के सभी मुख्य नगर मैदानों में ही बसे हुए हैं।

परन्तु सभी मैदानों में मनुष्य के लिए समान सुविधाएँ प्राप्त नहीं होतीं। नीची भूमि में जहाँ जलवायु अस्वास्थ्यकर, पानी के निकास की असुविधा और भूमि बंजर होती है, वहाँ मनुष्य बसना नहीं चाहता। सच तो यह है कि जलवायु की प्रतिकूलता मैदानों की अन्य सभी सुविधाओं को निरर्थक कर देती है। अत्यन्त शुष्क, अत्यन्त उष्ण या अत्यन्त शीत मैदानों में मनुष्य नहीं रह सकता। इसीलिए कांगो नदी की घाटी, अमेज़न का बेसिन, सहारा और टुन्ड्रा प्रदेश मैदान होते हुए भी बहुत कम बसे हैं।

५. प्राकृतिक साधनों की उपस्थिति—खनिज सम्पत्ति, वन-सम्पत्ति और मछलियाँ किसी प्रदेश के मुख्य प्राकृतिक साधन होते हैं। इसमें जरा भी अत्युक्ति नहीं कि किसी जाति के आर्थिक जीवन को नियंत्रित करने में इन प्राकृतिक साधनों का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। खनिज सम्पत्ति का जीवन के ढंग पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। खनिज क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय खान खोदना होता है। मेहनत और हिम्मत से एक प्रदेश-विशेष की खनिज सम्पत्ति को प्राप्त करके अनेक प्रदेशों ने उद्योगधंधों को विकसित किया है। दक्षिणी अफ्रीका इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है। वहाँ सोना अधिक पाया जाता है जिसके विकास में अनेक सहयोगी उद्योगधंधों की स्थापना हुई है। जिस प्रकार दक्षिणी अफ्रीका के विकास का आधार-स्तम्भ वहाँ की सोने की खानें हैं, उसी प्रकार आस्ट्रेलिया के उद्योगों की प्रगति का आधार भी वहाँ की खनिज सम्पत्ति ही है।

वन-सम्पत्ति—वन प्रदेशों के निवासियों का प्रमुख धंधा लकड़ी काटना है। अन्य उद्योग भी इसी पर आश्रित होते हैं। नार्वे और स्वीडन में विशाल वन प्रदेश हैं। वृक्षों की अधिकता के कारण वहाँ नौका-निर्माण, कागज, दियासलाई और मेज-कुर्सी आदि बनाने के उद्योगधंधे स्थापित हो गये हैं। वन-पशुओं की खाल से चमड़ा तथा ऊन प्राप्त होते हैं। कनाडा में हडसनके समीप असंख्य कोमल रोम (Fur) वाले पशुओं का शिकार खाल के लिये किया जाता है। इसके अलावा वनों का जलवायु पर भी बड़ा ही महत्त्वपूर्ण असर पड़ता है। वे पानी से भरी हवाओं को आकृष्ट करके वर्षा में सहायक होते हैं। कृषि-प्रधान देशों के लिये वन बड़े ही उपयोगी हैं क्योंकि न केवल वर्षा की

मात्रा ही बढ जाती है बल्कि भूमि का कटना (soil erosion) भी रुक जाता है।

जल-सम्पत्ति—किसी देश के जीवन, उद्योग-व्यवसाय और वाणिज्य पर समुद्र का बडा प्रभाव पड़ता है। शीतोष्ण कटिबन्ध में महासागरो के मध्य-स्थित देशो में मछली पकड़ना मुख्य उद्योग हो जाता है। ग्रेट ब्रिटेन, नार्वे, नोवास्कोशिया, न्यूजीलैंड और जापान मे इस धंधे ने विशेष प्रगति की है। गहरे समुद्रो में मछली पकडने से पोत-सचालन की शिक्षा भी मिलती है और इसीलिये इन देशो के लोग साहसी व सामुद्रिक व्यवसाय मे प्रधान है। मछली पकडने का व्यवसाय कुछ नदियों व झीलो में भी होता है पर उसका कोई विशेष अन्तर्राष्ट्रीय महत्व नही है।

६. **जलवायु का प्रभाव**—मनुष्य तथा उसके व्यापारो पर जलवायु का विशेष प्रभाव पडता है। मनुष्य की दो प्रधान आवश्यकतायें है—भोजन और घर। दोनो ही पर जलवायु का नियत्रण है। जलवायु के अनुसार ही प्राकृतिक वनस्पति होती है और किसी प्रदेश विशेष म मनुष्य के कार्य-व्यापार वहाँ की प्राकृतिक वनस्पति पर ही निर्भर होते है। इसी प्रकार कुछ प्रदेश तो मानव विकास के सर्वथा अयोग्य होते है जैसे गर्म और शुष्क मरुभूमि और अति ठड हिमाच्छादित ध्रुव प्रदेश। मनुष्य का रहन-सहन, वेशभूषा, घर की बनावट और भोजन करने का ढग व वस्तुए जलवायु के अनुसार ही होती है।

जलवायु और उद्योग-धंधे—कुछ विशेष उद्योग-धंधो के विकास के लिये उपयुक्त जलवायु का होना बहुत जरूरी है। कुछ व्यवसायो का स्थानीकरण जलवायु पर निर्भर रहता है। सूती वस्त्र व्यवसाय के स्थानीकरण के लिये आर्द्र वायु की आवश्यकता होती है, शुष्क वायु में कातने से सूत टूट जाता है। मैनचेस्टर, बम्बई, अहमदाबाद और ओसाका में वहा की आर्द्र जलवायु के कारण ही सूती वस्त्र व्यवसाय की प्रधानता है। इनके विपरीत आटा पीसने का कार्य शुष्क जलवायु में ही सभव है। इसलिये यह उद्योग बुडापेस्ट सेंटपाल, मिनियापोलिस और कराची में पाया जाता है। सिनेमा फिल्म के उद्योग के लिये स्वच्छ धूप और उज्ज्वल प्रकाश की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार रस्सी बनाना, मुद्रण कार्य व कागज के धंधो पर भी जलवायु का नियत्रण रहता है। परन्तु वर्तमान समय में विज्ञान की प्रगति व नये-नये आविष्कारो की सहायता से उद्योग-धंधो में जलवायु के नियत्रण की अवहेलना भी की जा सकती है। फिर भी यह सर्वथा सत्य है कि किसी देश या प्रदेश में कोई उद्योग उसी समय उन्नत होता है जब उसकी अनुकूल दशा और परिस्थिति मौजूद हो। भौगोलिक दशाओं व परिस्थितियो का किसी उद्योग के अनुकूल या प्रतिकूल होना जलवायु के आधीन है। भारतवर्ष की जलवायु गर्म व तर है, इसी-लिये यहा सूती वस्त्र का उद्योग इतना प्रगति कर गया है। यहा के निवासियो को पहनने के लिये हल्के वस्त्रो की ही आवश्यकता होती है। काश्मीर मे कठिन शीत के कारण ऊनी ...त्र व्यवसाय ने विशेष प्रगति की है।

जलवायु और यातायात—यातायात पर भी वायु, तापक्रम और वर्षा का प्रभाव पड़ता है। भारी हिम-वर्षा के कारण सड़कें और रेल-मार्ग कुछ समय के लिये बन्द हो जाते हैं और अति निम्न तापक्रम से नदियों तथा समुद्रों का पानी जम जाता है। बाल्टिक सागर शीतकाल में इसी कारण व्यापार के लिये बिल्कुल अयोग्य हो जाता है। उत्तरी रूस और कनाडा की नदियां भी कठिन शीत में थम जाती हैं। वायुयान यातायात भी जलवायु की दशाओं पर निर्भर रहता है क्योंकि आंधी तथा कुहरे में उड़ान भय से खाली नहीं होती। मरुभूमि में रेत के ढेर तथा आंधियां रेल-मार्गों के निर्माण में बाधक होती हैं।

जलवायु और शारीरिक व मानसिक शक्ति—शरीर और मस्तिष्क की कार्यक्षमता पर तापक्रम का बड़ा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि कुछ प्रदेशों के निवासी शारीरिक और मानसिक शक्ति में अधिक बढ़े-चढ़े हैं और संसार पर अधिकार जमाए हुए हैं। शीतोष्ण कटिबन्ध के उद्यमशील जीवन में वहां की जलवायु लोगों को काम करने के लिये प्रेरित करती है। इसके विपरीत उष्ण कटिबन्ध की जलवायु लोगों को शिथिल व आलसी बनाती है और इसी लिये उन प्रदेशों का जीवन पिछड़ा हुआ है। इस से स्पष्ट है कि किसी प्रदेश के निवासियों के स्वास्थ्य, कार्य क्षमता, उत्पादन, शक्ति और सभ्यता पर जलवायु का बड़ा गहरा असर पड़ता है। वाणिज्य पर जलवायु का क्या प्रभाव पड़ता है, यह बात शीतोष्ण और उष्ण प्रदेशों के कच्चे माल की उपज पर दृष्टि डालने से भलीभांति समझ में आ सकती है।

उपज	उष्ण-कटिबंध	शीतोष्ण-कटिबंध
वन	भूमध्यरेखीय तथा मानसूनी वनों से प्राप्त साल सागौन, महोगनी, रबर, सिनकोना	पतझड़ तथा कोणधारी वनों से प्राप्त ओक, बीच, चीड़, फर
घास के मैदान	सेवाना की उपज—कपास, मक्का, कहवा	प्रेरीज, पम्पास और स्टेप मैदानों की उपज गेहूँ
कृषि	चावल, मोटे अनाज, जूट, सन, केला, चाय, कहवा, गन्ना, अनन्नास	गेहूँ, जौ, जई, राई, सन, अंगूर, सेव, बेर, नींबू, चुकन्दर, आलू, नाशपाती

७. **भूमि व मिट्टी का प्रभाव**—प्राकृतिक साधनों में सब से महत्वपूर्ण साधन उपजाऊ मिट्टी है। हमारे भोजन, वस्त्र तथा आश्रय की अधिकतर वस्तुयें भूमि से ही प्राप्त होती हैं। जहाँ भूमि उर्वरा होती है, वहाँ कृषि उद्योग की सम्भावना के कारण जन-

सख्या घनी होती है। उपजाऊ प्रदेशो में कृषि उद्योग ही मुख्य धधा होता है। भारतवर्ष, चीन और सयुक्त राष्ट्र मे भूमि के गुणो के कारण कृषि उद्योग ही धनोपार्जन का मुख्य साधन है। वही भूमि उर्वरा समझी जाती है जिस में पौधो के लिये उचित आहार प्रचुर मात्रा में विद्यमान हो ताकि जलवायु के अनुसार पौधे उसे ग्रहण कर सकें। मिट्टी कई प्रकार की होती है। रेतीली भूमि वह है जिसमें तीन-चौथाई रेत हो। चिकनी (Clay) मिट्टी मे चिकनी मिट्टी का अश आधा होता है। चूने की मिट्टी में कुल मिट्टी का पाँचवाँ अश चूने का होता है। कुछ मिट्टी में सड़ी हुई वनस्पति (Humus) का भी अश मौजूद रहता है। पर सबसे अच्छी मिट्टी दोमट (Loam) होती है। इस में कीचड (चिकनी मिट्टी) रेत चूना और सडी हुई वनस्पति का सम्मिश्रण होता है।

८ आकार व विस्तार का प्रभाव—किसी देश के आर्थिक साधनो में उस के आकार व विस्तार का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। देश का आकार कई प्रकार का होता है—सघनाकार, छिन्नाकार और लम्बाकार। रूस, रूमानिया, भारतवर्ष आदि देशो का सघनाकार यातायात की सुविधा और राजनीतिक एकता मे सहायक होता है। इसके विपरीत यूनान सदृश देशो का छिन्नाकार माल वितरण और विचार विनिमय में कठिनाई उत्पन्न करता है और चिली के समान लम्बाकार खेती के कार्यों में बाधक होता है क्योंकि अधिक लम्बाई के कारण जलवायु मे विषम भिन्नता हो जाती है।

देश का विस्तार छोटा या बडा हो सकता है। परन्तु विस्तार का प्रभाव जनसख्या के प्रश्न से सम्बन्धित है। बढती हुई जनसख्या वाले छोटे देशो के निवासी केवल भूमि-कृषि पर निर्भर नही रह सकते क्योंकि भूमि सीमित होती है। इन प्रदेशो में चाहे गहरी खेती (Intensive Cultivation) किया जाय, चाहे वैज्ञानिक खाद दिया जाय और चाहे भूमि-सम्बन्धी अन्य सुधार किये जाँय पर उत्पादन और भूमि की उर्वरा शक्ति की एक सीमा होती है। अत ऐसे देशो के लोग अन्य धधे अपनाने के लिये बाध्य होते हैं। फलत आन्तरिक व्यापार या कृषि व्यवसाय की अपेक्षा वैदेशिक व्यापार अधिक महत्व-पूर्ण हो जाता है। ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम और जापान इस प्रकार के देशो के ज्वलन्त उदाहरण हैं, जहा कृषि की अपेक्षा उद्योग धधो और वैदेशिक व्यापार की विशद उन्नति हुई है। छोटे देशो में अधिक जनसख्या बढ जाने से अक्सर देशान्तर प्रवास तक आवश्यक हो जाता है। १९ वी शताब्दी में यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति होने पर यूरोपियन लोगो का विदेशो को निरन्तर प्रवास आरम्भ हो गया। इस प्रकार कनाडा, सयुक्तराष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्राज़ील अर्जेन्टाइना, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड मे उपनिवेश स्थापित हो गये।

इन उपनिवेशो में विस्तार तो काफी था पर आबादी कम। अत इन प्रदेशो में या सभी कम बसे हुए बडे देशो के निवासियो का उद्यम अधिकतर पशु-पालन ही होता है। इसी प्रकार के अन्य देश मध्य एशिया और युरुग्वे भी हैं। हाँ, बडी जनसख्या वाले

बड़े देशो मे—जैसे भारत और चीन मे कृषि ही मुख्य उद्यम रहा है परन्तु भौगोलिक साधनो व परिस्थितियो के अनुसार अन्य उद्योगधधो की भी उन्नति हो सकती है। परन्तु इन भागो म अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की अधिक वृद्धि नही हो सकती क्योकि यहां की उपज का अधिकतर भाग यही के निवासियो द्वारा उपभोग कर लिया जाता है ।

आ—वाणिज्य को प्रभावित करने वाली मानवी परिस्थितियाँ

मनुष्य के आर्थिक कार्य व्यापार पर उसकी जाति धर्म और शासन-प्रणाली का भी बहुत बडा असर पडता है और इन्हे हम सामाजिक या मानवी परिस्थितियो के नाम से पुकार सकते है ।

ससार की प्रमुख जातियाँ—मानव जातियाँ वर्ण-भेद के अनुसार ३ वर्गो में विभक्त हैं ।—(१) श्वेत वर्ण (white), (२) पीत वर्ण (yellow) तथा (३) श्यामवर्ण (black) ससार के वाणिज्य पर इन जातियो का प्रभाव समान रूप से नही है । **श्वेत वर्ण की जाति** के लोगो का चेहरा गोल, आकृति सुन्दर, आँखें सीधी, नाक सुन्दर और खाल हल्के व श्वेत रग की होती है । प्राय देखा जाता है कि श्वेत जाति के प्रदेशो मे वाणिज्य, व्यापार तथा राजनीतिक विषयो में विशेष उन्नति हुई है । विश्व-व्यापार इन्ही के हाथो मे है । उत्तम जलवायु के कारण इस जाति के लोग मेहनती, धैर्यवान, उत्साही और प्रतिभाशाली होते हैं । इस जाति ने सभ्यता के विकास, सुदृढ सामाजिक सस्थाओं के स्थापन और राजनीतिक व आर्थिक जीवन के नियमन पर बडा महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है । कला कौशल और विज्ञान के क्षेत्र मे भी इनका स्थान काफी महत्वपूर्ण है । इस जाति के लोग यूरोप के अधिकतर भागो में, उत्तरी अफ्रीका, भारत, मध्य व निकट पूर्व मे रहते हैं ।

पीत वर्ण की जाति के लोग अधिकतर उत्तर पूर्वी और मध्य एशिया मे बसे हुए हैं । चीन और जापान तो इन के प्रमुख केन्द्र हैं । इनकी सभ्यता भी ऊँची है और ये लोग विशेष कर व्यापारशील हैं यद्यपि इनको व्यापार-कुशल बनाने का श्रेय पश्चिम की श्वेत वर्ण की जातियो को ही है । इस समय चीन व जापान मे उद्योग-धधे, शिल्पकला प्रधान उद्योगो मे, कच्ची तथा पक्के माल के उत्पादन के क्षेत्र मे तीव्र उन्नति हो रही है, नये समुद्री मार्ग स्थापित हो रहे हैं और बाजारो की उन्नति हो रही है । इन लोगो का कद नाटा, खाल पीली, मुँह चपटा और आँखे पतली तिरछी होती हैं ।

श्यामवर्ण की जाति के लोग उष्णकटिबन्धीय प्रदेशो मे रहते हैं। यह जाति सब से कम सभ्य और वाणिज्य-व्यापार की दृष्टि से बहुत पिछडी हुई है । उष्णकटिबन्ध की गर्मतर जलवायु और भोज्य पदार्थों की बहुलता ने इन लोगो को आलसी व अकर्मण्य बना दिया है । हब्शियो के विषय मे यह कहा जाता है कि जलवायु विशेष और भोजन की अत्यन्तता से इनके सिर की हड्डियो के बीच का अन्तर समय से पूर्व ही मुड जाता

है और फलत उनका मानसिक विकास रुक जाता है। इन लोगों की खाल काली, मुँह चपटा, नाक चौड़ी व मोटी तथा होंठ मोटे व भद्दे होते हैं।

विभिन्न धर्म तथा उनके प्रभाव—मानव जाति के विभिन्न समुदायों के विचारों व रहन-सहन पर भिन्न-भिन्न धर्मों का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसका भौगोलिक परिणाम यह होता है कि विभिन्न जातियों की गतिविधि विभिन्न प्रकार की हो जाती है। कुछ कार्यों को निषिद्ध ठहरा कर तथा कुछ पर प्रतिबन्ध लगा कर धर्म के आदेश मानव-जीवन के दृष्टिकोण को नियमित ही नहीं करते वरन् उसकी आर्थिक गतिविधि और आदर्शों की प्रकृति को भी प्रभावित करते हैं। निश्चय ही मनुष्य के आर्थिक जीवन पर धर्म-सम्बन्धी प्रभावों की अवहेलना नहीं की जा सकती। संसार के मुख्य धर्म चार हैं—(१) ईसाई धर्म, (२) बौद्ध धर्म, (३) इस्लाम और (४) हिंदू धर्म।

ईसाई धर्म में कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है। इसके सिद्धांतों की उदारता के ही फलस्वरूप यूरोप और अमरीका में इतनी उन्नति हुई है। ईसाई मत के ३ भेद हैं—रोमन कैथोलिक (Roman Catholic), प्रोटस्टेंट (Protestant) और यूनानी एपोस्टोलिक (Greek Apostolic)। रोमन कैथोलिकों की संख्या ३३ करोड़ के लगभग है और दक्षिणी पश्चिमी व मध्य यूरोप, दक्षिणी अमरीका, मैक्सिको तथा संयुक्त राष्ट्र के उत्तरी पश्चिमी भागों में उनकी प्रधानता है। पृथ्वी पर ईसाइयों के बढ़ते हुए आधिपत्य, उनकी सभ्यता तथा वर्तमान शिक्षा और संस्कृति की प्रगति ने मनुष्य के आर्थिक जीवन पर धार्मिक प्रभाव को निर्बल कर दिया है।

बौद्ध धर्म को मानने वाले चीन, लंका, ब्रह्मा, इंडोचीन और जापान में रहते हैं। इस मत को मानने वाले अहिंसा सिद्धांत को मानते हैं और इसीलिये मांस तथा ऊन के लिये पशु-पालन का धंधा नहीं करते।

इस्लाम धर्म के अनुयायी ३० करोड़ से अधिक हैं और उत्तरी अफ्रीका, पश्चिमी तथा मध्य एशिया, पाकिस्तान, उत्तरी पश्चिमी चीन, डच गायना, अल्बानिया, तुर्किस्तान और रूस के किरगीजिया प्रदेश में फैले हुए हैं। इनके यहाँ मद्यपान धर्मविरुद्ध माना जाता है। इसीलिये भूमध्यसागर के पूर्वी तटवर्ती मुस्लिम-प्रधान देशों में अंगूर के अनुकूल जलवायु होने पर भी शराब बनाने का व्यवसाय अधिक बढ़ नहीं पाया है। हाँ, इन देशों में कहवे की अधिक माँग है और इसीलिये कहवा (Coffee) उगाया जाता है। मुसलमानों में ब्याज लेना धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार निषिद्ध माना जाता है। इसीलिये इन देशों में बैंकों का भी अभाव-सा रहता है। धार्मिक कारणों से इन में सूअरों का भी अभाव है। मुस्लिम प्रधानता के कारण पाकिस्तान में तो सूअरों की संख्या कम है परन्तु चीन में मुसलमानों की संख्या कम होने पर भी अधिक सूअर पाले जाते हैं।

हिंदू धर्म के अनुयायियों की संख्या २५ करोड़ से भी अधिक है और भिन्न-भिन्न जातियों में विभक्त हैं। प्रत्येक जाति के कर्तव्यों की धार्मिक व्यवस्था है। एक जाति या

समुदाय के लोगों को दूसरी जाति के धंधों को अपनाने की धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं है। प्रत्येक जाति के उद्यम पृथक् पृथक् निश्चित हो जाने से बड़े पैमाने पर उत्पादन के विकास में कठिनता पड़ती है। परन्तु आजकल पश्चिमी विचारों तथा आर्थिक संगठन की आवश्यकताओं ने जाति-बन्धन को इतना ढीला कर दिया है कि आर्थिक दृष्टिकोण में इसका अस्तित्व शून्य के बराबर रह गया है।

शासन-प्रणाली का प्रभाव—किसी देश के शासन प्रबन्ध का भी वहाँ के वाणिज्य की प्रगति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। बुरे शासन में उद्योगधन्धा तथा व्यापार की अवनति और अच्छे शासन में इनकी उन्नति होती है। मैक्सिको में प्राकृतिक सम्पत्ति की प्रचुरता है परन्तु स्थायी तथा सुदृढ़ शासन प्रबन्ध के अभाव के कारण यहाँ पर अशांति तथा लूटमार होती रहती है और वाणिज्य व्यवसाय का विकास नहीं होने पाता। प्राकृतिक साधनों की अधिकता होते हुए भी शक्तिशाली शासन के अभाव से चीन एक निर्धन देश है। जापान सरकार की आदर्श कारखाने तथा उद्योगशालायें स्थापित करने की प्रेरणा के कारण ही जापान पूर्ण रूप से उद्योगशील तथा व्यवसाय-प्रधान देश बन गया है। प्रथम विश्वयुद्ध के पहले जर्मनी ने शासन की सक्रिय सहायता द्वारा ही अपने वाणिज्य तथा व्यापार को बढ़ाया।

जनसंख्या का वितरण—किसी प्रदेश की जनसंख्या के आकार तथा घनत्व का भी व्यापार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संसार की जनसंख्या का वितरण साधारणतया आहार की सुविधा के अनुसार होता है। वाणिज्य का विस्तार व विकास भी प्राय घने बसे हुए देशों में ही हुआ करता है। कम आबादी के देशों में क्रय विक्रय की आवश्यकता नहीं होती। संसार के घने बसे हुए भाग प्राय निम्नलिखित ३ प्रकार के क्षेत्रों में पाये जाते हैं—

(१) शिल्प उद्योगों के आधार पर—लोहे कोयले की खानों के निकट

(२) व्यापारिक मार्गों की सुविधा के अनुसार—समुद्र तट पर

(३) खेती व अन्य व्यवसायों की विद्यमानता में—जैसे दक्षिणी पूर्वी एशिया के मानसूनी भागों में।

इसके विपरीत उत्तरी अफ्रीका, अरब तथा आस्ट्रेलिया के विस्तीर्ण मरुस्थल, एशिया और अमरीका के भीतरी शुष्क मैदान व कछार, उत्तर के विस्तीर्ण कोणधारी वन और टुन्ड्रा प्रदेश, सवाना के मैदान और आस्ट्रेलिया के मानसूनी वन-प्रदेश व भूमध्यरेखीय वनों की जनसंख्या बहुत कम और बिखरी हुई है।

प्रश्नावली

१. "किसी प्रदेश का रहनसहन संयोग की बात नहीं वरन् भौगोलिक परिस्थितियों का परिणाम है," इस कथन को समझाइये।

वाणिज्य पर प्रभाव डालने वाली भौगोलिक परिस्थितियाँ

प्राकृतिक							मानवी व सामाजिक			
जलवायु	स्थिति व आकार	बनावट	मिट्टी	नदियां	तटरेखा	प्राकृतिक सम्पत्ति	जाति	धर्म	शासन-प्रणाली	जन-संख्या
उत्पादन, यातायात, श्रम, उद्योग, व्यवसाय, भोजन व घर पर प्रभाव डालती है।	वाणिज्य तथा व्यापार सम्बन्धी प्रगति को नियन्त्रित करते हैं।	मैदानों में घनी आबादी—कृषि, यातायात और वाणिज्य की सुविधायें। पर्वतों पर अल्प जनसंख्या पर खनिज सम्पत्ति, वन-सम्पत्ति और जल-शक्ति।	वनस्पति का रूप और प्रकार इसी पर निर्भर रहता है।	यातायात के प्राकृतिक साधन। घाटियों को उर्वरा बनानेवाली जल-विद्युत के साधन। नगरों के स्थापन की सुविधायें।	सपाट बन्दरगाहों के लिये अयोग्य। कटीफटी बन्दरगाहों के लिये सुविधा-जनक।	मछली पकड़ना, खान खोदना, लकड़ी काटना,	श्वेत जाति व्यापार कुशल। पीत वर्ण जातियां, प्रगति-शील। श्याम वर्ण की जातियाँ कम सभ्य व अनुन्नत।	कुछ धधों को प्रोत्साहन, कुछ को निषेध। भक्ष्याभक्ष्य वस्तुओं का नियम। वस्तुओं के उपयोग पर नियन्त्रण।	अच्छे शासन से व्यापार तथा उद्योगों की प्रगति। बुरे शासन से व्यापार तथा उद्योग धधों में कठिनाइयाँ।	कम संख्या वाले देशों में पशु पालन। अधिक संख्या वाले देशों में कृषि व अन्यउद्योग-धधे और शिल्प व्यवसाय।

२ "किसी देश के तट की रूपरेखा का वहाँ की व्यापारिक व औद्योगिक उन्नति पर बडा गहरा प्रभाव पडता है," उदाहरण देते हुए इस उक्ति को स्पष्ट करिये।

३ उद्योगधन्धो पर जलवायु का प्रभाव'—इस विषय पर एक सक्षिप्त लेख लिखिये।

४ किसी देश के व्यवसाय व उद्योगधन्धो पर जलवायु का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष क्या प्रभाव पडता है इसे उदाहरण सहित समझाइये।

५ 'किसी देश के व्यापार पर जाति, शासन व्यवस्था और धर्म का बडा व्यापक प्रभाव पडता है' उदाहरण देते हुए इस वक्तव्य का समर्थन कीजिये।

६ "भारत की तीन प्रमुख नदियाँ खाद, जल व यातायात के साधन प्रदान करके मैदान को समृद्धिशाली बनाती हैं," इस कथन को समझाइए और उन तीनो नदियो का नाम लिखिए।

७ जलवायु को निर्धारित करने वाली मुख्य दशाओ का निरूपण कीजिये और लिखिये कि भूमडल के विभिन्न महाद्वीपो में वे बातें कहाँ तक लागू है।

८ भौगोलिक परिस्थितियाँ जिनके मध्य मनुष्य रहता है, उसके चरित्र व व्यवसाय को निर्धारित करती है। भारत व जापान को उदाहरणरूप लेते हुए इस कथन को समझाइये।

९ किसी देश की प्राकृतिक बनावट का वहाँ के व्यापार व खेती व्यवसाय पर क्या असर पडता है—समझाकर लिखिये।

१० निम्नलिखित पर एक सक्षिप्त लेख लिखिये—

(१) आर्थिक भूगोल में प्राकृतिक बनावट का स्थान,

(२) भौगोलिक स्थिति।

११ "मनुष्य की परिस्थितियो में जलवायु के समान व्यापक असर और किसी का नहीं है।" यह कथन कहाँ तक सत्य है? उदाहरण सहित उत्तर लिखिये।

१२. मानव-जीवन पर भूमि और जलवायु के प्रभाव को समझाकर लिखिये।

१३ किसी देश या प्रदेश में जनसख्या का घनत्व किन बातो पर निर्भर रहता है? समझाकर लिखिये।

अध्याय :: दो

जलवायु तथा भौगोलिक प्रदेश

संसार के भिन्न भिन्न देशों की जलवायु विभिन्न हैं। कुछ देशों की जलवायु शुष्क तो कुछ की तर है, कुछ की सम तो बहुत से देशों की समुद्र के प्रभाव से दूर होने के कारण अति विषम है, कहीं गर्मी अधिक पड़ती है तो कहीं अति शीत। इस विभिन्नता के कारण आर्थिक उत्पादन भी प्रभावित होता है। और यह स्पष्ट है कि अच्छी जलवायु के ही कारण कुछ प्रदेश अन्य देशों की अपेक्षा अधिक उन्नति कर गये हैं। फिर भी यह देखा जाता है कि संसार के एक भाग की जलवायु, पशु पक्षी, वनस्पति और उद्योग धंधे तुलना करने पर किसी अन्य दूरस्थ प्रदेश के समान पाये जाते हैं और उसी के आधार पर उनका नाम भी पड़ जाता है। अतः जलवायु और उत्पादन के विचार से समस्त भूमण्डल को कुछ प्राकृतिक अथवा भौगोलिक प्रदेशों (Natural Regions) में विभाजित किया जा सकता है।

भौगोलिक प्रदेश का आशय—प्रोफेसर हर्बर्टसन का मत है कि भौगोलिक प्रदेश पृथ्वी के धरातल के वे भाग हैं जिनमें मानव जीवन पर प्रभाव डालने वाली भौगोलिक विशेषतायें एक ही प्रकार की होती हैं और इसके फलस्वरूप प्रत्येक भौगोलिक प्रदेश की जलवायु, वनस्पति और रहनसहन का ढंग एक ही समान होता है। परन्तु इसका यह आशय नहीं कि भौगोलिक प्रदेशों के एक ही वर्ग में रखे जाने से उनकी सभी बातें एक समान होंगी।

सच तो यह है कि दूरस्थ दो पृथक्-पृथक् क्षेत्रों की भौगोलिक दशायें पूर्णतया एक सी तो हो ही नहीं सकती। इसलिए भौगोलिक प्रदेशों का वर्गीकरण, जिसका मुख्य आधार जलवायु है, केवल अधिक-से-अधिक समानता का द्योतक है। दो प्रदेशों को एक ही वर्ग में रखने का आशय केवल यह है कि उनमें भेदों की अपेक्षा पारस्परिक समानता अधिक है। इस सिलसिले में एक और बात भी ध्यान देने योग्य है। किसी भौगोलिक प्रदेश की सीमायें न तो निश्चित ही होती हैं और न देशों की राजनैतिक सीमाओं पर ही आश्रित होती हैं। एक प्रदेश से दूसरे में अन्तर क्रमशः होता है न कि एकदम।

भौगोलिक प्रदेशों का महत्व—भौगोलिक प्रदेशों का अध्ययन बड़े महत्व का है। इसके द्वारा हमें पता चलता है कि एक ही प्रकार के प्रदेशों में समान आर्थिक उन्नति व उपज होना चाहिए। इस ज्ञान के आधार पर अविकसित प्रदेशों का विकास किया जा सकता है। इन्डोनेशिया, ब्राजील, बेल्जियम, कांगो एक ही तरह के भौगोलिक प्रदेश के अन्तर्गत आते हैं। अतः स्पष्ट है कि यदि ब्राजील में रबर होता है तो

इन्डोनेशिया में भी हो सकता है। वास्तव में ३० वर्ष पूर्व ब्राजील और कांगो बेसिन ही रबर के मुख्य केन्द्र थे पर इसी ज्ञान के आधार पर इन्डोनेशिया और मलाया में भी रबर के पौधे लगाये गये और आज संसार का ९० प्रतिशत रबर वहीं से आता है। यह है भौगोलिक प्रदेशों के ज्ञान व अध्ययन से लाभ।

भूमडल के प्रमुख भौगोलिक प्रदेश—संसार के प्रमुख भौगोलिक प्रदेश निम्न-लिखित हैं —

१. उष्ण कटिबधीय भूभागों में—
   (अ) भूमध्यरेखीय आर्द्रवन अथवा अमेजन प्रदेश
   (ब) मानसूनी अथवा सूडान-तुल्य प्रदेश
   (स) पश्चिमी मरुस्थल अथवा सहारा-तुल्य प्रदेश
   (द) उच्च सममूमि अथवा बोलीविया-तुल्य प्रदेश
२ उष्णतर शीतोष्ण कटिबधीय भागों में—
   (अ) पश्चिमी तटवर्ती अथवा भूमध्यसागरीय प्रदेश
   (ब) पूर्वी तटवर्ती अथवा चीन-तुल्य प्रदेश
   (स) आन्तरिक निम्न प्रदेश अथवा तूरान-तुल्य प्रदेश
   (द) आन्तरिक उच्च प्रदेश अथवा ईरान-तुल्य प्रदेश
३ शीत-शीतोष्ण कटिबधीय भागों में—
   (अ) शीतोष्ण महासागरीय अथवा पश्चिमी योरप-तुल्य प्रदेश
   (ब) पूर्वी तटवर्ती अथवा सैंट लारेंस-तुल्य प्रदेश
   (स) आन्तरिक निम्न-प्रदेश अथवा साईबेरिया-तुल्य प्रदेश
   (द) आन्तरिक उच्च प्रदेश अथवा अल्टाई-तुल्य प्रदेश
४. शीत कटिबधीय अथवा ध्रुवीय भूभाग

(अ) भूमध्यरेखीय आर्द्रवन अथवा अमेजन-तुल्य प्रदेश—यहा की जलवायु की विशेषता है उच्च तापक्रम, न्यून तापान्तर और वर्षभर घोर जलवृष्टि। आकाश में सूर्य का स्थान ऊँचा रहने से तापक्रम भी उच्च रहता है। अधिक ताप के कारण वायु फैलकर ऊपर उठती है और ठडी हो जाती है। इस प्रकार द्रवीभवन बराबर होता रहता है और इसी क्रिया के फलस्वरूप जलवृष्टि भी होती रहती है। फलत हवा में आर्द्रता रहती है और दिन रात के ताप का अन्तर वार्षिक तापान्तर से कहीं अधिक रहता है। इस प्रकार की जलवायु भूमध्यरेखा के दोनों ओर १०° तक पाई जाती है। इसमें अमेजन और कांगो की तलहटियाँ, मलाया, इन्डोनेशिया और दक्षिणी अमरीका में कोलम्बिया के तटीय मैदान सम्मिलित हैं। इन प्रदेशों में सघन वनस्पति पाई जाती है और भाँति-भाँति के विशाल वृक्षों की शाखायें फैली रहने से नीचे अंधेरा छाया रहता है। इसीलिए इन प्रदेशों को सध्या के प्रकाश का प्रदेश (Land of Twilight) भी कहते हैं।

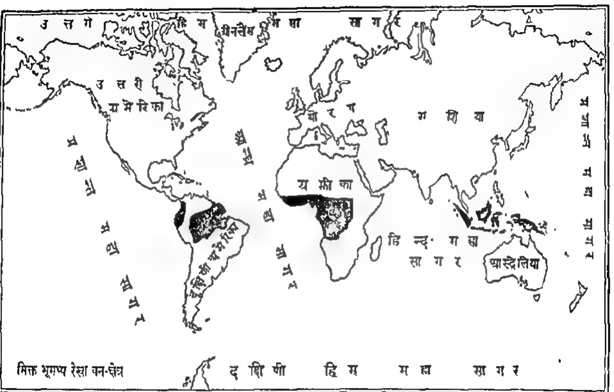
पिनाग (द० पू० एशिया) ऊँचाई २३ फीट

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
ताप	७९·७°	८०·१°	८१·३°	८१·७°	८१·५°	८०·६°	८०·२°	७९·९°	७९·५°	७९·७°	७९·२°	७८·८°
वर्षा	३·९″	३·०″	४·७″	७·०″	११·०″	७·२″	८·९″	१२·८″	१९·०″	१६·१″	१०·९″	४·८″

खनिज पदार्थ, वनस्पति व पशु-पक्षी—इन भागों में वैसे तो प्रायः जंगल ही पाये जाते हैं पर कहीं-कहीं बहुमूल्य खनिज पदार्थ भी उपलब्ध होते हैं। मलाया प्रायद्वीप और इण्डोनेशिया में टीन, मेडागास्कर और श्रीलंका में ग्रेफाइट, गोल्डकोस्ट में बॉक्साइट और उत्तरी रोडेशिया में तांबा पाया जाता है। केले, काठ मसाले, रबर, कोको, कई प्रकार की लकड़ी और हाथीदांत इन प्रदेशों की मुख्य उपज है। ताम्र के वृक्ष भी खूब पाये जाते हैं। परन्तु इन जंगलों से अन्य बहुत-सी वस्तुयें प्राप्त की जाती हैं जिनमें मुख्य मसाले, गटापार्चा, ताड़, नारियल, कहवा, साबूदाना, केला, राल, लाख, हड़, बहेड़ा आंवला तथा कई तरह की गोंद है। आजकल कुछ दिनों से इन सभी वस्तुओं में व्यापार शुरू हो गया है।

इन प्रदेशों के जंगल घने होने के कारण और जमीन पर कीचड़ व सड़ीगली वनस्पति होने के कारण यहाँ पर पाये जाने वाले अधिकतर पशु उड़ने या पेड़ों के ऊपर कूदने-फांदने की योग्यता रखते हैं। इनमें बन्दर व सांप मुख्य हैं। इनके अलावा हाथी, चीते, बाघ और गेंडे भी पाये जाते हैं। जहरीले कीड़े-मकोड़े भी बहुलता से पाये जाते हैं।

निवासी व रहन-सहन—इन प्रदेशों के विकास में बड़ी गम्भीर बाधायें हैं और इसीलिए सभ्यता के विकास का प्रभाव यहाँ के निवासियों पर नहीं पड़ा है और उनके रहन-सहन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। यहाँ की आवश्यकतायें भी कम हैं और फिर बिना प्रयास ही भोजन की वस्तुयें प्रचुरता से प्राप्त हो जाती हैं। गर्मी के



चित्र नं० ३. भूमध्यरेखीय प्रदेशों का विस्तार—अमेजन का बेसिन मुख्य है।

अधिक होने से वस्त्र और घर की भी कोई विशेष चिन्ता नहीं है। फलत: यहाँ के निवासी स्वभावतया आलसी होते हैं। उनका कद नाटा व बुद्धि मंद होती है। कष्टप्रद व खराब जलवायु के कारण इन प्रदेशों में रोग बहुत होते हैं। साथ-साथ सघन वन, खाद्य पदार्थों का अभाव और अनुपयोगी पशुओं के कारण इन प्रदेशों का जीवन पिछड़ा हुआ है। ये लोग भूतप्रेतों में विश्वास करते हैं और शिकारी होते हैं। गमनागमन के साधनों का भी अभाव है। दलदली भूमि तथा घने वनों के कारण सड़कों व रेलों का बनना नामुमकिन है। केवल नदियों के द्वारा ही आना जाना होता है।

सुदूरपूर्व के भागों में यातायात के उन्नत साधन हैं। भूमध्यरेखीय प्रान्तों में *केवल यहीं की तटरेखा लम्बी है। सुमात्रा और जावा में नाव चलाने योग्य नदियाँ हैं* जो समुद्र से आन्तरिक भागों को मिलाती हैं। मलाया और जावा में रेलों व सड़कों का अच्छा विकास हुआ है। इस प्रकार अनुकूल परिस्थिति के कारण इन प्रदेशों के व्यापार और उद्योगधन्धों में बड़ी उन्नति हुई है। यहाँ गन्ना और रबर का बहुत उत्पादन होता है।

भूमध्यरेखीय वन-प्रदेशों की प्रमुख निर्यात वस्तुयें

क्षेत्र व प्रदेश	प्रमुख निर्यात वस्तुयें	निर्यात के बन्दरगाह
दक्षिणी अमरीका	रबर, लकड़ी, चीनी, केला, कहवा, नारियल, तांबा।	पारा, बाहिया, परनम्बुको, पारामेरिवो, जार्जटाउन।
अफ्रीका	तांबा, सोना, रबर, लकड़ी, नारियल का तेल, कोला।	लागोस, अकरा, फ्री टाउन।
एशिया	रांगा, रबर, मिर्च, गोला, अननास कहवा, चीनी।	सिंगापुर।

१. (ब) **मानसूनी तथा सूडान-तुल्य जलवायु के प्रदेश**—इस जलवायु के प्रमुख क्षेत्र हैं भारतवर्ष, पूर्वी पाकिस्तान, ब्रह्मा, थाइलैंड, इन्डोचीन, फिलीपाईन्स द्वीप, दक्षिणी चीन, मध्य अमरीका, पश्चिमी द्वीपसमूह, कैरिबियन सागर के तटीय प्रदेश *(वेनेजुएला और कोलम्बिया), पूर्वी अफ्रीका का तटीय प्रदेश, मेडागास्कर, क्वीन्सलैंड* और उत्तरी आस्ट्रेलिया के तटीय प्रदेश। साधारणतया यह देखा जाता है कि इस प्रकार की जलवायु के प्रदेश प्राय: महाद्वीपों के पूर्वी भागों में स्थित है।

जलवायु—वर्षभर उच्च तापक्रम और गर्मी के मौसम में भारी जलवृष्टि इस प्रदेश की विशेषतायें हैं। गर्मी के मौसम में ये प्रदेश गर्म हो जाते हैं और वायु हल्की होकर ऊपर को उठती है। इनके स्थान को भरने के लिए समुद्र की ओर से ठंडी हवायें

जाती हैं और वर्षा करती हैं। इन्हें मानसून या मौसमी हवायें कहते हैं। जाड़े में हवायें थल से समुद्र की ओर चलने लगती हैं और शुष्क होने के कारण वर्षा नहीं करती।

वर्षा का वितरण भप्रकृति पर निर्भर रहता है। जहाँ मानसून हवाओं के मार्ग पर पवन श्रेणियाँ स्थित हैं वहाँ उनसे टकरा कर अधिक जलवृष्टि करते हैं। चेरापूजी, आसाम के खिलाग श्रेणी की तलहटी में स्थित है और संसार में सबसे अधिक वर्षा—करीब ५०० इंच होती है।

मानसूनी जलवायु प्रदेश (इलाहाबाद)
आन्तरिक स्थिति, ऊंचाई—३०९ फीट———२५ २८ अक्षांश
और ९१ ४५° ५·° देशान्तर

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	५९·५°	·७″	जुलाई	८४·५°	११·४″
फरवरी	६४·९°	·५″	अगस्त	८५·२°	११·२″
मार्च	७६·८°	·३″	सितम्बर	८३·३°	६·०″
अप्रैल	८७·६°	·१″	अक्टूबर	७७·६°	२·२″
मई	९२·५°	·३″	नवम्बर	६७·५°	·२″
जून	९०·८°	४ ५″	दिसम्बर	५९·८°	·२″
सालाना ताप ७७ ३°			वर्षा ३७·५″		

वनस्पति—यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति में ज्यादा वर्षा वाले भागों में वन और कम वर्षा वाले भागों में घास के मैदान पाये जाते हैं। इन वनों के पत्ते गर्मी की ऋतु में झड़ जाते हैं पर खूब वर्षा वाले भागों में ये सालभर हरे-भरे रहते हैं। इनमें पाये जाने वाले वृक्षों में सागौन, साल, चन्दन के वृक्ष मुख्य हैं। इसके अलावा लाख, गोंद और कपूर इन वनों की अन्य महत्वपूर्ण उपज हैं। घास भी इन प्रदेशों में बहुतायत से पाया जाता है। सागौन और साल ब्रह्मा, इन्डोचीन, थाइलैण्ड और जावा में तथा लाख व गोंद वाले वृक्ष भारत में पाये जाते हैं।

निवासी व रहन-सहन—इन प्रदेशों के निवासियों का मुख्य उद्यम कृषिकार्य है। ताड़, बांस, कठोर काठ, चावल, मक्का, बाजरा, गन्ना और कपास सारे ही प्रदेश में उत्पन्न होते हैं। कहवा, चाय, कोको तम्बाकू, नील, सिनकोना, जूट, रबर, तिल्हन और दालें इस प्रदेश की अन्य मुख्य फसलें हैं। परन्तु न प्रदेशों में मनुष्य की उन्नति वर्षा पर

चित्र न० ४—मानसूनी प्रदेश—जापान और उत्तरी पूर्वी चीन मानसूनी पवनों के प्रभाव में होते हुए भी मानसूनी प्रदेश नहीं हैं। कारण [उत्तरीअक्षांशों में होने के कारण शीत की अधिकता है]।

निर्भर है। यदि जलवृष्टि न हो तो कृषि कार्य नहीं हो पाता। उपज मारी जाती हैं अकाल पड़ जाते हैं। वर्षा का समय व मात्रा दोनों ही इतनी अनिश्चित हैं कि भारतवासी नितान्त भाग्यवादी हो गए हैं।

जनसंख्या की अधिकता के कारण इन देशों में पशुचरण उद्योग का विकास नहीं हुआ है कारण इसके लिए विस्तृत भूमि की आवश्यकता होती है। अभी कुछ थोड़े समय से उत्तरी भारत और चीन में लोगों का ध्यान खनिज पदार्थों की ओर गया है। रही उत्तरी आस्ट्रेलिया की बात सो वहाँ की उपज है—नारियल चावल केला और कपास। इस भाग में कृषिकार्य का विकास किया जा सकता है। परन्तु जलवायु अनुकूल न होने से श्वेत जातियाँ वहाँ निवास नहीं कर सकतीं। दूसरे आस्ट्रेलिया सरकार की (White Australia) नीति के फलस्वरूप एशियाई श्रमजीवी व मजदूर भी नहीं जा सकते।

१ (स) **पश्चिमी मरुस्थल अथवा सहारा-तुल्य प्रदेश**—भूमण्डल के उष्ण मरुस्थल उष्ण कटिबंध में कर्क और मकर रेखाओं के समीप महाद्वीपों के पश्चिमी भाग में फैले हुए हैं। इन मरुस्थलों में अफ्रीका का सहारा, अरब भारतवर्ष का थार, संयुक्त-राष्ट्र अमरीका का कोलोराडो, दक्षिणी अमरीका का पीरूवियन और अटाकामा और पश्चिमी आस्ट्रेलिया का विशाल मरुस्थल शामिल हैं। इस प्रकार देखा जाय तो पता चलेगा कि पृथ्वी के धरातल का एक-चौथाई भाग मरुस्थल से घिरा हुआ है।

जलवायु—इन प्रदेशों की मुख्य विशेषता है जलवृष्टि की कमी। वर्ष भर में औसतन केवल दो इंच वर्षा होती है। आसमान में बादल तो दिखाई ही नहीं पड़ते और बराबर सूर्य का तीव्र प्रकाश रहता है। गर्मी के मौसम में घोर गर्मी और जाड़े के मौसम में तापक्रम बहुत नीचा रहता है। दिन की अपेक्षा रात ज्यादा ठंडी होती है। परन्तु समुद्र-तट के निकट के मरुस्थलों में दशायें इतनी कठिन नहीं होतीं। पीरू, उत्तरी चिली, कालाहारी (पश्चिमी अफ्रीका), सहारा के मोरक्को प्रान्त सोमालीलैंड और उत्तरी पश्चिमी मैक्सिको के मरुस्थलों पर तटीय ठंडी जलधाराओं का गहरा प्रभाव पड़ता है। ठंडे समुद्रों के तटवर्ती प्रदेशों में औरों की अपेक्षाकृत १०° की कमी हो जाती है।

आर्थिक महत्व व विशेष उपज—इन प्रदेशों की जलवायु तो अस्वास्थ्यकर नहीं होती परन्तु रेत की आंधियों के कारण यात्रा में बाधा पड़ती है। अतः मरुस्थलों का कोई विशेष महत्व नहीं है—वे न केवल स्वयं अगम्य होते हैं बल्कि अपने सन्निकट देशों की उन्नति में भी बाधक होते हैं। पानी की कमी के कारण कोई विशेष वनस्पति नहीं होती। काटेदार झाड़ियाँ ही प्रायः कहीं-कहीं पायी जाती हैं। ताड़, खजूर और अंजीर के वृक्षों के सहारे ही यहाँ के लोग अपना बसर करते हैं। जहाँ सिंचाई हो सकती है वहाँ कपास, गन्ना, गेहूँ, बाजरा, लम्बी जड़ और मोटी पत्ती वाले फलों की खेती की जाती है। पशुपालन और खजूर, नमक और चमड़े की वस्तुओं से व्यापार यहाँ के लोगों के अन्य

चित्र नं. ५. कर्क और मकर रेखाओं के अन्तर्गत मरुस्थलों ■ वितरण—महाद्वीपों के पूर्वी भागों में गर्म रेगिस्तानों का अभाव है ।

घर्षे हैं। ये प्रदेश कमी के कारण बडे ही कष्टप्रद हैं और यहाँ के निवासी दूर दूर पर छितरे मरूद्यानो में ही रहते हैं और ऊट, घोडे व बकरी पालते हैं। परन्तु इन प्रदेशो के निवासी निर्भीक, चिन्ता-रहित और अतिथि-सेवक होते हैं।

कुछ मरुस्थलो मे—विशेषकर दक्षिणी गोलार्द्ध मे—बहुमूल्य खनिज पाये जाते हैं। पीरू की पतली तटीय पट्टी में तेल, चिली के अटाकामा मरुस्थल में शोरा और ताबा, अफ्रीका के कालाहारी मरुस्थल में हीरे, पश्चिमी आस्ट्रेलिया की कालगूर्ली और कूलगार्डी मे सोना तथा न्यू-साउथ-वेल्स के मरुस्थल मे सीसा और जस्त पाया जाता है। इसी प्रकार सहारा में नमक, कोलेरैडो में सोना और ईराक मे तेल निकाला जाता है। इन सभी स्थानो पर इगलैंड व अमरीका की पूजी की सहायता से विकास हो रहा है और सब से पहला ध्येय जल की कठिन समस्या को हल करना है। पश्चिमी आस्ट्रेलिया की खानो के लिये पानी पर्थ बन्दरगाह से नलो द्वारा लाया जाता है और चिली मे अटाकामा मरुस्थलो मे भी पानी ऐंडीज पर्वत के जलाशयों से नलो द्वारा लाया जाता है।

१. (द) **उच्च समभूमि अथवा बोलिविया-तुल्य प्रदेश**—इस प्रकार की जलवायु बोलिविया और तिब्बत के पठारो पर पाई जाती है। यद्यपि ऊचाई के अनुसार विभिन्न स्थानो में भिन्न-भिन्न प्रकार की जलवायु पाई जाती है, अतएव खेती की उपज मे भी भिन्नता पाई जाती है। ऐंडीज पर्वत के ढालो पर गेहू, गन्ना, मक्का तथा फल उगते हैं और हिमालय के ढालो पर चाय की उपज होती है। तिब्बत का अधिकतर भाग हिमाच्छादित है परन्तु नदियो की उपत्यकाओं मे कृषि-कार्य और फलो का उत्पादन होता है। निम्न भागो में याक-बैल, गधे, भेड आदि पशु पाले जाते हैं।

शीतोष्ण कटिबंधीय जलवायु

२. (अ) **भूमध्यसागरीय प्रदेश**—इस प्रकार की जलवायु के प्रदेश भूमध्यसागर के तटवर्ती भागो में पाये जाते हैं। स्पेन, पुर्तगाल, दक्षिणी फ्रास, इटली, यूगोस्लाविया, बाल्कन प्रदेश, सीरिया और उत्तरी अफ्रीका इस प्रकार की जलवायु के केन्द्र हैं। इनके अतिरिक्त उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के प्रशान्त महासागर के तटवर्ती प्रदेश (कैलिफोर्निया और मध्य चिली), दक्षिणी अफ्रीका का धुर दक्षिण-पश्चिमी भाग और दक्षिण-पश्चिमी व दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड का उत्तरी भाग इसी प्रकार के अन्य प्रदेश हैं। महाद्वीपो के पूर्व में जिन अक्षाशो के बीच मानसूनी प्रदेश स्थित हैं, उन्ही अक्षाशों के भीतर पश्चिमी भागो में भूमध्यसागरीय जलवायु पाई जाती है।

जलवायु—इन प्रदेशो में जाडे का मौसम कम ठडा व जलवृष्टि पूर्ण होता है और गर्मी का मौसम गर्म व सूखा होता है। गर्मी में आकाश साफ व मेघ-रहित होता है। सालाना वर्षा करीब-करीब २०"-३०" इच तक होती है। एक और ध्यान देने योग्य बात है। प्राय इन प्रदेशो के एक ओर समुद्र और दूसरी ओर पहाड हैं। इस लिये जहाँ पहाड नहीं

होते वहाँ जलवृष्टि का अभाव सा होता है और मरुस्थल के समान दशायें पाई जाती हैं।

जिब्राल्टर (भूमध्यसागरीय)—तटीय ऊंचाई ५३ फीट

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	५५°	५ १″	जुलाई	७३·४°	०·४″
फरवरी	५५ ९°	४ २″	अगस्त	७४ ९°	०·१″
मार्च	५७ ४°	४ ८″	सितम्बर	७२ ०°	१ ४″
अप्रैल	६० ६°	२ ७″	अक्तूबर	६५ ७°	३ ३″
मई	६४ ७°	१ ७″	नवम्बर	६०·५°	६ ४″
जून	६९ ५°	० ५″	दिसम्बर	५६ २°	५ ५″
सालाना		ताप—६३·७°		वर्षा—३५·७″	

वास्तव में यहां की जलवायु, विशेष कर शीतकाल में, बड़ी रमणीक होती है और इसका आनन्द लेने के लिये बहुत से यात्री आते हैं।

वनस्पति और उपज—यहां पर वनस्पति साल भर उगती रहती है। जैतून (Olive) यहां का विशेष पौधा होता है जो साल भर उगता रहता है। बलूत, अखरोट और शहतूत के पेड़ यहां के अन्य मुख्य पेड़ है। पर यह प्रदेश फलों के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध है। नारंगी, नीबू, आड़ू, खुबानी, अंजीर आदि फल यहाँ पर बहुतायत से होते है और इनकी संसार के भिन्न-भिन्न देशों में बड़ी मांग रहती है। खाद्य अनाजों में गेहूं और जौ मुख्य हैं जो शीतकाल में उत्पन्न होते है। प्रायः सभी भूमध्यसागरीय प्रदेशों में अंगूर की उपज होती है परन्तु केवल फ्रांस, इटली, पुर्तगाल और स्पेन में ही शराब बनाने का काम होता है। स्पेन और कैलिफोर्निया से ताज़े अंगूर बाहर भेजे जाते हैं। एशिया-माईनर और कैलिफोर्निया से अंगूरों को मुख्य कर मुनक्का और किशमिश के रूप में बाहर भेजा जाता है। एशिया माईनर अंजीर के लिये भी प्रसिद्ध है।

पशु-पालन और रेशम-उद्योग—यहां की जलवायु मानवों के लिये अनुकूल है। इसलिये जीविका के लिये कठोर संघर्ष नहीं करना पड़ता, साधारण परिश्रम से ही पेट भर जाता है। अनुकूल परिस्थिति में घोड़े, चौपाये, भेड़, सूअर, गधे, खच्चर और बकरियां आदि जानवर पाले जाते हैं। फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन और इटली में कलकारखानों का बड़ा

उत्तरी हिम महासागर
ग्रीनलैंड
उत्तरी अमेरिका
दक्षिणी अमेरिका
प्रशान्त महासागर
आन्ध महासागर
अफ्रीका
यूरप
एशिया
हिन्द महासागर
आस्ट्रेलिया
प्रशान्त महासागर
दक्षिणी हिम महासागर

भूमध्य भूमियों का विभाजन । इन भूमियों को 'शरद् वर्षा क्षेत्र" भी कहा जाता है।

चित्र नं० ६ भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रमुख प्रदेश—इन्हें शीतकालीन वर्षा के प्रदेश भी कहते हैं।

विकास हुआ है। शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं और रेशम का उद्योग बहुत उन्नत है।

२ (ब) पूर्वीय तटवर्ती अथवा चीन-तुल्य प्रदेश—इस प्रदेश के मुख्य भाग महाद्वीपों के पूर्वी तटों पर स्थित हैं और उन्हीं अक्षांशों के बीच जिन के मध्य पश्चिमी तटों पर भूमध्यरेखीय जलवायु के प्रदेश पाये जाते हैं। उत्तरी और मध्य चीन, पश्चिमी कोरिया, दक्षिणी जापान, संयुक्तराष्ट्र का पूर्वी भाग (आयोवा, मिसौरी, अरकसास, पूर्वी टेक्सास, और गल्फ तट), दक्षिणी पूर्वी ब्राजील, युरुग्वे, दक्षिण अफ्रीका संघ का दक्षिण पूर्वी तटीय भाग, न्यूसाउथवेल्स का तटीय भाग और दक्षिणी क्वीन्सलैंड इस प्रकार की जलवायु के प्रदेश हैं।

जलवायु—जाड़े के मौसम में कड़ी सर्दी और गर्मी के मौसम में जलवृष्टि इन प्रदेशों की जलवायु की मुख्य विशेषता है।

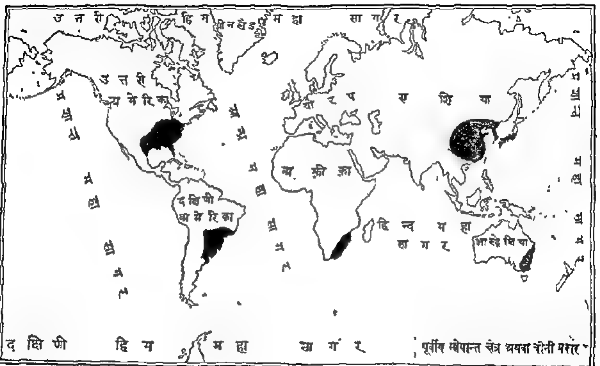
हैंकाउ (चीन) आन्तरिक-ऊंचाई ११८ फीट

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	३०·६°	२·१"	जुलाई	८२·९°	८·६"
फरवरी	४१·५°	१·१"	अगस्त	८३·३°	४·६"
मार्च	४८·२°	२·८"	सितम्बर	७४·८°	२·२"
अप्रैल	६१·२°	४·८"	अक्तूबर	६५·१°	३·९"
मई	७०·९°	५·०"	नवम्बर	५३·१°	१·१"
जून	७७ ९°	७·०"	दिसम्बर	४२·६°	०·६"

वार्षिक योग　　　ताप—६१·९°　　　वर्षा—४३·८"

वनस्पति, उपज और जीवन—यहाँ के मूल्यवान वृक्ष हैं पीतला, चीड़, अखरोट, वाल्नट, बीच, मेगनोलिया और ओक। प्रमुख खेतिहर उपजें हैं—मक्का, बाजरा, दालें, चावल, नील, तम्बाकू, कपास, कपूर, चाय, केला, नारंगी और कहवा।

एशियाई देशों में जनसंख्या घनी है और पशु-संख्या थोड़ी है। इस लिये वहां खेती ही मुख्य उद्यम है। परन्तु युरुग्वे, ब्राजील और दक्षिणी अमरीका में पशुपालन उद्योग का महत्वपूर्ण विकास हुआ है। इसके विपरीत जापान तथा दक्षिणी संयुक्त राष्ट्र में मिलों व फैक्टरियों की विशेष उन्नति हुई है।



चित्र नं० ७—उष्ण शीतोष्ण पूर्व-तटीय जलवायु वाले प्रदेश।

२ (स) **तूरान-तुल्य जलवायु के प्रदेश**—इन्हे आन्तरिक निम्न प्रदेश भी कहते है और तूरान रूस के कैस्पियन और ट्रान्स कैस्पियन प्रान्त, डैन्यूब के मैदान (रूमानिया और हंगरी), मंचूरिया, संयुक्तराष्ट्र के मध्य पश्चिमी भाग, उत्तरी अर्जेन्टाइना, न्यूसाउथ-वेल्स के आन्तरिक भाग, विक्टोरिया और दक्षिणी आस्ट्रेलिया में इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

इन प्रदेशों की जलवायु विषम और वर्षा की मात्रा बहुत थोडी होती है। इसीलिये मुख्य उद्यम पशु-पालन है और घोडे, ऊट, भेड, बकरी आदि जानवर पाले जाते हैं। जहा-कहीं सिंचाई का प्रबन्ध है वहां मक्का, जौ, फल और कपास उगाई जाती हैं।

२ (ड) **आन्तरिक उच्च-प्रदेश अथवा ईरान-तुल्य प्रदेश**—इस प्रदेश के मुख्य भाग है ईरान, आन्तरिक एशिया माईनर, अफगानिस्तान, पाकिस्तान का पश्चिमी भाग, संयुक्त राष्ट्र की दक्षिणी रियासतों का भीतरी भाग, मैक्सिको और दक्षिणी अफ्रीका का भीतरी पठारी प्रदेश।

इन उच्च प्रदेशों की जलवायु विषम है। सालाना वर्षा बहुत कम और भूमि अनुपजाऊ होने से इन प्रदेशों में केवल घास के मैदान या रेगिस्तान पाये जाते है। साधारणतया कृषि का अभाव है परन्तु नदियों के आस-पास कृषि-उद्योग होता है और अनाज, फल, कपास, तम्बाकू, गन्ना, चुकन्दर आदि की फसले उगाई जाती हैं। घास के मैदानो मे भेड, घोडे और ऊट चराए जाते हैं। खनिज पदार्थ भी पाये जाते है पर श्रम व पूजी के अभाव के कारण उनका विकास नही हो पाया है फिर भी थोड़े-बहुत शिल्प-उद्योग होते है।

शीत-शीतोष्ण कटिबंधीय भूभाग

३ (अ) **शीतोष्ण महासागरीय या पश्चिमी यूरोप-तुल्य प्रदेश**—ब्रिटिश द्वीप-समूह, दक्षिणी पश्चिमी स्कैंडिनेविया, डेनमार्क, पश्चिमी जर्मनी हालैड, बेल्जियम, फ्रास उत्तरी स्पेन, दक्षिणी-पश्चिमी कनाडा उत्तर पश्चिमी संयुक्तराष्ट्र, दक्षिणी चिली, तस्मानिया और न्यूजीलैंड ऐसे प्रदेश है जहां इस प्रकार की जलवायु पाई जाती हैं।

जलवायु—इन भागों में समुद्र के प्रभाव के कारण जलवायु सम रहती है और सालभर बराबर वर्षा होती रहती है। प्रायः इन सभी भागों के तट से गर्म जलधाराए प्रवाहित होती रहती हैं। इसके फलस्वरूप पश्चिमी तट की ओर से आने वाली पवन गर्म व तर हो जाती हैं।

वनस्पति व उपज—निचले भागो में मेपिल, ओक, ऐल्म और बीच वृक्षों के पतझड वन पाये जाते हैं पर ऊचे पहाडी प्रदेशो मे पाईन, फर आदि कोणधारी वृक्षों के सदा-

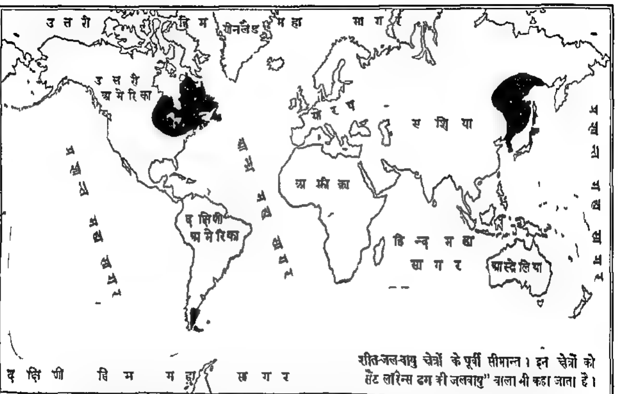
लन्दन—अक्षांश ५१°२८, ऊंचाई २८ फीट

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	३८·९°	१·८"	जुलाई	६२·७°	२·२"
फरवरी	४०·२°	१·५"	अगस्त	६१·६°	२·२"
मार्च	४२·४°	१·७"	सितम्बर	५७·१°	१·९"
अप्रैल	४७·३°	१·५"	अक्तूबर	४९·९°	२·७"
मई	५३·४°	१·७"	नवम्बर	४४·०°	२·२"
जून	५९·२°	२·१"	दिसम्बर	४०·३°	२·३"
सालाना ताप ४९·७°				वर्षा २३·८"	

चरागाह बन पाये जाते हैं। जई, राई, आलू, चुकन्दर और हरी साग-सब्जी ही यहाँ की मुख्य फसलें हैं, परन्तु कुछ कम तर व अधिक धूप वाले प्रान्तों में गेहूं की भी अच्छी उपज होती है। गाय, बैल, घोड़े व भेड़ें भी पाली जाती हैं। बाजारों के निकट होने से दूध, पनीर और मक्खन बनाने का व्यवसाय भी बहुत उन्नति कर गया है। स्केंडीनेविया और ब्रिटिश कोलम्बिया में मछली पकड़ने का व्यवसाय प्रमुख है।

निवासी व रहन-सहन—वास्तव में अच्छी जलवायु के कारण इन भागों ने व्यापार और उद्योग-धंधों के क्षेत्र में बड़ी उन्नति कर ली है। इन प्रदेशों में प्राय सभी सुविधाएं वर्तमान हैं। खनिज सम्पत्ति की प्रचुरता, यातायात के साधनों की सुविधा, जलवायु की अनुकूलता और व्यापार के दृष्टिकोण से आदर्श स्थिति की वजह से पश्चिमी यूरोप में महत्वपूर्ण औद्योगिक उन्नति हुई है। व्यापार और उपनिवेश-स्थापना में ब्रिटेन, भावनापूर्ण साहित्य व कला में फ्रांस और शिल्प-सम्बन्धी अन्वेषणों में जर्मनी संसार में सब से आगे हैं। ऊंचे वैज्ञानिक ढंग की खेती व कलकारखानों के काम और व्यापार में ये प्रदेश सब से ज्यादा उन्नति कर गये हैं। कनाडा, संयुक्त राष्ट्र, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में भी उद्योग-धंधों, यातायात के साधनों और वैज्ञानिक क्रियाओं ने आश्चर्यजनक उन्नति की है और बराबर आगे बढ़ रहे हैं।

३. (ब) **पूर्वी तटवर्ती अथवा सेंट लारेंस-तुल्य प्रदेश**—इस प्रकार की जलवायु का केन्द्र पूर्वी कनाडा में सेंट-लारेंस नदी की तलहटी है। परन्तु इसका विस्तार काफी है और आमरनदी की घाटी, मंचूरिया, कोरिया, उत्तरी जापान, लैब्रेडोर, टुन्ड्रा का निचला भाग, पूर्वी प्रेरीज, न्यूफाउंडलैंड, संयुक्तराष्ट्र अमरीका में उत्तरी पूर्वी अपेलेशियन और



चित्र न० ८—शीत-शीतोष्ण कटिबंध के पूर्व तटवर्ती प्रदेश, जहाँ सेंट लारेन्स तुल्य जलवायु पाई जाती है। इस प्रकार के प्रदेश अफ्रीका व आस्ट्रेलिया में नहीं है।

दक्षिणी पूर्वी आस्ट्रेलिया के भाग भी इसी के अन्तर्गत आते हैं।

जलवायु—यहाँ वर्षा बहुत कम और गर्मी के मौसम में होती है। गर्मियाँ कम गर्म और जाड़े बहुत ठंडे होते हैं। जाड़े के मौसम में सभी नदियाँ व बन्दरगाह बर्फ से रुक जाते हैं।

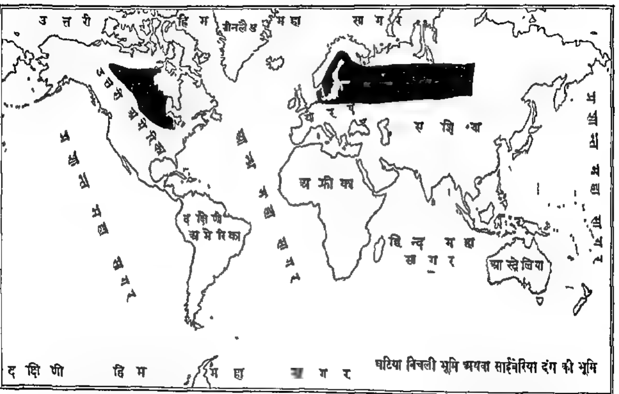
वनस्पति, उद्योग और व्यवसाय—इस प्रदेश में व्यापारिक बहुमूल्य वनों की अधिकता है। उत्तरपूर्वी अमरीका और एशिया में कोणधारी और पतझड़ के वन हैं। इन में कोमल रोम वाले पशु पाये जाते हैं। वनों को काट कर कृषि और दूध के लिये पशुपालन के उद्योग स्थापित किये गये हैं। उत्तरी अमरीका में लकड़ी काटने का धंधा प्रधान है और कनाडा तथा संयुक्तराष्ट्र अमरीका में मछली पकड़ना, खान खोदना, कृषि व शिल्प की उन्नति हो रही है। एशिया में जापान देश ने सब से अधिक औद्योगिक उन्नति की है। मंचूरिया में जापान के निरीक्षण में कृषि और खनिज सम्बन्धी उद्योगों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

३. (अ) **आन्तरिक मैदानी प्रदेश अथवा साइबेरिया-तुल्य प्रदेश**—इन प्रदेशों का विस्तार केवल उत्तरी गोलार्द्ध में है। दक्षिणी गोलार्द्ध में इस प्रकार के प्रदेश हैं ही नहीं। मध्य एशिया के निचले मैदान, पोलैंड, यूरोपीय रूस, पश्चिमी साइबेरिया, जर्मनी तथा स्वीडन के कुछ भाग और उत्तरी अमरीका के उत्तरी प्रेरीज के भागों में इसी प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

जलवायु—इन भागों की जलवायु विषम है। जाड़े के मौसम में कड़ाके की सर्दी पड़ती है और जाड़े का मौसम काफी लम्बा रहता है। इस के विपरीत गर्मी का मौसम छोटा व कम गर्म होता है। वर्षा हल्की और विशेष कर ग्रीष्म ऋतु में होती है।

वनस्पति, जीवजन्तु व निवासियों का जीवन—इस प्रदेश के उत्तरी भागों में कोणधारी वृक्षों—पाइन, स्प्रूस और फर—के सदाबहार वन पाये जाते हैं। दक्षिणी भागों में वृक्षों का अभाव है परन्तु विस्तृत घास के मैदान पाये जाते हैं। इन घास के मैदानों को अलग-अलग नाम से पुकारते हैं।—साइबेरिया में 'स्टेप' और अमरीका में 'प्रेरीज' कहते हैं। इन घास के मैदानों में कृषि-उद्योग महत्वपूर्ण व्यवसाय है। शुष्क भागों में पशुपालन होता है। यूरेशिया के पश्चिमी स्टेप बड़े उपजाऊ हैं परन्तु पूर्वी स्टेप मैदान यूरोप के उन्नत प्रदेशों से बहुत दूर होने के कारण अवनत दशा में हैं। फिर भी ट्रान्स साइबेरियन रेल के निकल आने से इस भाग में कुछ प्रगति होने लगी है।

३ (ब) **आन्तरिक उच्च प्रदेश अथवा अल्टाई-तुल्य प्रदेश**—इस प्रदेश का विस्तार सीमित-सा है। इस प्रकार के प्रमुख क्षेत्र हैं—अल्टाई श्रेणी और उसके करीब के एशियाई देश, राकी पर्वत श्रेणी का उत्तरी भाग, कनाडा का उत्तरी पश्चिमी भाग और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की उत्तरी पश्चिमी रियासतें।



चित्र नं० ९—साइबेरिया-तुल्य प्रदेशों का वितरण—दक्षिणी गोलार्द्ध में इस प्रदेश का नितांत अभाव है।

यद्यपि ऊंचाई के अनुसार जलवायु में विभिन्नता पाई जाती है फिर भी इन प्रदेशों की जलवायु सर्वत्र ही विषम है। वनस्पति यहाँ के वन हैं जिन में स्प्रूस, फर डगलस, लार्च आदि मुलायम लकड़ी वाले सदाबहार वृक्षों की अधिकता है।

इन वनों में खनिज सम्पत्ति भी पाई जाती है परन्तु खान खोदने के उद्यम में विशेष उन्नति नहीं हुई है। केवल कनाडा में ही थोड़ा-बहुत खान खोदने का काम होता है। नदियों के मैदानों में सिंचाई द्वारा खेती की जाती है। फिर भी एशिया में शिकार करना और उत्तरी अमरीका में लकड़ी काटना ही यहाँ के लोगों का प्रमुख धंधा है।

४ शीत कटिबंधीय अथवा ध्रुवीय प्रदेश

शीत शीतोष्ण कटिबन्ध के उत्तर में पृथ्वी के चारों ओर ध्रुव प्रदेश का विस्तृत क्षेत्र फैला हुआ है। इस प्रदेश के तीन विभाग हैं—(१) टैगा (Taiga) *अथवा शीत-वन-प्रदेश,* (२) टुण्ड्रा (Tundra) *अथवा हिमाच्छादित समतल* भूमि, (३) हिमाच्छादित उच्च प्रदेश (The Polar Highland) साधारणतया इन भागों की जलवायु कैसी होती है इसका ज्ञान नीचे दी हुई तालिका से हो जायगा।

स्पिट्सबर्जन—ध्रुव प्रदेशीय—अक्षांश ८२° उत्तर, देशान्तर १४ १४° पूर्व ऊंचाई ५७ फीट।

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	३ ७°	१ ४″	जुलाई	४१ ७°	० ६″
फरवरी	–२ ४°	१ ३″	अगस्त	४० १°	० ९″
मार्च	–१ ५°	१ १″	सितम्बर	३२ २°	१ ०″
अप्रैल	७ ५°	० ९″	अक्तूबर	२१ ६°	१ २″
मई	२३ २°	० ५″	नवम्बर	१० ९°	१ ०″
जून	३५ ४°	० ६″	दिसम्बर	६·१°	१ ५″
वार्षिक		ताप—१८°		वर्षा—१२″	

१. टैगा प्रदेश—शीत शीतोष्ण प्रदेश से लगा हुआ उत्तर में शीत वन प्रदेश फैला हुआ है। यहाँ की शीतऋतु अत्यन्त लम्बी व कठोर होती है—दिन छोटे और रातें

बडी होती है। गर्मी का मौसम छोटा और ठंडा होता है। इस में दिन लम्बे और रातें छोटी होती है। पाइन,फर,लार्च तथा अन्य कोणधारी वृक्षो की बहुलता है परन्तु जलवायु तथा यातायात की कठिनाई के कारण इन वनो की काठसम्पत्ति का सम्यक् उपयोग नही हो सका है। इन वनो में कोमल रोम वाले पशुओ की भी अधिकता है। ससार में बहुमूल्य फर का अधिक भाग इसी प्रदेश से प्राप्त होता है। कृषि असभव तो नही परन्तु विकसित ही नही हुई है। शिकार करना और फर वाले पशुओ को फसाना ही लोगो का मुख्य उद्यम है। इसी कारण जनसख्या भी कम है। पालतू पशुओं में रेनडियर (बारहसिंघा) ही महत्वपूर्ण हैं। और अलास्का में बहुत पाये जाते हैं।

२. टुण्ड्रा प्रदेश—टैगा प्रदेश के उत्तर में एक पट्टी-सी फैली हुई है और यूरेशिया और अमरीका के उत्तर में ध्रुवीय वृत्त में स्थित है। यहाँ का तापक्रम टैगा प्रदेश से भी न्यून है। वर्ष में दस महीने तक भूमि वर्फ से ढकी रहती है और इस लिये किसी प्रकार की भी खेती बिल्कुल असभव है। गर्मी की ऋतु में जब कुछ समय के लिये वर्फ पिघलती है तो घास व काई आदि पौधे शीघ्रता से उग आते है। ऐलास्का और उत्तरी कनाडा के ध्रुवीय मैदानो में रेनडियर, केरिबाऊ और कस्तूरी बैल बडी सख्या में पाये जाते है। सील, वालरस और ह्वेल मछलियो की भी बहुलता है।

टुण्ड्रा ससार का सब से विशाल और निर्जन शीत मरुस्थल है, जनसख्या बहुत थोडी है। प्रतिवर्ग मील में एक मनुष्य से अधिक की औसत नहीं है। जीवकोपार्जन के साधनो के अभाव से निवासी खानाबदोश है। भोजन और वस्त्र की आवश्यकताएं अधिकतर पशुओं से ही पूरी हो जाती है। मास इनका भोजन है और खाल से ये लोग वस्त्र बनाते है। मनुष्य सरल प्रकृति के पर रूढिवादी होते है। जीवन कठिनाईपूर्ण होने से लोग बौद्धिक-उद्यम करने में असमर्थ है। जाडे में कोई कार्य ही नही हो सकता और यहा के लोग कुत्ते को पालते हैं जिस से यातायात का भी काम लेते है। टुण्ड्रा का कोई विशेष आर्थिक महत्व नही है फिर भी ऐसा ख्याल किया जाता है कि इस प्रदेश में कुछ खनिज पदार्थ हैं, जिनको अभी तक छुआ तक नही गया है। इस प्रकार टुण्ड्रा कठिनाई व अभाव के प्रदेश है।

३. हिमाच्छादित उच्च प्रदेश (The Polar Highlands)—उत्तरी अलास्का, उत्तरी ग्रीनलैंड ऐन्टार्टिका, कमच्छटका और इसके समीपवर्ती देशो में तापक्रम साल भर इतना कम रहता है कि वहाँ कोई वनस्पति ही नही उग सकती। इस समस्त प्रदेश पर बर्फ की मोटी चादर की गहराई १००० से ३००० फीट तक है। हिम की इस मोटी तह से हिम शिलाखडो (Ice-bergs) का जन्म होता है, जो समुद्र पर बहते-बहते काफी दूर तक चले जाते हैं। यहाँ पर न कोई रह सकता है और न कोई उद्यम ही सभव है।

प्रश्नावली

१ भूमध्यसागरीय जलवायु से आप क्या समझते हैं ? इसके कारणों को समझाते हुए इसकी तुलना मानसूनी जलवायु के प्रदेशों से कीजिये और प्रत्येक प्रदेश की मुख्य उपज का विवरण दीजिये।

२ 'मानसून' का क्या अर्थ है ? भारत के आर्थिक जीवन पर मानसूनी हवाओं का क्या प्रभाव पड़ता है ? समझा कर लिखिये।

३ प्राकृतिक प्रदेश से आप क्या समझते हैं ? भूमण्डल को कितने प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ? संसार का चित्र बना कर दिखलाइये।

४ निम्नलिखित विशेषताओं के कारण बतलाइये

(१) भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेशों में वर्षा जाड़े में होती है।

(२) शीतोष्ण कटिबन्ध के मैदानी भागों में सभ्य मनुष्यों का निवास है।

५ उष्ण-कटिबन्ध में स्थित प्रमुख मरुस्थलों का विवरण दीजिये और बतलाइये कि उनसे व्यापार की कौन-कौन वस्तुएं प्राप्त होती हैं।

६ "भारतीय मानसून के समान व्यापक अन्य कोई जलवायु का अंग नहीं है," इस उक्ति को समझाइये।

७. मानसूनी जलवायु से आप क्या समझते हैं ? इस प्रकार के प्रदेशों की मुख्य उपज का वर्णन कीजिये।

८ स्टेप प्रदेशों की जलवायु व वनस्पति की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

९ भूमध्यरेखीय वन-प्रदेशों के विषय में एक लेख लिखिये।

१० मानसूनी जलवायु के प्रदेशों में जनसंख्या के घनत्व का क्या कारण है ? समझा कर लिखिये।

११. शीतोष्ण वन प्रदेशों की जलवायु और वनस्पति उष्णवन प्रदेशों की जलवायु व वनस्पति से किस प्रकार भिन्न है ? यह भी बताइये कि शीतोष्ण-वन-प्रदेश अधिक महत्व-पूर्ण क्यों है ?

१२. शीतोष्ण प्रदेशों के घास के मैदान और उष्णकटिबन्ध के वन प्रदेशों का आर्थिक महत्व क्या है ? भारत, अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका से उदाहरण देते हुए समझा कर लिखिये।

१३ यूरोप के उदाहरण लेते हुए निम्नलिखित प्रकार की जलवायु के प्रदेशों की विशेषताएं बतलाइये :

(१) द्वीपीय जलवायु (Insular Climate)

(२) भूमध्यसागरीय जलवायु (Mediterranean Climate)

(३) महाद्वीपीय जलवायु (Continental Climate)

१४ उष्णकटिबन्ध में पाये जाने वाले विविध प्रकार के वनों की विशेषताए बतलाइये और उनके वितरण के भौगोलिक कारण स्पष्ट कीजिये ।

१५ भूमध्यरेखा के १०° और २०° उत्तर व दक्षिण के प्रदेश में पाई जाने वाली जलवायु की दशाओ का वर्णन कीजिये ।

१६ भूमडल पर किन प्रदेशो में "वर्षा के जगल" पाये जाते हैं ? कारण देते हुए उनका वितरण समझाइये और बतलाइये कि आजकल उनका आर्थिक उपयोग क्या है ?

१७ मुख्य प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति के वितरण का भौगोलिक कारणो सहित विस्तार से निरूपण कीजियें ।

१८ मानसूनी वर्षा की क्या विशेषताए हैं और उनका मानव-जीवन पर क्या प्रभाव पडता है ? समझा कर उत्तर दीजिये ।

१९ भूमध्यरेखीय व मानसूनी जलवायु के प्रदेशों में क्या अन्तर है ? उनकी विभिन्न विशेषताओ का वहाँ के लोगों के जीवन पर क्या असर पडता है ? विस्तार में उत्तर दीजियें ।

२० पश्चिमी यूरोप-तुल्य जलवायु के प्रदेशों की मुख्य विशेषताए क्या है ? यह मनचूरिया या सेंट लारेंस-तुल्य प्रदेशो से किस प्रकार भिन्न हैं ? समझा कर उदाहरण सहित उत्तर दीजिये ।

२१ "एक ही अक्षांश में स्थित होने पर भी महाद्वीपो के पूर्वी व पश्चिम-तटीय प्रदेशो की जलवायु में बहुधा बड़ा अन्तर पाया जाता है," इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं । उत्तरी गोलार्द्ध के शीतोष्ण कटिबन्ध से उदाहरण देते हुए बतलाइये कि इस अन्तर का विभिन्न प्रदेशो के लोगो के जीवन व रहन-सहन पर क्या असर पड़ता है ?

२२ स्टेप देशो की भौगोलिक परिस्थितियो का वर्णन करिये, उनके स्थान बताइये, और उनके वर्तमान आर्थिक महत्त्व का अनुमान लगाइये ।

२३ उष्ण और शीत दोनो भाति की मरुभूमि के क्या विशेष लक्षण हैं ? उनका व्यापार पर क्या प्रभाव है ।

अध्याय : : तीन

कृषि-उद्योग (Agriculture)

कृषि का उद्देश्य—साधारणतया वनस्पति दो प्रकार की होती है। एक वह जो अपने आप ही उगती है और दूसरी वह जिस को उगाने के लिये मनुष्य को कुछ परिश्रम करना पड़ता है। मनुष्य के लिये धरती में वनस्पति उत्पन्न करने की क्रिया को कृषि-कार्य कहते हैं। विभिन्न प्रकार की फसलें और पौध उत्पन्न करना तथा धरती को सुधार कर या आवश्यकतानुसार सिंचाई द्वारा पानी पहुँचा कर उसकी उर्वरा शक्ति को बढ़ाना कृषि उद्योग के ही अंग हैं। कभी-कभी कृषि के साथ-साथ पशु-पालन का भी कार्य होता है। इस प्रकार के मिले-जुले काम को मिश्रित कृषि (Mixed Farming) कहते हैं। सच तो यह है कि उन सभी उद्योगों में जिन पर जलवायु एवं भूमि का निर्णयात्मक प्रभाव पड़ता है, कृषि-उद्योग सब से महत्वपूर्ण है।

कृषि-सम्बन्धी कुछ समस्यायें—अनुकूल परिस्थितियों के होते हुए भी अन्य सहायक साधनों के अभाव में कृषि-उद्योग लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता। यदि कोई प्रदेश मंडी से अधिक दूर है तथा उसमें यातायात की सुविधाओं का अभाव है तो खेती से वहाँ की स्थानीय माँग के पूरा होने के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। अतएव कृषि द्वारा अधिक लाभ उठाने के लिये मंडी का समीप होना तथा यातायात की सुविधाओं का होना अत्यावश्यक है। समीप होने से यह तात्पर्य नहीं कि उत्पादन क्षेत्र से मंडी निकट ही हो। सच तो यह है कि उत्पादन क्षेत्र से मंडी हजारों मील की दूरी पर हो सकती है, केवल यातायात की सुविधा होनी चाहिए। अर्जेन्टाइना में गेहूँ का उत्पादन यूरोप की मंडियों के लिये होता है और बंगाल में जूट का माल यूरोप और अमरीका के लिये उत्पन्न किया जाता है। इसलिये मंडी के पास होने का यह मतलब है कि कृषि-उत्पादन को मंडी में उचित मूल्य पर बेचने के लिये सभी प्रकार की सुविधाएं होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से अधिक व्यय अथवा सस्ती मजदूरी की भी बड़ी महत्वपूर्ण समस्या है। उत्पादन की कुछ वस्तुओं के लिये अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। इसलिये उन वस्तुओं की उपज के लिये सस्ती मजदूरी का होना बहुत आवश्यक है।

कृषि उत्पादन के विषय में एक महत्वपूर्ण बात और है कि धरती की उर्वरा शक्ति प्रत्येक फसल के बाद क्रमशः क्षीण होती जाती है। इसलिये प्रतिवर्ष उपज भी घटती जाती है। इस कमी को उत्तम खाद या फसलों के हेरफेर के द्वारा कुछ रोका जा सकता है। इसके अलावा भिन्न-भिन्न देशों में, कृषकों की कुशलता, वैज्ञानिक विधियों तथा अन्य कारणों से प्रति एकड़ उपज में भी भिन्नता हो जाती है।

खेती के ढंग—भूमि पर खेती की दो रीतियाँ हैं—(१) सघन खेती (Intensive Farming) और (२) व्यापक खेती (Extensive Farming)। जिन देशों में आबादी कम, उद्योग-धन्धे अवनत, व्यापार का अभाव और खेती से उत्पन्न वस्तुओं की माँग सीमित होती है वहाँ पर व्यापक खेती उपयुक्त होती है। इसके विपरीत सघन खेती में पूँजी तथा श्रम के द्वारा अधिक-से-अधिक उपज प्राप्त की जाती है। कृत्रिम साधनों द्वारा पानी निकाल कर तथा खाद डाल कर भूमि की उत्पादन-क्षमता में वृद्धि की जाती है। सघन खेती वहाँ पर की जाती है जहाँ कृषि से उत्पन्न पदार्थों की माँग अधिक हो और आबादी ज्यादा होने से भूमि कम। परन्तु इसका सब से अच्छा उपयोग प्रगतिशील देशों में ही सम्भव है।

भिन्न-भिन्न देशों में फसलों के उत्पादन की रीतियाँ भी भिन्न होती हैं। संयुक्तराष्ट्र में एक क्षेत्र में एक वर्ष में एक ही उपज पैदा की जाती है परन्तु जापान आदि अधिक घने हुए प्रदेशों में दो उपज उगाई जाती हैं। एक फसल कटने पर दूसरी बो दी जाती है। कहीं-कहीं एक ही क्षेत्र में वर्ष भर में कई फसलें उगाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त खेती की रीतियाँ जलवायु के अनुसार विभिन्न होती हैं। परन्तु तीन रीतियाँ मुख्य हैं।

१. सिंचित कृषि (Irrigation Farming)—उष्ण प्रदेशों के उन भागों में, जहाँ वर्षा की ऋतु नियत होती है वहाँ सिंचाई द्वारा खेती की जाती है। विशेषकर भारतवर्ष और चीन में। खेतों में पानी देने के लिये नहरें, कुएं, और तालाब खोदे जाते हैं। वनस्पति प्रदेशों के अनेक भागों में सिंचाई की ही कृपा से लाखों एकड़ बंजर भूमि लहलहाते खेतों में परिणत हो गई है।

२. आर्द्र कृषि (Humid Farming)—साधारण वर्षा वाले भागों में सिंचाई के बिना ही खेती की जाती है। इस प्रकार की खेती में वही फसलें उगाई जाती हैं जो प्राकृतिक वर्षा के सहारे उग सकती हैं।

३. शुष्क कृषि (Dry Farming)—संसार के कुछ प्रदेशों में वर्षा भी कम होती है और सिंचाई की सुविधाएं भी नहीं हैं। वे वर्ष भर शुष्क रहते हैं। जो थोड़ी बहुत जलवृष्टि होती है, उसी पर वह प्रदेश निर्भर रहते हैं। शुष्क कृषि-विधि सब से पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका के उन प्रदेशों में अपनाई गई है जहाँ वर्ष भर में २० इंच से भी कम वर्षा होती थी और सिंचाई के साधन भी उपलब्ध नहीं थे। इस प्रकार की खेती में ये विशेषतायें होती हैं

(अ) धरती को गहरा जोतते हैं, (ब) वर्षा के जल पर नियंत्रण रखने के लिये खेतों में क्यारियाँ व नालियाँ बना देते हैं, (स) धरती की नमी बनाये रखने तथा खर-पतवार को नष्ट करने के लिये बीज बोने से पहले बार-बार पाटा (Harrow) चलाते हैं।

कृषि का वितरण—सारे संसार के लिये खाद्यान्न और उद्योग धंधों के लिये कृषि से प्राप्त कच्चे माल की पूर्ति पृथ्वी के धरातल के केवल ७ ५ प्रतिशत भाग से ही हो जाती है। और दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि समस्त भूमंडल की कृषियोग्य भूमि का तीन-चौथाई भाग उन १५ देशों के भागों में स्थित है जहाँ संसार की ६२ प्रतिशत जनसंख्या का निवास है।

उन १५ देशों की कृषि योग्य भूमि का वितरण निम्नलिखित तालिका से ज्ञात हो सकता है—

देश	कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल (१००० एकड)	देश की समस्त भूमि में कृषि भूमि का प्रतिशतांश	कृषि योग्य भूमि प्रतिव्यक्ति के अनुसार (एकड़ों में)	समस्त संसार की कृषि भूमि का प्रतिशतांश
संयुक्तराष्ट्र	४ ३५ ०००	२२ ८	३ १३	१७ ६
सोवियत रूस	४ १४ ०००	७ ९	२ ४३	१६ ८
भारतवर्ष	३,८२ ६१०	३७ ९	९८	१५ ५
चीन (२२ प्रांत)	१,७७,७१८	१३ ८	२९	७ २
अर्जेन्टाइना	६४,३९५	९ ३	४ ५६	२ ६
कनाडा	६३,३८५	२ ९	५ २९	२ ५
जर्मनी	४९,९१८	४२ ८	७२	२ ०
फ्रांस	४९,३३८	३६ ३	१ २२	२ ०
पोलैंड	४७ २१९	४९ २	१ ४७	१ ९
स्पेन	४४,५५६	३५ ६	१ ६५	१ ८
ईरान	४०,७९५	१० २	२ ४७	१ ६
मंचूरिया	३८,३८६	११ ९	८९	१ ५
इटली	३५,६१०	४९ ९	७७	१ ४
आस्ट्रेलिया	३४,८६५	१ ७	४ ७१	१ ४
योग	१८,७७,७९५	—	—	७५ ८

मांग तथा पूर्ति का सम्बन्ध—अनेक कच्ची वस्तुओं की मांग तथा उनकी पूर्ति में सुव्यवस्था का प्राय अभाव रहता है। इसलिए कच्ची वस्तुओं के उत्पादन को नियमित करने की बड़ी आवश्यकता है। कच्ची वस्तुओं के उत्पादन को नियमित करने का उद्देश्य और प्रभाव मूल्य को उचित स्तर पर लाना है।

कृषि की विविध फसलें

(अ) खाद्य फसलें (Food crops)

१ खाद्यान्न (Cereal crops)—गेहूँ, चावल, मक्का, राई, जौ, जई, ज्वार, बाजरा।

२ पेय फसलें (Beverage crops)—चाय, कहवा, कोको, तम्बाकू।

३ अन्य फसलें (Other crops)—गन्ना, चुकन्दर, आलू, मसाले, फल, तरकारी आदि।

(ब) व्यावसायिक फसलें (Commercial crops)

१ कपास, जूट, सन, पटसन।

२ विविध फसलें—रबर, तिलहन।

(अ) खाद्य फसलें (Food crops)—१ खाद्यान्न (Cereal crops)

१ गेहूँ (Wheat)—यह श्वेत जाति के लोगों के भोजन की प्रधान वस्तु है। इसको पीसकर आटा व मैदा बनाया जाता है। इसका भूसा पशुओं को खिलाने व पशुशालाओं में बिछाने के काम आता है। इसके भूसे से पट्ठा (गत्ता) और लपेटने का बादामी कागज भी बनता है।

उपज की दशायें—गेहूँ का पौधा घास की जाति का होता है। यह लगभग तीन फीट ऊँचा होता है। पौधे की जड़ से अनेक सीधे तने व नाल निकलते हैं और इनके छोर पर अनाज की बालियाँ लगती हैं। साधारणतया यह पौधा शीतोष्ण कटिबन्ध की उपज है। इसकी उत्पत्ति के लिए उचित जलवायु की आवश्यकता होती है। शुरू में इसके लिए काफी नमी और शीत की आवश्यकता होती है परन्तु बाद में शुष्क उष्ण और साफ मौसम लाभकारी होता है। हाँ, पकने से कुछ समय पहले थोड़ी जलवृष्टि सहायक होती है। परन्तु पकते समय मेघ-रहित—स्वच्छ उज्ज्वल प्रकाश चाहिए। इसलिए गेहूँ अधिकतर उन्हीं प्रदेशों में उत्पन्न होता है, जहाँ ३० इंच से अधिक जलवृष्टि नहीं होती है।

गेहूँ की सर्वोत्तम उपज के लिये मिट्टी भारी, गहरी और खूब उपजाऊ होनी चाहिए। इसकी विस्तृत और व्यापक खेती के लिए समतल भूमि सर्वोत्तम होती है।

भूमि और जलवायु के अलावा कुछ अन्य बातें भी आवश्यक होती हैं। आर्थिक परिस्थितियों का भी असर पड़ता है और इधर कुछ शताब्दी से आर्थिक साधनों द्वारा गेहूँ की उपज में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो गया है। फार्म की मशीनें, वैज्ञानिक विधियाँ तथा यातायात की सुविधाओं के कारण मध्य उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका और आस्ट्रेलिया जैसे अल्प-संख्या वाले प्रदेशों में गेहूँ की उपज में तीव्र उन्नति हो गई है। परन्तु आर्थिक साधनों का स्तर सभी देशों में समान नहीं है और न सभी देशों में उनका आधार ही समान होता है।

उपज के क्षेत्र—संसार के प्रमुख गेहूँ उत्पादक क्षेत्रों में गेहूँ की उपज का अन्दाज नीचे दी हुई तालिका से स्पष्ट हो जायगा। इसमें प्रति एकड़ की पैदावार बुशलों में दी गई है और एक बुशल ३२ सेर के बराबर होता है

चित्र न० १०— गेहूँ [redacted] वितरण—ध्यान देने योग्य [redacted] यह है कि इसकी उपज की सीमा ६०° उत्तरी अक्षांश [redacted] है ।

देश	१९३५-३९ का औसत	१९४७ का औसत
अर्जेन्टाइना	१४	१४
आस्ट्रेलिया	१३	१७
कनाडा	१२	१४
सयुक्तराष्ट्र	१३	१९
फ्रास	२३	१६
हगरी	२२	१३
इटली	२२	१७
रूमानिया	१६	—
रूस	१२	११
चीन	१५	१६
भारत	११	९

ससार के भिन्न-भिन्न देशो की भौगोलिक स्थिति में भिन्नता होने के कारण प्रत्येक मास में किसी-न-किसी देश में गेहू कटता ही रहता है। इस कारण से और दूसरे ससार के यातायात के साधनों में उल्लेखनीय विकास हो जाने के कारण ससार की सभी मंडियो में गेहू का मूल्य आमतौर से समान ही रहता है।

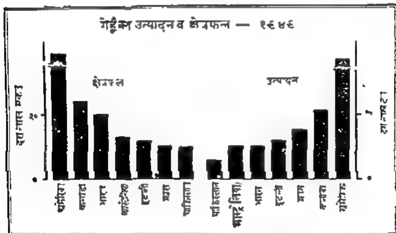
भिन्न-भिन्न प्रदेशो में गेहू की कुल उपज की मात्रा भी विभिन्न होती है। गेहू की उत्पत्ति के विचार से भिन्न-भिन्न देशो की तुलनात्मक स्थिति निम्नलिखित है। इसके आकडे (लाख) बुशल में दिये गये हैं। सन् १९४९-५० में गेहू की कुल उपज ५७ ७५० लाख बुशल के लगभग थी और अलग-अलग देशो की उपज नीचे दी हुई तालिका से स्पष्ट हो जायेगी

भिन्न-भिन्न देशों में गेहूँ का उत्पादन

देश	१९३५-३९	१९४९-५०
अर्जेन्टाइना	२,२२०	१,७५०
आस्ट्रेलिया	१,७००	२,५००
कनाडा	३,१२०	३,४१०
सयुक्तराष्ट्र	७,५९०	१४,०७०
फ्रास	२,८८०	१,५००
इटली	२,७९०	२,०५०
रूस	१३,७१०	८,७५०
भारत	३,८२०	२,९८०
हगरी	८८०	४००
रूमानिया	१,४१०	—
चीन	७,१५०	९,०५०

संसार के भिन्न २ भागों में गेहूँ बोने व काटने का समय

देश	उपज	बोने का समय	काटने का समय
अर्जेन्टाइना	१	अप्रैल से अगस्त	नवम्बर से जनवरी
आस्ट्रेलिया	१	अप्रैल से जून	अक्तूबर से जनवरी
कनाडा	२	(१) अगस्त सितम्बर (२) अप्रैल मई	(१) जुलाई-अगस्त (२) अगस्त-सितम्बर
रूस	२	(१) अगस्त से नवम्बर (२) मार्च से मई	(१) जुलाई-सितम्बर (२) अगस्त-सितम्बर
संयुक्तराष्ट्र	२	(१) सितम्बर-अक्तूबर (२) अप्रैल से मई	(१) मई से जुलाई (२) अगस्त-सितम्बर
भारत	१	अक्तूबर से सितम्बर	मार्च से मई
पाकिस्तान	१	अक्तूबर से दिसम्बर	मार्च से मई



चित्र सं० ११

संसार के गेहूँ उत्पन्न करने वाले राष्ट्र दो वर्गों में विभक्त हैं। एक तो केवल घरेलू उपभोग के लिए गेहूँ की फसल पैदा करते हैं और दूसरे घरेलू मांग को पूरा करने के साथ २ विदेशों को निर्यात भी करते हैं।

गेहूँ का व्यापार—रूस, चीन, भारतवर्ष जैसे घने बसे हुए भागों में गेहूँ की उपज बड़ी महत्वपूर्ण है। पर आबादी अधिक होने के कारण समस्त उपज की खपत देश में ही जाती है। कनाडा, आस्ट्रेलिया और अर्जेन्टाइना आदि कम बसे हुए देशों का १९३९ के पहले गेहूँ के ८२ प्रतिशत व्यापार पर अधिकार था। यद्यपि ये तीनों देश मिलाकर

समार की समस्त उपज के केवल १२ प्रतिशत गेहू ही उपज करते है।

दूसरे महासमर के बाद गेहू के व्यापार मे कुछ परिवर्तन हो गया है। यूरोप की मडियों म अब अमरीकन गेहू की अधिक माग है। शान्तिकाल में बल्गारिया, रूमानिया, हगरी और सोवियत रूस मे गेहू की पैदावार जरूरत से ज्यादा होती थी और ये देश यूरोप की मडियो में गेहू की माग की पूर्ति करते थे। परन्तु युद्धकालीन विनाश के कारण ये देश अभी तक भी उत्पादन की युद्धपूर्व अवस्था को प्राप्त नही कर सके है। आस्ट्रेलिया और अर्जेन्टाइना मे गेहू निर्यात की मात्रा घट गई है। फलत अब समार में गेहू निर्यात करने वाले देशो में सयुक्तराष्ट्र सर्वप्रथम है। नीचे दी हुई तुलनात्मक तालिका से यह बात स्पष्ट हो जायेगी।

गेहूं का निर्यात (दस लाख मीट्रिक टनो में)

देश	१९४८-४९	१९४९-५०	१९५०-५१
अर्जेन्टाइना	१ ६५	२ ४२	२ ८१
आस्ट्रेलिया	३ ८२	३ १३	३ ४६
कनाडा	६ ०४	६ ४३	६ १४
सयुक्तराष्ट्र	१३ ८०	८ ६५	१० २५

सन् १९५०-५१ में गेहू के विश्व निर्यात का ५१ प्रतिशत गेहू केवल सयुक्तराष्ट्र अमरीका ने निर्यात किया। बाकी ४९ प्रतिशत का ब्योरा इस प्रकार है—कनाडा ३३ प्रतिशत, अर्जेन्टाइना ११ प्रतिशत, आस्ट्रेलिया १३ प्रतिशत और सोवियत रूस से ३ प्रतिशत।

ग्रेट ब्रिटेन मे सबसे अधिक गेहू आयात होता है। ससार की मडियो में आने वाले गेहू के ४० प्रतिशत से भी अधिक भाग इस देश में मगाया जाता है।

गेहू के मुख्य उपज क्षेत्र और उनकी दशायें—

(अ) सयुक्तराष्ट्र अमरीका—सयुक्त राष्ट्र में सबसे अधिक गेहू उत्पन्न होता है। कसास, उत्तरी डकोटा, नेब्रस्का, ओकलामा, इल्लिनाय, वाशिंगटन, मिसौरी, मिनेसोटा, ओहिओ गेहू के उत्पादन की दृष्टि से मुख्य रियासतें हैं। १९४२ में केवल १०,००० लाख बुशल पैदा हुआ था परन्तु इसके विपरीत १९४७ में १४,००० लाख बुशल से भी अधिक गेहू उत्पन्न हुआ। सन् १९५० मे समस्त सयुक्तराष्ट्र अमरीका में २८० लाख टन गेहू उत्पन्न हुआ। यह मात्रा १९३९ की उपज से ९० लाख टन अधिक थी। उत्तरी डकोटा और कन्सास के प्रदेश अलग-अलग २५०० लाख बुशल से भी अधिक गेहू उत्पन्न करते हैं। उत्तरी डकोटा और मिनेसोटा के मध्य कनाडा की रेड रिवर की घाटी है। इसमें गेहू की इतनी अधिक उपज होती है कि इसे 'ससार की रोटी की डलिया' (Bread basket of the world) कहते हैं।

मिनियापोलिस, ड्यूलथ, शिकागो और बफैलो गेहूं के मुख्य केन्द्र हैं। पहले प्रशान्त महासागर की तटीय रियासतें भी गेहूं उत्पादन में प्रमुख थी परन्तु फल उत्पादन अधिक लाभप्रद होने के कारण, गेहूं का उत्पादन कम कर दिया गया है। इस क्षेत्र के विषय में ध्यान देने योग्य बात यह है कि संयुक्त राष्ट्र में कनाडा से १३ गुनी ज्यादा जनसंख्या है और इसलिए इसकी निर्यात प्रगति सदैव वैसी नहीं रह सकती जैसी आजकल है।

(ब) **सोवियत रूस** में संसार का सबसे अधिक गेहूं उत्पन्न होता है। रूस में गेहूं का उत्पादन क्षेत्र यूक्रेन की काली मिट्टी वाले भाग तक ही सीमित नहीं रहा है। उत्तरी रूस पश्चिमी साइबेरिया, पूर्वी साइबेरिया और ओरेनबर्ग प्रदेश में भी गेहूं की खेती होने लगी है। रूस में मशीनों के प्रयोग और एकचक (Collective) खेतों में कार्यक्षमता को सुविधाओं के कारण गेहूं का क्षेत्र विस्तार काफी बढ़ गया है। काले सागर पर स्थित ओडेसा और खरसन से गेहूं का निर्यात होता है। मास्को, गोरकी और ओरेनबर्ग गेहूं के अन्य क्षेत्र व केन्द्र हैं।

(स) **कनाडा**—कनाडा भी संसार के प्रमुख गेहूं उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। यद्यपि लड़ाई के दिनों कनाडा में गेहूं का उत्पादन कम हो गया था परन्तु इसका कारण यह था कि वहां के लोग व सरकार गेहूं की अपेक्षा युद्ध-सम्बन्धी धन्धों को अधिक ध्यान देने लगे थे। फलत १९४३ में कनाडा की कुल उपज केवल ३००० लाख बुशल थी जबकि १९४२ में ६००० लाख बुशल उत्पन्न हुआ था। लेकिन यह कमी केवल कुछ समय के लिए ही थी। सन् १९५० में कनाडा में १३० लाख टन गेहूं उत्पन्न हुआ। उत्पादन में इस वृद्धि का महत्व उस समय स्पष्ट होता है जब हम देखते हैं कि सन् १९३९ में कुल ७० लाख टन उपज हुई थी। मेनिटोबा, सस्केचवान, अलबर्टा तथा ओन्टेरियो गेहूं के प्रधान क्षेत्र हैं। विनिपेग और पोर्ट आर्थर गेहूं उत्पादन के प्रमुख केन्द्र हैं। इधर कुछ दिनों से मेनिटोबा और सस्केचवान में भूमि की उत्पादन क्षमता कम हो गई है। उधर रेल यातायात की सुविधा हो जाने से पश्चिमी भागों को आना-जाना सरल हो गया है। इसलिए गेहूं उत्पादन क्षेत्र हट कर पश्चिम में अलबर्टा में प्रमुख रूप से हो गया है। आबादी कम होने से यहां का गेहूं अधिकतर निर्यात कर दिया जाता है। ८८ प्रतिशत से अधिक गेहूं यूरोप की मंडियों को भेजा जाता है और इसमें का लगभग ६० प्रतिशत भाग अकेला ब्रिटिश द्वीपसमूह ही ले लेता है। कनाडा से गेहूं के मुख्य निर्यात-केन्द्र निम्नलिखित हैं —

न्यूयार्क	— ४० प्रतिशत	हैलीफैक्स	—	२० प्रतिशत
वैनक्यूवर	— २५ प्रतिशत	सेंटजान	—	
मान्ट्रियल	— १५ प्रतिशत	पोर्टलैंड	—	

(द) **भारतवर्ष**—भारत में पूर्वी पंजाब, मध्य प्रदेश और बरार, मध्य-भारत, बम्बई और बिहार राज्यों में गेहूं बोया जाता है। पाकिस्तान में सिंध, पश्चिमी पंजाब, उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश में ९० लाख एकड़ भूमि पर गेहूं की खेती होती है।

संसार की समस्त उपज का दसवां भाग पाकिस्तान व भारत में उत्पन्न होता है और गेहूं के उत्पादन में इसका चौथा स्थान है। भारतवर्ष में गेहूं घरेलू उपयोग के लिए ही बोया जाता है और दूसरी लड़ाई के बाद से तो भारत काफी मात्रा में गेहूं का आयात करता है। फिर भी भारत का गेहूं लड़ाई के पहले अन्तर्राष्ट्रीय मण्डियों में काफी असर डालता था। जब कभी भी थोड़ा बहुत गेहूं निर्यात हो जाता था, अन्तर्राष्ट्रीय मंडी के भाव पर प्रभाव पड़ जाता था।

यद्यपि संसार की बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ २ उपभोग में भी वृद्धि होती जा रही है परन्तु सफल खेती प्रणाली व मशीनों द्वारा उत्पादन की उन्नत विधियों और साइबेरिया, चीन और दक्षिणी अमरीका के कुछ क्षेत्रों में बेकार भूमि को उपयोग में लाने से गेहूं की उपज इतनी अधिक बढ़ गई है कि उपभोग से उपज अधिक हो गई है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि आस्ट्रेलिया में लगभग २००० लाख एकड़ भूमि गेहूं के उत्पादन के योग्य है। कुछ भी हो आस्ट्रेलिया, रूस, चीन और दक्षिणी अमरीका में गेहूं की उपज के विकास के लिए पर्याप्त अवसर है।

सन् १९४९ में वाशिंगटन में "विश्व गेहूं समिति" (World Wheat Conference) का अधिवेशन हुआ जिसमें आयात करने वाले राष्ट्रों को गेहूं की भर-सक मांग पूर्ति का आश्वासन दिलाने के लिए और निर्यात करने वाले देशों को संसार की मांग का यथोचित भाग देने के लिए एक स्वीकृति-पत्र लिखा गया। यह पत्र संसार के ३६ आयात करने वाले और ५ निर्यात करने वाले देशों के बीच एक चारसाला व्यापारिक समझौता है। निर्यात करने वाले देश है—कनाडा, सयुक्तराष्ट्र आस्ट्रेलिया फ्रांस और युरुगुवे। अभी तक रूस और अर्जेन्टाइना इसमें सम्मिलित नहीं हुए हैं। निर्यात करने वाले इन देशों ने प्रतिवर्ष ४५६० लाख बुशल गेहूं निर्यात करने का वादा किया है। इनमें प्रत्येक का भाग क्रमश: नीचे की तालिका में स्पष्ट हो जायेगा—

कनाडा—२०३० लाख बुशल, सयुक्तराष्ट्र अमरीका—१६८० लाख बुशल; आस्ट्रेलिया ८०० लाख बुशल, फ्रांस—३० लाख बुशल—युरुगुवे—२० लाख बुशल।

राई—गेहूं के बाद इसका महत्व है। इसका पौधा पहले पहल साइबेरिया में पाया गया और इसीलिए अन्य अनाज के पौधों की अपेक्षा यह अधिक उत्तर में भी उगाया जा सकता है। एशिया और यूरोप में बहुत समय से—सैकड़ों वर्षों से—यह सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न रहा है। इससे जिन (Gin) शराब भी बनाई जाती है। इसके भूसे और सूखी नालों से घोड़ों के कालर, चटाई, टोकरी, गद्दे और टोप बनाये जाते हैं।

उपज की दशायें—विशेष कर यह ठंडे और आर्द्र भागों का पौधा है। यह उपजाऊ व अनुपजाऊ सभी प्रकार की भूमि पर उगाया जा सकता है। सोवियत रूस, जर्मनी, पोलैण्ड, रूमानिया, हालैण्ड, स्कैंडिनविया, हंगरी, ब्रिटिश द्वीपसमूह, सयुक्तराष्ट्र

अमरीका, अर्जेन्टाइना और कनाडा इसके मुख्य उपज क्षेत्र हैं।

उत्पादन क्षेत्र व व्यापार—समस्त ससार की उपज का ५० प्रतिशत उपज रूस में होता है। ससार की कुल उपज का छठवा हिस्सा जर्मनी में होता है। वास्तव में इसकी उपज घरेलू उपभोग के लिए होती है और इसमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार बहुत कम है। फिर भी सयुक्तराष्ट्र अमरीका, कनाडा, अर्जेन्टाइना अपनी सीमित उपज का बहुत बड़ा भाग निर्यात कर देते हैं। स्केन्डिनेविया और अन्य यूरोपीय देशो मे भी जहा इसकी उपज अधिक होती है वहा से इसको निर्यात कर दिया जाता है।

जौ (Barley)—यह भी एक खाद्यान्न है। इसकी रोटी बनाई जाती है और पशुओ, घोडो तथा सुअरो को खिलाने के काम आता है। इसकी सहायता से रसीली वस्तुओ जैसे खीर आदि को गाढा किया जाता है। इससे बीयर (Beer) और ह्विस्की (Whisky) नामक शराब भी बनाई जाती है।

उपज की दशायें—इसके पौधे का रूपरंग व उगाने का ढग बहुत कुछ गेहू से मिलता-जुलता है। यह कई प्रकार का होता है। कुछ प्रकार का जौ गर्मशीतोष्ण प्रदेशों में और कुछ प्रकार का उत्तरी प्रदेशों में जहा और कोई अन्न नही उग सकता, उगाया जाता है। परन्तु साधारणत यह भूमध्यसागरीय जलवायु में अच्छा उगता है।

उत्पादन क्षेत्र—ससार में जौ की समस्त उपज गेहू की एक-तिहाई है और कुल उपज का आधा भाग यूरोप मे उत्पन्न होता है। विभिन्न उत्पादन क्षेत्रो मे रूस का स्थान सर्वप्रथम है और ससार की समस्त उपज का एक-तिहाई भाग रूस मे ही होता है। सन् १९३९ के बाद के वर्षों में रूस की उपज के आकडे अज्ञात है। सन् १९३९ मे रूस की २१० लाख एकड भूमि पर जौ की खेती होती थी और यूक्रेन व उत्तरी काकेशस इसके लिये विशेष महत्वपूर्ण थे। रूस मे जौ की प्रति एकड उपज २१ बुशल थी।

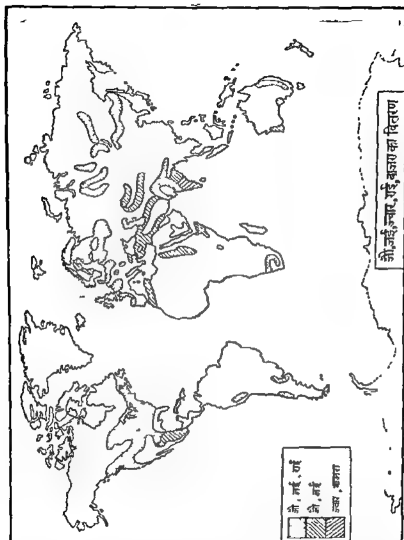
सन् १९४४-४६ में जौ का विश्वव्यापी उत्पादन

(दस लाख बुशल)

सोवियत रूस	—	जर्मनी	१०५
सयुक्तराष्ट्र	२६९	भारत	११५
चीन	३०७	अन्य देश	१२८५

सन् १९५०-५१ में जौ का कुल उत्पादन ४६४० लाख मीट्रिक टन से कुछ अधिक ही था। रूस, सयुक्तराष्ट्र और चीन का प्रमुख उत्पादन क्षेत्रो में क्रमश महत्वपूर्ण स्थान है।

उपज व व्यापार—विभिन्न उत्पादन क्षेत्रो मे उपज के तरीके अलग २ हैं। इसीलिए उपज प्रति एकड भी विभिन्न है। डेनमार्क में उपज सबसे अधिक—प्रति एकड में २६५६ पौंड होती है। जर्मनी, ब्रिटेन और जापान भी बहुत अधिक पीछे नही हैं। फ्रास, सयुक्त राष्ट्र, हगरी, चीन, कनाडा और पोलैण्ड में उपज प्रति एकड १००० और १२०० पौंड तक है। भारत, रूस और रूमानिया में प्रति एकड उपज बहुत कम



चित्र नं० ११. जौ, राई, ओट और ज्वार-बाजरे का वितरण

है—केवल ५०० से ८०० पौंड तक। वास्तव में जौ की प्रति एकड़ उपज भूमि, नमी, बीज की किस्म और उगाने के तरीकों पर निर्भर रहती है। कनाडा के प्रत्येक प्रान्त में जौ उत्पन्न किया जाता है, पर मनीटोवा और आन्टेरियो में सब से अधिक जौ पैदा किया जाता है।

रूमानिया, सयुक्तराष्ट्र अमरीका, रूस, अर्जेन्टाइना, पोलैंड, कनाडा और ईराक जौ का निर्यात करने वाले मुख्य देश हैं । ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, हालैंड, बेल्जियम और फ्रास का स्थान आयात की दृष्टि से क्रमश महत्वपूर्ण है। ब्रिटिश साम्राज्य म कनाडा निर्यात करता है और ग्रेट ब्रिटेन आयात । इसके आयात-निर्यात व्यापार का अनुमान नीचे दी हुई तालिका से लग जायेगा ।

जौ का निर्यात (१९३९)		जौ का आयात (१९३९)	
अर्जेन्टाइना	१२ ४ प्रतिशत	ग्रेट ब्रिटेन	३१ ४ प्रतिशत
रूमानिया	११ ३ ,,	बेल्जियम	१५ ९ ,,
कनाडा	१० ७ ,,	जर्मनी	१० ९ ,,
रूस	१० ३ ,,	हालैंड	१० १ ,,
सयुक्तराष्ट्र	७ ८ ,,	फ्रास	६ ४ ,,
ईराक	७ ६ ,,		

जई (Oats)—यह ससार का सब से विस्तृत उपज वाला खाद्यान्न है । परन्तु अधिकतर इसे घरेलू उपयोग के लिये ही उगाया जाता है और अत र्राष्ट्रीय व्यापार में इसका कोई विशेष महत्त्व नही है । प्रधानत इसका उपयोग जानवरो व घोडो को खिलाने में होता है पर मनुष्य भी खाते हैं ।

उपज की दशायें—जई के लिये ठडी व तर जलवायु की आवश्यक्ता होती है । इसीलिये इसकी खेती यूरोप और उत्तरी अमरीका के उत्तरी अक्षाशो मे अधिक होती है । इसका वार्षिक उत्पादन लगभग गेहू के बराबर है । निम्न तालिका मे इसकी उपज व वितरण का अनुमान हो सकेगा :—

जई के वार्षिक उत्पादन का औसत
(लाख टनो मे)

सयुक्तराष्ट्र अमरीका	१८१	फ्रास	
सोवियत रूस	११२	पोलैंड	
जर्मनी	६६	ग्रेट ब्रिटेन	
कनाडा	६०		
		कुल वि	

सन् १९५०-५१ में जई का कुल उत्पादन
सन् १९३८ मे समस्त विश्व की जई कुल ४५

उपज क्षेत्र व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—
उत्पन्न की जाती हैं । इसमें अन्तर्राष्ट्रीय
चिली को छोड कर प्राय सभी अन्य
हैं । फिर भी पिछले थोडे दिनो से
जई को पर्याप्त मात्रा में विदेशी
ब्रिटेन, इटली, स्वीटजरलैंड

चित्र नं० १३. चावल के उत्पा
चावल का विभाजन



चावल (Rice)—चावल संसार की आधी जनसंख्या का मुख्य भोजन है। भारत में इससे एक प्रकार की शराब भी बनाई जाती है और चीन जापान में अनेक प्रकार के मादक पदार्थ बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है। इसके पुआल व डंठल से चप्पलें, हैट और विभिन्न प्रकार की अनेक वस्तुए बनाई जाती है। इसके भूसे को गद्दे तकिये भरने व सामान सुरक्षित रूप से भेजने में प्रयोग करते है। इसको सीमेंट में मिलाकर ध्वनि निरोधक दीवालें (Soundproof walls) बनाने में उपयोग करते हैं।

उपज की दशायें—चावल का पौधा यो तो कई प्रकार की भूमि पर उग सकता है परन्तु सब से अनुकूल भूमि दोमट मिट्टी होती है। इसमे जडों का पूरा विकास हो सकता है। साथ २ अगर नीचे की परत भारी चिकनी मिट्टी की हो जिसमें पानी इकट्ठा हो सके तो और भी अच्छा है। उच्च तापक्रम और भारी वर्षा के प्रदेशों में यह खूब बढ़ता है। उगने व बढ़वार के समय तापक्रम ७५° से कम नहीं होना चाहिए। ४५ इंच से कम वार्षिक जलवृष्टि के प्रदेशो में चावल नहीं बोया जा सकता है। इसे दलदली दशायें चाहिए और उपज के काल मे यदि अधिकतर भाग में पानी भरा रहे तो और भी अच्छा है। अतः चावल के उत्पादन के लिये नदियो द्वारा लाई हुई मिट्टी से बनी हुई घाटियों व डेल्टा प्रदेशों की समतल भूमि सब से अच्छी रहती है।

चावल के प्रकार और उगाने के तरीके—साधारणतया चावल उपज की रीति व दशाओं के अनुसार निम्नलिखित दो प्रकार का होता है—

(१) उच्च भूमि का चावल (Hill rice), (२) दलदली निचली भूमि का चावल (Swamp rice)। उच्च भूमि के चावल को दलदली भूमि के चावल की अपेक्षा कम पानी की आवश्यकता होती है और जहा पानी काफी बरसता है वहा बिना सिचाई के यही चावल उगाया जा सकता है। इसे अक्सर पहाडी चावल भी कहते है। पहाडी चावल की ... एकड़ उपज आमतौर से दलदली चावल की उपज की आधी होती है। इसीलिये प... ...होता है और कम उगाया जाता है। दलदली चावल को उपज का... ...चाहिए और इसी लिये समतल भूमि में सिचाई की सुविधा ... ...ही उगाया जाता है।

उच्च भूमि का चाव...

उष्णकटिबन्धीय अमरीका

पूर्वी व दक्षि...

उपज के क्षे...

कोरिया, फारमोसा, ...

मिस्र इटली, स्पेन, म...

प्राकृतिक बाधाओं के...

...को...

...वा आ...

...दि...

...क्षि...

...ध्रुव...

...ट्रेलि...

...चीन और...

...इतरापु और ब्राजी...

...ारण चावल के उत्पादन...

...तथा इसके समीप के द्वीपो, ...दि निवासी उत्पन्न करते है। ...ये बहुत उपयुक्त हैं। ...शिया, इन्डोचीन, स्याम, ...द की खेती प्रधान है। ...ी बहुत खेती होती है। एशिया की अपेक्षा



चित्र नं० १३. चावल के उत्पादन का वितरण—इसका प्रधान प्रदेश दक्षिणी पूर्वी एशिया है।

बहुत काफी पीछे हैं। केवल भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेशों में गर्म व तर मैदानो पर चावल की खेती की अनुकूल दशायें पाई जाती है परन्तु वहा भी सिंचाई की आवश्यकता रहती है। चावल के विश्व उत्पादन में इटली का भाग नगण्य है परन्तु इटली में चावल की प्रति एकड उपज बहुत अधिक है। इटली के उत्तरी प्रान्तो—पीड मान्ट, लम्बार्डी, वेनीशिया, इमिलिया और टस्कैनी—में नदी की घाटियो में चावल उगाया जाता है।

भारत और चीन ससार में चावल उत्पन्न करने वाले सब से महत्वपूर्ण देश है। यहा ससार का सब से अधिक चावल उत्पन्न होता है। वैसे तो सभी मानसूनी जलवायु वाले प्रदेशो में—जापान, इण्डोचीन, इन्डोनेशिया, स्याम, कोरिया और पूर्वी पाकिस्तान में चावल की उपज बहुत अधिक है पर भारत और चीन का इस क्षेत्र में विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। सन् १९४८ में समस्त एशिया में चावल का कुल उत्पादन १३४० लाख टन था। निम्न तालिका से भिन्न भिन्न देशो मे चावल की उपज की मात्रा का औसत स्पष्ट हो जायगा—

भिन्न २ देशों में चावल का उत्पादन (औसत)
(हजार मीट्रिक टनो में)

क्षेत्र	१९३५-३९	१९५०	क्षेत्र	१९३५-३९	१९५०
भारत	२६,६४५	३२,०००	जावा	६,०८१	—
चीन	५०,०६५	—	इडोचीन	६,४९८	—
जापान	११,५०१	१२,००५	कोरिया	२,७२६	२,६३५
बर्मा	६,७९१	५,४४०	पाकिस्तान	११,१६९	१२,५००
स्याम	४,३५७	६,०१८	सयुक्तराष्ट्र	९,५६	१,७२२
			ब्राजील	१,३६५	२,९९५

इधर कुछ दिनो से सोवियत रूस में चावल का उत्पादन बढ रहा है और अजरबेजान, उत्तरी काकेशिया, कजाक और सुदूरपूर्व के भागो में करीब पाच लाख एकड भूमि पर चावल की खेती की जा रही है। औसत प्रति एकड उपज भी काफी है—लगभग ४२ बुशल, परन्तु साधारणतया भिन्न-भिन्न क्षेत्रो में चावल की प्रति एकड उपज विभिन्न है जैसा नीचे दी हुई तालिका से स्पष्ट हो जायगा।

भिन्न २ देशों में चावल की प्रति एकड़ उपज
(पौंडो में)

क्षत्र	१९३६-३७	१९४६-४७	क्षेत्र	१९३६-३७	१९४६-४७
भारत	८६२	७७१	स्याम	९४९	७५६
चीन	१६५५	१५४९	इटली	२९४०	२४३१
जापान	२४५४	२०३०	सयुक्त राष्ट्र	१४८५	१३३४
बर्मा	९१८	६२४	मिश्र	२०३०	२०४०

चावल का व्यापार—भारत, चीन, जापान, पूर्वी पाकिस्तान, जावा तथा फिलीपाइन्स में आबादी अधिक होने से चावल का घरेलू उपयोग बहुत अधिक है। इस लिये उपज अधिक होने पर भी निर्यात के लिये चावल बचता ही नहीं है। इसलिये बर्मा, स्याम और इण्डोचीन जैसे कम बसे हुए भागो की उपज ससार की मडियो में व्यापार के लिये आती है।

प्रमुख निर्यात क्षेत्रो से चावल का निर्यात

(हज़ार टनो में)

क्षेत्र	१९३५-३९	१९५०	क्षेत्र	१९३५-३९	१९५०
बर्मा	३०१४	१,१९८	भारत	२६१	—
इन्डोचीन	१३६०	१२१	ब्राजील	५३	१५२
स्याम	१३३२	१,४८०	मिस्र	१०५	१७३
कोरिया	११०९	—	सयुक्तराष्ट्र	९०	४९२
फारमोसा	४६९	—			

द्वितीय विश्व युद्ध के विनाशकारी प्रभावो के कारण एशिया के अनेक देश अभी तक भी पर्याप्त मात्रा में चावल का निर्यात करने मे सफल नही हुए हैं। बर्मा और इडोचीन में राजनैतिक उथल-पुथल के कारण छोडी हुई भूमि पर अभी तक खेती फिर से शुरू नही की जा सकी है। इन्ही कारणो से उत्पादन व निर्यात दोनो ही दशाओ मे रुकावटे आती रही हैं। फिर भी स्याम मे अपेक्षत दशाए अधिक अनुकूल हैं।

चावल का आयात करने वाले प्रमुख देश भारत, मलाया, जापान, लका, फ्रास, चीन, इन्डोनेशिया और क्यूबा है।

चावल का आयात करने वाले प्रमुख क्षेत्र

(हजार मीट्रिक टनो मे)

क्षेत्र	१९५०	क्षेत्र	१९५०
भारत	३४४	क्यूबा	३०७
मलाया	४६५	जापान	५९६
लका	४५२	अन्य देश	१,४१९
इन्डोनेशिया	३३३		

चावल सम्बन्धी मुख्य समस्याएँ—आज की चावल समस्या द्विमुखी है। अल्पकालीन समस्या तो यह है कि चावल की उपज को शीघ्र बढाया जावे ताकि चावल खाने वाली जनसख्या को भूख का शिकार न होना पडे और चावल की माग व पूर्ति मे अधिक अन्तर न रहे। सन् १९४८-४९ में धान (बगैर साफ किये हुए) चावल का विश्व उत्पादन १४५० लाख टन था परन्तु फिर भी लडाई के पहले के उत्पादन की अपेक्षा यह २९ लाख टन कम था। इसी कालान्तर में जनसख्या की वृद्धि पर ध्यान दिया जाय तो यह

कमी बड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है। चावल का उपभोग करने वाले प्रदेशों में सन् १९३९ तक दस वर्षों के भीतर लगभग १० करोड़ की वृद्धि हो गयी। फलतः युद्ध के पहले के उपभोग में अब भाग दस प्रतिशत बढ़ गई है। दीर्घकालीन समस्या यह है कि जनसंख्या तो उत्तरोत्तर बढ़ रही है परन्तु उपज का स्तर बहुत कुछ स्थिर-सा है। अतएव उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जनसंख्या और बहुत कुछ स्थिर उपज में संतुलन स्थापित करना बड़ा ही आवश्यक है।

चावल सम्बन्धी इन्हीं समस्याओं को सुलझाने के लिये एशिया में चावल भोगी व उत्पादक राष्ट्रों की एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था स्थापित कर दी गई है। इस संस्था ने चावल के मूल्य व उपज भंडार पर नियंत्रण रखने और अन्तर्राष्ट्रीय वितरण के कार्यों को सम्भाल लिया है।

मक्का (Maize)—यह दक्षिणी अमरीका का आदि पौधा है और इस समय संसार के प्रमुख खाद्यान्नों में से एक है। इसका प्रयोग, शराब, मैदा, माड़ी व ग्लूकोज बनाने में अधिक होता है। इसमें मोटा करने का गुण होता है और इसकी उपज भी बहुत अधिक होती है इसीलिये इसे जानवरों को पालने व मोटा करने के लिये दिया जाता है। मनुष्य भी इसे बहुत रूप में खाते हैं। इसके भुट्टा, आटा या मैदा से बहुत से भोज्य पदार्थ तैयार किये जाते हैं।

उपज की दशाएं—मक्का को गेहूं की अपेक्षा अधिक तापक्रम चाहिए। गर्मी के मौसम का वर्षा भी इसके लिये काफी होना चाहिए। भूमि उपजाऊ और ऐसी होनी चाहिए जिसमें पानी न टिक सके। कोहरा हानिकर होता है। काफी धूप इसे लाभ पहुंचाती है। आठ इंच से कम वार्षिक जलवृष्टि के प्रदेशों में मक्का का पौधा मुश्किल से पनप पाता है। इसकी खेती के लिये सब से अनुकूल वर्षा की मात्रा २० इंच चाहिए।

उपज के क्षेत्र—संयुक्तराष्ट्र अमरीका में संसार का चार पंचमांश मक्का उत्पन्न होती है। अर्जेन्टाइना, रूस, रूमानिया, ब्राजील, यूगोस्लाविया, भारत, मैक्सिको और इटली उत्पादन की दृष्टि से क्रमशः महत्वपूर्ण हैं।

उत्पादन और निर्यात दोनों ही दृष्टिकोण से संयुक्तराष्ट्र अमरीका संसार का प्रमुख प्रदेश है। मिसौरी, इंडियाना, नेब्रास्का और ओहियो में मक्का को जानवरों के भोजन के काम में लाया जाता है। संयुक्तराष्ट्र का मांस व्यवसाय भी इसी क्षेत्र में केन्द्रित है और शिकागो, सेंट लुइस, इन्डियानापोलिस तथा सिनसिनाटी इस उद्योग के मुख्य केन्द्र हैं। उत्पादन की दृष्टि से अर्जेन्टाइना का दूसरा स्थान है। दक्षिणी अफ्रीका में भी मक्का की खेती एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है और पिछले चालीस वर्षों में इस ओर बड़ी तरक्की हुई है। भारत में मानव भोजन के लिये ही मक्का की खेती की जाती है।

मक्का का विश्वव्यापी उत्पादन

(लाख क्विन्टल में)

क्षेत्र	१९३४-३८	१९४८	क्षेत्र	१९३४-३८	१९४८
सयुक्तराष्ट्र	५३००	८३५०	इटली	३००	१९०
अर्जेन्टाइना	७९०	६१०	रूस	६६०	—
चीन	६२०	७७०	हगरी	२३०	१४०
रूमानिया	४००	१००	भारत	२१०	२२०
ब्राज़ील	५८०	५७०	इडोनेशिया	२००	—
यूगोस्लाविया	४८०	१५०	मेक्सिको	१७०	२३०
मचूरिया	३००	—	मिश्र	१६०	१४०

यूरोपीय देशो मे सन् १९४८ में उपज की कमी का कारण दूसरा महायुद्ध था। सन १९४० मे मक्का का विश्वव्यापी उत्पादन १२३०० लाख क्विटल था।

व्यापार—मक्का निर्यात करने वाले मुख्य देश सयुक्तराष्ट्र अमरीका, अर्जेन्टाइना, रूमानिया, यूगोस्लाविया और दक्षिणी अफ्रीका हैं। ग्रेट ब्रिटेन में मक्का का सब से अधिक आयात होता है और विशेष कर दक्षिणी अफ्रीका, सयुक्त राष्ट्र, अर्जेन्टाइना और रूमानिया से।

ज्वार-बाजरा (Millets)—मानसूनी जलवायु के प्रदेशों का मह प्रमुख खाद्यान्न है। मानव भोजन अथवा जानवरो के चारे के लिये इसे उगाया जाता है।

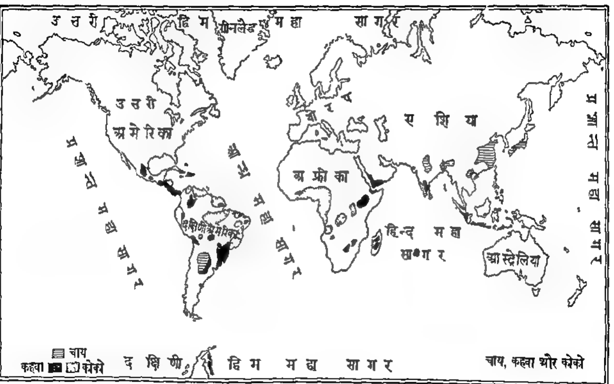
उपज की दशाऐं—यह विशेष कर उन गर्म देशो में उगता है जहा की वार्षिक वर्षा कम व अनिश्चित होती है। काफी शुष्क प्रदेशो में बिना सिचाई के भी इसे उगाया जा सकता है।

उपज के क्षेत्र व व्यापार—भारत, चीन, जापान, सयुक्तराष्ट्र व सूडान इसकी उपज के मुख्य क्षेत्र हैं। इस मे व्यापार कम होता है और प्राय स्थानीय उपभोग के लिये ही इसको उगाया जाता है। भारत मे मद्रास, बम्बई और हैदराबाद राज्यो की यह खास फसल है।

२. पेय पदार्थ (Beverage crops)

चाय (Tea)—यह एक सदाबहार वृक्ष की सुखाई हुई पत्तियो का नाम है। सभ्य जनता मे इसका प्रचार इतना लोकप्रिय हो गया है कि अब यह मनुष्य की आवश्यकताओ में से एक हो गई हैं। चीन, ग्रेट ब्रिटेन, रूस, हालैंड, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमरीका के लोग चाय के विशेष आदी हैं।

उपज की दशायें—चाय की खेती के लियें गहरी मिट्टी वाली उपजाऊ भूमि चाहिए। इसकी भूमि पर पानी नही टिकना चाहिए। इसी लिये ढालू भूमि सब से अच्छी



चित्र न० १४—विश्व में पेय पदार्थों का वितरण।

होती है और इसकी खेती विशेष कर पहाडो के ढालो पर या घाटियो की ढालू भूमि पर होती है। गर्मी के मौसम में कडी गर्मी अत्यावश्यक है।

यह तो हुई प्राकृतिक दशाओ की बात। चाय उत्पादन के लिये एक आर्थिक आवश्यकता भी जरूरी है—सस्ते मजदूर काफी सख्या म उपलब्ध होने चाहियें। चाय की पत्तिया को हाथ से ही तोडा जा सकता है। इसलिये काफी श्रम की आवश्यकता होती है। अतएव चाय की खेती उष्णकटिबन्धीय भागा में की जाती है जहा सस्ते दाम पर काफी मजदूर मिल सके या यू कहा जा सकता है कि ऐसे ही प्रदेशो मे चाय की खेती लाभप्रद होती है।

उपज के क्षेत्र—चीन, भारत लका जावा और जापान चाय उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश है। नैटाल और फिजी में भी कुछ चाय उगाई जाती है। चाय का निर्यात प्रधानत भारत लका, चीन जापान और फारमोसा मे होता है।

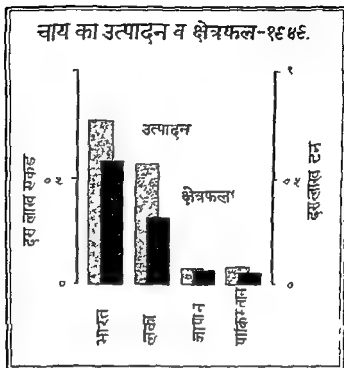
संसार में चाय उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश

(लाख पौंड में)

क्षेत्र	१९४८	१९४९-५०	क्षेत्र	१९४८	१९४९-५०
भारत	५७१०	५८००	अफ्रीका	३००	२८०
पाकिस्तान	४५०	४५०	जापान	९०	९०
लका	२९९०	२८००	फार्मोसा	२१०	२१०
इडोनेशिया	२८०	६००	चीन	३९०	३९०
			विश्वव्यापी उत्पादन	१०,४२०	१०,६२०

यद्यपि चीन मे सब से अधिक क्षेत्र में चाय की खेती होती है पर घरेलू उपभोग की मात्रा अधिक होने से निर्यात के लिये बहुत थोडी चाय बचती है। इस समय चाय का निर्यात करने वाला मुख्य देश भारत है जो कि ससार की माग का आधे से अधिक भाग पूरा करता है। भारत में चाय का मुख्य उत्पादन क्षेत्र उत्तर पूर्व मे उत्तरी बगाल और आसाम के पहाडी ढालो पर है। थोडी चाय, करीब पचमांश दक्षिण मे नीलगीरी की पहाडियों पर भी होती है। भारत में चाय की खेती की एक विशेषता यह है कि यहा अधिकतर बाग विदेशियो के हाथ में है। पूर्वी पाकिस्तान में भी कुछ चाय के बाग है जो सिल्हट व चिटागाव के प्रदेश मे सीमित है।

चाय के व्यापार की समस्याए—भारतवर्ष से सब से अधिक चाय निर्यात की जाती है। निर्यात करने वाले अन्य प्रमुख देश लका, पाकिस्तान और इडोनेशिया है। सन् १९४९-५० के प्रथम नौ महीनो में भारत से ३२२,९९७ हजार पौंड चाय बाहर भेजी गई है। भारत से चाय मगाने वाले प्रमुख देश ग्रेट ब्रिटेन, रूस, फास, सयुक्तराष्ट्र, कनाडा और आस्ट्रेलिया है। सन् १९४९-५० में लका ने २९७,२५९, पाकिस्तान ने ३४,००८ और इडोनेशिया ने ४७,२२७ हजार पौंड चाय निर्यात की।



चित्र न० १५

संसार में चाय वितरण का सबसे बड़ा केन्द्र लन्दन है और केवल ग्रेट ब्रिटेन में समस्त संसार को निर्यात का आधे से अधिक भाग खप जाता है। एशिया से निर्यात की गई चाय का एक-चौथाई भाग रूस को जाता है। इधर कुछ दिनों से रूस में चाय उगाने का प्रयत्न किया जा रहा है यद्यपि रूस में चाय का कुल उत्पादन बहुत कम है। रूस में चाय की वार्षिक खपत करीब ३० लाख पौंड है और वहाँ का कुल उत्पादन केवल कुछ हजार पौंड ही है। इसलिये इसे चाय बाहर से आयात करनी पड़ती है।

सन् १९२९ के बाद चाय का उत्पादन बहुत अधिक हुआ और इसीलिये चाय के दाम गिर गये। बड़ी-बड़ी फर्मों का दीवाला निकल गया और चाय के व्यवसाय को भारी धक्का लगा। अब सन् १९३२ में चाय के उत्पादन और निर्यात की मात्रा नियमित करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजना बनाई गई। वह योजना सन् १९३३ के अप्रैल मास से सन् १९३८ तक लागू रही और फिर सन् १९३८ से ऐसी ही दूसरी प्रतिबन्ध योजना ५ साल के लिये चालू कर दी गयी।

सन् १९३२ की योजना मे एक बडी कमजोरी यह थी कि इसमे चाय उत्पन्न करने वाले सभी देश सम्मिलित नही हुए थे। केवल भारत लका और इडोनेशिया पर ही इस के प्रतिबन्ध लगे। फलत इस योजना म भाग न लेने वाले देशों को एक फायदा हुआ। सन् १९३२ में ऐसे देशो से चाय का निर्यात समस्त विश्व का पष्ठाश था पर सन् १९३७ मे यही देश कुल निर्यात व्यापार का एक चौथाई हिस्सा निर्यात करने लगे। इस त्रुटि को दूर करने के लिये सन् १९४८ में एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय चाय समझौता हुआ जिसके सदस्य भारत, पाकिस्तान लका इडोनेशिया थे। यह समझौता दो साल के लिय हुआ था।

चाय की लोकप्रियता और खपत बढाने के वास्ते अन्तर्राष्ट्रीय चाय प्रसार सघ (Tea Expansion Board) विभिन्न देशो मे प्रयत्नशील है। केवल सयुक्त-राष्ट्र अमरीका में प्रति वर्ष प्रचार के लिये करीब १० लाख डालर खर्च किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप सयुक्त राष्ट्र में चाय की खपत बढ रही है। यही हाल कनाडा का भी है।

इधर कुछ दिनो मे सयुक्त राष्ट्र और कनाडा मे चाय का आयात बढ गया है। सन् १९५० में ११०० लाख पौड चाय सयुक्त राष्ट्र गई और इसी समय में कनाडा ने ४०० लाख पौड चाय आयात की। इन दोनों देशों मे रहन सहन का स्तर ऊचा होने से चाय की माग काफी बढ सकती है यदि ठीक तरह से प्रचार किया जाय। परन्तु प्रचार के कार्य मे कोको, कहवा तथा अन्य इसी प्रकार के पेय पदार्थ से स्पर्धा के कारण रुकावटे है। इन अन्य पेय पदार्थों की स्पर्धा के कारण सयुक्त राष्ट्र मे चाय की प्रति मनुष्य खपत बहुत कम है। फिर भी चाय की खपत बढने की सभावना है क्योकि सस्ती होने के कारण अभी भी बहुत अधिक लोग इस ओर आकर्षित होते है। अमरीका मे गर्म चाय की अपेक्षा बर्फ डाली हुई चाय की माग अधिक है। साधारणतया कहा जा सकता है कि चाय की माग बराबर बढ रही है।

इस समय चाय की माग की अपेक्षा उत्पादन बहुत कम है। लडाई के दिनो मे चाय की खेती को इडोनेशिया, जापान और फारमोसा मे काफी धक्का पहुचा। अभी तक ये देश युद्ध के पूर्व की स्थिति को नही पहुच पाये हैं। फलत भारतीय चाय की माग काफी बढ गई है परन्तु कहवा की खपत बढ जाने से चाय का भविष्य उतना उज्ज्वल नही रह गया है।

कोको (Cocoa)—यह दक्षिणी अमरीका का पौधा है। वहा से यह भूमध्यरेखीय आर्द्र प्रदेशो मे ले जाया गया और वहा के बागो मे बडा ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

उपज की दशाएं—कोको का पौधा ऊचा तापक्रम और भारी वर्षा चाहता है। इसके लिये गहरी उपजाऊ भूमि चाहिए। इसके लिये गहरी वर्षा या काफी दिनो तक

पानी की कमी दोनों ही हानिकर हैं। इसके पौधे को सूर्य की रोशनी से छाया और तेज हवा से रक्षा की आवश्यकता होती है। इसलिये भूमध्यरेखीय जलवायु के प्रदेश कोको की खेती के लिये सब से उपयुक्त हैं।

उपज के क्षेत्र—भूमध्य रेखा से २०° उत्तर और दक्षिण के भीतर के प्रदेशों में कोको की खेती होती है। गोल्डकोस्ट, नाइजीरिया, ब्राजील, ब्रिटिश पश्चिमी द्वीपसमूह और लंका कोको उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश हैं।

संसार के कोको उत्पन्न करनेवाले मुख्य प्रदेश

(हजार क्विंटल में)

	१९४६	१९३९		१९४६	१९३९
गोल्डकोस्ट	१९४०	२७४७	फ्रांसीसी कैमीरून्स	३५०	२३७
ब्राजील	१४०२	११००	ट्रिनीडाड	५४	२०१
नाजीरिया	—	६९५	इक्वेडर	१९२	१९७
फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका	—	५१८	स्पेनिश गायना	—	१४९
डामिनिकन प्रजातन्त्र	२८७	२८३	वेनीजुला	२७४	१४२

कोको के बाग प्रधानतः विदेशियों के हाथ में हैं यद्यपि पश्चिमी अफ्रीका में वहां के आदि निवासियों ने अपने आप बाग लगाये हैं।

गोल्डकोस्ट में कोको की बहुत बड़ी उपज होती है। संसार की मांग पूर्ति का बहुत बड़ा भाग गोल्डकोस्ट से आता है। यद्यपि यहां की भूमि व जलवायु अन्य देशों की तरह ही है परन्तु भूमि के कुशल प्रयोग तथा श्वेत पुरुषों के अनुभवी प्रबन्ध के कारण यह प्रदेश औरों की अपेक्षा विशेष प्रमुख हो गया है। यहां पर कोको को आय की प्रधान फसल चुन लिया गया है और इसीलिये इसकी ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस प्रदेश में कोको की खेती के इतना उन्नत होने के अन्य कारण हैं—इसका महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर स्थित होना और उपज के क्षेत्रों व बन्दरगाहों के बीच यातायात की सुविधाओं का वर्तमान होना। इन्हीं सब कारणों से यह प्रदेश इक्वेडर जैसे अन्य पुराने क्षेत्रों से अधिक उन्नति कर गया है।

व्यापार—इस समय संयुक्तराष्ट्र में कोको की सबसे अधिक खपत होती है। संसार की समस्त उपज का ४० प्रतिशत संयुक्तराष्ट्र को जाता है और बाकी उपज का अधिकतर भाग उत्तरी पश्चिमी योरोप के देशों में खप जाता है। स्पेन में कोको को मानव जीवन की आवश्यकताओं में गिना जाता है। स्विटजरलैंड और हालैंड में कोको का आयात चाकलेट (Chocolate) तैयार करने के लिये किया जाता है।

कोको के आयात निर्यात व्यापार का औसत
(हज़ार टनों में)

निर्यातक देश		आयातक देश	
गोल्डकोस्ट	२४०	संयुक्त राष्ट्र	२२०
ब्राजील	१००	जर्मनी	८०
नाइजीरिया	७०	ग्रेट ब्रिटेन	७०
डोमिनिका	२०	फ्रांस	५०
ट्रिनीडाड	३०	हालैंड	४०
वेनीजुला	२०		
इक्वेडर	१५		

कहवा (Coffee)—कहवा अबीसीनिया और अरब का आदि पौधा है। परन्तु अब इसका उत्पादन विभिन्न देशों में होने लगा है और संसार के विभिन्न भागों में इसका उपयोग भी बढ़ गया है।

उपज की दशाएं—कहवा के पौधे को उपजाऊ ढाल भूमि जिस पर पानी न टिक सके, गर्म जलवायु और मध्यम वर्षा की आवश्यकता होती है। इसीलिए इसके बाग उष्णकटिबन्ध में पाये जाते हैं। यद्यपि यह उष्णकटिबन्ध का पौधा है परन्तु अधिक गर्मी हानिकर होती है। ८६° से अधिक तापमान में इसकी उपज कम हो जाती है और फिर लम्बी गर्मियाँ भी यह सहन नहीं कर सकता। बाढ़ के समय जब इसका पौधा छोटा होता है तेज धूप से इसकी रक्षा करनी पड़ती है। इसलिये कहवा के बगीचों में केले के व अन्य छायादार वृक्ष लगाये जाते हैं। भूमि की आवश्यकतानुसार इसे उच्च पहाड़ियों व पहाड़ी ढालों पर उगाया जाता है जहां पानी के निकास के लिये नदियों की धारायें व जलप्रपात होते हैं।

कहवा के पौधे के लिये जलवृष्टि का बड़ा महत्व है। भूमध्यरेखीय प्रदेशों में साधारणतया पानी साल भर लगातार बरसता है परन्तु समुद्रतल से ऊंचाई के अनुसार शुष्क मौसम छोटा या लम्बा होता है। बीजों के बोने से लेकर फल आने तक इसे कम-से-कम ५०"-६०" वर्षा की आवश्यकता होती है। जहाँ इतनी वर्षा नहीं होती वहां सिंचाई द्वारा कमी पूरी की जाती है। जहां आवश्यकता से अधिक पानी गिरता है वहां पानी के निकास का प्रबन्ध करना पड़ता है।

कहवा के पौधे को पूरी तरह तैयार होने में कम से-कम ३ से ५ साल तक लगते हैं और फिर लगभग ३० साल तक इस पर फल आते रहते हैं। इस के फल के गूदे को हटा कर अन्दर की गिरी निकाल दी जाती है और इस गिरी के अन्दर की गुठलियों से कहवा प्राप्त किया जाता है।

कहवा उष्णकटिबन्धीय पौधा है और प्रधानत निर्यात के लिये उगाया जाता है।

माल को मंडी के लिये तैयार करने में हाथ से ही अधिक कार्य करना पड़ता है इस लिये सस्ते मजदूरों का बहु संख्या में उपलब्ध होना उसकी उपज के लिये सुविधाजनक होता है।

उपज के क्षेत्र—संसार के कहवा उत्पन्न करने वाले मुख्य देश ब्राज़ील, पश्चिमी द्वीपसमूह, मध्य अमरीका, वेनेजुला, कोलम्बिया, एंडीज़ के पठार, दक्षिणी भारत, लंका, इंडोनेशिया और अरब हैं। कई कारणों से कहवा की प्रति एकड़ उपज भिन्न भिन्न देशों में विभिन्न होती है। भूमि का उपजाऊपन, जलवायु की दशाएं, कहवा के पौधे की जाति, प्रकार और अन्य खेती के तरीके और माल को मंडी के लिये तैयार करने की रीति के अनुसार ही कहवा की उपज कम या ज्यादा होती है।

कहवा की औसत उपज प्रति एकड़
(पौंडों में)

ब्राज़ील	३६५.८	कीनिया	४७२.८
कोलम्बिया	५६७.१	डोमिनिकन	३५६.९
इन्डोनेशिया	६७०.८	मैडागास्कर	२३२
सैलवेडर	५५.३	बेल्जियन कांगो	२७६.६
वेनेजुला	५१७	अंगोला	४१०.४
गौटमाला	४४६.१	भारत	१९६.३
मेक्सिको	६१९.३	प्यूर्टोरिको	११६
क्यूबा	६४६.१		

अरब—मोका (Moka) नामक कहवा की जन्मभूमि व उपज क्षेत्र है। यह कहवा अपनी सुगंधि और स्वाद के लिये जगत्प्रसिद्ध है। अरब में सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में ऐबीसीनिया से कहवा का पौधा लाया गया। अरब की जलवायु अति गर्म व शुष्क होने के कारण कहवा की उपज के लिये अनुकूल दशाएं केवल एमन (Yemen) प्रान्त में ही पाई जाती हैं। यह प्रान्त पहाड़ी और यहाँ की जलवायु शीतोष्ण है। अतएव २००० फीट से लेकर ६,००० फीट तक की ऊंचाई तक पर्वतीय ढालों पर कहवा की खेती की जाती है। यहाँ पर प्रधान रूप से अरबी कहवा की ही उपज होती है जिसे मोका भी कहते हैं। यद्यपि यहाँ पर भूमि और जलवायु बहुत अनुकूल है परन्तु सिंचाई की कठिनाई, सर्वत्र सड़कों, भारी लगान और राज प्रबन्ध के कारण प्रति एकड़ उपज बहुत कम है। अतः निर्यात की मात्रा भी बहुत कम है।

ब्राज़ील—केवल ब्राज़ील में ही संसार का आधा कहवा उत्पन्न होता है और इस देश की समृद्धि यहाँ के कहवा पर ही निर्भर रहती है। अपनी उपजाऊ लावा भूमि के कारण साओ पोलो का प्रान्त इस के लिये विशेष रूप से उपयुक्त है। कहवा उत्पन्न करने वाले अन्य प्रान्त रियो डि जेनिरो, एस्पिरिटो और मिनास जरायस हैं। साओ पोलो का

प्रदेश संसार भर में अपने कहवा के लिये प्रसिद्ध है। यहां सन् १८०० में कहवा की खेती शुरू हुई पर उन्नीसवीं सदी के पिछले भाग में इसकी विशेष उन्नति हुई। साओ पोलो का भीतरी विशाल पठार बहुत ही विस्तृत है और कहवे की खेती के लिये बहुत उपयुक्त है।

एक ही उद्योग पर निर्भर रहने से लोगों के आर्थिक विकास में कितनी हानि हो सकती है इसका उदाहरण ब्राजील के कहवा उद्योग में मिल सकता है। सन् १८९७ में ब्राजील में कहवे की उपज बहुत अधिक हुई। फलतः दामों में भारी कमी हो गयी और कहवा की खेती करने वाले असंख्य किसानों को भारी नुकसान सहन करना पड़ा। दामों को उचित स्तर पर लाने के लिये ब्राजील सरकार को कुछ साहसपूर्ण कदम उठाने पड़े। इसने विशाल परिमाण में कहवा को खरीद लिया और जब तक दाम उचित स्तर को नहीं आये उस समय तक माल को रोके रही। फिर माल को धीरे-धीरे निकालना शुरू किया। उस समय से सरकार की ओर से इस प्रकार की नीति ब्राजील के कहवा व्यापार का एक अंग-सा बन गयी है।

भारत में कहवा उत्पन्न करने वाले मुख्य क्षेत्र मैसूर, मद्रास, कुर्ग, कोचीन, ट्रावनकोर और बम्बई हैं। इन में से कुछ क्षेत्रों में कहवा के स्थान पर चाय की खेती होने लगी है। भारत से कहवा फ्रांस और ब्रिटिश द्वीपसमूह को निर्यात किया जाता है।

कहवा उत्पादन करने वाले मुख्य प्रदेश
(सहस्र मिट्रिक क्विंटल)

ब्राजील	१२,५००	ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका	३८३
कोलम्बिया	२,६७०	हैटी	२५०
उत्तरी पूर्वी द्वीपसमूह	१०७१	क्यूबा	३२०
मेक्सिको	५००	कोस्टारिका	२४०
वेनेजुला	६५०	मैडागास्कर	३००
सेलवेडर	५४०	बेल्जियन कांगो	२३०
गेटेमाला	५५०		

सन् १९५०-५१ में विश्वव्यापी उत्पादन २१० लाख टन था।

कहवा का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कहवा का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। आनन्द विलास और शौक की वस्तुओं के व्यापार में चाय, तम्बाकू और शराब आदि मादक वस्तुओं की अपेक्षा कहवा का अधिक महत्त्व है। पिछले दो महायुद्धों के मध्यकाल में कहवे के उत्पादन और विक्रय को अधिक उपज के कारण बड़ा धक्का पहुंचा है। ऐसी विकट परिस्थिति को रोकने के लिये अनेक प्रयत्न किये गये। सन् १९४१ में अमरीकी देशों के बीच एक समझौता हुआ जिसके अनुसार अमरीका के कहवा

उत्पादक देशों को संयुक्त राष्ट्र के बाजार में नियमित व समान रूप से नय विक्रय की सुविधा प्रदान करने का आश्वासन दिया गया। सन् १९४३ में अखिल अमरीकी कहवा बोर्ड ने अपने सदस्य राष्ट्रों से आग्रह किया वे युद्धकालीन प्रभाव से पीड़ित देशों के लोगों के मध्य कहवा का प्रचार बढ़ाने की चेष्टा करें। सन् १९४६ में कहवा बोर्ड ने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करने के लिये विश्वव्यापी कहवा स्थिति की जाँच की।

कहवा उद्योग को सब से बड़ा धक्का दूसरे महायुद्ध से लगा। ब्राजील में लगभग २५ लाख एकड़ भूमि कहवा की खेती के लिए बेकार हो गयी। पूर्वी द्वीपसमूह पर जापानियों का कब्जा हो जाने से भी हानि हुई और अफ्रीका व ओसीनिया जैसे प्रदेशों में मजदूरी के प्रश्न से कहवा उद्योग को हानि पहुंची। यद्यपि ये सब कठिनाइयां अब खत्म हो चुकी हैं परन्तु अन्य कुछ समस्याएं अब भी बाकी हैं। कहवे के उपयोग के विकास व विस्तार में निम्नलिखित बाधाएं हैं—

(१) करोड़ों मनुष्यों के अन्दर रहन सहन के नीचे स्तर के कारण नय शक्ति का ह्रास हो गया है।

(२) यातायात के साधनों की कमी हो जाने से भाड़े की दर में अपेक्षत वृद्धि हो गई है।

(३) विनिमय दर और मुद्रा की अस्थिरता के कारण अनेक योरोपीय देशों में आर्थिक सन्तुलन का अभाव हो गया है।

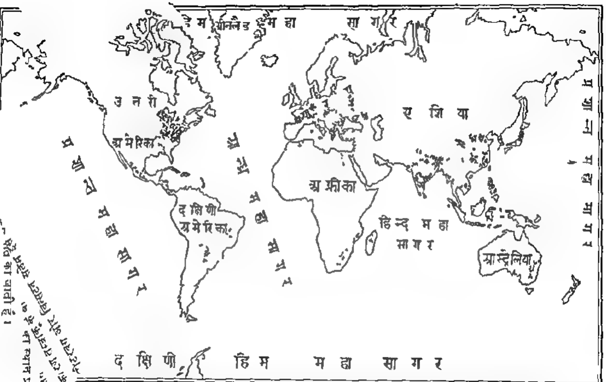
(४) विभिन्न देशों में, विशेषकर यूरोप में आयात के नियत भागों में सरकारी विरोधक नीति, चुंगी और देशीय करों के कारण कहवे के आयात वितरण और उपभोग को विशद धक्का पहुंचा है।

(५) चाय जैसी अन्य मादक वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा से भी कहवे को हानि हुई है।

(६) साथ २ सस्ते दामों की दूसरी इसी प्रकार की वस्तुएं निकल आने से भी कहवे को धक्का लगा है।

तम्बाकू (Tobacco) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से तम्बाकू एक महत्त्वपूर्ण पदार्थ है। उत्तरी अमेरिका के उष्णकटिबन्धीय भागों में उत्पन्न होने वाले एक पौध की पत्तियों से तम्बाकू बनता है। उष्णकटिबन्धीय पौधा होते हुए भी इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि संसार के सभी भागों में यह उगाया जाता है। भूमध्यरेखीय भागों, कनाडा, स्काटलैंड तथा उत्तरी पोलैंड तक में भी इसकी उपज होती है।

उपज की दशाएं—इसका पौधा चूना, वनस्पति का अंश तथा पोटाश मिश्रित हल्की भूमि में बहुत बढ़ता है। पाला इस के लिये बहुत हानिकर है। तम्बाकू की खेती व उसके बाद मंडियों के लिये तैयार करने में काफी मेहनत की आवश्यकता होती है। इसलिये सस्ते मजदूरों का पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होना नितान्त आवश्यक है।



चित्र नं० १६—तम्बाकू की खेती [illegible] वितरण—अनुकूल जलवायु के क्षेत्र का विस्तार ध्यान देने योग्य है।

...का स्थान प्रमुख है

...की जाती है।

उपज के क्षेत्र—संसार में तम्बाकू उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश संयुक्तराष्ट्र, भारत, चीन, रूस और जापान हैं। फिलीपाइन द्वीपसमूह, इंडोनेशिया, ब्राज़ील, पाकिस्तान तथा मध्य व पश्चिमी योरोप के देशों में तम्बाकू बहुत काफी होता है। संयुक्त राष्ट्र, सुमात्रा, क्यूबा, ब्राज़ील, बल्गारिया और तुर्की तम्बाकू का निर्यात करने वाले प्रमुख देश हैं। तम्बाकू का सब से अधिक आयात पश्चिमी योरोप में, विशेषकर ब्रिटिश द्वीपसमूह, जर्मनी और फ्रांस में होता है।

तम्बाकू का विश्वव्यापी उत्पादन

देशों के नाम	सहस्र एकड़ ज़मीन		लाख पौंडों में उत्पादन	
	१९३५-३९	१९४७	१९३५-३९	१९४७
उत्तरी अमरीका	१९६०	२२१०	१७१०	२४७०
कनाडा	६९	१२५	७७	११६
संयुक्तराष्ट्र	१८४७	१८४५	१४६०	२१०८
यूरोप	६८०	८००	६७५	७२०
बल्गारिया	९४	११४	७६	१०६
फ्रांस	४८	७२	७३	११५
इटली	८१	१४३	९५	१४३
रूस	४९०	—	५२५	—
एशिया	३७५०	३६७०	३२५०	३१५०
चीन	१२२८	१४७६	१२५५	१४३०
दक्षिणी अमरीका	३५५	४८०	३०५	४००
ब्राज़ील	२३७	—	२०३	२६५
अफ्रीका	२४५	३८५	१२५	२०३
दक्षिणी रोडेशिया	५०	१२४	२६	७९
दक्षिणी अफ्रीका	४१	—	२०	५१
ओशीनिया	१२	९	७	७
विश्व योग	७४९२	८०९२	६५९७	७३४१

संयुक्तराष्ट्र—तम्बाकू के उत्पादक देशों में सब से महत्वपूर्ण है। सन् १९४३ में संयुक्तराष्ट्र में कुल १३७२० लाख पौंड तम्बाकू पैदा हुई। उत्तरी कैरोलीना, केन्टकी वर्जीनिया, टनीसी, दक्षिणी कैरोलीना, जार्जिया, पेन्सल्वेनिया, विसकान्सिन और ओहियो राज्य तम्बाकू की खेती के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। सस्ते होने के कारण तम्बाकू के बागों में काले मजदूरों से काम लिया जाता है। लूमविले, रिचमान्ड, इसन्टिरदम और विन्सटन सलेम इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र हैं।

पश्चिमी द्वीपसमूह—क्यूबा की तम्बाकू अपनी उत्तम सुगन्धि के कारण जगत्प्रसिद्ध है और सिगार बनाने में विशेष कर इस्तेमाल की जाती है। हैवाना सिगार बनाने का सब से बड़ा केन्द्र है।

इंडोनेशिया—जावा सुमात्रा तथा अन्य द्वीपों पर काफी मात्रा में तम्बाकू उगाई जाती है। इन बागीचों का प्रबन्ध यूरोपीय निवासी करते हैं परन्तु मजदूर अधिकतर चीनी होते हैं। पिछले कुछ वर्षों में इंडोनेशिया में तम्बाकू की खेती ने इतनी उन्नति की है कि इस समय निर्यातक देशों में संयुक्तराष्ट्र के बाद इसका दूसरा स्थान है।

भारत—की मुख्य फसलों में तम्बाकू का स्थान है और संयुक्तराष्ट्र अमरीका के समान ही तम्बाकू का निर्यात किया जाता है। पाकिस्तान में भारत की एक तिहाई उपज होती है। निर्यातक देशों में ब्राजील का तीसरा स्थान है। बाहिया बन्दरगाह से ब्राजील की तम्बाकू बाहर भेजी जाती है। यूरोप में हंगरी बल्गारिया युगोस्लाविया और ग्रीस में तम्बाकू की खेती होती है।

ग्रेट ब्रिटेन में तम्बाकू की खपत बहुत अधिक है और संयुक्तराष्ट्र भारत सुमात्रा तथा फिलीपाइन द्वीपसमूह से तम्बाकू आयात की जाती है।

३—अन्य फसलें (Other Crops)

चीनी (Sugar)—खाद्य पदार्थों में सम्भवतः सब से व्यापक उपयोग की वस्तु चीनी है। समस्त चीनी केवल दो पौधों के रस से ही प्राप्त होती है—गन्ना (Sugarcane) और चुकन्दर (Sugar beet)। गन्ना उष्णकटिबन्ध का पौधा है और चुकन्दर समशीतोष्ण कटिबन्ध का।

गन्ना और उसकी उपज की दशाएं—गन्ना वास्तव में उष्णकटिबन्ध या उसके आसपास के प्रदेशों का पौधा है। इसकी उपज के लिये उच्च तापक्रम और भारी वर्षा की आवश्यकता होती है। भूमि पर पानी नहीं टिकना चाहिए तथा नमक व चूना मिला हो तो बहुत ही अच्छा है। इसलिये समुद्रतटीय प्रदेशों में इसकी उपज सर्वोत्तम होती है। बढ़वार के समय पौधे को अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है परन्तु फसल काटने के समय काफी मजदूरों की आवश्यकता होती है जो इसको काटकर, रस निकाल कर व चीनी तैयार कर के बाहर की मंडियों को निर्यात कर सकें।

उपज के क्षेत्र—गन्ना उत्पन्न करने वाले मुख्य देश भारत, क्यूबा, इंडोनेशिया, ब्राजील, हवाई मारीशस, फिलीपाईन द्वीपसमूह, डामिनिकन, ब्रिटिश गायना, फारमोसा, पोर्टोरिको और आस्ट्रेलिया हैं। मुख्य आयात करने वाले देश संयुक्तराष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन हैं। यद्यपि गन्ने से चीनी उत्पन्न करने वाले देशों में भारत का स्थान प्रमुख है फिर भी यहां काफी मात्रा में चीनी बाहर से आयात की जाती है।

सन् १९४०-४१ में गन्ने की विश्वव्यापी उपज

(लाख क्विंटल में)

भारत	३५०	पोर्टो रिको	८०
क्यूबा	२७०	आस्ट्रेलिया	७०
जावा	१६०	अर्जेन्टाइना	५०
ब्राजील	१२०	पीरू	४०
फिलीपाइन	९०	मारीशस	३०
हवाई	८०	संयुक्तराष्ट्र अमरीका	३०
फारमोसा	८०		

इसी साल में संसार में गन्ने से निकाली जाने वाली चीनी का कुल उत्पादन है १८०० लाख क्विन्टल था।

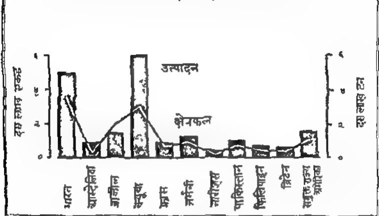
सन् १९१८ से पहिले संसार में चीनी का उत्पादन माग से कहीं अधिक होता था। इसीलिये सन् १९३७ में अन्तर्राष्ट्रीय चीनी संस्था बनाई गई जिसका ध्येय था कि अत्यधिक उत्पादन में होने वाली हानि से बचाव के उपाय निकाले जाय। संसार के सभी चीनी उत्पादक देशों ने इस संस्था में भाग लिया और यह प्रयत्न किया कि चीनी की मांग व पूर्ति में एक सामंजस्य उत्पन्न हो जाय और चीनी तथा गन्ना उत्पन्न करने वालों को पर्याप्त लाभ मिल सके। इस संस्था को पूरा अधिकार है कि यह विभिन्न देशों के लिये निर्यात की नियमित मात्रा (Quota) निश्चित करे। इस समय संसार में चीनी का कुल उत्पादन मांग से कम है क्योंकि गन्ने की चीनी तैयार करने वाले मुख्य देश फिलीपाईन, जावा, फारमोसा और युक्रेन अभी तक युद्धपूर्व के उत्पादन स्तर तक नहीं पहुंच सके हैं। दूसरे महायुद्ध ने इन देशों के आर्थिक संगठन को बिल्कुल ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। सन् १९४७-४८ में चीनी का कुल उत्पादन ३३० लाख टन था जबकि प्रत्येक टनभार छोटा था—केवल २००० पौंड का।

क्यूबा—चीनी का उद्योग क्यूबा में राष्ट्रीय आय का मुख्य साधन है। संसार की समस्त चीनी का १।८ वां हिस्सा क्यूबा से ही प्राप्त होता है। इस के मतलब यह है कि एक ही पदार्थ की उपज से उसके उत्पादन में अत्यधिक उन्नति व वृद्धि करके तथा उस में असीम पूंजी लगाकर यहां के निवासी सुखी व समृद्ध हो गये हैं। दूसरे महायुद्ध काल में चीनी उत्पादन बहुत बढ़ गया। सन् १९४१ में उत्पादन २७ लाख टन था पर सन् १९४७ में ६४ लाख टन हो गया। वास्तव में वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय चीनी व्यापार क्यूबा की उत्पादन शक्ति से बहुत कुछ सम्बद्ध है।

भारत का गन्ना उत्पादन में प्रथम स्थान है। वैसे तो गन्ने की खेती उत्तरी भारत में सभी जगह होती है परन्तु विशेषतया इसका उपज क्षेत्र गंगा नदी के मैदान के मध्य व

ऊपरी भागों तक सीमित है। पाकिस्तान में २५००० टन चीनी उत्पन्न होती है।

जावा के आर्थिक जीवन में चीनी व्यवसाय का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस व्यवसाय में अधिक लाभ के कारण किसानों ने गन्ने की खेती विस्तृत रूप से अपना



चित्र नं० १७

की है। इसी कारण जहां पहले चावल की खेती होती थी वहां अब गन्ने की खेती होने लगी है। वहां की सरकार भी इस बात की कड़ी देखरेख रखती है कि एक तिहाई भूमि से अधिक गन्ने की खेती में न लाई जाय। परन्तु जावा में चीनी की खपत अधिक नहीं है। इस लिये अपने उत्पादन के चार-पंचमांश भाग की खपत के लिए जावा को विदेशी मंडियों पर निर्भर रहना पड़ता है।

मारीशस भी चीनी के निर्यातक देशों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वास्तव में द्वीप के निवासी चीनी उद्योग की आय पर ही निर्भर रहते हैं। सिंचाई की सहायता से गन्ने की जाति व मात्रा दोनों में ही परिवर्तन हो गया है।

चुकन्दर (*Sugarbeet*)—संसार में चीनी के कुल उत्पादन का एक-तिहाई अंश चुकन्दर से प्राप्त होता है।

उपज की दशाएं—समशीतोष्ण जलवायु इसके अनुकूल है। इसके लिये उपजाऊ दोमट भूमि की आवश्यकता होती है जिसमें पानी न ठहर सके। चुकन्दर की फसल को बार बार उगाते रहने से भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है इसलिये इसके खेतों में बराबर खाद का प्रयोग होना बहुत जरूरी है। चुकन्दर का पौधा १६० से १७० दिन के भीतर बढ़कर तैयार हो जाता है पर पौधे में चीनी का अंश इस बात पर निर्भर

रहता है कि इसमें से कितने दिन तक सूर्य की रोशनी तेज रही व आसमान साफ रहा। यह महाद्वीपीय जलवायु के प्रदेशों में सब से अधिक उगता है जहां तापक्रम की विषमता रहती है परन्तु इसकी सफल उपज के लिये जलवृष्टि बहुत कम नहीं होना चाहिए।

उपज के क्षेत्र—चुकन्दर के मुख्य उपज क्षेत्र जर्मनी, रूस, फ्रांस, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, चैकोस्लोवाकिया और पोलेंड हैं। इनमें से जर्मनी, चैकोस्लोवाकिया और पोलेंड तो निर्यात भी करते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका ही एक ऐसा देश है जहां चुकन्दर और गन्ना दोनों ही उत्पन्न किये जाते हैं यद्यपि गन्ने से चीनी नहीं बनाई जाती। इसके अलावा संयुक्तराष्ट्र में उपज के दोनों क्षेत्र सीमित व एक दूसरे से काफी दूर हैं। चुकन्दर की खेती मुख्यतः मोन्टाना से दक्षिणी कोलेरेडो तक विस्तृत मैदानों में सिंचाई की सहायता से की जाती है। इडाहो (Idaho), यूटाह (Utah) और कैलीफोर्निया का समुद्रतटीय मैदान इसके उत्पादन के लिये विशेष उल्लेखनीय हैं।

चुकन्दर का उत्पादन
(लाख क्विन्टल में)

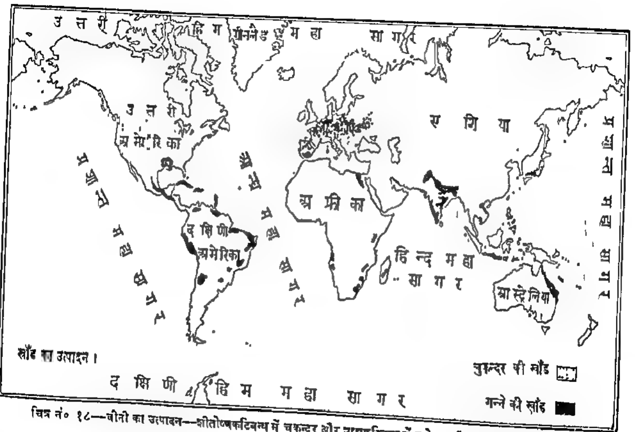
रूस	२४०	इटली	४०
जर्मनी	२१०	पोलेंड	४०
फ्रांस	९०	संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१५०
चैकोस्लोवाकिया	५०	विश्वव्यापी उत्पादन	१०५०
ग्रेट ब्रिटेन	५०		

सोवियत रूस का इस समय चुकन्दर उत्पन्न करने वाले सभी देशों में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस देश में करीब ३० लाख एकड़ भूमि पर चुकन्दर की खेती होती है। इस प्रकार समस्त संसार की चुकन्दर की उत्पादक भूमि का ३५ प्रतिशत केवल रूस में ही है। और संसार की कुल उपज का एक-चौथाई भाग यहीं से प्राप्त होता है। ट्रान्सकाकेशिया पश्चिमी साइबेरिया, दक्षिणी व मध्ययूरोपीय रूस इसके मुख्य प्रदेश हैं। हाल में चुकन्दर की खेती कजाक, कीरगिजिया और सुदूरपूर्व में भी फैल गई है। चुकन्दर की औसत उपज करीब ७ टन प्रति एकड़ है।

कुछ साल पहले संसार में चीनी की मंडियों में चुकन्दर की चीनी अधिक महत्त्वपूर्ण होती थी परन्तु आजकल गन्ने की चीनी से ही संसार की दो तिहाई मांग पूरी होती है। वास्तव में सच तो यह है कि चुकन्दर की अपेक्षा गन्ने की खेती सरल व प्रति एकड़ उपज अधिक होती है। गन्ना उष्णकटिबंधीय भागों में उत्पन्न होता है जहां सस्ते मजदूर आसानी से मिल जाते हैं। साथ-साथ चुकन्दर की खेती की कुछ लाभकारी विशेषताएं हैं। चुकन्दर उन प्रदेशों में पैदा होता है जहां आबादी घनी है, धन काफी है और अच्छे औजार व मशीनें आसानी से प्रयोग किये जा सकते हैं। इसके अलावा इसकी अवशिष्ट सामग्री तथा इससे प्राप्त अन्य उपज की आर्थिक महत्ता अधिक होती है।

चीनी का विश्वव्यापी उत्पादन
(हज़ार टनों में)

चुकन्दर से बनी चीनी	१९४७ ४८	१९४८ ४९	१९४९ ५०
जर्मनी	७७०	१२८३	१११०
चेकोस्लोवाकिया	३४५	६२५	७००
पोलैंड	५४१	६८२	८००
आस्ट्रिया	३६	८१	८०
फ्रांस	६५०	७५०	७२५
बेल्जियम	१३६	२५५	२५०
हालैंड	२१७	२८०	३८०
डेनमार्क	२२१	२६०	३००
स्वीडन	२८०	२८७	२७५
इटली	२३५	४४८	४६०
ग्रेट ब्रिटेन	४६३	६१५	४७५
सोवियत रूस	१५९५	१९५०	२३५०
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१६८८	११८०	१३००
कुल योग	७९४५	१० ०६५	१०,५५०
गन्ने से बनी चीनी—			
क्यूबा	५९६०	५१४६	४८००
सान डोमिंगो	४१५	४६०	४५०
मैक्सिको	६१०	७००	६२५
संयुक्तराष्ट्र	३३६	४३०	५००
हवाई	७४५	८५०	८५०
पोर्टोरिको	९८८	११४०	११००
फिलीपाइन	३५७	६४५	७००
ब्रिटिशगायना	१६४	१८४	१९०
पश्चिमी द्वीपसमूह	४४०	६१५	६५०
दक्षिणी अफ्रीका	४५७	५४४	५२०
आस्ट्रेलिया	६०५	९४४	९५०
मारीशस	३४५	३९०	४००
ब्राजील	१५३५	१५५०	१३५०
अर्जेन्टाइना	५९७	५५७	५७५
पीरू	४६५	४४०	४५०
भारत व पाकिस्तान			
सफेद चीनी	१३०५	१२७५	१३००
गुड़	१८५५	१८००	१८००
चीन	३५०	३८०	३५०
जावा	१००	२५०	२५०
फारमोसा	२८७	६२०	६००
कुल योग	१९०६७	२०,०६४	१९५५२



चित्र नं० १८—चीनी का उत्पादन—शीतोष्णकटिबन्ध में चुकन्दर और उष्णकटिबन्ध में गन्ने का वितरण ध्यान देने योग्य है।

आजकल कुछ आर्थिक व राजनीतिक कारणों से चुकन्दर का उत्पादन बढ़ाया जा रहा है। शीतोष्ण कटिबन्ध के अनेक देश जैसे जर्मनी व फ्रांस चीनी की आवश्यकता पूर्ति के लिये उष्णकटिबन्धीय प्रदेशों पर निर्भर रहना सुरक्षित नहीं समझते। इसके अलावा चुकन्दर से बनी चीनी के उद्योग से वहां के लोगों को जीविका मिलती है। अतः उन देशों ने आर्थिक सहायता, उदारता एवं संरक्षण कर द्वारा चुकन्दर उत्पादन को प्रोत्साहन दिया है। सामान्य दिनों में जर्मनी, रूस व फ्रांस चीनी के लिये आत्म निर्भर रहते थे पर ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्तराष्ट्र, इटली और जापान के साथ यह बात नहीं है।

फल (Fruits)—व्यापार की दृष्टि से महत्वपूर्ण वस्तु होने के कारण आजकल फल हर देश में ही उगाये जाने लगे हैं। पहले फलों की मांग केवल उत्पादक क्षेत्रों के समीपस्थ प्रदेशों तक ही सीमित थी क्योंकि अधिक दूर ले जाने या अधिक दिनों तक रखने से फल बिगड़ जाते थे। लेकिन यातायात के वेगशील साधनों तथा शीत भाण्डार रीति के आविष्कार से अब फल भिन्न-भिन्न स्थानों को भेजे जा सकते हैं। फलतः आजकल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में फल बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। व्यापार की दृष्टि से उष्ण व शीतोष्ण कटिबन्ध के फल बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उष्णकटिबंधीय फल—केला, आम, खजूर, अमरूद, अननास और तरबूज व खरबूजा उष्णकटिबन्ध के मुख्य फल हैं।

इन सब में केला विशेषरूप से महत्वपूर्ण है। बहुत से भूमध्यरेखीय प्रदेशों में लोगों का भोजन ही केले का फल है। आजकल इस की मांग शीतोष्ण प्रदेशों में भी बहुत बढ़ गई है। केले के पौधे को गर्मी और अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। इसलिये पश्चिमी द्वीपसमूह, मध्य अमरीका, दक्षिणी अमरीका के उत्तरी भाग, जमायिका, कोस्टारिका, कोलम्बिया, हण्डुरास, गेटेमाला में केला उत्पन्न किया जाता है और वहां से यूरोप व संयुक्त राष्ट्र को निर्यात होता है। सन् १९४९ में इन देशों से १४०लाख केले के गौर बाहर भेजे गये। संयुक्तराष्ट्र अमरीका में केले का सब से अधिक आयात होता है और संसार के कुल निर्यात का दो तिहाई भाग केवल इसी देश में आता है। पश्चिमी गोलार्द्ध से करीब ८५ प्रतिशत केला बाहर भेजा जाता है। बाकी १५ प्रतिशत अफ्रीका से प्राप्त किया जाता है। कोस्टा रिका, हण्डुरास, पनामा और गेटेमाला से संसार में निर्यात होने वाले कुल केलों का आधा भाग निर्यात किया जाता है। सन् १९४९ में निर्यात की गई केले की कुल मात्रा में से ६७ प्रतिशत उत्तरी अमरीका ने आयात किया, २४ प्रतिशत यूरोप ने और ८ प्रतिशत दक्षिणी अमरीका ने।

अननास को स्ट्रेट सेटलमेंटस, पश्चिमी द्वीपसमूह, फ्लोरिडा और स्याम में उगाते हैं। इस के पौधे को गर्मी में उच्च तापक्रम और पाले से रक्षा की आवश्यकता होती है। पोर्टोरिको, स्याम और स्ट्रेट सेटलमेंटस इस को निर्यात करनेवाले प्रधान देश हैं।

आम भी एक बड़ा स्वादिष्ट फल है पर इसका निर्यात व्यापार बहुत कम है। भारत की चेष्टाओं की फलस्वरूप इंग्लैंड और अन्य योरोपीय देशों में इसकी कुछ माग हुई है।

खजूर रेगिस्तान की उपज है और उत्तरी अफ्रीका, ईरान और उत्तरी पश्चिमी पाकिस्तान में उत्पन्न होता है। देश विदेश में इसकी काफी माग है और यह यूरोप व संयुक्तराष्ट्र में काफी मात्रा में आयात किया जाता है।

नारियल भी उष्णकटिबन्ध का फल है पर फल की अपेक्षा इसकी गिरी की माग अधिक है।

शीतोष्ण कटिबंधीय फल—यह फल दो प्रकार के होते हैं—गर्म शीतोष्ण कटिबन्ध के फल और ठंडे शीतोष्ण कटिबन्ध के फल।

भूमध्यसागरीय प्रदेश गर्मशीतोष्ण प्रदेश हैं। यहा की जलवायु की विशेषता यह है कि गर्मी का मौसम गर्म, सर्दिया हल्की और वर्षा जाड़े में होती है। इन क्षेत्रों में जैतून, अजीर अंगूर, खूबानी, नारंगी नीबू और बादाम खूब होती है। ये फल प्रधानतः रसीले होते है। सन् १९४९ में इस प्रकार के रसीले (Citrus) फलों का विश्वव्यापी उत्पादन १५२० लाख बक्स था जबकि प्रत्येक बक्स की तोल ८०-९० पौंड थी। सन् १९४९ में अंगूर के फल का विश्वव्यापी उत्पादन ४०० लाख बक्स था।

जैतून का फल खाने व तेल निकालने दोनों ही काम में आता है। यह एशिया माइनर का पौधा है और केवल भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेशों में होता है। जैतून को हाथ से चुना जाता है। इसलिये काफी संख्या में सस्ते मजदूरों की आवश्यकता होती है। जैतून को उत्पन्न करने वाले मुख्य देश स्पेन, इटली, ग्रीस, पोर्तगाल और ट्यूनिस हैं। जैतून का तेल साबुन बनाने में प्रयोग किया जाता है। इसको खाना पकाने, जलाने व दवाई बनाने में भी प्रयोग करते है। इटली, ग्रीस, ट्यूनिस और अलजीरिया से इसका निर्यात होता है।

अंगूर की उपज के वास्ते उपजाऊ, ढालू जमीन चाहिए जिस पर पानी न टिक सके। धूपदार गर्मी का मौसम इसके लिये बड़ा अनुकूल होता है। इसीलिये भूमध्यसागरीय जलवायु इस के लिये सब से ठीक रहती है। फ्रास, इटली, स्पेन, दक्षिणी रूस, अल्जीरिया, ग्रीस, पश्चिमी एशिया, कैलीफोर्निया अर्जेन्टाइना, केप आफ गुड होप, चिली और दक्षिणी आस्ट्रेलिया इस के मुख्य उपज क्षेत्र है। अंगूरों का विक्रय और निर्यात तीन रूपों में होता है—(१) ताजे फल, (२) सुखाकर मुनक्का के रूप में, (३) रस और मदिरा के रूप में।

सेब (Apples) अधिकतर संयुक्तराष्ट्र, कनाडा, उत्तरी अफ्रीका, दक्षिणी आस्ट्रेलिया, चिली तथा इंग्लैंड में उत्पन्न होता है परन्तु उत्पादन और निर्यात में संयुक्तराष्ट्र का स्थान सर्वप्रथम है।

सन्तरा भूमध्यसागरीय प्रदेश का प्रधान फल है। इसका उत्पादन उष्णकटिबन्ध तथा शीतोष्ण कटिबन्ध दोनों में ही होता है। सन्तरा उत्पन्न करने में प्रधान देश स्पेन है। केलिफोर्निया और इटली भी प्रधान उत्पादक देश है।

नींबू लगभग सभी प्रदेशों में उगाया जाता है परन्तु भूमध्यसागरीय प्रदेशों में इसकी उपज सब से अधिक होती है।

अन्य उष्णशीतोष्ण कटिबन्धीय फल जैसे खूबानी बादाम, अजीर इत्यादि की इनके उत्पादन क्षेत्रों से बाहर के देशों में काफी मांग रहती है।

ठंडे शीतोष्ण कटिबन्ध के फलों में सेब नाशपाती बेरी और आड़ू प्रमुख है। सेब कनाडा तस्मानिया न्यूजीलैंड आस्ट्रेलिया और नोवास्कोशिया में विशेषतया उगाये जाते हैं। ब्रिटिश द्वीपसमूह में भी अच्छी किस्म के सेब उगाये जाते हैं पर इनकी मात्रा बहुत कम होती है। ब्रिटिश कोलम्बिया, केलीफोर्निया और तस्मानिया में नाशपाती उगाई जाती है। आड़ू और अखरोट साईबेरिया में बहुत उगते है।

शीतोष्ण कटिबन्ध के शीत फलों के निर्यात के लिये संयुक्तराष्ट्र इटली टर्की, स्पेन, ग्रीस, ईरान और अलजीरिया प्रधान है। हाल में रूमानिया और तस्मानिया ने भी फलों का निर्यात शुरू कर दिया है।

मसाले (Spices)—बहुत ही प्राचीन काल से मसालों से व्यापार होता रहा है। इनसे केवल भोजन रुचिकर व स्वादिष्ट ही नहीं हो जाता बल्कि कई तरह का सुगन्धित तेल बनाने में भी इनका प्रयोग होता है। कई प्रकार के मसालों को उगाने के लिये उच्च तापक्रम व भारी वर्षा की आवश्यकता होती है।

उष्ण कटिबन्ध के विविध मसालों में काली मिर्च, अदरख, लौंग और दालचीनी का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है।

काली मिर्च (Pepper) अंगूर की बेल की भांति एक पौधे पर लगने वाला एक गोल व छोटा फल है। इस की विस्तृत खेती जावा, सुमात्रा, मलाया, बोर्निया थाईलैंड और भारत में मालाबार तट पर होती है। मंडियों में यह दो रूप में नजर आती है काली व सफेद। जब पूरे फल को पीस लेते है तो इसे काली मिर्च कहते है और जब ऊपर का छिलका उतार कर पीसते हैं तो सफेद मिर्च कहलाती है। ग्रेट ब्रिटेन संसार में सब से अधिक मिर्च मगवाने वाला देश है परन्तु वहां से यह फिर दूसरे देशों को भेज दी जाती है।

लाल मिर्च (Chilli)—उष्णकटिबंधीय अमरीका के एक पौधे का फल है। यह एक छोटी-सीफ सी होती है जिसे मंडी में लाने से पहले धूप में सुखा लेते है। यह एशिया, अफ्रीका और अमरीका के उष्णकटिबंधीय भागों में बहुत होती है।

अदरख (Ginger)—भूमि के नीचे पैदा होने वाले एक लाल पौधे का डण्ठल है जो दक्षिणी एशिया के देशों में बहुत पाया जाता है। इसे मंडियों में ताजा व

सुखाये दोनों ही रूपों में विक्रय किया जाता है। दक्षिणी अमरीका, पश्चिमी अफ्रीका, चीन, भारत और पश्चिमी द्वीपसमूह में इसकी विस्तृत खेती होती है।

लौंग (Cloves)—यह एक कोमल पौधे की अविकसित कलियाँ होती हैं। इनका प्रयोग न केवल भोजन बनाने में होता है बल्कि शराब बनाने व तेल निकालने में भी प्रयोग किया जाता है। इसके तेल को सुगन्धि के तरीके में प्रयोग करते हैं। जंजीबार और अफ्रीका के पूर्वी तट पर पेम्बा नामक स्थान में समार की कुल उपज का चार पंचमांश भाग प्राप्त होता है। पेनांग व भारत में भी लौंग उत्पन्न होती है। भारत में इसकी खेती मुख्यतः मद्रास राज्य में होती है।

दाल चीनी (Cinnamon)—लंका में पाये जाने वाले एक छोटे सदाबहार वृक्ष की सूखी छाल है। अब इसकी खेती जावा, ब्राज़ील, पश्चिमी द्वीपसमूह, इंडोनेशिया और चीन में भी होती है। मसाले के रूप में प्रयोग होने के अलावा, इसमें तेल भी निकाला जाता है और इस तेल में दवाई के गुण पाये जाते हैं। दक्षिणी भारत में यह काफी मात्रा में उगाई जाती है।

इनके अलावा जायफल (Nutmegs), जावित्री (Mace), गोंठ (Vanilla), पीपल (All-spice) और इलायची (Cardamoms) इत्यादि अन्य अनेक प्रकार के मसाले होते हैं।

ये सब तो उष्णकटिबन्ध के मसाले हैं परन्तु शीतोष्ण कटिबन्ध में भी कई प्रकार के पौधे पाये जाते हैं जिनके फलों व छाल को अनेक प्रकार के मसालों के रूप में प्रयोग करते हैं। राई, सोया, विलायती जीरा, धनिया, सौंफ इत्यादि शीतोष्ण कटिबंध के मसाले हैं। राई सलजम की जाति के एक पौधे का बीज है जो जमीन के अन्दर पाया जाता है और यूरोप में अनेक स्थानों पर होता है। धनिया भोजन को स्वादिष्ट व सुगन्धित बनाने के काम में आता है। चावल जैसे फीके भोजन को स्वादिष्ट बनाने के लिये सोये की चटनी की जापान व मचूरिया में बडी माग रहती है।

साबूदाना (Sago)—यह बड़ा पौष्टिक व शीघ्र हजम हो जाने वाला भोजन है। इसके पौधे को भारी वर्षा व काफी गर्मी की आवश्यकता होती है और यह दल-दली भूमि में पैदा होता है। इस पौधे की ऊंचाई करीब ३० फीट होती है और इसके पत्ते बहुत लम्बे होते हैं। इन्डोनेशिया और मलाया में काफी ऐसे बाग हैं जहां इसके वृक्ष उगाये जाते हैं।

अरारोट (Arrowroot)—यह दो तीन फीट ऊंचे एक पौधे की जड़ों से प्राप्त होता है। यह पौधा पश्चिमी द्वीपसमूह, इन्डोनेशिया, बंगाल और अन्य उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में उगाया जाता है।

खाद्यपदार्थ और विभिन्न देशों की आत्मनिर्भरता—यद्यपि संसार में भोज्य पदार्थों की स्थिति सुदृढ़ बनी हुई है फिर भी कुछ देशों में जनसख्या की उत्तरोत्तर वृद्धि और कम

उत्पादन के कारण आहार की कमी हो गई है। सुदूरपूर्व के देशों में युद्ध के बाद के काल में खाद्यान्नों के उत्पादन में ५० लाख मीट्रिक टनों से भी अधिक की कमी हो गई है। खाद्यान्न निर्यातक देशों में खपत की मात्रा बढ़ जाने से निर्यात की मात्रा में भारी कमी हो गई है। तथापि सन १९४८-४९ में मुख्य खाद्यान्नों का विश्वव्यापी उत्पादन युद्ध के पूर्व के औसत उत्पादन के बराबर या कुछ बढ़कर ही था। सन् १९३८-३९ में उपज की औसत से तुलना करने पर सन १९४८-४९ की स्थिति इस प्रकार थी।

गेहूं	१०५	जौ	१००
मक्का	१२५	चावल	९८
रुई	१००	आलू	१०५

इसलिए स्पष्ट है कि अन्न की वर्तमान कमी बढ़ी हुई और बराबर बढ़ती हुई आबादी के कारण है।

साधारणतया ऐसा देखा जाता है कि उन्नतिशील औद्योगिक देशों में भोज्य पदार्थों की सदा कमी रहती है और अपनी भोजन की माग की पूर्ति के लिए उन्हें उन खेतिहर देशों पर निर्भर रहना पड़ता है जहां की आबादी कम है। निम्नलिखित तालिका से १९३८ में विभिन्न देशों की भोज्य पदार्थों सम्बन्धी आत्मनिर्भरता की सीमा स्पष्ट हो जायगी।

देश	प्रतिशत	देश	प्रतिशत
ग्रेट ब्रिटेन	२५	संयुक्त राष्ट्र	९१
नार्वे	४३	चिली	९३
स्विटजरलैंड	४७	पोर्तगाल	९४
बेल्जियम	५१	इटली	९५
हालैंड	६७	जापान	९५
फिनलैंड	७८	ब्राजील	९६
ग्रीस	८०	स्पेन	९९
जर्मनी	८३	भारत	१००
फ्रांस	८३	चीन	१००
स्वीडन	९१	सोवियत रूस	१०१
डेनमार्क	१०३	न्यूज़ीलैंड	१२३
पोलैंड	१०५	कनाडा	१९२
बलगारिया	१०९	आस्ट्रेलिया	२१४
रूमानिया	११०	अर्जेन्टाइना	२६४
हंगरी	१२१	—	—

उपर्युक्त आंकड़ो से स्पष्ट हो जाता है कि बढ़ती हुई आबादी के कारण विश्व में खाद्यानों का उत्पादन भी बढ़ाना चाहिए। संसार में खाद्यानो के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए दो सुझाव रक्खे गये हैं। एक दृष्टिकोण से खाद्यानो में तीन चौथाई या ७५ प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है यदि संसार में ४००० लाख एकड़ बेकार भूमि को खेती में ले आया जाय और प्रति एकड़ उपज को ड्योढ़ा कर दिया जावे। दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार यह अनुमान किया जाता है कि वर्तमान खेतिहर भूमि से २० प्रतिशत उत्पादन बढ़ाया जा सकता है अगर नई वैज्ञानिक रीतियों को अपनाया जावे। इसके अलावा ऐसा ख्याल किया जाता है कि १३००० लाख एकड़ नई भूमि खेती के काम में लाई जा सकती है। इस नई भूमि का ब्योरा इस प्रकार है—

दक्षिणी अमरीका और अफ्रीका—	९००० लाख एकड़
सुमात्रा, बोर्नियो, न्यूगायना और मैडागास्कर—	१००० लाख एकड़
संयुक्तराष्ट्र, कनाडा और रूस—	३००० लाख एकड़
कुल योग	१३००० लाख एकड़

ब—व्यावसायिक फसलें (Commercial crops)

कपास (Cotton)—सभ्य संसार के वस्त्रों की आवश्यकता की अधिकतर पूर्ति कपास से ही होती है। सभ्य समाज के सम्पर्क में व उनके दैनिक प्रयोग में आने वाला इससे अधिक उपयोगी और कोई पौधा नहीं है।

उपज की दशायें—यह भिन्न भिन्न जलवायु में उत्पन्न हो सकता है परन्तु गर्म, तर व सम जलवायु जहां गर्मी का मौसम लम्बा और ऐसी जमीन जहां भूमि में नमक मिला हो इसके लिए सब से अनुकूल रहती है। रेशे की वृद्धि और किस्म के लिए समुद्री पवन सबसे लाभकारी होती है। इसलिए कपास की खेती के लिए सब से उपयुक्त प्रदेश समुद्र-तटीय मैदान हैं। और वे द्वीप भी जो उष्ण कटिबंध में स्थित हैं।

उपज के क्षेत्र—कच्ची कपास के उत्पादन में संयुक्तराष्ट्र अमरीका सब से प्रथम है। उसके बाद क्रमश: भारत, चीन व रूस का स्थान है। इन चारों देशों में संसार की उपज का अधिकतर भाग पैदा होता है। ब्राज़ील, सूडान, ईरान, मेक्सिको, पीरू, पश्चिमी अफ्रीका, युगैन्डा और जापान कपास उत्पन्न करने वाले अन्य देश हैं।

कपास का विश्वव्यापी उत्पादन

(पूरे ४७८ पौंड की तैयार गाठो में)

देश	१९३८-३९	१९४५-४६	१९४६-४७	१९४७-४८
विश्वयोग	२९४७४	२१०७१	२१५१७	२४९४७
उत्तरी अमरीका (योग)	११९६४	९३३७	९०७३	१२०२८
संयुक्तराष्ट्र	११६१७	८८५२	८५७४	११५००
मेक्सिको	३०७	४५०	४६२	४८५
अन्य देश	४०	३५	३७	४३
एशिया (योग)	८२७४	५९०४	५९००	५८६२
चीन	२३०१	१८२०	१९२५	२१५०
भारत व [redacted]	५०८२	३५३०	३६८४	३२००
अन्य देश	८९१	५५४	४९१	५१२
यूरोप (योग)	३९५९	१७७३	२३५७	२७३१
रूस	३८००	१७००	२२४०	२६००
अन्य देश	१५९	७३	११७	१३१
दक्षिणी अमरीका (योग)	२६९७	२०७१	१९६४	२०८९
अर्जेन्टाइना	२११	२९७	२८९	३५०
ब्राज़ील	१९८९	१३५०	१३००	१३००
पीरू	३७८	३२९	२७६	३२५
अन्य देश	६९	९५	९९	११४
अफ्रीका (योग)	२५८०	१९८६	२२२३	२२३७
बेल्जियम कान्गो	१७२	१७४	१९०	१८५
मिश्र	१९९२	१०५९	१२५२	१२८८
सूडान	२६३	१८७	२२०	२२६
युगेन्डा	२५४	१९१	१८८	१४२
अन्य देश	१९९	३७५	३७३	३९६

सन् १९४९ में कपास का विश्वव्यापी उत्पादन २९२ लाख गाठ था।

कपास के प्रकार और उपज के क्षेत्र—कपास मुख्यतः ४ प्रकार की होती है। (१) समुद्रद्वीपीय (The Sea Island) (२) मिश्री कपास (The Egyptian) (३) पीरू की कपास (The Peruvian) (४) उच्च भूमि की कपास (The Upland)

समुद्रद्वीपीय कपास का रेशा सबसे लम्बा, पतला और रेशमी होता है। इसका पौधा केवल निचली भूमि पर ही उगाया जा सकता है और सर्वप्रथम इसकी खेती संयुक्त-राष्ट्र के दक्षिणी केरोलीना, फ्लोरिडा और जार्जिया राज्यों में की गई थी। इसको कभी-कभी लम्बे रेशों वाली कपास भी कहते हैं।

मिश्री कपास को मध्यम रेशे वाली कपास भी कहते हैं और इसका प्रयोग मुलायम कपड़े बनाने में किया जाता है। समुद्रद्वीपीय कपास की अपेक्षा यह सस्ती होती है।

पीरू की कपास का रेशा ऊन के समान मजबूत और खुरखुरा होता है। ऊन के साथ मिलाकर कपड़ा तैयार करने में यह सबसे अच्छा रहता है। इससे बनियान, मोजे, अण्डरवीयर आदि बनाये जाते हैं।

उच्च भूमीय कपास का उपयोग बहुत अधिक है और इसका उत्पादन भी सब से अधिक होता है।

आजकल संसार के सभी देशों में उच्च कोटि के कपास के उत्पादन में वृद्धि करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका—संसार के कुल उत्पादन की आधी कपास केवल संयुक्तराष्ट्र में होती है। उत्तरी केरोलीना से टेक्सास तक एक लम्बी पट्टी में कपास का क्षेत्र फैला हुआ है। टेक्सास, मिसीसिपी, आरकान्सस, अल्बामा, जार्जिया, उत्तरी व दक्षिणी केरोलीना, लूयसाना और टनीसी कपास उत्पन्न करनेवाले मुख्य राष्ट्र हैं। यहां समुद्रद्वीपीय व उच्च-भूमीय दोनों ही प्रकार की कपास पैदा की जाती है। इस उपज का बहुत बड़ा भाग ग्रेट-ब्रिटेन को चला जाता है और रुई के निर्यात के मुख्य बन्दरगाह गेल्वेस्टन, न्यूआरलियन्स और सेवानाह हैं।

भारत में कपास की खेती मुख्यतः दक्षिण की उपजाऊ काली मिट्टी में होती है। यहां की कपास बड़ी व छोटे रेशों वाली होती है। पाकिस्तान में अमरीका के प्रकार की कपास उगाई जाती है। हाल में भारत व पाकिस्तान दोनों ही देशों में ७।८ इंच लम्बाई के रेशों वाली कपास बहुलता से उगाई जाने लगी है परन्तु फिर भी यहां की कपास के रेशों की लम्बाई एक इंच से कम होती है।

मिश्र में रुई की खेती नील की घाटी में होती है और अलेक्जन्डेरिया के बन्दरगाह से निर्यात की जाती है।

ब्राजील में कपास की खेती समुद्रतटीय मैदानों में होती है और बाहिया तथा पिरनामबुको के बन्दरगाह से निर्यात की जाती है।

यूगेन्डा की समृद्धि वहां की कपास की खेती पर निर्भर है। पिछले २० सालों

में कपास की खेती ने इतनी उन्नति की है कि वहाँ बहुत सी सड़कें रेलें व नगर बन गये हैं। इस समय यूगन्डा में संसार की कुल उपज की २ प्रतिशत कपास उत्पन्न होती है।

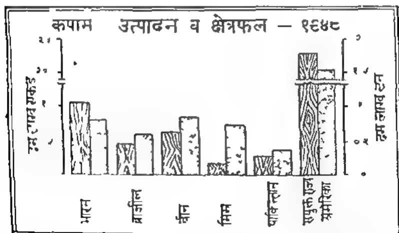
बेल्जियन कांगो भी कच्ची कपास के उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो रहा है। सन् १९४९ में इस प्रदेश में १६७००० मीट्रिक टन कपास पैदा हुई थी।

कपास की प्रति एकड़ उपज विभिन्न स्थानों पर विभिन्न है जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायगा।

कपास की प्रति एकड़ उपज

मिस्र	५३१	रूस	३२२
पीरू	५०८	संयुक्तराष्ट्र	२६४
सूडान	२०७	ब्राजील	१५४
अर्जेन्टाइना	१८१	युगंडा	८४
		भारत	८४

प्रति एकड़ उपज की इस विभिन्नता का कारण है उपज की दशाओं की विभिन्नता।



चित्र न० १९

कपास का व्यापार—कपास अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक प्रधान वस्तु है। कपास का आयात करने वाले मुख्य देश हैं ग्रेट ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, फ्रांस, इटली और चीन। सन् १९४२ से पहिले जापान सबसे अधिक कपास आयात करता था।

कपास के आयात के आंकड़े

(हजार मीट्रिक टनो में)

देश	१९५०-५१
जापान	३५८ ५
ग्रेट ब्रिटेन	३५४ ८
जर्मनी	१८८
फ्रांस	१७६
इटली	२०२
चीन	३९
भारत	११३ ८
विश्व योग	२०७४ १

सयुक्त राष्ट्र, भारत और मिश्र कपास निर्यात करने वाले मुख्य देश है। केवल सयुक्त-राष्ट्र से प्रति वर्ष ११ लाख मीट्रिक टन से अधिक कपास निर्यात होती है। निकट भविष्य में पाकिस्तान भी कच्ची कपास की माँग की पूर्ति का एक महत्वपूर्ण साधन बन जायेगा।

कपास का निर्यात

(हजार मीट्रिक टनो म)

देश	१९५०-५१
सयुक्तराष्ट्र	९३७
पाकिस्तान	२२६ १
ब्राज़ील	१४८
मिश्र	३३४
मेक्सिको	२०८
सूडान	८१
तुर्की	७९
विश्व योग	२०७४ १

ब्रिटिश कामनवेल्थ में कपास की कमी ही रहनी है यद्यपि यहा ससार की कुल उपज की ३४ प्रतिशत कपास उत्पन्न होती है। कामनवेल्थ में कपास की माग वहा के निवासियो की वास्तविक आवश्यकता से कही ज्यादा है। इसका कारण यह है कि ग्रेट ब्रिटेन मे विदेशों के लिए रुई के कपडे तैयार किये जाते है। कामनवेल्थ में कच्ची कपास भारत

उत्तरी हिम महासागर

ग्रीनलैंड

उत्तरी अमेरिका

प्रशान्त महासागर

अटलांटिक महासागर

दक्षिणी अमेरिका

यूरेशिया

अफ्रीका

हिन्द महासागर

आस्ट्रेलिया

प्रशान्त महासागर

रबड़ और कपास का उत्पादन

दक्षिणी हिम महासागर

कपास

रबड़

चित्र नं० २०

व युगाण्डा में प्राप्त होती है और हल्की किस्म की होती है। अतः लंकाशायर के मिल वाले इसे कम पसन्द करते हैं और संयुक्त राष्ट्र व मिस्र से कच्चा माल आयात करते हैं। लंकाशायर में प्रयोग की जाने वाली कुल कपास का तीन चौथाई भाग संयुक्तराष्ट्र से आता है।

ब्रिटिश कामनवेल्थ को रुई के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं। उत्तरी नाइजीरिया, न्यासालैंड, टैन्गनाइका और कीनिया में कपास की विस्तृत खेती हो सकती है। सूडान में कपास की खेती ने काफी उन्नति कर ली है। जजीरा प्रान्त में कपास के खेतों में सिंचाई करने के लिए नीली नील नदी पर सन्नार नामक स्थान पर एक बांध बनाया गया है। पाकिस्तान में सिंध व पंजाब प्रान्तों में भी सिंचाई की सहायता से बढ़िया सूत की अमरीकन कपास उगाई जाती है।

वास्तव में सभ्यता के विकास व प्रसार के साथ २ मनुष्य का जीवन अधिक आराम पसन्द हो गया है और कपास की मांग भी उसी प्रकार बढ़ गई है। इसलिए यह आवश्यक है कि कपास के उत्पादन क्षेत्रों को बढ़ाया जावे। सम्भवतः ऐसे बहुत से क्षेत्र मौजूद हैं। ब्रिटिश कामनवेल्थ के बाहर पश्चिमी द्वीपसमूह में लम्बे रेशे वाली रुई और अधिक मात्रा में उगाई जा सकती है। सन् १९४१ से पूर्व रूस में सस्ते मजदूरों की सहायता से उसके विस्तृत भूमिखंड पर कपास की खेती की अच्छी प्रगति हो रही थी और धीरे २ निर्यातक देशों में भी उसका महत्व बढ़ रहा था। पहिले रूस में कपास की खेती ट्रांस काकेशिया और तुर्किस्तान तक ही सीमित थी परन्तु अब हाल में ही क्रीमिया, कालेसागर का तटीय प्रदेश, यूक्रेन और एजोव सागर के तटवर्ती भागों में भी कपास की खेती होने लगी है। फलतः सन् १९२९ में केवल २१५००० टन कपास हुई थी और १९३५ में ८०५००० टन। आशा है कि यह उपज अब और भी अधिक हो गई होगी। इन प्रदेशों के अलावा **मेक्सिको, कोरिया और मंचूरिया** में भी कपास की खेती की वृद्धि होने की भारी सम्भावना है।

जूट या पटसन (Jute)—कपास के बाद उष्णकटिबंधीय रेशेदार पौधों में पटसन का स्थान आता है। इसका मुख्य प्रयोग रस्सी, दरी, टाट और बोरे व थैले बनाने में होता है। संसार की मंडियों में जूट की महत्वपूर्ण मांग का कारण यही है कि खेती की उपज को भरने के लिए बोरे बनाने के वास्ते इससे अधिक सस्ता रेशा और कोई नहीं होता है। यद्यपि व्यापारिक उपयोग के लिए अब और प्रकार के रेशे प्राप्त होने लगे हैं परन्तु अभी तक ऐसा कोई भी रेशा प्राप्त नहीं हो सका है जो जूट के समान सस्ता हो और इतने अधिक विभिन्न उपयोग में आ सके।

उपज की दशायें—पटसन उष्णकटिबंध का पौधा है और ५ से १० फीट तक ऊंचा होता है। परन्तु इसकी खेती भारत में गंगा की निचली तलहटी और पूर्वी पाकिस्तान में बिल्कुल सीमित है। भारत व पाकिस्तान में जूट की कुल उपज का ७८ प्रतिशत केवल

पूर्वी बंगाल में प्राप्त होता है। पटसन की सफल खेती के लिए निम्नलिखित दशाओं का वर्तमान होना आवश्यक है—

(१) बढ़वार के समय उच्च तापक्रम—कम से कम ८८° तक।

(२) उपजाऊ भूमि।

(३) काफी वर्षा।

(४) बढ़वार के समय काफी विस्तृत वर्षा।

(५) पौधों को सड़ाकर व उनको पीटकर रेशा निकालने के वास्ते काफी पानी।

(६) उचित समय पर काम करने के लिए कुशल मजदूरों की पर्याप्त संख्या।

(७) रेशा को मंडी में पहुँचाने के लिए यातायात की सुविधाएं।

पटसन का पौधा तीन प्रकार की भूमि पर अच्छा उग सकता है—

(अ) रेत मिली हुई उपजाऊ उच्च भूमि।

(ब) बाढ़ की भूमि—नदियों के उन किनारों पर जहाँ नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी हो और नमी के दिनों में बाढ़ आती हो।

(स) नदियों के तट व डेल्टा की निचली उपजाऊ भूमि।

उपज के क्षेत्र—उपज की ये सभी प्राकृतिक, मानवी व आर्थिक दशाएं पूर्वी पाकिस्तान और गंगा की निचली तलहटी में वर्तमान हैं। पटसन के रेशों की विशेषता व उपज प्रति एकड़ भूमि की तैयारी पर निर्भर होती है। पूर्वी बंगाल का पटसन मजबूत व कठोर होता है और इससे बढ़िया किस्म का मजबूत टाट तैयार किया जाता है। इसमें करीब ४८ प्रतिशत जूट खप जाता है। ब्राजील, लंका, फारमोसा, चीन, मलाया में भी कुछ पटसन उत्पन्न किया जाता है। ब्राजील ने एक पंचवर्षीय योजना तैयार की है जिसका ध्येय है कि सन् १९५३ तक पटसन की उपज पंचगुनी हो जाय। इस योजना का लक्ष्य ५०००० टन रखा गया है और आशा की जाती है कि ऐसा होने के बाद ब्राजील को विदेशों से जूट नहीं मंगाना पड़ेगा। मिश्र, ईरान, स्याम, इन्डोचीन, जापान, मैक्सिको और पैरागुये में भी पटसन की खेती की जा सकती है।

जूट का विश्वव्यापी उत्पादन
(हजार मीट्रिक टनों में)

काल (औसत)	भारत	पाकिस्तान	अन्य देश	योग
१९३५-३९	३६०	११२५	२५	१५१०
१९४०-४४	३५४	१२५७	२४	१६३५
१९४७	२२६	७६२	६४	१०५२
१९४८-४९	३०१	१२४२	३५	१५७८
१९५०-५१	५९६	१०९०	४३	१७३०

भारत व पाकिस्तान का पटसन अधिकतर ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, संयुक्तराष्ट्र व फ्रान्स को निर्यात कर दिया जाता है। कनाडा, जापान, इटली व अर्जेन्टाइना भी काफी मात्रा में पटसन का आयात करते हैं।

पटसन का उद्योग—जूट से बनने वाली चीजों को ४ भागों में बांटा जा सकता है—(अ) टाट के बोरे जिनमें चावल, गेहूं, तिलहन आदि रखे जाते हैं, (ब) टाट का कपड़ा (स) दरियां व मोटे बिस्तर के बिछाने की वस्तुएँ, (द) रस्सियां, रस्से इत्यादि।

भारत में पटसन से विभिन्न वस्तुएं निर्माण करने के कारखाने हुगली नदी के किनारों पर, कलकत्ते के पास केन्द्रित हैं। यह प्रदेश पटसन उद्योग के लिए बड़ा ही उपयुक्त है क्योंकि पास से ही कच्चा माल, सस्ते मजदूर, नम जलवायु, नाव चलाने योग्य नदी तथा कलकत्ते का बन्दरगाह आदि सब साधन उपस्थित हैं।

भारत के बाहर पटसन उद्योग का केन्द्र स्काटलैण्ड में डन्डी प्रदेश है। कलकत्ता व डन्डी से पटसन का तैयार माल संसार के कोने-कोने को निर्यात किया जाता है और इन दोनों केन्द्रों के बीच बड़ी स्पर्धा है। सन् १६०८ तक डन्डी पटसन के तैयार माल में सबसे आगे था पर तब से कलकत्ता इस व्यवसाय में प्रधान हो गया है।

भारत व पाकिस्तान के जूट व्यवसाय में एक विशेषता है। पूर्वी बंगाल में चावल की खेती को त्याग कर जूट की खेती होने लगी है। अतः एक ही फसल पर निर्भर रहने से बहुत हानि की सम्भावना है। दूसरी बात यह है कि यद्यपि पूर्वी बंगाल में सम्पूर्ण भारत का ७४ प्रतिशत जूट उत्पन्न होता है परन्तु जूट की सभी मिलें भारत में ही स्थित हैं। संसार में इस समय मशीनों का मिलना दुर्भर है और फिर नए सिरे से व्यवसाय शुरू करने के लिए पाकिस्तान में पर्याप्त पूंजी भी नहीं है। इसलिए पूर्वी पाकिस्तान में शीघ्र ही जूट मिलें स्थापित नहीं हो सकती हैं। ऐसी दशा में पटसन का निर्यात भारत व पाकिस्तान दोनों के ही लिए अनिवार्य है क्योंकि पाकिस्तान में न तो कच्चे पटसन की इतनी खपत है और न भारत में पटसन के बने माल की ही इतनी मांग है। अतः दोनों के लिए जूट के निर्यात की प्राथमिक महत्ता है।

पटसन के व्यवसाय की समस्यायें—आजकल अनेक देशों में ऐलीवेटर्स (Elevators) के प्रयोग तथा जहाजों में ढेर के ढेर लादे जाने की रीति से पटसन के बोरों की मांग बहुत कम हो गयी है। कुछ देशों ने विश्वव्यापार में जूट की स्पर्धा करने के लिए अनेकों अन्य वस्तुएं निकाल ली हैं। भारतीय जूट के मुकाबले पर रूस में सन का व्यापार बढ़ रहा है और भारतीय जूट की खपत की मंडियों में रूसी सन की अधिक बिक्री होने लगी है। संयुक्तराष्ट्र में भी सीमेंट भरने के लिए पटसन के बोरों के स्थान पर कागज के थैले प्रयोग होने लगे हैं। संयुक्त राष्ट्र, जर्मनी और अन्य योरोपीय देशों में बिजली के तारों के अन्दर पटसन के धागे के स्थान पर लकड़ी के गूदे से बना हुआ धागा इस्तेमाल होने लगा है। दूसरे, आजकल सभी देश जूट उत्पादन के लिए प्रयत्नशील हैं।

अबीसीनिया में असली पटसन को उगाने के लिए अनेक यत्न हो रहे हैं। जावा में भी जूट के समान रेशा वाला (Rosella) नाम का एक पौधा उगाया जाने लगा है। आशा है कि बहुत शीघ्र ही जावा चीनी के बोरे के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर हो जायगा। दक्षिणी अफ्रीका में जंगली स्टाकरूस (Wild Stockroos) नामक पौधे को उगाने के प्रयोग हो रहे हैं और यदि इसकी खेती के प्रयत्न सफल हो गये तो इससे रस्से व गेहूं भरने के बोरे बन सकेंगे। यह पौधा इस समय पूर्वी ट्रांसवाल में होता है।

सन् १९३९ से १९४५ तक जब दूसरा महायुद्ध चल रहा था, जूट का अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय बहुत कुछ रुक गया था और कपड़े कागज व अन्य वस्तुओं के थैले सामान भरने व भेजने में प्रयोग होने लगे थे। फलतः जूट की मण्डियों में इन वस्तुओं की खपत भी बहुत बढ़ गई थी। परन्तु १९४६ से फिर लोगों की प्रवृत्ति जूट की तरफ बढ़ रही है। असल में युद्ध के दिनों में इन अन्य पदार्थों की खपत उनके गुणों के कारण नहीं बढ़ी थी बल्कि जूट के न मिलने के कारण। कागज के थैलों के प्रयोग में उन्नति तो इस कारण हुई है कि सामान भर भर बन्द करने की प्रणाली ही कुछ बदल-सी गई है और इसीलिए केवल कनाडा व संयुक्तराष्ट्र में इनकी खपत ज्यादा है। परन्तु कागज की अपेक्षा जूट के थैलों के लाभ कहीं अधिक हैं क्योंकि जूट सस्ता होता है, ज्यादा मजबूत होता है और कई बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

यह सर्वथा सम्भव है कि जूट की तरह अन्य रेशेदार पौधे बोये जायें और उनकी खेती भी सफल हो जाय। परन्तु यह बात शंकायुक्त है कि वे जूट की स्पर्धा कर सकें। दूसरी बात यह है कि भारत व पाकिस्तान की तरह सस्ते मजदूरों व उत्पादन की दूसरी प्राकृतिक सुविधायें अन्य किसी देश में नहीं हैं।

पटुआ (Hemp)—इस पौधे को रेशे व बीज दोनों ही के लिए उगाया जाता है। इसके रेशों से रस्सियां, बोरे का कपड़ा, मोटे डोरे, जहाज के पाल व मोटे रस्से आदि चीजें बनाई जाती हैं। इसके बीज मुर्गियों को खिलाने व तेल निकालकर रंग व वार्निश बनाने के काम आते हैं।

उपज की दशायें—इसके उत्पादन का क्षेत्र बड़ा विस्तृत तथा दशाएं बड़ी व्यापक हैं। यह उष्ण व शीतोष्ण कटिबंध के सभी प्रदेशों में उत्पन्न होता है। फूल आने पर पौधे खेत में से उखाड़ लिये जाते हैं और फिर धूप में सुखाकर दो सप्ताह तक पानी में डुबो दिये जाते हैं। इसके पश्चात् इसको पीट कर रेशा को अलग कर लिया जाता है।

उपज के क्षेत्र—रूस, इटली, चीन, हंगरी, भारत और संयुक्तराष्ट्र पटुए को उगाने वाले मुख्य देश हैं। उपज के क्षेत्रफल व मात्रा दोनों में ही रूस का स्थान सर्व-प्रथम है। रूस के कुर्स्क, ओरेल, ओवनाम्स्क, यूक्रेन और मोरडोविया क्षेत्रों में पटुआ की खेती प्रधान रूप से की जाती है। इटली में पटुआ सर्वोत्तम श्रेणी का होता है यद्यपि इसकी उपज की मात्रा रूस की अपेक्षा बहुत कम होती है। संयुक्तराष्ट्र के ओहियो,

विसकोन्सिन और केनटेकी राज्यों में पटुआ की खेती है। फिलीपाईन द्वीपसमूह में भी बहुत बढ़िया किस्म का पटुआ उत्पन्न किया जाता है जिसे मेनीला हेम्प के नाम से पुकारते हैं और इससे रस्सियां व डोरियां बनाई जाती हैं।

मेक्सिको, टेगान्यानिका और कीनिया में कड़े रेशे वाला पटुआ होता है जिसे सीसल हेम्प (Sisal Hemp) कहते हैं। इसका मुख्य प्रयोग बटे हुए रस्से तैयार करने में होता है।

भारत में भी पटुआ की काफी खेती होती है और मद्रास, बम्बई, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के राज्य इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। भारत का पटुआ ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम, इटली, फ्रांस जर्मनी और डेनमार्क को निर्यात किया जाता है।

सन (Flax)—सन के पौधे को रेशे व बीज दोनों के ही लिये उगाया जाता है। इसके बीज से तेल निकाला जाता है और इस तेल का रंग व वार्निश तैयार करने में प्रयोग होता है। इसके रेशे से डोरी, बटे हुए रस्से, टाट तथा बहुत प्रकार के मोटे कपड़े तैयार किये जाते हैं।

साधारणतया रेशे व बीज एक ही प्रकार के पौधे से नहीं मिलते। उष्णकटिबंध में सन का पौधा बीज के लिए उगाया जाता है और शीतोष्ण कटिबन्ध में रेशे के लिये। प्राय सन की खेती उन प्रदेशों में होती है जहां आबादी घनी होती है और रहन-सहन का स्तर निम्न। इसकी खेती में काफी मजदूरों की आवश्यकता होती है। पौधों का उखाड़ने व कूचे द्वारा बीज को अलग करने, या पौधे को पानी में सड़ाकर रेशा को अलग करने के लिए हाथ की मेहनत ही पड़ती है। इसलिए इसकी खेती भारत, रूस, इटली, आयरलैण्ड और अर्जेन्टाइना में विशेष रूप से प्रचलित है। रूस में सन की खेती में मशीनों का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है और देश के उत्तरी भाग में कलैनिन, स्मोलेन्स्क और लेनिनग्राड के प्रदेशों में इसकी उपज प्रधान है।

पश्चिमी रूस, पोलैण्ड, हालैंड, फ्रांस, आयरलैंड और बेल्जियम में सन से रेशे निकालते हैं। भारत संयुक्त राष्ट्र और अर्जेन्टाइना में इसका मुख्य उपयोग बीज निकाल कर करते हैं। संसार में मुख्य सन-निर्यातक देश रूस, बेल्जियम, अर्जेन्टाइना और भारत हैं।

रेशम (Silk)—रुई की कमी को पूरा करने के लिए रेशम एक उपयोगी पदार्थ है। वस्त्रों के अलावा इसका उपयोग बिजली के प्रवाह-अवरोधन (Insulation) और चीड़फाड़ की सामग्री में होता है। टाइप की मशीनों के फीते भी रेशम के ही बनते हैं। रेशम का उपयोग पैराशूट, फीते, डोरियां तथा धूम्रहीन विस्फोटक वस्त्र बनाने में भी होता है।

उपज की दशायें—यद्यपि रेशम कीड़ों से प्राप्त होने वाला रेशा है परन्तु इसका

उत्पादन कुछ वृक्षों पर निर्भर है। इनमें शहतूत का वृक्ष प्रमुख है। रेशम के कीड़े इन वृक्षों की पत्तियों को खाते हैं। ये कीड़े कोये (Cocoons) बनाते हैं जिनसे रेशम तैयार किया जाता है।

शहतूत का पेड़ मोरस (Morus) जाति का होता है और इस जाति के कई प्रकार के पेड़ विभिन्न देशों में पाये जाते हैं। सफेद शहतूत चीन में पाया जाता है और छठी शताब्दी में दक्षिणी यूरोप में लाया गया। अब यह सभी रेशम उत्पन्न करने वाले क्षेत्रों में महत्वपूर्ण वृक्ष है। असली शहतूत का वृक्ष उत्तरी अमरीका में पाया जाता है। इसकी पत्तियां रेशम की कीड़ों के लायक नहीं होती हैं और इस पर पाले हुए कीड़ों के कोये प्राय: मामूली किस्म के होते हैं।—शहतूत का वृक्ष साधारणतया उस भूमि पर उगाया जाता है जो अन्य किसी प्रकार की खेती के लिए सर्वथा अनुपयुक्त होती है। इसके वृक्ष नदियों के किनारों, या सड़कों के अगल बगल लगाये जाते हैं।

उपज के क्षेत्र—चीन, जापान और इटली रेशम उत्पन्न करने वाले मुख्य देश हैं। भारत, फ्रांस, स्पेन और एशिया माइनर में भी थोड़ी बहुत मात्रा में रेशम उत्पन्न किया जाता है। चीन में सबसे अधिक रेशम पैदा होता है और संसार की कुल माँग का १८ प्रतिशत चीन से ही प्राप्त होता है। चीन में यह एक घरेलू धन्धा है। दूसरे महायुद्ध से पहिले जापान से सबसे अधिक रेशम निर्यात होता था। यूरोप का ६० प्रतिशत रेशम इटली की पो घाटी से प्राप्त होता है।

कच्चे रेशम का उत्पादन (१९५०) (हजार टनों में)

जापान	चीन	इटली	फ्रांस	भारत
४८.८९	—	१.३७	०.०५	१.०३

अमरीका के देशों में केवल ब्राजील ऐसा है जहां रेशम के कीड़ों को पाला जाता है। साओ पोलो, इसपीरिटो सेन्टो, मीनास गेराम में बारबेसेना का प्रदेश और अमेजन का पारा इसके प्रधान केन्द्र हैं। ब्राजील के अटलान्टिक सागर तट पर भी रेशम के उद्योग के छोटे-मोटे केन्द्र हैं।

व्यापार—रेशम की प्रमुख मन्डियां भारत, संयुक्तराष्ट्र, जापान, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, कनाडा और भारत है। संयुक्तराष्ट्र में संसार के कुल निर्यात का ६६ प्रतिशत रेशम आयात किया जाता है। फ्रांस में ७ प्रतिशत, जापान में ६ प्रतिशत, ग्रेट ब्रिटेन में ५ प्रतिशत और भारत में ४ प्रतिशत रेशम आयात किया जाता है।

रेशम का निर्यात करने वाले मुख्य देश जापान, चीन, कोरिया, इटली और मनचूरिया हैं। जापान से ७३ प्रतिशत रेशम निर्यात किया जाता है। चीन से १० प्रतिशत कोरिया से ६ प्रतिशत, इटली से ६ प्रतिशत और मनचूरिया से ४ प्रतिशत रेशम निर्यात किया जाता है।

कृत्रिम रेशम (Rayon)—पिछले कुछ दिनों से कृत्रिम रेशम का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। कृत्रिम रेशम उन सभी रेशों या धागों का नाम है जो रसायनिक क्रिया द्वारा गूदे या लुगदी से बनाये जाते हैं। रद्दी कपास या लकड़ी की लुग्दी तैयार कर ली जाती है और फिर इस रसायनिक क्रियाओं द्वारा तैयार की गई लुग्दी का बारीक छेद वाली काच की नलियों म से दबाकर निकाला जाता है। इस प्रकार रेशे तैयार हो जाते हैं। इन रेशों को मिल्क मिलों की वर्तमान मशीनों द्वारा काता व बुना जा सकता है।

आजकल वस्त्र व्यवसायियों में इसकी बड़ी माग है क्योंकि इसे सूत, रेशम, सन तथा ऊन के साथ मिलाया जा सकता है। यद्यपि असली रेशम इससे हल्का, कोमल, चमकदार और लचीला होता है फिर भी कृत्रिम रेशम की माग व अधिकाधिक उपयोग के कारण असली रेशम के दामों पर बड़ा असर पड़ा है। कृत्रिम रेशम को उत्पन्न करने वाले मुख्य देश क्रमश संयुक्तराष्ट्र, जापान, इटली, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रास व हालैण्ड है।

कृत्रिम रेशम का विश्वव्यापी उत्पादन
(लाख किलो)

	१९३५	१९३७		१९३५	१९३७
जापान	१०२	१७५	जर्मनी	६८	१०७
संयुक्त राष्ट्र	११५	१४५	ग्रेट ब्रिटेन	५६	६८
इटली	७४	१२०	विश्वयोग—	४६२	७५०

युद्ध पश्चात् भारत में कृत्रिम रेशम की माग बराबर बढ़ती रही है। साथ-साथ उत्पादन भी बराबर बढ़ रहा है। यूरोप कृत्रिम रेशम का घर है। कृत्रिम रेशम का धंधा सब से पहिले फ्रास में प्रारम्भ हुआ था। आजकल सबसे अधिक कृत्रिम रेशम संयुक्तराष्ट्र में होता है। सन् १९४८ में ६७५० लाख पौंड कृत्रिम रेशम तैयार हुआ जबकि समस्त संसार का कुल उत्पादन २०००० लाख पौंड था। उत्पादन के इतना बढ़ जाने पर भी कृत्रिम रेशम की मागपूर्ति अभी तक सतोषजनक नहीं है।

रबर (Rubber)—नर विषुवतरेखीय प्रदेशों में रबर की खेती एक महत्वपूर्ण उद्यम है और संसार की सबसे मूल्यवान उपज हो गई है। ५० साल पूर्व इसका व्यापार व उद्योग-धंधे में कोई भी महत्त्व नहीं था परन्तु आजकल इसका बड़ा महत्व है। सर्वप्रथम इसका प्रयोग केवल मिटाने व खुरचन में होता था। इसीलिए इसका नाम 'रगड़ने वाला' (Rubber) पड़ गया। जैसे २ इसकी विशेषताओं का ज्ञान बढ़ा यह भिन्न-भिन्न प्रयोग में आने लगा। आजकल इससे जूता के तल्ले, बरसाती, खेल के सामान, मोटर व साइकलों के टायर आदि बनाये जाते हैं। २०वीं सदी के शुरू में मोटर व्यवसाय की तीव्र उन्नति के साथ-साथ रबर की माग बराबर बढ़ती रही है।

उपज की दशायें—रबर या तो लगाये हुए बगीचों या जंगली वृक्षों से प्राप्त होती है। रबर के वृक्ष उन प्रदेशों में अधिक होते हैं जहाँ भारी जलवृष्टि होती है और जहाँ गहरी उपजाऊ दोमट मिट्टी होती है। इसकी भूमि पर पानी नहीं ठहरना चाहिए। इसलिए इस वृक्ष को भूमध्यरेखीय प्रदेशों में उगाया जाता है जैसे कान्गोबेसिन, अमेजन बेसिन और इन्डोनेशिया।

रबर के वृक्षों के बगीचे लगाने का आजकल व्यवसाय सा हो गया है और इन बगीचों से अधिक उपज होने के कारण रबर का व्यवसाय बड़ा महत्त्वपूर्ण हो गया है। सन् १८९८ तक संसार का कुल रबर दक्षिणी और मध्य अमरीका के जंगली वृक्षों से प्राप्त किया जाता था। सन् १९०० में रबर का विश्वव्यापी उत्पादन ५८००० टन था और इनमें से केवल ४ टन ऐसा रबर था जो लगाये हुए बगीचों से प्राप्त हुआ था। परन्तु सन् १९२९ में संसार की कुल उपज का ९५ प्रतिशत रबर लगाये हुए बगीचों से प्राप्त किया गया।

उपज के क्षेत्र—जंगली रबर प्रधानतः ब्राजील, कोलम्बिया, वेनेजुला और बेल्जियन कान्गो से प्राप्त किया जाता है। ब्राजील में रबर के पेड़ उष्ण प्रदेश, अमेजन और पारा में पाये जाते हैं। सन् १९३९ से १९४५ तक दूसरे महायुद्ध के कारण ब्राजील में रबर का उत्पादन काफी बढ़ गया और सन् १९४३ में ३५,००० टन रबर इकट्ठा किया गया। मलाया की रियासतों पर जापान का कब्जा हो जाने के बाद वेनेजुला में फिर से सन् १९४२ में रबर का व्यवसाय शुरू किया गया। सन् '४२ में बेल्जियन कान्गो में १८०० मीट्रिक टन रबर इकट्ठा किया गया है।

जंगली रबर को इकट्ठा करने में बड़ी कठिनाइयाँ हैं। रबर के इकट्ठा करने वालों को बड़ी मेहनत करके जंगल के बीच से लम्बे रास्ते साफ करने पड़ते हैं। हर दिन इन लोगों को मीलों का रास्ता तै करने के बाद मुश्किल से कुछ पेड़ मिलते हैं और फिर बहुत थोड़ा-सा रस (रबर) इकट्ठा हो पाता है। बहुधा इन लोगों को मच्छरों से घिरे हुए दलदली मैदानों से होकर गुजरना पड़ता है। इसके अलावा जंगली रबर के उपज क्षेत्र जैसे कान्गो और अमेजन के बेसिन व्यापारिक मार्गों से सैकड़ों व हजारों मील अन्दर की तरफ स्थित हैं। इनके विपरीत रबर के सभी मुख्य बगीचे एशिया में भूमध्यरेखा पर समुद्र के किनारे स्थित हैं और प्रायः सभी बगीचे संसार के एक प्रमुख समुद्री व्यापारिक मार्ग पर पड़ते हैं। अतः इन बगीचों से रबर इकट्ठा करने का खर्च कम पड़ता है। इन प्रदेशों की आबादी घनी होने के कारण मजदूर काफी संख्या में और सस्ते दामों पर मिल जाते हैं। इसके अलावा उत्तम सुगम जलमार्गों के समीप रबर व्यवसाय स्थापित करने की सुविधा है।

रबर के बगीचे—अधिकतर इन्डोनेशिया तथा मलाया प्रायद्वीप के तटों पर या उनके समीप के प्रदेशों में पाये जाते हैं। संसार की ९० प्रतिशत रबर यहीं से प्राप्त होती है। अन्य उत्पादन क्षेत्र लंका, भारत, ब्राजील और कान्गो हैं। दूसरे महायुद्ध में काफी हानि

होने पर भी मलाया प्रायद्वीप इस समय संसार में सबसे प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है। इस समय मलाया में ३३,००,००० एकड़ से भी अधिक भूमि पर रबर के बगीचे लगाये गये हैं और मलाया राज्य में २० से ५० लाख लोगों की जीविका का यही एकमात्र सहारा है।

प्राकृतिक रबर का विश्वव्यापी उत्पादन
(हज़ार टनों में)

देश	१९४८	१९४९
मलाया	६९८	७००
इन्डोनेशिया	४३२	५००
लंका	९५	९०
इन्डोचीन	४४	४५
ब्रिटिश बोर्नियो	६२	६२
बर्मा	६	१२
लाईबेरिया	२५	२७
अन्य देश	१५५	१३९
योग	१५२०	१५७५

सन् १९५० में प्राकृतिक रबर के विश्वव्यापी उत्पादन का अनुमान लगभग १,८७०,००० टन था। इसी साल में रबर से तैयार माल के लिए १,५३०,००० टन कच्चे रबर की माँग थी।

संसार के बगीचों की कुल उपज का ६० प्रतिशत भाग केवल ब्रिटिश कामनवेल्थ देशों से प्राप्त होता है। और बाकी भाग डच लोगों के द्वारा सचालित अथवा अधिकृत बगीचों में। संयुक्त राष्ट्र का रबर के उत्पादन में नहीं के बराबर हिस्सा है पर वह संसार की कुल उपज का २/५ भाग आयात करता है।

रबर का व्यापार—रबर के व्यवसाय के प्रारम्भ में माँग व पूर्ति का कोई भी सम्बन्ध नहीं था। फलतः रबर के दामों में भारी हेरफेर होना रहता था और उगाने वालों को भारी हानि होती थी। जब कभी दाम बढ़ते थे, लोग रबर की खेती का विस्तार कर देते थे यद्यपि माँग में बिल्कुल भी अन्तर नहीं होता था। फलतः माँग व पूर्ति का असामञ्जस्य और भी प्रखर हो जाता था। माँग की अपेक्षा उत्पादन बढ़ जाता था और फलस्वरूप दाम गिर जाते थे। इसलिए उत्पादन को नियन्त्रण में रखने के लिए एक योजना निकाली गई। इसे 'स्टीवेंसन योजना' (Stevenson Scheme) के नाम से पुकारते हैं। इसके अनुसार रबर के उत्पादकों को उपज की मात्रा कम करके उस स्तर पर लाने पर बाध्य किया गया जो माँग के अनुरूप हो और जिससे रबर का उचित मूल्य स्थिर हो सके। लेकिन इस योजना का सबसे बड़ा दोष यह था कि यह केवल अंग्रेज़ बगीचों

पर ही लागू था। इसके सहारे दक्षिण पूर्वी एशिया में ब्रिटिश बागीचों का रबर का उत्पादन नियन्त्रित हो गया और इतनी अच्छी तरह नियन्त्रित रहा कि दाम एक दम आकाश में चढ़ गये। अतः न तो उत्पादकों को ही विशेष लाभ हुआ और न ग्राहकों को ही ज्यादा … करने की प्रेरणा मिली। हाँ, इन ऊँचे मूल्यों से अन्य लोग रबर के बागीचों की ओर आकर्षित हुए और इण्डोनेशिया में जहाँ यह योजना लागू नहीं थी उत्पादन बहुत … बढ़ गया। इस प्रकार स्टीवेन्सन योजना के अन्तर्गत प्रदेशों में रबर के उत्पादन के … फल में कमी हो जाने पर भी संसार के अन्य देशों में रबर का उत्पादन बढ़ता रहा। फल यह हुआ कि रबर का मूल्य गिरा और रबर के ढेर-के-ढेर इकट्ठा हो गये। अतः सन् १९२८ में स्टीवेन्सन योजना का एकाएक अन्त कर दिया गया।

इसके बाद एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते द्वारा रबर उत्पादन की मात्रा निर्धारित करने का प्रयत्न हुआ। इसमें दक्षिण पूर्वी एशिया के सभी रबर उत्पादक देश सम्मिलित हुए। यह योजना जून सन् १९३४ में चालू हुई। इसके कई ध्येय थे— (१) उत्पादन को नियन्त्रित कर दिया जाय (२) रबर के निर्यात को इस प्रकार नियमित किया जाय कि इकट्ठा हुआ ढेर साफ हो जाय (३) मूल्य की उचित दर स्थिर की जाय और (४) उत्पादकों को उचित लाभ पहुँच सके। इसलिए निर्धारित मात्रा से ऊपर उत्पादन व निर्यात करने पर प्रतिबन्ध लगा दिये गये। इस अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का भार विभिन्न सरकारों के प्रतिनिधियों की एक समिति को सौंप दिया गया।

इस समय रबर को आयात करने वाले मुख्य देश संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, जापान और रूस हैं। इधर कुछ दिनों से संयुक्तराष्ट्र अमेरिका ने लाइबेरिया में कुछ बगीचों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है।

पिछले कुछ दिनों से रासायनिक क्रियाओं द्वारा तैयार किये कृत्रिम रबर ने काफी प्रगति कर ली है। यह कृत्रिम रबर (Synthetic Rubber) प्राकृतिक रबर का प्रतिद्वन्द्वी बनता जा रहा है। जिस तरह से रासायनिक क्रियाओं द्वारा कृत्रिम रबर तैयार करके तथा उससे मजबूत टायर (Tyres) बनाने के कई कारखाने संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में खुल गये हैं। अगर टायर बनाने के क्षेत्र में प्राकृतिक रबर को हटा देना सम्भव हो गया तो निश्चय ही कृत्रिम रबर विजय प्राप्त कर सकेगा। कृत्रिम रबर के क्षेत्र में नयी दिशाओं में विकास हो रहा है और होने की सम्भावना है। उन सब के सफल हो जाने पर रबर के भावी औद्योगिक उपयोगों में बड़े परिवर्तन हो सकेंगे। इसी प्रकार एक और नयी रचना कृत्रिम रबर है जिस पर रसायनों, तेल, ताप और विभिन्न … तापों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अतः इसका प्रयोग … में … और वायुयानों के तेल सम्बन्धी यन्त्रों में … … सकता। सन् १९६० में कृत्रिम रबर का उत्पादन ५ लाख टन था।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में कृत्रिम रबर की सबसे अधिक माग है और संसार की कुल उपज का ९० प्रतिशत वहीं जाता है। इसके बाद कनाडा का स्थान है जहा ४ प्रतिशत कृत्रिम रबर इस्तेमाल होता है। बाकी ६ प्रतिशत अन्य सब देशों में बट जाता है। इसीलिए संयुक्तराष्ट्र की मंडियों में ही कृत्रिम रबर की प्रतिद्वंद्विता का भय सब से अधिक है।

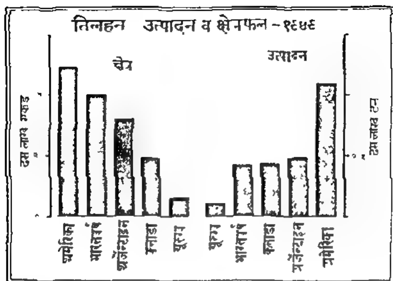
रबर की माग व आयात (हजार टनों में)

	प्राकृतिक रबर		कृत्रिम रबर	
	१९४८	१९४९	१९४८	१९४९
संयुक्तराष्ट्र	६२७	६००	४४२	४१०
ग्रेट ब्रिटेन	१९४	१८३	२	२
फ्रांस	८६	९७	८	८
हालैंड	१२	१०	०	०
बेल्जियम	१४	१५	०	०
जैकोस्लोवाकिया	२५	३०	—	—
इटली	३०	३३	२	३
डनमार्क	५	५	०	०
हंगरी	३	३	०	—
आस्ट्रेलिया	२६	३०	०	०
कनाडा	४२	४०	२०	२०
अन्य देश	३५६	४०४	६	७
कुल योग	१४२०	१४५०	४८०	४५०

तिलहन (Oil seeds) और वनस्पति तेल (Vegetable oil)—प्राय. सारे वनस्पति तेल फलों या बीजों से प्राप्त होते हैं। इन तेलों का प्रयोग केवल अचार, चटनी या अन्य खाद्य पदार्थों में ही नहीं होता है बल्कि इनकी सहायता से सुगन्धित तेल, वार्निश, मशीन के तेल, मोमबत्ती, साबुन आदि भी बनाये जाते हैं।

ये वनस्पति तेल साधारणतया तिलहन, बिनौलों, गोले, ताड़, जैतून, सरसों, तिल, मूंगफली, अलसी, सोयाबीन तथा रुई के बीजों से बनता है और ये बीज प्राय उष्ण कटिबंधों में उगते हैं।

जैतून—भूमध्यसागरीय प्रदेश की उपज है। इसका तेल भोजन पकाने, साबुन बनाने तथा कताई बुनाई में प्रयोग किया जाता है। स्पेन, इटली, ग्रीस, उत्तरी अफ्रीका, पोर्तुगाल और दक्षिणी फ्रांस जैतून के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बिनौलों का तेल भी जैतून के तेल का काम देता है और इसकी माग औद्योगिक धन्धों के लिए अन्य तेलों से अधिक है। संयुक्त राष्ट्र, भारत, मिश्र, यूगेन्डा बिनौलों को उगाने वाले प्रमुख

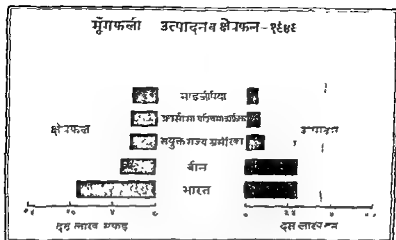


चित्र नं० २१

देता है। यद्यपि संयुक्त राष्ट्र में सबसे अधिक उत्पादन होता है फिर भी घरेलू माँग के कारण निर्यात नहीं कर पाता है।

नारियल या गोले का तेल—नारियल या गोले से चार प्रमुख व्यावसायिक पदार्थों की प्राप्ति होती है—(१) गोला या फल की सूखी गिरी (२) गोले का तेल (३) गोले से तेल निकालने के बाद बची हुई खली और (४) नारियल के ऊपर की जटाएं। गोले का तेल न केवल भोजन बनाने में प्रयोग होता है बल्कि साबुन बनाने में भी काम आता है। नारियल प्रधान रूप से फिलीपाइन, इन्डोनेशिया तथा दक्षिणी भारत और प्रशान्त महासागर के अन्य द्वीपों में उगाया जाता है। कुछ उत्पादक देशों से तेल निकालकर निर्यात किया जाता है और कुछ अन्य प्रदेशों से नारियल का फल ही निर्यात होता है। नारियल का सबसे अधिक आयात संयुक्त राष्ट्र में होता है।

मूंगफली—मूंगफली की खेती उष्ण कटिबंध में होती है। इसके लिए हल्की मिट्टी अलग अलग तर व सूखा मौसम और २५ इंच से ४० इंच तक वर्षा की आवश्यकता होती है। यह एक मिली-जुली उपज है और मक्का, बाजरा तथा अन्य मोटे खाद्यान्नों के साथ हेरफेर करके उगाई जा सकती है। मूंगफली का उत्पादन अधिकतर तेल के लिए होता है। इसमें तेल का अंश ४२ प्रतिशत तक होता है। तेल निकालने के बाद बची हुई खली जानवरों को खिलाई जाती है। इसकी गिरी का प्रयोग मेवा, मुरब्बा बनाने तथा कृत्रिम मक्खन तैयार करने में भी होता है।



चित्र नं० २२

मूगफली की खेती भारत, ब्राजील, पूर्वी अफ्रीका, चिली, फिलीपाइन तथा कोरिया में होती है। सब से अधिक मूगफली भारतवर्ष से निर्यात की जाती है। इसका आयात विशेष रूप से फ्रांस तथा जर्मनी में होता है।

सन् १९४८ में मूगफली का विश्वव्यापी उत्पादन ४७ लाख टन था और १९४९ में ५० लाख टन था। संसार के प्रमुख देशों में मूगफली का उत्पादन निम्न तालिका से ज्ञात होता है।

मूगफली का विश्वव्यापी उत्पादन
[सहस्र टनों में]

देश	१९३८	१९४८	१९४९
अर्जन्टाइना	६०	१००	१००
भारत	२५००	२८००	३०७०
संयुक्त राष्ट्र	५००	९३८	८००
ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका	२५०	३००	४००
फ्रेंच वेस्ट अफ्रीका	४५०	२००	२००
पूर्वी अफ्रीका	६०	५०	६०
इंडोनेशिया	१९५	१९५	१८२
चीन तथा मंचूरिया	८०	२०	२०
कुल योग	४०६५	४५७३	४८३२

अलसी—सन के बीज को अलसी कहते हैं। इसका मुख्य प्रयोग रंग, वार्निश तथा मोमजामा तैयार करने में होता है। अलसी का अधिकतर उत्पादन अर्जेन्टाइना इटली, रूस, भारत और संयुक्त राष्ट्र में होता है। विदेशी मंडियों में आने वाली अलसी का चार-पंचमांश अर्जेन्टाइना से आता है।

विश्वव्यापी व्यापार के दृष्टिकोण से रूस का अलसी उत्पादन में कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है क्योंकि यहां की समस्त उपज घरेलू उपभोग में ही खतम हो जाती है। अलसी-उत्पादक अन्य देशों में कनाडा का स्थान भी कुछ महत्वपूर्ण है। अलसी का आयात करनेवाले मुख्य देश ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी, हालैंड, बेल्जियम और स्वीडन हैं। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की मुख्य बात यह है कि ग्रेट ब्रिटेन में भारतीय अलसी की मांग बराबर बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपनी बढ़ती हुई मांग की पूर्ति के लिए अर्जेन्टाइना और भारत से बहुत अधिक मात्रा में अलसी आयात करने लगा है।

सन् १९४९ में २९ लाख टन अलसी संसार भर में उत्पन्न हुई जबकि सन् १९४८ में विश्वव्यापी उत्पादन ३३ लाख टन था। निम्नलिखित आंकड़ों से युद्ध से पूर्व और पश्चात का विश्वव्यापी उत्पादन स्पष्ट हो जाता है।

अलसी का उत्पादन
[हजार टनों में]

	१९३८	१९४८	१९५९
अर्जेन्टाइना	१५०००	६००	४६५
भारत	४००	४००	३७५
संयुक्त राष्ट्र	२००	९९९	१०३७
रूस	७५०	४००	५००
कनाडा	३०	३००	१२५
कुल योग	१६३८०	२६९९	२५३२

इन आंकड़ों से तीन बातें स्पष्ट होती हैं—

(१) अर्जेन्टाइना में अलसी का उत्पादन युद्ध पूर्व से एक तिहाई रह गया है।

(२) संयुक्त राष्ट्र अमरीका में युद्ध के पूर्व की अपेक्षा अलसी का उत्पादन पंचगुना हो गया है।

(३) भारत में अलसी का उत्पादन युद्धपूर्व स्तर पर ही बना रहा है। मुख्य मुद्रा प्रदेशों में भारत ही एक ऐसा देश है जो अलसी का उत्पादन व निर्यात समुचित मात्रा में करता है।

तिल भी उष्ण कटिबन्ध का पौधा है और इसकी वार्षिक उपज होती है। भारत तथा चीन में इससे विशेषकर तेल निकाला जाता है। ताड का तेल ताड के फल से प्राप्त होता है और साबुन, मोमबत्ती तथा औषधियां बनाने में प्रयोग होता है। इस तेल से मशीनों को भी चिकना किया जाता है। इससे मक्खन व चर्बी भी बनाई जाती है। ताड के फल पश्चिमी अफ्रीका और इंडोनेशिया में उगते हैं। भारत में तेल के लिये इसका उत्पादन नही के बराबर है। सन् १९४६ में तिल का विश्वव्यापी उत्पादन केवल ४,९७,००० टन था जबकि सन् १९३८ में कुल उत्पादन ६,५४,००० टन था।

रेंडी के बीज का उत्पादन भारत, ब्राज़ील, जावा, इंडोचीन और मचूरिआ में होता है। इसके बीज से तेल निकलता है। इस तेल से लाभदायक औषधियां, साबुन तथा मशीन के तेल बनाये जाते हैं। भारत से तेल के लिये रेंडी के बीजों का निर्यात ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, संयुक्त राष्ट्र, बेल्जियम और जर्मनी को होता है।

सन् १९४९ मे रेंडी के बीज का विश्वव्यापी उत्पादन ५ लाख टन था जबकि सन् १९३८ में कुल उत्पादन केवल ३ लाख टन था। नीचे की तालिका से यह बात स्पष्ट हो जायगी —

रेंडी के बीज का विश्वव्यापी उत्पादन
[हजार टनों में]

	१९३८	१९४८	१९४९
भारत	१२५	१०६	१२०
ब्राज़ील	४०	१७०	२५०
इंडोनेशिया	१०	१०	१०
रूस	८०	८०	८०
कुल योग	२५५	३६६	४६०

इन तालिका से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि पिछले कुछ दिनों में ब्राज़ील में रेंडी के बीज का उत्पादन बहुत बढ़ गया है। सन् १९४९ में इस देश में कुल उत्पादन युद्धपूर्व की अपेक्षा छै गुने से भी अधिक बढ़ गया है।

सोयाबीन उसी भूमि में उत्पन्न होता है जहां कपास और मक्का की खेती होती है। साधारणतया इसकी खेती भारी दोमट भूमि में की जाती है। इसका बीज गर्मी के मौसम में बोया जाता है और दिसम्बर के महीने में कटाई शुरू हो जाती है।

संसार में सोयाबीन का सब से अधिक उत्पादन मंचूरिया में होता है। अन्य उत्पादक देश जापान, चीन, भारत और संयुक्तराष्ट्र हैं।

सोयाबीन का विश्वव्यापी उत्पादन

[दस लाख मीट्रिक क्विंटल में]

चीन	५०२	कोरिया	४६
मन्चूका	३३९	जापान	२८
संयुक्त राष्ट्र	१०८	पूर्वी द्वीपसमूह	२०

आजकल सोयाबीन का व्यापारिक महत्त्व बहुत बढ़ गया है। सोयाबीन से खाद्य पदार्थ, तेल, हरी फलियाँ तथा सूखी फलियाँ प्राप्त होती हैं।

सोयाबीन की उपयोगी वस्तुएं

आहार—प्रातः कलेवा, आटा, दूध, चटनी, रोटी, मिठाई आदि।

तैल—ग्लिसरीन, वार्निश, पेन्ट, लिनोलियम नामक फर्श पर बिछाने का मोमजामा, सिलोनायड, मशीनों को चिकना करने का तेल, साबुन तथा रबर के स्थान में प्रयोग में आने वाली बहुत-सी वस्तुएं।

हरी फलियाँ—शाक, भाजी व सलाद इत्यादि।

सूखी फलियाँ—खीर, वनस्पति दूध, कहवे के स्थान पर प्रयोग में आने वाली वस्तुएं, उबाल कर भोजन के लिये फलियाँ आदि।

प्रश्नावली

१ रबर और चुकन्दर के उत्पादन के लिये कौन-सी भौगोलिक दशायें आवश्यक हैं? संसार में इनकी उपज के प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन कीजिये।

२ चुकन्दर और गन्ने के लिये कौन २ सी उपज की दशायें आवश्यक हैं? इन भौगोलिक दशाओं के आधार पर दोनों के उत्पादन का विश्वव्यापी वितरण बतलाइये।

३ कपास की सफल खेती के लिये कौन-सी बातें आवश्यक हैं? भारत में इसके उपज के क्षेत्र कौन से हैं और उत्पादन की मात्रा व किस्म में उन्नति करने के लिये क्या प्रयत्न हो रहे हैं?

४ भारतीय कपास के प्रमुख खरीदार कौन २ हैं? लंकाशायर के कपास व्यवसाय को कहाँ से कपास लेना पड़ता है? क्या यह कहना ठीक है कि ब्रिटिश कामनवेल्थ कपास के दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर हो जायगा?

५ कपास कितने प्रकार की होती है? प्रमुख प्रकार की कपास के उपज क्षेत्रों का संक्षिप्त विवरण दीजिये।

६. कहवा और चाय के उत्पादन के लिये किन दशाओं का होना आवश्यक है? इन वस्तुओं के उत्पादन और निर्यात के लिये कौन से देश प्रमुख हैं?

७ भारत में निम्नलिखित फसलों का महत्व समझाइये—

(१) कपास (२) मूंगफली (३) पटसन (४) तिलहन (५) चावल (६) गेहू।

८ रबर प्राप्त करने के मुख्य स्रोत कौन से हैं और इन पर किन देशों का आधिपत्य है ? भारत मे रबर उत्पादन की क्या समावनायें है ?

९ ससार में चावल आयात करने वाले प्रमुख देश कौन है ? ग्रेट ब्रिटेन और उत्तरी यूरोप के देशो मे चावल कहा से मगाया जाता है ? इस व्यापार में भारत और बर्मा का क्या स्थान है ?

१० कारण सहित निम्नलिखित वस्तुओं के प्रमुख उपज क्षेत्रो का विवरण दीजिये—

(१) चीनी (२) कहवा (३) सन (४) भारतीय रबर (५) तम्बाकू।

११ कपास की खेती के लिये किन प्राकृतिक दशाओ की आवश्यकता होती है ? कौन देश इसका निर्यात करते हैं और किन देशों में इसकी माग रहती है ?

१२ गेहू व चावल के उत्पादन के लिये आवश्यक प्राकृतिक और आर्थिक दशाओ की तुलना कीजिये ? इन वस्तुओ के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कौन से देश व बन्दरगाह भाग लेते हैं ?

१३ चावल, कपास और गन्ने की खेती के लिये कौन-सी दशायें सहायक होती है और कौन-सी हानिकर ? कारण सहित उत्तर दीजिये।

१४ ब्रिटिश कामनवेल्थ देशो में गहू, चावल और गन्ने की उपज का वितरण बतलाइये और लिखिये कि प्रत्येक का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में क्या स्थान है ?

१५ चाय के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विशेषताओं का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि चाय की गिरती हुई कीमतें किस प्रकार एक स्थायी स्तर पर पहुचो ? चाय के व्यापार में वृद्धि करने के लिये किन बातो का करना जरूरी है ?

१६ ससार में रेशम उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश कौन २ से हैं ? रेशम के उत्पादन व व्यापार का विवरण देते हुए यह भी बतलाइये कि बनावटी रेशम की स्पर्धा से असली रेशम उद्योग को किस प्रकार धक्का लगा है ?

१७ यूरोप में चुकन्दर उत्पन्न करने वाले प्रदेशो की स्थिति व महत्व विस्तार से समझाइये।

१८ ससार मे विविध खाद्यानो की माग व पूर्ति का विवरण दीजिये और बतलाइये कि उपभोगी प्रदेशो मे खाद्यानों की वर्तमान कमी को किस प्रकार दूर किया जा सकता है ?

१९ ससार में रबड उत्पन्न करने वाले प्रमुख प्रदेशों का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि कृत्रिम रबर प्राकृतिक रबर की कहा तक स्पर्धा कर सकता है ?

२० चाय की सफल खेती के लिये किन भौगोलिक दशाओ की आवश्यकता होती है ? ससार में चाय की माग-पूर्ति समस्या का वर्तमान रूप क्या है ? समझा कर कारणों सहित उत्तर लिखिये।

२१ भूमण्डल में गेहूं के व्यापार का संक्षिप्त विवरण दीजिये, उसके आयात निर्यात के प्रधान देशों का बतलाइये और उनके आयात निर्यात बन्दरगाहों का भी।

२२ ताजा में गेहूं पृथ्वी में सब से अधिक पैदा हुआ है। कहीं न कहीं अवश्य सारे वर्ष भर यह काटा और जमा किया जाता है। इस वाक्य की व्याख्या दिखलाइये।

२३ चीनी किन दो प्रधान वस्तुओं से बनाई जाती है। पृथ्वी पर यह वस्तुएं कहां २ पाई जाती हैं। वर्णन कीजिये और वहां उनकी उपज के कारण बतलाइये।

२४ रबर की खेती जिन भौगोलिक परिस्थितियों में होती है उनका वर्णन कीजिये। दक्षिण-पूर्वी एशिया में किन प्रदेशों में रबर होता है।

२५ आजकल अधिकांश बढ़िया रबर कहां पैदा होता है। जंगली रबर के उत्पादक देशों की अपेक्षा इन रबर के बागीचों में क्या सुविधायें हैं?

२६ ठीक-ठीक बतलाइये कि भूमण्डल के किन भागों में चाय और कहवा की उपज होती है। उनकी उपज में किन किन विशेष परिस्थितियों की आवश्यकता होती है।

२७ कृषि की क्या महत्ता है? कृषि की उपज में भारत कहां तक अपना ऊपर भरपूर भरोसा कर सकता है।

२८. "गन्ने की चीनी का उद्योग चुकन्दर की चीनी के उद्योग से अच्छा है," इस उक्ति को समझाइये।

२९ विविध वस्तुओं के उत्पादन से भूप्रकृति का क्या सम्बन्ध है? उदाहरण देते हुए समझा कर उत्तर लिखिये।

३० रुई की सफल खेती के लिये किन परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। भूमण्डल पर उसकी उपज के प्रधान क्षेत्र बतलाइये। उसकी उत्तम जातियां कहां उत्पन्न होती हैं?

३१ निम्नलिखित तथ्यों के कारण बतलाइये—

(अ) कनाडा में गेहूं होता है चावल नहीं।

(ब) लगभग संसार का समस्त पटसन भारत में ही उत्पन्न होता है।

(स) पिछले कुछ दिनों में जंगली रबर का महत्व व उत्पादन घट गया है।

३२ किसी प्रदेश में खेती का उद्यम भौगोलिक परिस्थितियों पर कहां तक निर्भर रहता है? उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिये।

३३ व्यावसायिक दृष्टिकोण से रबर का उत्पादन किन परिस्थितियों पर निर्भर रहता है? रबर उत्पादक प्रदेशों के निवासियों पर रबर के अधिकाधिक उत्पादन का क्या प्रभाव पड़ा है?

३४ गेहूं, कपास, और चीनी उत्पन्न करने वाले प्रदेशों का इन वस्तुओं के उत्पादन व व्यापार की दृष्टि से तुलनात्मक महत्व बतलाइये।

३५ कपास के विश्वव्यापी उत्पादन व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विवरण दीजिये और बतलाइये कि इसके बढने की भविष्य में कौन-सी संभावनायें हैं।

३६ रबर और कहवा को निर्यात करने के लिये कहा-कहा उगाया जाता है और कौन-सी भौगोलिक दशायें इसके लिये लाभप्रद होती हैं ? संसार में इन वस्तुओं के आयात-निर्यात व्यापार का विवरण दीजिये।

३७ पृथ्वी के मानचित्र पर संसार के प्रमुख गेहूं, चाय व बागीचों में रबर उत्पादक क्षेत्रों को दिखलाइये।

३८ "वनस्पति तेल का भोजन रूप में उपयोग बढ रहा है" इस कथन का समर्थन कीजिये और इसका विश्वव्यापी वितरण बतलाइये।

३९ उपज की दशाओं का वर्णन करते हुए संसार में रेशम, पटसन और शराब उत्पादक क्षेत्रों का विवरण दीजिये। इन वस्तुओं में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का भी निरूपण कीजिये।

४० निम्नलिखित कथन की पुष्टि कीजिये और कारण बतलाइये।

"गेहूं की विस्तृत खेती अब उन प्रदेशों में होने लगी है जहा की जलवायु कुछ वर्ष पहले गेहूं के लिये सर्वथा प्रतिकूल थी।"

इस प्रकार के कुछ क्षेत्रों का नाम भी बतलाइये।

४१ चावल उत्पादक प्रदेशों में भूप्रकृति, भूमि और जलवायु सम्बन्धी क्या विशेषतायें पाई जाती हैं ? एशिया के दो प्रमुख चावल क्षेत्रों का उदाहरण देते हुए वहा की मानव परिस्थितियों का विवरण दीजिये।

अध्याय : : चार

खान खोदना (Mining)

खनिज का महत्त्व—खान खोदना वह उद्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने उपयोग के लिये जमीन खोद कर भूगर्भ से खनिज निकालता है। ये खनिज पदार्थ भिन्न-भिन्न उद्योगों में कच्ची धातुओं का काम देते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि वर्तमान सभ्यता बहुत अंशों में खनिज पदार्थों पर ही निर्भर है। मशीन, जहाज, हथियार, मकान, सिक्के आदि सभी वस्तुएं खनिज पदार्थों से सम्बन्धित हैं। वर्तमान सभ्य जीवन की प्रत्येक वस्तु का आधार खनिज पदार्थ ही है। किसी भी देश में उसके व्यवसाय सम्बन्धी सभी आवश्यक खनिज पदार्थ प्राप्य नहीं हैं। अतः भिन्न २ आवश्यक खनिज पदार्थों की प्राप्ति के लिये सभी देश एक दूसरे पर अवलम्बित व सम्बद्ध हैं। खनिज पदार्थों की खोज करने वालों के लिये संसार का कोई भी भाग दुर्गम नहीं है। आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमेरिका के उष्ण मरुस्थलों तथा अलास्का की शीतप्रधान मरुभूमि की आर्थिक उन्नति उन प्रदेशों में खनिज पदार्थ की खोज के बाद से ही हुई है। सन् १८९७ में अलास्का के समीप क्लोंडाइक प्रायद्वीप में सोने की खान का पता लगा और तभी से लोगों का तांता-सा लग गया है। परन्तु वर्तमान जलवायु की दशाओं से खनिज पदार्थों का कोई भी सम्बन्ध नहीं है चाहे वे खनिज पदार्थ गर्म मरुस्थलों में हों या ठंडे प्रदेशों में। इसके अतिरिक्त अपनी जलवायु की दशाओं के अनुसार या अनुकूल खनिज पदार्थों को नहीं चुना जा सकता।

खनिज की विशेषता व वर्तमान समस्यायें—खनिज सम्पत्ति का परिमाण सीमित होता है। कृषि की भांति इसकी उपज बार २ नहीं हो सकती। भूगर्भ से एक बार निकाल लिये जाने पर उतनी मात्रा से खनिज सदा के लिये समाप्त हो जाते हैं। इसलिये खान खोदना भी एक प्रकार की हानि है क्योंकि इसके द्वारा जो पदार्थ एक बार निकाल लिये जाते हैं उनकी पूर्ति असंभव है। खान खोदना प्रकृति की सम्पत्ति का अपहरण मात्र है। खनिज दिन प्रति दिन कम होते जा रहे हैं और ऐसी आशा है कि भविष्य में खनिज की भारी कमी हो जायेगी। अभी भी पश्चिमी गोलार्द्ध और विशेषकर उत्तरी अटलांटिक महासागर के तटवर्ती प्रदेशों में खनिज सम्पत्ति का अभाव लोगों को अखरने लगा है। सन् १९१४ से अब तक खनिज पदार्थों का और विशेष कर महत्त्वपूर्ण धातुओं का इतना खनन हो चुका है कि इस समय रांगे, सीसे तथा जस्ते की स्थिति गंभीर हो गई है। तांबा, निकल, मैंगनीज, क्रोमियम और गंधक का भी अभाव होता जा रहा है और नई खानों से मांग-पूर्ति नहीं होती। फिर भी पूर्वी देशों की स्थिति इतनी गंभीर नहीं हुई है। पूर्वी देशों में खनिज सम्पत्ति अभी निकाली भी नहीं गई है। परन्तु निकट भविष्य में पूर्वी देशों से खनिज

पदार्थों की माग अपरिमित मात्रा में बढ जायेगी क्योंकि अनेक पूर्वी राष्ट्रों में उद्योगीकरण, कृषि विकास, यान्त्रिक यातायात तथा जल विद्युत सम्बन्धी विकास योजनाओं पर काम शुरू हो चुका है। फलत कच्ची धातुओं की माग म क्रान्तिकारी वृद्धि होगी और वर्तमान काल में जहा कुछ हजार टनो की ही माग रहती थी वहा अब लाखो टन खनिज पदार्थों का उपभोग होने लगेगा।

खनिज पदार्थों के प्रकार व वर्ग—खनिज पदार्थों को निम्नलिखित श्रेणियों में बाटा जा सकता है—

(१) **कच्ची धातुए**—लोहा, ताम्बा, जस्ता, टीन, सीसा, रागा, अलमूनियम, चादी, सोना, पारा, सुरमा, प्लेटिनम, मेंगनीज, निकल, क्रोमियम, कोबाल्ट, टगस्टन और वेनेडियम।

(२) **ईंधन**—कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस।

(३) **इमारती समान**—सीमेंट, पत्थर, चूना, एसिबेस्टोस, अस्फाल्ट, खडिया-मिट्टी, चिकनी मिट्टी, रेत तथा ककड आदि।

(४) **रासायनिक पदार्थ**—नमक, गधक, पोटाश, मैगनेसाइट, सफेद मिट्टी, डोल माइट आदि।

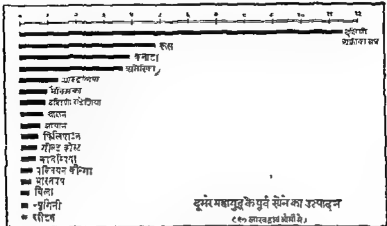
(५) **विविध पदार्थ**—गिलखरी (Soap stone), अभ्रक, बहुमूल्य रत्न, ग्रेफाइट स्लेट, नीलम, माणिक, बिल्लौरी पत्थर इत्यादि।

सोना (Gold)—इसके अधिकतर सिक्के और गहने बनते है। यह बहुत ही मूल्यवान धातु है और मनुष्य जीवन पर इसका गहरा प्रभाव पडता है। सोने के लोभ से ही अलास्का और दक्षिणी अफ्रीका की उन्नति हुई है। इन प्रदेशों की आबादी का घनत्व भी सुवर्ण की खानो की खोज के बाद ही बढा है।

सोने की खान सभी देशों में पाई जाती है। परन्तु अधिक मात्रा म यह कुछ ही देशों में मिलता है। उत्पादन की मात्रा की विभिन्नता इतनी महत्वपूर्ण नही है जितनी कि आधिपत्य की विविधता। भिन्न २ देशों के पास सोना प्राप्त करने व सोने की खानो पर अधिकार रखने के विविध तरीके है। फलत सोने के दृष्टिकोण से भिन्न २ देशों का विभिन्न महत्व है।

ससार में सोने के कुल उत्पादन का आधे से अधिक भाग दक्षिणी अफ्रीका म प्राप्त होता है जो कि ससार म सब से महत्वपूर्ण सुवर्ण उत्पादक देश है। वास्तव में दक्षिणी अफ्रीका की इतनी उन्नति सोने की खानो के ही कारण हुई है। सोने की खानो से सोना प्राप्त करने के लिये ही दक्षिणी अफ्रीका में यातायात के साधनो की सुविधा तथा बडे २ नगरों की स्थापना हो गई है। इसीलिये यह कहा जाता है कि "दक्षिणी अफ्रीका की सोने की खाने उसका मेरुदड है।" दक्षिणी अफ्रीका का वह प्रदेश जहा सब से अधिक सोना निकाला जाता है लिम्पोपो और ओरज नदियों के बीच स्थित पहाडियों के उत्तरी सिरे

पर एक लम्बी पतली चोटी है। इस चोटी को विट्वाटर्सरैंड (Witwatersrand) या केवल रैंड के नाम से पुकारते हैं। इस प्रदेश की सोने की खानों का १८८५ में पता



चित्र नं० २३—सन् १९४९ में सोने का विश्वव्यापी उत्पादन २४९ लाख औंस था जो कि १९४८ के उत्पादन से ७,००,००० औंस अधिक था। इसका कारण था कनाडा और दक्षिणी अफ्रीका में उत्पादन की वृद्धि।

लगा। रैंड का औद्योगिक क्षेत्र प्रधानतः सोने के कारण ही इतना प्रसिद्ध है। जोहेन्सबर्ग, जर्मिस्टन, बिनोनी, क्रुगर्सडार्प और रूजरस्डोर्फ यहां के मुख्य शहर हैं। ये सभी नगर रेल द्वारा एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और जोहेन्सबर्ग के पूर्व व पश्चिम में ७० मील के भीतर ही बसे हुए हैं। समस्त दक्षिणी अफ्रीका संघ के पचास प्रतिशत योरोपियन लोग अथवा ट्रांसवाल की आधी आबादी इसी प्रदेश में रहती है।

जोहेन्सबर्ग के पश्चिम में श्रेणी की चट्टानों के बीच सोना पाया जाता है। इन चट्टानों को कुचलकर सोना निकाला जाता है। इस प्रदेश में सोना निकालने में भीषण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि मजदूर कम मिलते हैं और यातायात के साधन भी सुविधाजनक नहीं हैं। जलवायु की उष्णता के कारण भी बड़ी परेशानी होती है। इस समय खानों में काम करने के लिये भारत व चीन से मजदूरों को लाना पड़ता है। इन मजदूरों को एक निश्चित समय तक काम करने के लिये बाध्य होना पड़ता है। ठेके की शर्तों के अनुसार ये मजदूर कारखानों के इर्द गिर्द ही रक्खे जाते हैं और खान खोदने वाली कम्पनियां ही उनके रहने व खाने का प्रबन्ध करती हैं। सन् १९४७ में दक्षिणी अफ्रीका के संघ में ११० लाख औंस सोना ट्रांसवाल की खानों से निकाला गया। इसी वर्ष के भीतर केप ऑफ गुड होप, नेटाल और औरंज फ्री स्टेट में कुल मिला कर १००,००० पौंड मूल्य का सोना निकाला

गया। सन् १९४७ में दक्षिणी रोडेशिया में ५,२३,००० औंस सोना निकाला गया। बेल्जियम कांगो में सोना प्रधानत किलोमीटर खानों से निकाला जाता है और सन् '४७ में यहां से ३ लाख औंस सोना निकाला गया।

उत्तरी अमेरिका के भी बहुत से भागों में सोना पाया जाता है। ऐलास्का से लेकर दक्षिण में मैक्सिको तक सारा-का-सारा भाग सोने से धनी है। उत्तरी अमेरिका में *सोना निकालने के लिये निम्नलिखित क्षेत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—*

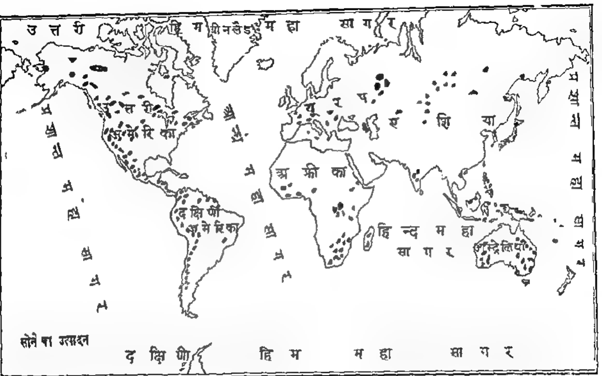
१) अलास्का में यूकान नदी का बेसिन—इसका केंद्र क्लोन्डाइक है।
२) ब्रिटिश कोलम्बिया में फ्रेसर और कोलम्बिया नदी के बेसिन।
३) कैलिफोर्निया।
४) इडाहो का पठार।
५) पूर्वी राकी क्षेत्र—मोन्टाना और डाकोटा के राज्य।
६) कोलेरैडो और ऐरीजोना के पठार।
७) मैक्सिको में ऐलारो का प्रदेश।

संसार के सोने के कुल उत्पादन का एक चौथाई भाग उत्तरी अमरीका से प्राप्त होता है। हाल में कनाडा के ओन्टारियो प्रदेश में सोने की कुछ खानों का पता लगा है और अन्य बहुत-सी खानों की खोज होती है। सन् १९४२ में कनाडा की विभिन्न खानों से ५ लाख औंस सोना प्राप्त हुआ था।

आस्ट्रेलिया के प्रत्येक प्रान्त में सोना पाया जाता है और इसलिये सोना वहां की प्रमुख धातु है। आस्ट्रेलिया में सोने की खानों का पता सन् १८५१ में लगा। तभी से लोग दूर-दूर से आस्ट्रेलिया में बसने के लिये आने लगे। फलतः ८ साल के अन्दर ६ लाख आदमी बढ़ गये। सन् १८५० में आबादी ४,००,००० थी पर सन् १८५८ में कुल आबादी १० लाख हो गयी। पश्चिमी आस्ट्रेलिया, क्वीन्सलैंड और विक्टोरिया में सोने की बहुमूल्य खान हैं। बालारात और बेन्डिगो विक्टोरिया के सब से अधिक सोना उत्पन्न करने वाले प्रदेश हैं। क्वीन्सलैंड में माउंट मारगन और चार्टर्सटाउन सोना निकालने के मुख्य केंद्र हैं। पश्चिमी आस्ट्रेलिया में कूलगार्डी और कालगूर्ली में सोने की बड़ी खान हैं। सन् १९४७ में आस्ट्रेलिया ने १६० लाख पौंड मूल्य का १० लाख औंस सोना उत्पन्न किया।

भारत में सोने का अधिकतर भाग मैसूर की कोलार खानों से प्राप्त होता है। सन् १९४७ में कोलार की सुवर्ण खानों से करीब १,७०,००० औंस सोना निकाला गया। बेंगलोर से ६० मील पश्चिम का बलारी नामक खानों से थोड़ा-सा सोना प्राप्त होता है। बर्मा में भी नदियों की लाई हुई मिट्टी में मिला हुआ थोड़ा-बहुत सोना प्राप्त होता है।

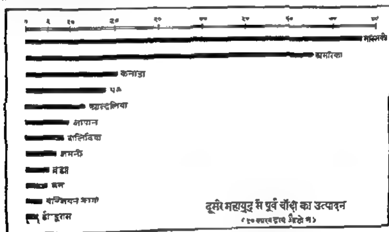
ब्रिटिश कामनवेल्थ का सोने के उत्पादन के दृष्टिकोण से अद्वितीय स्थान है क्योंकि संसार भर के सोने की ६० प्रतिशत खानें तथा सम्पत्ति इन्हीं के अधिकार में है।



चित्र न० २४—सोने के उत्पादन का वितरण—उत्तरी अमरीका में अलास्का से मेक्सिको तक सोने की खानो
क्षेत्र विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है।

चांदी (Silver)—चांदी शुद्ध रूप में और सोना, सीसा, तांबा आदि अन्य धातुओं के साथ मिली हुई दोनों ही तरीकों से प्राप्त होती है। आजकल चांदी प्राय अन्य धातुओं के साथ मिली हुई ही पाई जाती है। अत यह अन्य वस्तुओं के साथ प्राप्त एक गौण वस्तु है और यह दिखलाती है कि वे अन्य धातुएँ वहां पाई जाती हैं। इसका उपयोग बर्तन, आभूषण तथा सिक्के आदि बनाने और अन्य धातु की वस्तुओं पर कलई चढ़ाने में किया जाता है।

ब्रिटिश कामनवेल्थ में चांदी का उत्पादन कुछ विशेष संतोषजनक नहीं है। समस्त संसार के उत्पादन का केवल आठवां हिस्सा ही इन प्रदेशों में उपलब्ध है।



चित्र नं० २५

उत्तरी अमेरिका में संसार के कुल उत्पादन का दो तिहाई चांदी पाई जाती है। पश्चिम की समस्त पहाड़ी श्रेणी में—उत्तर में संयुक्त राष्ट्र से लेकर दक्षिणी अमेरिका में चिली तक—चांदी का अपार भंडार है। मेक्सिको में सब से अधिक चांदी मिलती है। प्रति वर्ष वहां से सारे संसार की एक तिहाई नई चांदी प्राप्त होती है। सन् १९४७ में मेक्सिको में ५६० लाख औंस चांदी निकाली गयी। इसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र ने करीब ३६० लाख औंस चांदी का उत्पादन किया। संयुक्त राष्ट्र की चांदी की खानें, इडाहो, मोन्टाना, कैलीफोर्निया, यूताह, टकसास, कोलेरेडो और एरीजोना राज्यों में स्थित हैं। चांदी के उत्पादन की दृष्टि से कनाडा का चौथा स्थान है और कनाडा के कुल उत्पादन की आधी या आधी से अधिक चांदी ओंटेरियो प्रान्त में उपलब्ध है। बाकी ब्रिटिश कोलम्बिया से प्राप्त होती है। सन् १९४७ में चांदी का कुल उत्पादन (कनाडा में) ११० लाख औंस था। पीरू में केरो डि पेस्को की खानों में सीसे व तांबे के साथ २ चांदी भी पाई जाती

है। परन्तु पीरू में अक्सर राजनैतिक गड़बड़ी के कारण खानों के काम में बाधा पड़ जाती है। सुशासन के स्थापित हो जाने से उत्पादन में वृद्धि होने की आशा है। इस समय समस्त संसार के उत्पादन का केवल ८ प्रतिशत भाग ही यहां से प्राप्त होता है।

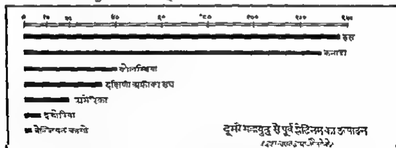
आस्ट्रेलिया में भी बहुत चांदी पाई जाती है। न्यूसाउथवेल्स और पश्चिमी आस्ट्रेलिया में चांदी के अपार भंडार मौजूद हैं। सन् १९४७ में अनुमानतः आस्ट्रेलिया में चांदी का कुल उत्पादन ९० लाख औंस था। यूरोप, जर्मनी और स्पेन में थोड़ी-बहुत चांदी पाई जाती है।

एशिया में, जापान और भारत में चांदी पाई जाती है। भारत में चांदी की अलग तो कोई खानें नहीं हैं परन्तु सोने, सीसे तथा रांगे के साथ गौण रूप में मिलती है। भारत की लगभग सब चांदी मैसूर में कोलार की सुवर्ण खानों से प्राप्त होती है।

जैसे जैसे चांदी का उत्पादन बढ़ रहा है, इस धातु का दाम घट रहा है। सन् १९३३ में मेक्सिको, संयुक्त राष्ट्र, कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा पीरू आदि देशों के बीच चांदी के मूल्य को एक उचित स्तर पर लाने के उद्देश्य से एक समझौता हुआ था।

प्लेटिनम (Platinum)—यह एक बहुमूल्य पदार्थ है जिसका प्रयोग फोटोग्राफी, दन्त चिकित्सा, बिजली और बहुमूल्य गहने बनाने में किया जाता है। X-Ray में भी इसका उपयोग होता है। झोले, थैले, सिगरेट की डिब्बियां, सिगरेट जलाने के जेबी यन्त्र और चाकू आदि बनाने में भी इसका प्रयोग होता है। पिछले कुछ दिनों में हीरे-जवाहरात जड़ने में इसका विशेष प्रयोग होने लगा है।

बहुत दिनों से रूस में सब से अधिक प्लेटिनम निकलता था परन्तु इधर कुछ दिनों से कनाडा का उत्पादन रूस से भी अधिक बढ़ गया है। फिर भी रूस में लाखों औंस प्लेटिनम का सुरक्षित भंडार है।



चित्र नं० २६

रूस प्लेटिनम का प्रमुख उत्पादक देश है और संसार की समस्त उपज का एक-तिहाई यहीं से प्राप्त होता है। इसके बाद कनाडा का स्थान आता है और सन् १९४७ में ९५००० औंस प्लेटिनम उत्पन्न हुआ था। कनाडा के ब्रिटिश कोलम्बिया और औंटेरियो

प्रान्त इस धातु में विशेष रूप से धनी है। रूस की प्लेटिनम की खानें यूराल पर्वत श्रेणी में पाई जाती है। दक्षिणी अफ्रीका में ट्रासवाल के वाटरवर्ग, लिडनबर्ग और एस्तनबर्ग नामक प्रदेशो में प्लेटिनम की खानें पाई जाती है।

औसमियम और इरिडियम प्लेटिनम की जाति की धातुए हैं और प्रधानत कनाडा में पाई जाती है। सयुक्त राष्ट्र अमरीका और आस्ट्रेलिया में भी प्लेटिनम पाया जाता है।

सीसा (Lead)—यह प्राय जस्ते और चादी के साथ मिला हुआ पाया जाता है और विभिन्न उद्योगो म भिन्न२ तरीके से इसका प्रयोग करते हैं। भिन्न २ रगो, सीसे के बरतनो, टाइप मशीनो, मोटर गाडियो, हवाई जहाजो, इजनो, छपाई के कारखानो, गाने बजाने के यन्त्रो और बन्दूक की गोलिया बनाने में इसकी बडी माग रहती है।

सीसा उत्पन्न करने वाला प्रमुख देश सयुक्तराष्ट्र अमरीका है जहा यह धातु मिसौरी, इडाहो, ओक्लाहामा, कोलेरेडो, मोन्टाना नेवाडा, यूटाह, न्यूआरलियन्स और न्यू मेक्सिको राज्यो में पाई जाती है। यद्यपि सयुक्त राष्ट्र म उत्पादन बहुत अधिक है परन्तु घरेलू माग के अधिक होने के कारण निर्यात की कौन कहे, इसे अन्य देशा मे आयात करना पडता है। मेक्सिको, कनाडा, स्पेन और आस्ट्रेलिया सयुक्तराष्ट्र को निर्यात करने वाले मुख्य देश है।

सीसे का उत्पादन
(हजार मीट्रिक टनो में)

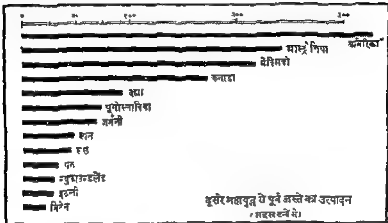
	१९४९	१९५०		१९४९	१९५०
सयुक्त राष्ट्र	४३३	४६११	जर्मनी	६७ ५	—
कनाडा	१३२ ६	१५४ ६	इटली	२६	—
मेक्सिको	२१२	२३० ८	बोलीविया	१९	—
आस्ट्रेलिया	१८७ ३	२०३ २	रोडेशिया	१४	—
बेल्जियम	६८	—			

जस्ता (Zinc)—साधारणतया यह धातु सीसे व ताबे के साथ मिली हुई पाई जाती है। इसका मुख्य प्रयोग लोहे पर कलई करने म होता है। लोहे पर इसकी कलई कर देने से मुर्चा नही लगता। रगो को बनाने में भी इसका प्रयोग होता है।

सन् १९४७ में जस्ता उत्पन्न करने वाले विभिन्न देश

सयुक्त राष्ट्र	५७०,०००	इटली	५०
आस्ट्रेलिया	१८२,०००	युगोस्लाविया	४७
कनाडा	१८५,६००	रूस	१०५,०००
जर्मनी	१३६	स्पेन	३३
मेक्सिको	१९३,०००	स्वीडन	३०
न्यूफाउडलैड	६७	उत्तरी रोडेशिया	२१

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में सबसे अधिक जस्ता उत्पन्न होता है और विश्व के कुल उत्पादन का ३० प्रतिशत भाग यहीं से प्राप्त होता है। ओकलाहामा, न्यूजरसी, कन्सास और यूताह इस धातु के प्रमुख प्रदेश हैं। हाल की कुछ खोज के कारण आस्ट्रेलिया में नई खानों का पता लगा है और उस देश का अब संसार के जस्ता उत्पादक देशों में चौथा स्थान हो गया है। कनाडा आस्ट्रेलिया के कुछ ही पीछे है। उत्तरी रोडेशिया में जस्ते की विशाल खानें हैं।



चित्र न० २७

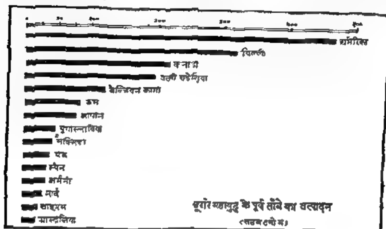
सन् १९४७ में जस्ते का विश्वव्यापी उत्पादन २० लाख टन था। इसी वर्ष ब्रिटिश कामनवेल्थ देशों ने ४,३०,००० टन जस्ता उत्पन्न किया।

तांबा (Copper) प्रायः चांदी, सोना, लोहा, सीसा और गंधक के साथ-साथ पाया जाता है। इस धातु की बड़ी माँग है और बिजली के व्यवसाय में इसका प्रमुख प्रयोग होता है। जस्ते के साथ मिला देने पर, पीतल तैयार हो जाता है, तांबे और रांगे को मिला देने से कांसा बन जाता है। निकल और तांबे की मिलावट करने से जर्मन सिलवर बनता है। सोने के गहने बनवाने में भी तांबे की मिलावट की जाती है।

संयुक्त राष्ट्र में कच्चा तांबा मोन्टाना, ऐरीजोना, नेवादा, कोलेरेडो, यूताह और सुपीरियर झील के पास के भागों में पाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र में मोन्टाना राज्य का बूटे प्रदेश संसार में सब से अधिक तांबा उत्पन्न करता है। इसके बाद सुपीरियर झील का तटीय प्रदेश क्रमशः प्रधान है। संसार के कुल उत्पादन का २० प्रतिशत अकेला संयुक्त राष्ट्र अमरीका ही उत्पन्न करता है। सन् १९५० में विश्वव्यापी उत्पादन का ४७ प्रतिशत भाग संयुक्त राष्ट्र में प्राप्त हुआ था। सन् १९४२ में संयुक्त राष्ट्र में २०

लाख टन तांबा उत्पन्न हुआ था।

तांबे के उत्पादन में संयुक्त राष्ट्र के बाद चिली का स्थान आता है। चिली में तांबे का विशाल भंडार है और ऐसा अनुमान है कि संसार का एक-तिहाई तांबा निहित है। एशिया में जापान इस धातु का प्रमुख उत्पादक है। भारत में भी थोडी बहुत मात्रा में तांबा पाया जाता है।



चित्र नं० २८

यूरोप में तांबे का उत्पादन कम होने के कारण, विदेशों से तांबे का आयात होता है। यूरोप में तांबा उत्पन्न करने वाले मुख्य देश स्पेन, जर्मनी और नार्वे हैं।

पिछले कुछ दिनों में ब्रिटिश कामनवेल्थ में तांबे का उत्पादन काफी बढ़ गया है परन्तु फिर भी विश्वव्यापी उत्पादन का केवल ८ प्रतिशत भाग ही यहां से प्राप्त होता है। यह मात्रा केवल ब्रिटिश राज्य की मांग के लिए भी पूरी नहीं होती। तांबे के उत्पादन में कनाडा का चौथा स्थान है। उत्तरी रोडेशिया में भी काफी मात्रा में तांबा निकाला जाता है।

हाल की कुछ खोज से पता लगा है कि बेल्जियन कांगो में कटांगा प्रदेश की तांबे की खान सबसे धनी है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि जैसे सोने व हीरे की खानों के कारण दक्षिणी अफ्रीका की उन्नति हुई है उसी प्रकार तांबे की इन खानों के सहारे कांगो बेसिन की भी भविष्य में काया पलट हो जायगी। मजदूरों की कमी और यातायात के अधिक महंगे होने के कारण अभी तक कोई विशेष उन्नति नहीं हो सकी है। मेक्सिको, जापान और पीरू तांबा उत्पन्न करने वाले अन्य महत्वपूर्ण देश हैं।

सन् १९३५ से दूसरे महायुद्ध के प्रारम्भ तक तांबे के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर

अन्तर्राष्ट्रीय ताबा निर्यात सघ का नियत्रण था और सयुक्त राष्ट्र, कनाडा, पीरु, मेक्सिको, चिली, बेल्जियन कागो तथा रोडेशिया इसके सदस्य थे।

ताबे का विश्वव्यापी उत्पादन

(हजार मीट्रिक टनो मे)

देश	१९४८	१९४९
सयुक्त राष्ट्र	८६३	८३५
मेक्सिको	६०	५८
कनाडा	२२०	२३४
जापान	५४	७२
चिली	४२५	४७२
जर्मनी	४०	७२
बेल्जियम	१३६	१२६
उत्तरी रोडेशिया	२१३	२६८
कुल योग	२,०४५	२,०६७

सन् १९५० मे रूस को छोडकर समस्त अन्य उत्पादक क्षेत्रो का कुल उत्पादन २३ लाख मीट्रिक टन था। इसका ८४ प्रतिशत निम्नलिखित राष्ट्रो मे प्राप्त हुआ—सयुक्तराष्ट्र (३७ प्र श), चिली (१६ प्र श), उत्तरी रोडेशिया (१२ प्र श) कनाडा (११ प्र श), बेल्जियम कान्गो (८ प्र श)।

अलुमिनियम (Aluminium)—वायु यातायात के इस युग मे इस धातु का महत्त्व विशेष रूप से बढ़ गया है। ५० वर्ष पूर्व इसका कोई भी विशेष उपयोग नही था परन्तु आजकल वायुयानो के अतिरिक्त इसका प्रयोग मोटर गाडियो, रेल के डिब्बो, बिजली के सामान और अस्त्र शस्त्र उद्योग में होता है।

अलुमिनियम की प्राप्ति बाक्साइट (Bauxite) और क्रायोलाइट (Cryolite) धातुओ से होती है। फ्रास, डच गायना, जापान, गोल्डकोस्ट, ब्रिटिश गायना जापान, हगरी और सयुक्त राष्ट्र मे बाक्साइट पाया जाता है। क्रायोलाइट केवल ग्रीनलैंड मे ही मिलता है और ग्रीनलैंड की सरकार ने कभी भी विदेशी व्यापारियो के साथ इस धातु के लिये भेद भाव नही किया है। हा, अपनी पूजी की आवश्यकता के अनुसार इस धातु के उत्पादन को नियत्रण में अवश्य रखती है। कच्ची धातु को गलाकर अलुमिनियम निकालने के वास्ते सस्ती शक्ति की आवश्यकता होती है।

सन् १९४७ में बाक्साइट उत्पन्न करने वाले देश

(हजार टनो में)

सयुक्त राष्ट्र	१२५०	गोल्डकोस्ट	९६
रूस	५००	ब्रिटिश गायना	१३९९
फ्रास	६६६	इन्डोनेशिया	४००
इटली	१६५		

सन १९४७ में बाक्साइट का विश्वव्यापी उत्पादन लगभग ६० लाख मीट्रिक टन था। सन् १९३७ में यह उत्पादन केवल ४६०,००० मीट्रिक टन था और सन् १९३८ तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका प्रमुख उत्पादक देश था।

इस समय भी समस्त संसार में अलुमिनियम की धातु व वस्तुओ के उत्पादन के दृष्टिकोण से संयुक्तराष्ट्र का स्थान सर्वप्रथम है। यहा पर संसार के कुल उत्पादन का २५ प्रतिशत भाग पाया जाता है।

प्रति वर्ष संयुक्तराष्ट्र अमरीका ६,५०,००० टन अलुमिनियम धातु उत्पन्न करता है परन्तु इसका अधिकतर भाग अस्त्र-शस्त्र बनाने में लग जाता है। कनाडा में प्रतिवर्ष ३,५०,००० टन अलुमिनियम तैयार होता है परन्तु हाल में ब्रिटिश कोलम्बिया के नये कारखाने के चालू हो जाने से उत्पादन में वृद्धि होने का अनुमान है। ग्रेट ब्रिटेन में अलुमिनियम का उत्पादन अपेक्षाकृत बहुत कम है—केवल ३०,००० टन प्रति वर्ष। इसलिए ब्रिटेन को इस धातु का आयात कनाडा से करना पड़ता है।

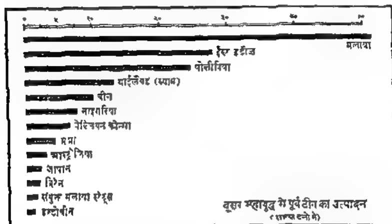
कच्ची धातु से अलुमिनियम प्राप्त करने की नवीन क्रिया से अलुमिनियम के उत्पादन की मात्रा पहले से अधिक बढ़ गई है और इसीलिए इसके दाम भी गिर गये हैं। यह धातु हल्की, मजबूत और कम घिसने वाली होती है। जहा शक्ति सस्ती हो वहा आसानी से अलुमिनियम तैयार हो सकता है। फ्रास, जर्मनी, नार्वे और इटली में सस्ती जल-विद्युत उपलब्ध होने के कारण अलुमिनियम व उससे वस्तुनिर्माण उद्योग बड़ा ही लाभप्रद है। आस्ट्रेलिया, भारत और नार्वे में भी अलुमिनियम के उत्पादन को बढ़ाने की सम्भावना है।

टीन (Tin)—इस धातु का प्रयोग छतों पर बिछाने की चद्दरें डालने और डिब्बे आदि बनाने में होता है। मछली तथा मांस के व्यवसाय-केन्द्रों में इन डिब्बों की बड़ी माग रहती है। टीन के उत्पादन के लिए प्रमुख देश क्रमश मलाया, बोलीविया, ग्रेट ब्रिटेन, इन्डोनेशिया, चीन, जर्मनी, संयुक्तराष्ट्र अमरीका, आस्ट्रेलिया, नाईजीरिया और बेल्जियन कांगो है।

मलाया में टीन की खाने पीराक, सेलान्गर, पहान्ग और नेगरी सेम्बिलन में पाई जाती है और प्रथम दो प्रदेशों से मलाया का ६० प्रतिशत टीन प्राप्त होता है। थोड़ी-बहुत मात्रा में टीन जोहोर, केदाह, केलान्टन, पेरलिस और ट्रेन्गनू आदि प्रदेशों में भी पाया जाता है। टीन खोदना व पिघलाना मलाया का प्रमुख उद्योग है। सन् १९३९ में मलाया राज्य संघ के कुल उत्पादन का ७० प्रतिशत टीन योरोपियन अधिकृत खानो से प्राप्त हुआ और शेष ३० प्रतिशत चीनी अधिकृत खानो से। टीन को पिघला कर वस्तु के रूप में ढालने का काम सिंगापुर और पेनाग में केन्द्रित है और वस्तुत गिने-चुने ब्रिटिश कारखानों मे ही होता है। इन कारखानो में बर्मा, थाइलैंड, इन्डोनेशिया, जापान, आस्ट्रेलिया और अफ्रीका से आयात किया हुआ कच्चा टीन भी गलाया जाता है। मलाया के

राज्यों से इंग्लैंड व आस्ट्रेलिया के अलावा अन्य कहीं को निर्यात होने वाले कच्चे टीन पर भारी *निर्यात-कर* देना पड़ता है। अतः इन दोनों देशों को छोड़ कर और कहीं भी कच्चा टीन निर्यात नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार इस रोक की सहायता से टीन गलाने का उद्योग केवल अंग्रेजों के हाथ में ही केन्द्रित है।

इन्डोनेशिया में भी काफी महत्वपूर्ण टीन भंडार हैं। अधिकतर खानें बांका, सुमात्रा, सिंघक्प और बिल्लिटन में पाई जाती हैं।



चित्र नं० २९—भारत में टीन का उत्पादन बिलकुल नहीं होता। न तो कहीं टीन का भंडार है और न भविष्य में ऐसे किसी भंडार के प्राप्त होने की आशा ही है।

मलाया और इन्डोनेशिया से संसार के कुल टीन उत्पादन का ६० प्रतिशत भाग प्राप्त होता है। बोलीविया में इस धातु को प्राप्त करने में विशेष कठिनाइयाँ हैं। इनमें सब से महत्वपूर्ण यातायात की असुविधायें हैं। बोलीविया में टीन की अधिकतर खानें १२००० फीट से अधिक ऊंचाई पर पायी जाती हैं। सन् १९४३ में बोलीविया में टीन का कुल उत्पादन ४०,००० टन था।

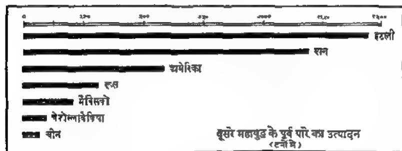
इस धातु के उत्पादन के दृष्टिकोण से ब्रिटिश कामनवेल्थ का स्थान विशेष रूप से प्रमुख है क्योंकि समस्त संसार के उत्पादन का ४० प्रतिशत भाग यहां से प्राप्त होता है। सन् १९५१ में टीन का कुल उत्पादन १६७,१०० टन था जिसमें से ४३,००० टन केवल ब्रिटिश कामनवेल्थ से प्राप्त हुआ था। सन् १९५१ में मुख्य उत्पादक देशों में टीन का उत्पादन मीट्रिक टनों में इस प्रकार था—

मलाया, इन्डोनेशिया और स्याम	९९,२०० (५९ प्र० श०)
बोलीविया	३३,७०० (२० प्र० श०)

बेल्जियम काम्गो और नाईजीरिया	२१,७०० (१३ प्र० श०)
अन्य प्रदेश	१२,६०० (८ प्र० श०)

टीन की सबसे अधिक माग सयुक्त राष्ट्र अमरीका में रहती है। वहा का मास-व्यवसाय बाहर से आयात किये हुए टीन पर ही निर्भर रहता है।

पारा (Quicksilver)—इस धातु का मुख्य प्रयोग चादी व सोने के शोधन में होता है। इसका उपयोग थर्मामीटर व बेरोमीटर बनाने में भी होता है। इससे दवाइयाँ व मलहम भी बनते हे और शीशों पर कलई भी की जाती है।



चित्र न० ३०—सन् १९४७ में पारे का कुल उत्पादन ५३१२ टन था और सब से प्रमुख उत्पादक देश इटली था।

सन १९४७ म इटली ने लगभग २००० टन पारा उत्पन्न किया। यद्यपि पारा इटली में यत्र-तत्र सभी स्थानो पर पाया जाता है परन्तु इस धातु का विशेष भडार टसकैनी, इडीरिया और ट्रीस्ट में विद्यमान है। स्पेन म पारे का भडार क्युदाद रीयल प्रदेश की अलमीडियन खान में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रनाडा और ओवीडियो प्रदेशो में भी पारे की खान पाई जाती है। सन् १९४७ म स्पेन मे १३२४ टन पारा प्राप्त हुआ।

सयुक्त राष्ट्र म कैलीफोर्निया, ओरीगन, टेक्सास, नेवादा, वाशिंगटन और अलक-सास राज्यों से पारा प्राप्त होता है। सन् १९४७ में सयुक्तराष्ट्र ने ७६० टन पारा उत्पन्न किया।

रूस में पारे की खानें डोनटज नदी के बेसिन में निकिटोवा स्थान पर पाई जाती है। मैक्सिको में भी पारे की कई छोटी २ खानें हैं लेकिन इस देश में श्रमिक कठिनाइयों और राजनीतिक अशान्ति के कारण उत्पादन बहुत कम हो पाता है।

लोहा (Iron)—सब धातुओं में लोहे का महत्त्व सब से अधिक है। प्रत्येक उद्योग की उन्नति मशीनों पर निर्भर है और वे मशीनें व अन्य यन्त्रादि लोहे तथा

उसकी मिश्रित वस्तुओ से ही बनाई जाती है। व्यापारिक तथा व्यावसायिक प्रधानता प्राप्त करने के लिए बड़ २ कारखानो व मशीनो की आवश्यकता होती है तथा इन मशीनो व कारखानो को बनाने व चलाने के लिए लोहा व कोयला प्रचुर मात्रा मे होना परमावश्यक है। इन दोनो खनिज पदार्थों की पर्याप्त मात्रा के अभाव में औद्योगिक विकास असभव है। अत यह कहना अत्युक्ति न होगा कि औद्योगिक व्यवसाय भवन की आधारशिलायें लोहा और कोयला ही हैं।

लोहा शुद्ध धातु के रूप में बहुत कम मिलता है। अधिकतर लोहा किसी न किसी रसायनिक सम्मिश्रण के रूप मे ही पाया जाता है। इन में से ४ रसायनिक रूप विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं—

१. हेमाटाइट (Hematite) जो कि लाल व मलेटी रग का होता है तथा लोहे व आक्सीजन का मिश्रण होता है।

२. मेगनेटाइट (Megnatite) यह काले रग का होता है और लोहे व आक्सीजन के इस सम्मिश्रण मे चुम्बकीय गुण पाया जाता है।

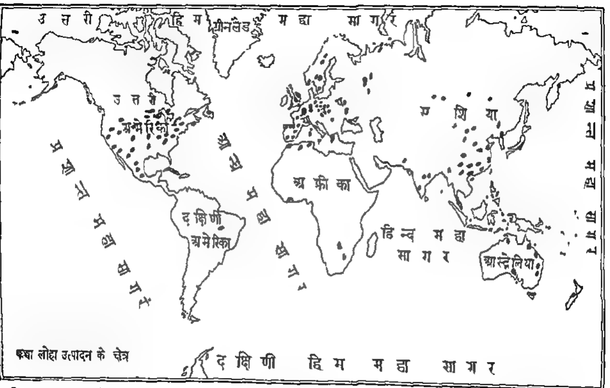
३. साइडराइट (Siderite) इसमें लोहे और कारबन का सम्मिश्रण होता है।

४. लीमोनाइट (Limonite) यह भूरे रग का होता है। इसमें लोहा, आक्सीजन और हाइड्रोजन का सम्मिश्रण रहता है।

लोहे की खान का महत्व उसमें निहित लोहे की अपरिमित मात्रा पर ही नही वरन् उसकी स्थिति व लोहे की प्राप्ति की सुविधा-असुविधा पर भी निर्भर होता है। ससार की कच्चे लोहे की अनेक बहुमूल्य खानें व विस्तृत भडार औद्योगिक केन्द्रों से बहुत दूर स्थित हैं। इसलिए वहा से दूरस्थ औद्योगिक केन्द्रो तक लोहे को लाने में काफी व्यय पड़ जाता है। अत मात्रा मे अपरिमित होने पर भी उनका कोई विशेष आर्थिक महत्त्व नहीं है। दक्षिणी ब्राजील में कोयले का अपरिमित भडार है परन्तु उसकी भी ठीक यही दशा है।

कच्चे लोहे के साथ बहुत सी ऐसी वस्तुऍ मिली रहती है जिन्हे अलग करने के बाद ही लोहा प्राप्त होता है। साधारणतया पत्थर के कोयले और चूने के पत्थर को लोहे के साथ मिला कर काफी तेज आच वाली भट्टियों में गलाया जाता है। चूने का पत्थर लोहे की अशुद्धता को सोख लेता है और इस प्रकार साफ किये हुए लोहे को Pig Iron कहते हैं। जिन प्रदेशो मे पत्थर का कोयला अधिक मात्रा में पाया जाता है वहा इस Pig Iron को गलाया जाता है और फिर गलाये हुए लोहे मे क्रोमियम, मैगनीज़, टगस्टन, वेनाडियम, निकल इत्यादि अन्य धातुओ को मिला कर चमकदार व कठोर इस्पात (Steel) तैयार करते है।

कच्चे लोहे को गलाकर साफ करने के लिए पत्थर के कोयले की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए लोहा अधिकतर उन्ही भागो मे निकाला जाता है जहा कोयला भी



चित्र नं० ३१—कच्चे लोहे के उत्पादन का वितरण—पश्चिमी योरप और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के लोहे उत्पन्न करने वाले प्रदेश विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं।

पास ही हो। उत्तरी अटलांटिक महासागर के दोनों ओर संयुक्त राष्ट्र तथा पश्चिमी यूरोप में ये दोनों खनिज पदार्थ पास २ मिलते हैं। अतः इन्हीं दोनों प्रदेशों में लोहे व इस्पात से भारी वस्तुएं निर्माण करने का उद्योग केन्द्रित है।

यू तो कच्चे लोहे की खान संसार भर में सभी जगह पायी जाती हैं लेकिन मुख्य खानें संयुक्त राष्ट्र, फ्रांस, रूस, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी और लेक्समबर्ग में स्थित हैं। सन् १९४० में संसार भर में कच्चे लोहे का कुल उत्पादन ९०० लाख टन था जिसमें से ३८० लाख टन लोहा केवल संयुक्तराष्ट्र अमरीका से ही प्राप्त हुआ था।

कच्चा लोहा—विश्व उत्पादन
(लाख मीट्रिक टन)

देश	१९४७	१९५१
संयुक्तराष्ट्र	४८०	६१०
फ्रांस	६०	१२०
स्वीडन	६०	१००
ग्रेट ब्रिटेन	३०	४०
रूस को छोड़कर कुल योग	७६०	१०६०

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में संसार का एक-चौथाई लोहा उत्पन्न होता है। लोहा उत्पन्न करने वाले तीन प्रमुख प्रदेश हैं

(१) मेनीसोटा की मेसाबी श्रेणी।

(२) प्रायद्वीप स्थित मिशीगन राज्य।

(३) अपलेशियन श्रेणी—अपलेशियन श्रेणी के अलबामा प्रदेश में एक असुविधा है कि लोहे की खानें समुद्र तट से बहुत दूर स्थित हैं—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लोहे का उत्पादन बहुत अधिक है परन्तु फिर भी चिली, क्यूबा, स्वीडन, स्पेन और फ्रेंच अफ्रीका से लोहा आयात किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र में सन् १९५० में ५०० लाख मीट्रिक टन लोहा उत्पन्न हुआ

ग्रेट ब्रिटेन में यार्कशायर, लिंकनशायर, नार्थम्पटनशायर, कम्बरलैंड और उत्तरी लंकाशायर में लोहे की खानें पाई जाती हैं। इन प्रदेशों में ग्रेट ब्रिटेन की कुल आवश्यकता का दो तिहाई भाग प्राप्त हो जाता है। फ्रांस का अधिकतर लोहा लोरेन की खानों से प्राप्त होता है और यूरोप के इस प्रदेश में लोहे का सबसे विशाल भंडार है। फ्रांस में नारमंडी और पेरीनीस के प्रदेश भी लोहे के लिए महत्वपूर्ण हैं। सन १९१९ के पहले कच्चे लोहे के उत्पादन की दृष्टि से जर्मनी यूरोप में सर्वप्रमुख था। परन्तु लोरेन और लक्जमबर्ग के निकल जाने से जर्मनी को भारी धक्का लगा क्योंकि इन दोनों प्रदेशों से ७५ प्रतिशत लोहा प्राप्त होता था। इस समय जर्मनी का मोटा प्रधानतः वोगेल्सबर्ग,

विश्व का लोह भंडार
(दस लाख टनों में)

संयुक्तराष्ट्र	१०,४५०	फ्रांस	८,१६५
जर्मनी	१,३१५	स्वीडन	२,२०३
रूस	२,०५७	भारत	३,०००
ग्रेट ब्रिटेन	५,९७०	ब्राजील	७,०००
		न्यूफाउन्डलैंड	४,०००

(२) कोयला (Coal)—वाणिज्य व उद्योगधंधों के दृष्टिकोण से कोयला भी लोहे के समान ही महत्वपूर्ण है। उद्योग व्यवसाय, खान खोदने और यातायात के साधनों के लिए कोयला सबसे महत्वपूर्ण शक्ति का साधन है। तेल की अपेक्षा इसका सबसे बड़ा गुण यह है कि यह विभिन्न प्रदेशों में पाया जाता है और उद्योग क्षेत्रों के समीप मिलता है। इसकी गौण उपज भी बड़ी उपयोगी होती है। इसकी प्रधान गौण उपज निम्नलिखित हैं—चारकोल, नौसादर, गैस, पत्थर का कोयला, कच्चा तेल, डामल, जलाने का तेल और गंधक। हाल में कोयले से जलाने के तेल का उत्पादन बढ़ता ही जा रहा है और इस दिशा में जर्मनी का स्थान श्रेष्ठतर है। इसका सबसे बड़ा गुण यह है कि यह बिल्कुल तैयार हालत में खान से निकलता है और निकलते ही काम में आने लगता है।

कोयले का मूल्य उसकी ताप शक्ति पर निर्भर रहता है। इस आधार पर किये गए विभाजन के अनुसार कोयला ३ प्रकार का होता है—(१) लिगनाइट, (२) अन्थ्रासाइट, (३) बिटुमिनस। लिगनाइट लकड़ी मिला हुआ कोयला होता है। भूरे रंग का होने के कारण इसे भूरा कोयला भी कहते हैं। इसमें कोयले का अंश ७० प्रतिशत होता है। यह साधारण किस्म का होता है। अन्थ्रासाइट कोयले को जलाना कठिन होता है, जलने पर लपट कम देता है परन्तु इससे बहुत अधिक गर्मी उत्पन्न होती है। यह सबसे अच्छी प्रकार का होता है। बिटुमिनस कोयला अधिकतर घरेलू उपभोग में आता है और इसमें कोयले का अंश ८० प्रतिशत होता है।

कोयला उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश संयुक्त राष्ट्र अमरीका, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रान्स, पोलैंड, रूस, जापान, जीकोस्लोवाकिया, बेल्जियम, चीन, भारत और आस्ट्रेलिया हैं।

सन् १९५१ में कोयले का उत्पादन
(लाख मीट्रिक टनों में)

संयुक्त राष्ट्र अमरीका	५१९०	पोलैंड	८१०
ग्रेट ब्रिटेन	२२६०	भारत	३४०
जर्मनी	११९०	बेलजियम	३००
रूस	२८४०	चीन	३००
जापान	४२०	मनचूरिया	११०
फ्रान्स	६६०		

सन् १९५१ में कोयला और लिगनाइट का कुल उत्पादन १७००० लाख टन था—यह मात्रा सन् १९४७ की अपेक्षा ३ प्रतिशत अधिक थी। संयुक्तराष्ट्र अमरीका में संसार का सबसे अधिक कोयला उत्पन्न होता है—सन् १९४७ में ४३ प्रतिशत और सन् १९४८ में ३४ प्रतिशत और सन् १९५१ में ३० प्रतिशत। संयुक्त राष्ट्र में ४ प्रतिशत कम कोयला उत्पन्न हुआ। अन्य संसार के अन्य भागों में कोयले का उत्पादन ६ प्रतिशत अधिक बढ़ गया। उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि जापान, जर्मनी के निर्जीव प्रदेश, सार पोलैंड और कनाडा में हुई। इन प्रदेशों का क्रमश उत्पादन २३ प्रतिशत, २० प्रतिशत, २० प्रतिशत, १६ प्रतिशत और १७ प्रतिशत था।

आजकल कोयले का अधिकतर उत्पादन कुछ थोड़े से व्यावसायिक क्षेत्रों में सीमित है। संयुक्तराष्ट्र अमरीका, जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन इस के दृष्टिकोण से सब से आगे हैं। इन तीनों देशों में संसार की कुल १२ प्रतिशत जनता निवास करती है परन्तु संसार का कुल ७४ प्रतिशत कोयला यहीं उत्पन्न होता है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका संसार का सबसे अधिक कोयला उत्पन्न करने वाला देश है और विश्वव्यापी उत्पादन का ३० प्रतिशत यहीं से प्राप्त होता है। संयुक्त राष्ट्र में कोयले की ३ प्रमुख खानें हैं—

१ अपलेचियन पर्वत की कोयले की खानें।

२ राकी पर्वत की खानें।

३ अन्दर के प्रदेश की कोयला खान।

अपलेशियन पर्वत की कोयले की खानों में संसार का सबसे अच्छा बिटुमिनस कोयला पाया जाता है। ये खानें पेन्सिलवेनिया से अल्बामा राज्य तक फैली हुई हैं। अकेले पेन्सिलवेनिया राज्य में समस्त संयुक्त राष्ट्र के उत्पादन का आधा कोयला प्राप्त होता है। अन्दरूनी खानें आइवा, कन्सास, इलीनोय, इन्डियाना, मिसौरी, डकोटा और नेब्रास्का राज्यों में पाई जाती हैं। राकी पर्वत की खानों को अभी पूरी तरह खोदा नहीं गया है।

ग्रेट ब्रिटेन का कोयला उत्पादन में तीसरा स्थान है। यहां की खानों को ३ विशेष सुविधायें हैं—

(अ) कोयला व लोहा पास २ पाया जाता है।

(ब) कोयले की खानें समुद्र के पास है।

(स) अक्सर चूने का पत्थर जो गलाने में प्रयोग होता है, साथ-साथ पाया जाता है।

ग्रेट ब्रिटेन में कोयले की ४ महत्वपूर्ण खानें हैं—

(१) स्काटलैंड का क्षेत्र, (२) पैनाइन क्षेत्र, (३) मिडलैंड का क्षेत्र और (४) वेल्स प्रदेश।—स्काटलैंड में क्लाइड बेसिन, आयरशायर और फोर्थ की खाड़ी के

किनारे २ कोयले की विशाल खानें पाई जाती हैं। इन प्रदेशों में समुद्र, नहर व रेल द्वारा आवागमन के साधन हैं। पेनाइन श्रेणी के दोनों ओर कोयले की बड़ी २ खान हैं। लंकाशायर और यार्कशायर इस प्रदेश के दो प्रमुख केन्द्र हैं। इन्हीं के सहारे लंकाशायर में सूती कपड़े और यार्कशायर में ऊनी कपड़े का व्यवसाय उन्नति कर गया है। मिडलैंड प्रदेश में उत्तरी स्टाफर्डशायर, नौटिंघमशायर, वारविकशायर और दक्षिणी स्टाफर्डशायर में इनकी खानें हैं और इन्हीं के आधार पर मोटर, *सायकल, बूट लेस, तम्बाकू,* लोहा इस्पात और घड़ी बनाने का उद्योग उन्नति कर गया है। दक्षिणी वेल्स में कोयला विशेषकर निर्यात किया जाता है। छोटे व्यवसायों में बहुत थोड़ा कोयला उपभोग किया जाता है।

सन् १६१४ तक ग्रेट ब्रिटेन सबसे प्रमुख कोयला निर्यातक देश था। ग्रेट ब्रिटेन में कोयला समुद्र तट के निकट व अच्छी किस्म का होने के कारण यहाँ से यूरोप की मंडियों को बहुत कोयला निर्यात होता था। यहाँ तक कि जर्मनी भी जो स्वयं कोयले का निर्यात करता था अपने उत्तरी प्रदेशों के लिए बाल्टिक स्थित बन्दरगाहों द्वारा अंग्रेजी कोयला ही मगवाता था। परन्तु सन् १६२१ से हालत कुछ बदल गई है और अंग्रेजों का कोयला-व्यवसाय पहले से कम हो गया है। तेल व जल-विद्युत के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि, लिगनाइट कोयले के अधिकाधिक प्रयोग, ईंधन में मितव्ययिता तथा यूरोप के विभिन्न प्रदेशों में कोयले की नई २ खानों के पता लग जाने से ब्रिटेन से कोयले की निर्यात मात्रा बहुत कम हो गई है। सन् १६४७ से ग्रेट *ब्रिटेन की खानों से कोयला निकालने के व्यवसाय* पर सरकार का संरक्षण हो गया है। सन् १६४६ के राष्ट्रीयकरण विधान के अनुसार ग्रेट ब्रिटेन में कोयला निकालने तथा लाने का काम एक समिति के ऊपर छोड़ दिया गया है।

कोयले के उत्पादन के दृष्टिकोण से *जर्मनी का चौथा स्थान है।* रूहर बेसिन, वेस्टफालिया, सेक्सोनी, सालीसिया और बावेरिया में कोयले की महत्त्वपूर्ण खानें हैं। अकेले रूहर बेसिन में जर्मनी का ८० प्रतिशत कोयला प्राप्त होता है। जर्मनी में *अन्थ्रसाइट कोयला नहीं पाया जाता।* वहाँ पाया जाने वाला कोयला या तो बिटुमिनस है या लिगनाइट।

फ्रांस में कोयले की कमी है। छोटी-मोटी कोयले की खान देश में इधर-उधर पाई जाती हैं जैसे लॉरेन में, सेंट इटनी में रोन के डेल्टा में या ला क्रूसो के पास। फ्रांस के उद्योगधंधों में कोयले की कुल माग का केवल दो तिहाई भाग ही इन खानों से प्राप्त होता *है। अतः फ्रांस को विदेशों से कोयला आयात करना* पड़ता है। दूसरे महायुद्ध के पहले फ्रांस कोयला आयात करने वाले देशों में सबसे आगे था। फ्रांस में पाया जाने वाला कोयला कोक बनाने के लिए विशेष अच्छा नहीं होता है।

सोवियत रूस का कोयला उत्पन्न करने वाले देशों में दूसरा स्थान है। कोयले का

वार्षिक उत्पादन ३००० लाख मीट्रिक टन से भी अधिक है। सन् १९१३ में यह उत्पादन केवल २९० लाख टन था। सन् १९१७ की राज्यक्रान्ति से पहले डानटेज बेसिन की मात्रा से ६० प्रतिशत कोयला प्राप्त होता था। आजकल डोनटज़ प्रदेश का अधिक महत्त्व नहीं है। सोवियत रूस की मुख्य कोयले की खान पश्चिमी साईबेरिया में कुजबुस, धनौसी बेसिन में टुनगुज क्रेस्नस्क, डानवास, पिछोरा, आमूर बेसिन में ब्यूरिन एशियाई रूस के स्टेप प्रदेश में कारगान्डा तथा मास्को यूराल और ट्रासकाकेशस में स्थित हैं।

अफ्रीका के नेटाल, केप आफ गुड होप और ट्रांसवाल राज्यों में कोयले की बड़ी २ खान हैं। परन्तु यहां का कोयला बहुत मामूली किस्म का होता है। केवल नेटाल की खानों का कोयला अच्छा होता है।

सन् १९४० में जापान में ३८० लाख टन कोयला निकाला गया और अपने अधिकृत राज्यों में ७०० लाख टन कोयला प्राप्त हुआ। इतना अधिक उत्पादन होने हुए भी कोयले की कमी के कारण जापान के उद्योग धन्धों के विकास में बाधा पड़ी। जापान की दो प्रमुख खान होकैडो और क्यिशू में स्थित हैं। इसमें क्रमश: ४० व ७० प्रतिशत कोयला प्राप्त होता है। परन्तु उसका ६० प्रतिशत कोयला निम्न या मध्यम श्रेणी का साधारण बिटुमिनस कोयला है। इस कोयले से उत्तम धातु शोधक कोक नहीं बन सकता है।

चीन में कोयले का भंडार तो बहुत विस्तृत है परन्तु इसकी खानों का कोई अधिक विकास नहीं हुआ है क्योंकि इसके कोयले के प्रधान क्षेत्र नदी यातायात से बहुत दूर उत्तरी पश्चिमी या दक्षिणी पश्चिमी भागों में स्थित हैं। इन प्रदेशों में आबादी कम है और मुख्य खनिज धातुयें भी नहीं पाई जाती हैं। चीन का कोयला उत्तम अन्थ्रासाइट है और प्राय देश के हर प्रान्त में ही पाया जाता है। शान्सी, शेन्सी, कान्सू और होनान के प्रान्तों में कोयले की बड़ी २ खानें पाई जाती हैं। लोयस उच्च भूमि में चीन के ६० प्रतिशत कोयले का अटूट भंडार है। इस समय कोयले का वार्षिक उत्पादन ३०० लाख टन है। निकट भविष्य में इन खानों का विकास होने पर चीन संसार का सर्वप्रथम कोयला उत्पन्न करने वाला देश हो जायेगा।

भारत का कोयला उत्पन्न करने वाले देशों में आठवां स्थान है और वार्षिक उत्पादन का औसत ३०० लाख मीट्रिक टनों से कुछ ही अधिक है। परन्तु यहां की कोयले की खानें बड़े अनियमित ढंग से छितरी हुई हैं। भारत का ८३ प्रतिशत से अधिक कोयला बंगाल के रानीगंज और बिहार के झरिया प्रदेश की खानों से प्राप्त होता है। अन्य खानें मध्य-प्रदेश, हैदराबाद, मध्यभारत, आसाम और राजपूताना में पाई जाती हैं।

पाकिस्तान में पश्चिमी पंजाब में कोयला पाया जाता है। पाकिस्तान में ३५ लाख टन कोयले की मांग की पूर्ति के लिए ३,८८,००० टन कोयला निकाला जाता है।

खनिज तेल (Petroleum)—इस नाम से वे सभी तेल पुकारे जाते हैं जो पृथ्वी के छिद्रों से अपने आप या पम्प की सहायता से निकाले जाते हैं। ये खनिज तेल प्राय

निचली सपाट भूमि से प्राप्त होता है विशेष रूप से ऐसी निचली भूमि जो नवीन परतदार चट्टानों के इधर-उधर स्थित होती है। पुरानी चट्टानों के बने पठारी प्रदेशों में—जैसे अफ्रीका, भारत का दक्षिणी भाग, ब्राजील, स्केन्डेनेविया और कनाडा—खनिज तेल नहीं मिलता। उत्पादन के मूल्य के दृष्टिकोण से कोयले के बाद खनिज तेल का ही स्थान आता है। इससे प्राप्त बहुत सी वस्तुएं बड़ी काम की होती हैं। अनेक उद्योगों के विकास के लिए खनिज तेल परमावश्यक है।

संयुक्त राष्ट्र, वेनेजुएला, रूस, फारस, रूमानिया, पूर्वी द्वीपसमूह, मैक्सिको, भारत और बर्मा तेल उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश हैं।

तेल का विश्वव्यापी उत्पादन १९५१
(हजार टनों में)

संयुक्त राष्ट्र अमरीका	३०७,५००	ट्रिनीडाड	३,५४१
रूस	४२,३००	अर्जेन्टाइना	३,३८६
वेनेजुएला	८९,०००	पीरू	२,१००
ईरान	१६,४००	भारत और बर्मा	१,४३५
पूर्वी द्वीपसमूह	७,५००	बेहरीन	१,५००
रूमानिया	६,७६१	कनाडा	६,२००
मेक्सिको	११,०००	मिश्र	२,३००
ईराक	८,४००	साउदी अरब	३७,५००
कोलम्बिया	५,४००		

इस प्रकार कुल मिलाकर सन् १९५१ में तेल का विश्वव्यापी उत्पादन ५९४० लाख टन था।

विभिन्न महाद्वीपों का इस उत्पादन में भाग निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायेगा—

उत्तरी अमरीका	६३.१	प्रतिशत
(संयुक्त राष्ट्र)	(५५.८)	,,
यूरोप	१३.७	,,
(रूस)	(१०.३४)	,,
एशिया	९.४	,,
दक्षिणी अमरीका	१३.८	,,

चेज़ नैशनल बैंक की खोज के आधार पर ऐसा अनुमान किया जाता है कि सन् १९५० के अन्त तक समस्त संसार का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तेल भंडार ८,९०,००० लाख बैरल था। इस अनुमानित मात्रा का ४५.३ प्रतिशत भाग मध्यपूर्व में और ४६.२ प्रतिशत पश्चिमी गोलार्द्ध में निहित है। अप्रत्यक्ष या निहित तेल भंडार का विश्वव्यापी वितरण इस प्रकार है —

संयुक्त राष्ट्र अमरीका	२ ३० ००० लाख बैरल	२१ ८ प्रतिशत
फारस की खाड़ी पर कुवैत राज्य	१ १० ००० लाख	१७ प्रतिशत
साउदी अरब	१ ०० ००० लाख	
ईरान	९५ ००० लाख	
वेनेजुएला	६० ००० लाख	
ईराक	३० ००० लाख	
रूस	५५ ००० लाख	

खनिज तेल के अन्य भण्डार कनाडा, सुदूरपूर्व और यूरोप में स्थित हैं।

खनिज तेल से बहुत सी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं जिनमें पेट्रोल, जलाने का तेल, मिट्टी का तेल, गैसोलीन और मशीनों को चिकना करने का तेल सबसे प्रमुख हैं। ये विभिन्न तेल जहाजों, रेलों, उद्योग धन्धों, अन्य व्यवसायों और घरेलू कामधन्धों में जलाने व गर्म करने में प्रयोग होते हैं। वैसलीन और पैराफिन जैसी औषधि तेल भी खनिज तेल से ही प्राप्त होते हैं। पेट्रोलियम से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ व्यावसायिक उन्नति के लिए इतनी उपयोगी हैं कि आजकल प्रत्येक राष्ट्र तेल के नये क्षेत्रों की खोज में व्यस्त है और खनिज तेल क्षेत्रों पर अधिकार प्राप्त करना चाहता है। पिछले कुछ वर्षों में तेल के उत्पादक क्षेत्रों पर प्रभाव प्राप्त करने के लिए इतने प्रयत्न चल रहे हैं कि अन्य किसी खनिज की अपेक्षा तेल पर अधिकार करने की समस्या अन्तर्राष्ट्रीय चिन्ता का कारण बन गई है। अब तक बर्मा, इण्डोनेशिया, ईरान, ईराक, पाकिस्तान और भारत के खनिज तेल क्षेत्रों पर ब्रिटेन, फ्रांस और हालैंड का आधिपत्य था और उन्हीं देशों की पूँजी की सहायता से इन क्षेत्रों में काम होता था। परन्तु अब तेल उत्पादक इन देशों में आजादी की एक लहर दौड़ गई है और इन विदेशी कम्पनियों को निकालने की कोशिश हो रही है। इसके फलस्वरूप एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक समस्या उठ खड़ी हुई है जिसका हल होना विश्व शान्ति के लिए बहुत आवश्यक है।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका में संसार का सबसे अधिक खनिज तेल निकाला जाता है। विश्व में तेल के कुल उत्पादन का ६० प्रतिशत भाग यहीं से प्राप्त होता है। ओकलाहोमा, कैलीफोर्निया, टेक्सास, कन्सास, लुईसियाना, इलिनायस, पेन्सिलवेनिया, ओहियो, पश्चिमी वरजीनिया और [illegible] राज्यों में संयुक्त राष्ट्र का अधिकांश तेल निकाला जाता है। देश में उत्पादन का बहुत बड़ा भाग निर्यात कर दिया जाता है और अमरीकन तेल की मण्डियाँ संसार में सभी जगह फैली हुई हैं। और यह स्वाभाविक भी है क्योंकि तेल व इससे प्राप्त वस्तुएँ अनेक तरह से प्रयोग की जाती हैं। यद्यपि तेल का उत्पादन बराबर बढ़ रहा है फिर भी हवाई व सड़क यातायात के विकास और जहाजों में कोयले के स्थान पर तेल प्रयोग करने के कारण पूर्ति से माँग कई गुना बढ़ गई है।

उत्तरी हिम महासागर
ग्रीनलैंड
उत्तरी अमेरिका
एशिया
प्रशान्त महासागर
आन्ध महासागर
अफ्रीका
दक्षिणी अमेरिका
हिन्द महासागर
आस्ट्रेलिया
पैट्रोलियम उत्पादन के क्षेत्र।
दक्षिणी हिम महासागर

चित्र न० ३२—खनिज तेल क्षेत्रो का वितरण—उत्तरी व दक्षिणी अमरीका में तेल के क्षेत्रों की बहुतता ध्यान देने योग्य है।

संयुक्त राष्ट्र का सब से विस्तृत तेल क्षेत्र पूर्वी टेक्सास में स्थित है। यह करीब ४० मील लम्बा और ३ मील चौड़ा है तथा इस क्षेत्र में २५,८०० कुएं खोदे गये हैं। कैलिफोर्निया में तेल के कुएं सबसे अधिक गहरे हैं।

रूस का तेल उत्पादन में तीसरा स्थान है और इसके दो मुख्य उपज क्षेत्र कैस्पियन के दोनों तरफ बाकू और ग्रोज़नी में स्थित हैं। ये दोनों क्षेत्र पाइप लाइनों द्वारा काले सागर से मिले हुए हैं। तेल की एक पेटी यूराल पर्वत के पश्चिमी ढाल पर उत्तर में उख्ता से लेकर दक्षिण में स्टर्लिटामक तक फैली हुई है। पिछले कुछ दिनों में यूराल के दक्षिणी पश्चिमी ढाल पर पेटी का महत्व इतना बढ़ गया है कि अब यह प्रदेश द्वितीय बाकू के नाम से पुकारा जाता है।

सन् १९५० में रूस का तेल उत्पादन ३८० लाख टन से कुछ अधिक था। एशियाई रूस में इसका ११ प्रतिशत भाग निकाला जाता है। अजरबेजान और तुर्कमान में तेल के विशाल क्षेत्र हैं। सुदूरपूर्व में रूस का तेल क्षेत्र केवल सखालीन द्वीप में है और उसका वार्षिक उत्पादन लगभग ८० लाख टन होता है। सन् १९५१ में रूस का कुल खनिज तेल उत्पादन ४७३ लाख टन था।

रूस का तेल उत्पादन

काकेशस कैस्पियन क्षेत्र	६००	वोल्गा-यूराल क्षेत्र	६०
मध्य एशिया	४६	सुदूरपूर्व	११

वेनेजुएला का स्थान तेल उत्पादन में दूसरा है और इसका प्रमुख क्षेत्र मराकेबो की खाड़ी के चारों ओर स्थित है। यहां का तेल क्षेत्र कोलम्बिया में भी फैला हुआ है। सन् १९५१ में वेनेजुएला ने रूस के दुगने से कुछ अधिक तेल उत्पन्न किया। मेक्सिको जो कभी संयुक्त राष्ट्र की प्रतिस्पर्धा करता था अब इतना नीचे गिर गया है कि अब इसका तेल के उत्पादन में सातवां स्थान है।

रूमानिया में तेल के कुएं कारपेथियन पहाड़ की दक्षिणी तलहटी में पाये जाते हैं। यह तेल क्षेत्र उत्तर में मुसीना से लेकर दक्षिण में डामबोविट्जा घाटी तक फैला हुआ है। तेल के सब से विशाल क्षेत्र डामबोविट्जा, प्राहोवा, बाजाउ और बकाउ में स्थित हैं और प्रथम दो क्षेत्रों से ही ६८ प्रतिशत तेल प्राप्त होता है। सन् १८६० में इन क्षेत्रों में काम प्रारम्भ हुआ था और सन् १९२५ में तेल उत्पादन में रूमानिया का संयुक्त राष्ट्र, रूस और वेनेजुएला के बाद चौथा स्थान हो गया। परन्तु आजकल ईरान का स्थान चौथा हो गया है और उसके बाद रूमानिया का स्थान पांचवां है। रूमानिया में तेल धंधे का विकास विदेशी पूंजी की सहायता और वहां की सरकार की नीति के कारण हो सका है। रूमानिया में यह व्यवसाय सब से अधिक महत्व रखता है। कुल उत्पादन का ७०-८० प्रतिशत भाग निर्यात कर दिया जाता है। इस प्रकार देश का वैदेशिक व्यापार, समता और सरकार की आय इसी व्यवसाय पर निर्भर है।

सन् १९५१ में मध्यपूर्व के तेल क्षेत्रों ने समस्त संसार के उत्पादन का १० प्रतिशत भाग उत्पन्न किया। और उत्पादन की कुल मात्रा ९५३ लाख मीट्रिक टन थी। यहां के तेल क्षेत्रों का विशेष महत्त्व उनमें निहित विस्तृत तेल भंडार के कारण है। इस प्रदेश में मुख्य ४ तेल क्षेत्र हैं—ईरान, साउदी अरब, ईराक और कुवैत—और इन सभी क्षेत्रों में युद्ध-काल में उत्पादन बहुत बढ़ गया है। सन् १९५० में मध्यपूर्व ने योरुप के देशों को ७३० लाख टन खनिज तेल निर्यात किया, जिसका ब्योरा इस प्रकार है—

ईरान	१,८१,७८९ हजार बैरल	कुवैत	१,१६,११० हजार बैरल
ईराक	६६,०९९ „ „	साउदी अरब	१,१३,४३१ „ „

ईराक का सबसे बड़ा तेल क्षेत्र किरकुक में है। यह ७० मील तक फैला हुआ है और संसार के बड़े तेल क्षेत्रों में से एक है। ईराक के अन्य तेल क्षेत्र किरकुक के कुछ मील उत्तर में बाबा गागुर में स्थित हैं। इन तेल क्षेत्रों से एक ब्रिटिश कम्पनी तेल निकालती है और एक पाइप लाइन द्वारा क्षेत्रों को भूमध्यसागर तट से मिला दिया गया है। प्रति वर्ष इन पाइप-लाइनों द्वारा ६२० मील की दूरी पर हैफा को और ५४० मील दूर ट्रिपोली को ४० लाख टन कच्चा तेल ले जाया जाता है। हैफा और ट्रिपोली में इस तेल को टैंकर जहाजों में लाद दिया जाता है और समुद्री मार्गों द्वारा विदेशों को भेज दिया जाता है।

खनिज तेल निकालने का व्यवसाय ईरान के आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। ईरान के प्रमुख तेल क्षेत्र दक्षिण पश्चिम में खाजिस्तान के आस-पास केन्द्रित हैं। इस प्रदेश से पाइप लाइनों द्वारा तेल अबादान की फैक्टरी तक लाया जाता है। अबादान का कारखाना संसार में सब से बड़ा है और सब मिलाकर ५ लाख बैरल तेल रोजाना साफ किया जाता है।

शान्तिप्रिय देशों के तेल व्यवसायी औद्योगिक व आर्थिक रूप से मध्यपूर्व के तेल उत्पादन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील हैं। मध्यपूर्व में तेल उत्पादन बढ़ जाने से यूरोपीय देशों में अमरीकन तेल की मांग कम हो जायगी। अमरीकन तेल की मांग पर निर्भरता कम करने के लिए यह आवश्यक है कि पाइप लाइनों द्वारा मध्यपूर्व के तेल क्षेत्रों को भूमध्यसागर तट से मिला दिया जाय। इससे तेल यातायात की समस्या बहुत कुछ हल हो जायगी। आजकल तेल के यातायात का मुख्य साधन टैंकर जहाज है। पिछले साल से एक और समस्या उठ खड़ी हुई है। मार्च सन् १९५१ में ईरान सरकार ने खनिज तेल राष्ट्रीयकरण विधान लागू किया जिससे फलस्वरूप एंग्लो-ईरानियन तेल कम्पनी और सरकार के बीच झगड़ा शुरू हो गया। अतः सन् '५१ के अगस्त से ईरान में तेल का उत्पादन बिल्कुल बन्द है। इस बन्दी के कारण विश्व में तेल की कमी हो

गयी है और ईरान के ७०००० आदमी बेकार हो गए तथा ईरान को मुद्रा संकट झेलना पड़ रहा है ।

हिमालय पर्वत के पूर्वी व पश्चिमी पार्श्वों पर तेल क्षेत्र स्थित है। पूर्वी सिरे पर स्थित महत्वपूर्ण क्षेत्र आसाम और बर्मा में फैला हुआ है और यहां से कुल उत्पादन का ६७ प्रतिशत भाग निकलता है। पश्चिमी सिरे के तेल क्षेत्र पाकिस्तान के पंजाब व बलूचिस्तान प्रान्तों में स्थित हैं। पाकिस्तान में प्रति वर्ष १५० लाख गैलन तेल निकाला जाता है जबकि भारत का वार्षिक उत्पादन ८२० लाख गैलन है। इस प्रदेश का सबसे विस्तृत क्षेत्र इरावदी घाटी में स्थित है और बर्मा के इस क्षेत्र से ६० प्रतिशत तेल प्राप्त होता है।

जापान में तेल का वार्षिक उत्पादन संयुक्तराष्ट्र अमरीका के दैनिक उत्पादन से भी कम है। जापान की तेल उत्पादन पट्टी समुद्र के किनारे-किनारे उत्तर में होकैडो से लेकर उत्तरी हान्शू तक फैली हुई है। उत्तरी हान्शू के पश्चिमी भाग में देश के दो प्रमुख तेल क्षेत्र स्थित हैं। उनके नाम अकीता और निगाता हैं। इन दोनों क्षेत्रों से जापान के घरेलू उत्पादन का ६५ प्रतिशत तेल प्राप्त होता है।

अंग्रेज व अमरीकन नये तेल क्षेत्रों की खोज में प्रयत्नशील हैं। दूसरे महायुद्ध से पहले मिस्र, सिनाई, फिलस्तीन, सीरिया, अरब ईराक, ईरान, अफगानिस्तान, एशियाई रूस, भारत, बर्मा, पूर्वी द्वीपसमूह, बोर्नियो, सारावाक, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि प्रदेशों में तेल क्षेत्रों के विकास के लिए विशेष प्रयत्न किये गये। गोल्डकोस्ट, नाइजीरिया और भूमध्यरेखीय अफ्रीका में भी खोज हो रही है। ब्रिटिश कामन्वेल्थ तेल के दृष्टिकोण से कभी भी आत्मनिर्भर नहीं रहा है और सदैव बाहर से ही तेल मंगाता रहा है। संसार के कुल उत्पादन का ५ प्रतिशत भाग ब्रिटिश कामन्वेल्थ प्रदेशों में पाया जाता है। इसमें फारस के तेल क्षेत्रों का उत्पादन भी सम्मिलित है यद्यपि आजकल इस विषय में फारस व ब्रिटिश सरकारों में झगड़ा चल रहा है। मेक्सिको और वेनेजुला के तेल क्षेत्रों में भी ब्रिटिश सरकार ने अधिक भाग प्राप्त कर लिया है।

खनिज तेल को आसानी से व सस्ते दामों में एक प्रदेश से दूसरी जगह भेजा जा सकता है। साधारणतया पाइप लाइनों या टैन्कर जहाजों द्वारा तेल को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाते हैं। शक्ति के स्रोतों में तेल और कोयले में प्रतिस्पर्धा है। पहले सभी जहाज कोयला प्रयोग करते थे परन्तु अब ५० प्रतिशत जहाज तेल प्रयोग करने लगे हैं। तेल प्रयोग करने में कुछ विशेष लाभ हैं। तेल भरने में कम स्थान घिरता है और तेल प्रयोग करने वाले जहाज कम सचालकों की सहायता से चलाये जा सकते हैं।

इधर कुछ दिनों से तेल की एक विकट समस्या हो गई है। संसार में उत्पन्न होने वाले खनिज तेल का भंडार शीघ्रता से समाप्त होता जा रहा है। इसलिए तेल के उपभोग में बड़ी मितव्ययिता की जा रही है। यूरोप के बहुत से देशों में पेट्रोल के साथ २० प्रतिशत अल्कोहल मिला कर मोटर गाड़ियों में प्रयोग किया जाता है। साधारण अल्कोहल को

तिलहन, गन्ना, आलू और लकड़ी से प्राप्त करते हैं। वनस्पति तेलों के उपयोग के विचार से ब्रिटिश कामनवेल्थ की स्थिति बड़ी अच्छी है। जर्मनी में कोयले व बिरोजे से रासायनिक क्रिया द्वारा कृत्रिम तेल तैयार करते हैं।

प्राकृतिक गैस (Natural Gas)—यह खनिज तेल के साथ मिली हुई पाई जाती है। सयुक्त राष्ट्र म ९८ प्रतिशत प्राकृतिक गैस का प्रयोग होता है और अपलेशियन, गल्फ कोस्ट तथा मध्यवर्ती राज्यों में प्राकृतिक गैस प्राप्त की जाती है। प्राकृतिक गैस म भीषण गर्मी प्रदान करने की शक्ति होती है और इसमें खर्च भी कम होता है।

जलविद्युत (Water Power)—यह यान्त्रिक शक्ति का विशाल स्रोत है और इससे उद्योग धन्धों को एक नई शक्ति प्राप्त हो गई है। इसकी शक्ति अक्षय है और कोयले के विपरीत इसका भडार कभी समाप्त होने वाला नही है। जलविद्युत शक्ति का अटूट भडार है और जलविद्युत के द्वारा एक हयशक्ति (Horse Power) के उत्पादन में ४ टन कोयले की बचत होती है। इसके प्रचार व प्रसार से अनेक देशों में, जहा कोयला नही पाया जाता औद्योगिक उन्नति सभव हो सकी है। नार्वे, स्विट्जरलैंड, फिनलैंड कनाडा और स्वीडन में जलविद्युत का प्रयोग औद्योगिक व घरेलू धन्धो में होता है। स्वीडन म कुल औद्योगिक शक्ति का ९२ प्रतिशत भाग जलविद्युत के द्वारा उत्पन्न किया जाता है और बाकी ८ प्रतिशत भाग कोयले की सहायता से प्राप्त किया जाता है। जिन प्रदेशों मे कोयला व जलविद्युत दोनो ही उपलब्ध हैं वहा पर उसी शक्ति का अधिक विकास होगा जो आसानी से व कम मूल्य पर मिल सकेगी। इटली, स्पेन, फ्रास और जर्मनी मे कोयला और जलशक्ति दोनो का ही प्रयोग होता है।

जलविद्युत के उत्पादन के लिए कुछ विशेष भौगोलिक दशाओं का होना बडा आवश्यक है—ये दशायें निम्नलिखित है—

(१) भारी जलवृष्टि।

(२) सुविस्तृत जलवृष्टि।

(३) प्राकृतिक झीलों, वनीय जलविभाजकों और बाध द्वारा बनाई गई बनावटी झीलों से निकलने वाली जलधाराओं से जल का सतत प्रवाह।

(४) जलधारा से शक्ति उत्पन्न करने के लिए भूमि का ढाल।

इन दशाओं म प्रवाहित नदी यदि किसी घनी आबादी के प्रदेश के पास से बहती हो तो जलविद्युत के लिए आदर्श होती है। ऐसे स्थानों में शक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में बहुत कम खर्च पडता है। साधारणतया उत्पादन केन्द्र से ३०० मील से अधिक दूरी पर शक्ति भेजने म खर्चा अधिक पडता है और इसीलिए ३०० मील से दूरस्थ प्रदेशों को शक्ति नही भेजी जाती।

आजकल जलविद्युत का विकास केवल आर्थिक व व्यापारिक उन्नति वाले देशों तक ही सीमित है। जलविद्युत के उत्पादन में दो प्रदेश बहुत प्रमुख हैं—(१) संयुक्त राष्ट्र व कनाडा का पूर्वी भाग (२) यूरोप का मध्यवर्ती व पश्चिमी प्रदेश। इन प्रदेशों में संसार के कुल उत्पादन की ६० प्रतिशत शक्ति पैदा की जाती है।

सन १९४७ के अन्त में संसार के सभी जलविद्युत उत्पादक केन्द्रों ने ६ करोड़ ६६ लाख हॉर्सपावर (H P) उत्पन्न की।

जलविद्युत का विकास (सन १९५० तक)

देश	उत्पादक शक्ति (लाख किलोवाट)	उपभोग की मात्रा
कनाडा	७७	३५८०
नार्वे	६५	३५७६
रूस	२०८	२१५०
संयुक्तराष्ट्र	१८६	१७७४
स्वीडन	२६	१३४३
स्विटजरलैंड	२६	१७१३
ग्रेट ब्रिटेन	५	८८५
फ्रांस	३७	६१२
भारत	५	१२

जलविद्युत उत्पादक अन्य देश जर्मनी, आस्ट्रिया, स्पेन और रूस हैं। विभिन्न देशों में जहाँ जलशक्ति बनने लगी है, जलविद्युत के विकास की बड़ी संभावनाएँ हैं।

इस समय विकसित जलशक्ति का संभावित जलशक्ति के प्रति अनुपात इस प्रकार है —

देश	प्रतिशत	देश	प्रतिशत
स्विटजरलैंड	६७	रूस	३४
जर्मनी	५८	स्वीडन	२३
नार्वे	५३	संयुक्तराष्ट्र	२४
फ्रांस	८२	भारत	१
कनाडा	३८		

संयुक्त राष्ट्र में नियाग्रा प्रपात से बड़े पैमाने पर जलविद्युत उत्पन्न की जाती है। कैलीफोर्निया, न्यू इंग्लैंड राज्य और रॉकी पर्वतीय राज्यों में जलविद्युत उत्पन्न करने के पर्याप्त साधन उपस्थित हैं। कनाडा में भी जलविद्युत का आश्चर्यजनक विकास हुआ

है यहां तक कि प्रत्येक औद्योगिक केन्द्र में जलशक्ति के प्रसार का आयोजन है। कनाडा में लुग्दी से कागज तैयार करने का व्यवसाय शक्ति के इसी स्रोत पर निर्भर है। जलविद्युत उत्पन्न करने के साधन देश भर में समान रूप से फैले हुए पाये जाते हैं पर जाड़े के मौसम में नदियों में बर्फ जम जाने के कारण जलशक्ति के उत्पादन व प्रयोग में बड़ी रुकावट पड़ जाती है।

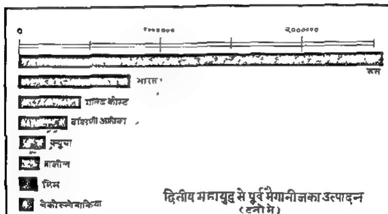
फ्रांस में आल्पस, पेरीनीज और केवीनीज पर्वत श्रेणियों की तलहटी में जल विद्युत उत्पन्न करने की अपार सम्भावनाएं हैं। फ्रांस के दक्षिणी भाग के उद्योग धन्धों व यातायात की सुविधाओं में जलशक्ति से भारी सहायता मिल सकती है। फ्रांस में लोहा तो काफी है परन्तु कोयले की कमी के कारण उसका पूरा उपयोग नहीं हो सकता। अतः यदि निकट भविष्य में जल विद्युत का पर्याप्त विकास हो जाय तो सम्भवतः लोहा इस्पात उद्योग की उन्नति हो सकेगी। इटली और स्विटजरलैंड में जलविद्युत का बहुत विकास हुआ है। कोयला व तेल का अभाव होते हुए भी स्विटजरलैंड व्यावसायिक देश है और जलविद्युत का प्रयोग वहां के उद्योग धंधों व रेलों दोनों में ही होता है। नार्वे और स्वीडन में नदियां ही जलविद्युत का मुख्य स्रोत है। स्केन्डिनेविया के पर्वतों पर स्थित झीलों, बर्फीले मैदानों, हिम स्रोतों से निकलने वाली नदियां साल भर पानी से भरी रहती हैं। इसके अलावा पर्याप्त जलवृष्टि और इनमे पाये जाने वाले जल प्रपातों के कारण जलविद्युत उत्पन्न करने के लिये ये नदियां आदर्श साधन हैं। जर्मनी में भी जलविद्युत उत्पन्न करने के कुछ केन्द्र दक्षिण व दक्षिण पश्चिम में पाये जाते हैं परन्तु जलशक्ति उत्पादन की सम्भावनाऐं सीमित हैं।

जापान भी जलशक्ति में बहुत धनी है। द्वीपों की विषम भूरचना, तेज बहनेवाली नदियों और भारी सुविस्तृत जलवृष्टि जलविद्युत के उत्पादन के लिये आदर्श दशाएं बना देते हैं। जलशक्ति उत्पन्न करने के अधिकतर केन्द्र मध्य होन्शू के पर्वतों के पूर्वी व दक्षिणी ढालों पर स्थित हैं। बीवा झील से निकलने वाली छोटी नदी पर जापान का सर्वप्रथम जल विद्युत उत्पादन केन्द्र सन् १८९२ में स्थापित हुआ। जलविद्युत के उत्पादन में संयुक्तराष्ट्र और कनाडा के बाद सन् १९३९ में जापान का स्थान था। जापान में उत्पन्न कुल जलविद्युत शक्ति का ५५ प्रतिशत देश के उद्योग धंधों में ही लग जाता है।

भारत में जलविद्युत शक्ति के विकास के लिये पर्याप्त सम्भावनाएं हैं। इस सम्भावित जलशक्ति का केवल एक प्रतिशत भाग ही विकसित हो पाया है। परन्तु आगे विकास के मार्ग में अनेक बाधाएं हैं। एक तो भारत की वर्षा मौसमी है और वितरण अनिश्चित। अतः शक्ति उत्पादन के लिये बांध बना कर पानी इकट्ठा करने में बड़ा व्यय होता है। बम्बई राज्य के पश्चिमी घाट, काश्मीर, पूर्वी पंजाब और मैसूर में ही जलविद्युत का थोड़ा बहुत विकास हुआ है।

मैंगनीज (Manganese) लोहा और इस्पात बनाने, शीशे को गलाने व चमकदार बनाने रसायन उद्योग में विशेष कर साफ करने का चूर्ण बनाने में और बिजली तथा शीशे के कारखानों में प्रयोग किया जाता है। ९५ प्रतिशत मैंगनीज धातुओं को साफ करने और ५ प्रतिशत रसायनिक उद्योगों में प्रयोग किया जाता है।

रूस, भारत, दक्षिणी अफ्रीका, क्यूबा, ब्राजील, गोल्डकोस्ट, मिस्र और चीकोस्लोवाकिया इस धातु के उत्पादक मुख्य देश हैं। वैसे थोड़ा बहुत मैंगनीज चीन, हंगरी, जर्मनी रूमानिया, स्पेन और मलाया में भी निकाला जाता है।



चित्र न० ३३

ऐसा अनुमान है कि प्रत्येक एक टन इस्पात तैयार करने में १३ से १५ पौंड तक मैंगनीज की आवश्यकता होती है। और आश्चर्य की बात तो यह है कि इस्पात तैयार करने वाले प्रमुख देशों में उच्च कोटि का मैंगनीज नहीं मिलता। केवल रूस ही एक ऐसा देश है जो इस्पात के साथ २ मैंगनीज का भी भंडार है। संसार के इस्पात का ७० प्रतिशत भाग संयुक्तराष्ट्र, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस और जापान से प्राप्त होता है परन्तु इन देशों में कुल मिलाकर १ प्रतिशत मैंगनीज भी नहीं पाया जाता।

संसार में सब से अधिक मैंगनीज उत्पन्न करने वाला देश रूस है। रूस में मैंगनीज उत्पन्न करने वाले दो प्रमुख प्रदेश जार्जिया राज्य और यूक्रेन हैं। जार्जिया में कुटायस प्रान्त के टिचशाटरी जिले में मैंगनीज की खानें पाई जाती हैं। यूक्रेन में निकोपोल स्थान से काले सागर के उत्तरी प्रदेश को मैंगनीज भेजा जाता है। सोवियत रूस में निकोपोल और टिचशाटरी स्थानों में स्थित खानों से ६० प्रतिशत मैंगनीज निकाला जाता है। इसकी उपज का बहुत बड़ा भाग घरेलू उद्योग-धंधों में प्रयोग कर लिया जाता है। सन् १९४७ में रूस

का उत्पादन २८ लाख टन था। इसी साल गोल्डकोस्ट ने ५ लाख टन मैंगनीज उत्पन्न किया और भारत ने चार लाख टन।

सन् १६२६ तक मैंगनीज उत्पादन मे भारत का स्थान सर्वप्रथम था और मद्रास, मध्यप्रदेश, बिहार, उडीसा, बम्बई और मैसूर राज्यों म इसकी खानें पाई जाती हैं। भारत में मैंगनीज कच्ची धातु के ढेलो के रूप मे पाया जाता है जो कि विभिन्न धातुओं के शोधने म बडी उपयोगी होती है।

गोल्डकोस्ट का मैंगनीज उत्पादन में दूसरा स्थान है और यातायात व श्रमिक सबधी समस्याओ के हल होने पर मैंगनीज निकालने का व्यवसाय और उन्नति करेगा। दक्षिणी अफ्रीका में केप प्रान्त के पश्चिमी ग्रिकुआलैंड प्रदेश म पोस्टमासबर्ग के पास मैंगनीज की खाने पाई जाती हैं। परन्तु समुद्र तट से दूर होने के कारण इनकी विशेष उन्नति नही हो सकी है। सन १६४७ में इस प्रदेश से २ लाख ८३ हजार टन मैंगनीज प्राप्त हुआ था।

ब्राज़ील में मैंगनीज की अनेक खानें हैं परन्तु सब से प्रमुख मीनास गिराम में लैफेयटे प्रदेश की खान है। ब्राजील का मैंगनीज भारत की अपेक्षा मामूली होता है। सन् १६४७ में ब्राजील ने एक लाख दस हजार टन मैंगनीज प्राप्त किया था।

दक्षिणी अफ्रीका के केप प्रान्त में पोस्ट मासबर्ग के समीप मैंगनीज पाया जाता है और सन् १६५० में इस प्रदेश का कुल उत्पादन ३१६,००० मीट्रिक टन था।

अन्य धातुओं के विपरीत प्रयोग की हुई मैंगनीज दूसरे बार प्रयोग के लिये सर्वथा बेकार हो जाती है। अत गौण उत्पादन के रूप में इसका भाग नही के बराबर रहता है।

गन्धक (Sulphur)—इसका उपयोग बारूद व औषधियां बनाने, रबड को जोडने और फलो को सुखाने मे होता है। गधक के तेजाब की सहायता से शीशा, दियासलाई, फिटकरी तथा अन्य बहुत सी वस्तुएं बनती है। इसका प्रयोग खाद बनाने, कपडा रगने आदि में भी होता है।

गन्धक का वितरण सीमित है। यह अधिकतर ज्वालामुखी प्रदेशो में अन्य बहुत से खनिज पदार्थों के साथ मिला हुआ पाया जाता है। प्राय लोहा, जस्ता, सीसा और सुरमा उत्पादक क्षेत्रों म गन्धक भी मिलता है।

गन्धक के उत्पादन के लिये जापान, सयुक्तराष्ट्र और स्पेन विशेष रूप से उल्लेखनीय ह।

सन् १६४७ में गन्धक का उत्पादन
(हज़ार टनों में)

सयुक्त राष्ट्र	४,४४०	जापान	२१
स्पेन	४३	ग्रेट ब्रिटेन	१११
इटली	१६४	चिली	३०

संयुक्त राष्ट्र म सब से अधिक गन्धक निकाली जाती है और यही देश सब से अधिक मात्रा म गधक का निर्यात भी करता है। ससार के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर सयुक्तराष्ट्र का ही आधिपत्य है।

नमक (Salt)—साधारण नमक जीवन की आवश्यकताओं मे से एक है। जमीन के पपड म यह ठास रूप म पाया जाता है और इसे पहाडी नमक कहते हैं। समुद्र भी नमक का अपार भडार है और समुद्र के जल को भाप म परिवर्तित करके नमक प्राप्त किया जाता है। यह विविध प्रयोग म आता है। सभी प्रकार के भोजन में उपयोग होने के अलावा यह मछलीं मास चमड और मक्खन को सुरक्षित रखन म भी प्रयोग किया जाता है। सोडा शीशा और साफ करन के पाउडर तैयार करने म भी नमक का प्रयोग किया जाता है।

नमक लगभग सभी देशा म प्राप्त होता है। इसके उत्पादन के लिये प्रमुख देश सयुक्त राष्ट्र अमरीका, ग्रेट ब्रिटन, जमनी, भारत, फ्रास, जापान, आस्ट्रिया, इटली और स्पेन है।

भारत में ६० प्रतिशत नमक बम्बई और मद्रास म समुद्र के जल को सुखा कर बनाया जाता है। पाकिस्तान म नमक के पर्वत और कोहाट की खानो से नमक प्राप्त किया जाता है। राजपूताने की साभर झील से और कच्छ की खाडी के पास समुद्री जल से नमक तैयार किया जाता है।

ग्रेफाइट (Graphite)—इसका उपयोग धातु गलाने की घरिया बनाने, मशीनो को चिकना करने का तेल तैयार करने और पेन्सिल बनाने म होता है। रूस इसका मुख्य उत्पादक है और ससार का एक तिहाई ग्रेफाइट यहीं से प्राप्त होता है। रूस के बाद कोरिया का स्थान आता है यद्यपि रूस की अपेक्षा कोरिया का उत्पादन बहुत कम है।

ग्रेफाइट का उत्पादन [टनो म]

सयुक्त राष्ट्र	३६,१७०	दक्षिणी अफ्रीका	२१४१
कोरिया	१०,०००	मैडागास्कर	३८५३
नार्वे	२४४२	लका	६००५
आस्ट्रिया	४३७०	इटली	४०८५

सन् १९४७ मे कुल विश्व का उत्पादन अनुमानत २००,००० टन था।

एसबेस्टोस (Asbestos)—यह एक रेशदार चट्टान होती है और इसके रेशे इतने मजबूत होते है कि उनपर मौसम की अदल बदल, पानी और आग का कोई असर नही होता है। बिजली व ताप दोनो का ही यह कुचालक है। यह खनिज पदार्थ धातु नहीं है और इसका मुख्य प्रयोग आग से न जलने वाली तिजोरियो व गोलाकार छतें बनाने में होता है। इस रेशे से छत्तो के परदे और जमीन के लिये चटाइया बुनी जाती है।

इसके उत्पादक प्रमुख देश कनाडा, संयुक्त राष्ट्र, इटली और दक्षिणी अफ्रीका हैं। भारत में भी यह बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और मैसूर राज्यों में निकाला जाता है।

सन् १९४७ में इसका विश्वव्यापी उत्पादन ७४३,००० टन था और अकेले कनाडा ने ५६०,००० टन उत्पन्न किया था। सन् १९५० में अफ्रीका महाद्वीप में १७४,००० टन ऐसबेस्टोस प्राप्त हुआ। इसका चौथाई भाग दक्षिणी अफ्रीका संघ और दक्षिणी रोडेशिया में प्राप्त हुआ।

अभ्रक (Mica)—इसका प्रयोग बिजली के कारखानों में होता है। पिछले महायुद्ध में अभ्रक का महत्त्व बहुत बढ़ गया विशेष कर इसलिये कि यह खनिज बेतार के तार, वायुयान विज्ञान और मोटर यातायात में बड़ा उपयोगी होता है।

अभ्रक के उत्पादन के लिये भारत, संयुक्त राष्ट्र और दक्षिणी अफ्रीका का स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण है।

भारत में बहुत दिनों से अभ्रक की चद्दरों का उत्पादन होता आया है। संसार का ६० प्रतिशत अभ्रक भारत में ही उत्पन्न होता है। बिहार, मद्रास के नैलोर, सलेम और मालाबार जिलों में, ट्रावनकोर, अजमेर मारवाड़ा और राजपूताना के अन्य भागों में अभ्रक निकाला जाता है।

दक्षिणी अफ्रीका में दक्षिणी रोडेशिया के लोमगुण्डी प्रदेश से अभ्रक प्राप्त होता है। वैसे अभ्रक का भंडार ट्रांसवाल, केप प्रान्त और नेटाल में भी पाया जाता है।

भारत और दक्षिणी अफ्रीका ही अभ्रक के मुख्य निर्यातक देश हैं। यद्यपि संयुक्त राष्ट्र में अभ्रक की चद्दरों का उत्पादन बहुत काफी है, फिर भी भारत के बाद इसका दूसरा स्थान है। भारत में ७४ प्रतिशत अभ्रक निकाला जाता है और संयुक्त राष्ट्र केवल १० प्रतिशत उत्पादन करता है। संयुक्त राष्ट्र में अभ्रक उत्तरी केरोलीना और न्यूहैम्पशायर रियासतों में निकाला जाता है। वैसे हर प्रकार के अभ्रक के उत्पादन के दृष्टिकोण से संयुक्त राष्ट्र अमरीका का स्थान सर्वप्रथम है—संसार के कुल उत्पादन का आधा भाग यहीं से प्राप्त होता है परन्तु अभ्रक की चद्दरों के उत्पादन में भारत का स्थान सर्वप्रथम है। थोड़ा बहुत अभ्रक आस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी, नार्वे, स्पेन, पोर्तुगाल, रूस, जापान, कनाडा और अर्जेन्टाइना आदि देशों में भी निकाला जाता है।

सन् १९४७ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ४८,००० टन मिश्रित अभ्रक और ४८०टन अभ्रक की चद्दर निकाली गयी। इसके मुकाबले में उसी साल भारत ने ६५०० टन अभ्रक की चद्दर उत्पन्न की।

बहुमूल्य रत्न (Precious Stones)—बहुमूल्य रत्नों की खोज से व्यापार और वाणिज्य सम्बन्धी मानव प्रयत्नों को बड़ा प्रोत्साहन मिला है। हीरे, माणिक, नीलम, पन्ना, और रक्त मणियां आदि बहुमूल्य रत्न भूमंडल के अनेक स्थानों में मिलते हैं। दक्षिणी

अफ्रीका की किम्बरले खानो से ससार के सब से अधिक हीरे जवाहरात मिलते हैं। हीरे ब्राजील भारत न्यूसाउथ वेल्स और ब्रिटिश गायना म भी पाये जाते हैं।

अफ्रीका में हीरा उत्पन्न करने वाले मुख्य प्रदेश (१९५०)
(लाख कैरट में)

बेल्जियन कान्गो	९६ ५००	अंगोला	४ ५५०
गोल्ड कोस्ट	६ ३७०		
दक्षिणी अफ्रीका	१७ ३९०	सियरा लिओन	६ ५५०

माणिक और नीलम अधिकतर लका बर्मा और स्याम म निकाले जाते हैं। पन्ने कोलम्बिया साइबेरिया और न्यूसाउथ वेल्स से प्राप्त होते ह। रक्तमणियां मेक्सिको, बोहीमिया बर्मा लका और यूराल म प्राप्त होती हैं। थोडी बहुत रक्तमणियां बिहार म कोडरमा जिले म उत्पन्न की जाती ह।

इमारती पत्थर (Building Stones)—मकान बनाने म अधिकतर काम आनेवाले पत्थरो म चूने का पत्थर सगमरमर लाल पत्थर बालू के पत्थर और स्लेट के पत्थर सब से महत्त्वपूर्ण है। भारी व सस्ते होने के कारण मडियो से दूर पत्थर निकालने का व्यवसाय लाभप्रद नही है। चिकनी मिट्टी से ईट खपरैल और बरतन बनाये जाते हैं। ग्रेनाइट या कडा पत्थर विशेषकर इग्लैड स्वीडन फ्रांस और कनाडा में निकाले जाते हैं। इटली म सब से अच्छा सगमरमर निकाला जाता है। इगलैड और सयुक्त राष्ट्र म भी सगमरमर पत्थर मिलता है। स्लेट का पत्थर कडा व मोटा होता है और तेजाब म घुलता नही है। इसलिये इसकी खानें काफी पुरानी होती ह। स्लेट का पत्थर छतो, विज्ञापन पटो और ब्लैक बोर्डो को बनाने म प्रयोग किया जाता है। इससे मेजो का ऊपरी भाग लिखने की स्कूली स्लेटें और ठड उत्पादक अलमारियो के खाने भी बनाये जाते है। चिकनी मिट्टी को चूने के पत्थर के साथ मिला कर फूकने से सीमेंट तैयार हो जाती है। सीमेंट को रेत ककड और पत्थर के टुकडो के साथ मिला कर कक्रीट तैयार करते ह। सडकें मकान मार्ग पुल बन्दरगाह पोताश्रय और समुद्र की दीवार बनाने म सीमेंट का बहुत काफी प्रयोग होता है। सीमेंट तैयार करने के लिये चूने का पत्थर और चिकनी मिट्टी प्राय सभी जगह आसानी से मिल जाते ह।

प्रश्नावली

१ पृथ्वी मडल में वे कौन कौन से प्रदेश है जहा पैट्रोल निकलता है? वर्णन कीजिये।

२ ब्रिटिश कामनवेल्थ में कोयला कहा कहा, कितना और किस प्रकार का पाया जाता है? पूरा वर्णन कीजिये।

३ "अधिकतर औद्योगिक उन्नति उन योरोपीय देशों में हुई है जहा लोहा व कोयला बहुत होता है" इस कथन का समर्थन कीजिए।

४ पैट्रोल के उत्पादन के दृष्टिकोण से रूस और संयुक्त राष्ट्र अमरीका का अन्तर विश्लेषण करिये।

५ दुनिया के मानचित्र पर खनिज तेल के क्षेत्र दिखलाइये और बतलाइये कि वहा से मनुष्यो के जीवन पर उसका क्या प्रभाव पडता है।

६ भूमडल पर मात्रा और गलाने के लिये शक्ति की उपलब्धता के दृष्टिकोण से लोहे का वितरण बतलाइये।

७ पृथ्वीतल पर लोहे व कोयले के वितरण का सक्षिप्त विवरण दीजिये और उनका आर्थिक महत्त्व स्पष्ट कीजिये।

८ उद्योग धधो के लिये शक्ति के स्रोतों म जल-शक्ति, कोयला या भापशक्ति और खनिज तेल शक्ति की तुलना कीजिये।

९ ससार में टीन, पैट्रोल, मगनीज, और अभ्रक प्राप्त करने वाले देश कौन २ से है। उनपर सक्षिप्त टिप्पणिया लिखिये और बतलाइये कि इन वस्तुओ मे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहा तक होता है।

१० जल विद्युत के उत्पादन के लिये कौन-सी भौगोलिक दशाए आदर्श है ? इस के आधार पर जल शक्ति उत्पादन के वर्तमान व सभावित केन्द्रो का वितरण बतलाइये।

११ खनिज तेल के पाये जाने का क्या कारण है और किन दशाओ में यह भूपटल की सतहो म एकत्रित हो जाता है ? ससार के प्रमुख क्षेत्रों को बतलाइये। कभी २ बडी २ कोयले की खाने तैल क्षेत्रो के समीप ही पाई जाती है। ऐसा क्यो है ? उदाहरण दीजिये।

१२ पैट्रोल और प्लेटिनम के प्रमुख उपयोग क्या है ? ये वस्तुए कहा पाई जाती है। विस्तार से लिखिये।

१३ जल-शक्ति का उपभोग करने वाले किन्ही चार देशो का नाम बतलाइये। शक्ति के अन्य स्रोतो की अपेक्षा जल शक्ति के प्रयोग के लिय प्रत्येक देश मे कौन-सी विशेष परिस्थितिया पाई जाती है ? समझा कर लिखिये।

१४ ससार म इस्पात उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश कौन है ? इस्पात उपभोग की विभिन्न मडियों का भी विवरण दीजिये।

१५ कोयले के विश्वव्यापी वितरण, इसके विभिन्न उपयोग और इससे प्राप्त विभिन्न गौण पदार्थों का वर्णन कीजिये।

१६ "वर्तमान काल में सोने व जवाहरात की अपेक्षा कोयले व लोहे की खानो का महत्त्व अधिक है।" इस कथन पर अपने विचार प्रकट करिये।

१७ किन परिस्थितियो में सोने की खान की अपेक्षा लोहे की खान का

महत्त्व अधिक होता है। ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी और दक्षिणी अफ्रीका मे उदाहरण लेते हुए समझाइये ।

१८ 'बहुधा खनिज पदार्थो और बहुमूल्य धातुओ की प्राप्ति खोज से देश विशेष की उन्नति को बड़ा प्रोत्साहन मिला है।" उत्तरी अमरीका और दक्षिणी अफ्रीका को ध्यान म रखते हुए इस कथन को समझाइये ।

१९ निम्नलिखित मे से किन्ही चार के प्रयोग व उपज क्षेत्र पर संक्षिप्त टिप्पणिया लिखिये

प्लेटिनम, अभ्रक, जस्ता, ताम्बा, मैंग्नीज और ग्रैफाइट ।

२० कच्चे लोहे के प्रमुख उत्पादक देशो का नाम बतलाइये और लिखिये कि उनका कच्चा लोहा कहा निर्यात किया जाता है ?

२१ ससार के प्रधान तेल क्षेत्र कहा पाये जाते है ? निम्नलिखित मे से किन्ही दो देशो की खनिज तेल विषयक नीति को समझाइये

ग्रेट ब्रिटेन, फ्रास, जर्मनी रूस और इटली ।

२२ वर्तमान युद्धकला और औद्योगिक क्षेत्र मे खनिज तेल के बढते हुए महत्त्व को कारणो सहित बतलाइये और इस दृष्टि से ससार के शक्तिशाली राष्ट्रो की स्थिति समझाइये ।

२३ मध्य पूर्व के खनिज तेल क्षेत्रो का वर्णन कीजिये और उनका राजनीतिक व सैनिक महत्त्व बतलाइये ।

२४ जल विद्युत के विस्तृत उत्पादन के लिये किन परिस्थितियो की आवश्यकता होती है ? उद्योग-धधो के स्थानीयकरण मे जल-विद्युत का क्या महत्त्व है ?

२५ भू मडल मे बहुमूल्य धातुओ के उत्पादन क्षेत्र कहा स्थित है ? इन धातुओ का कहा और कैसे प्रयोग होता है ?

अध्याय : : पांच

मछली पकड़ने का व्यवसाय

मछली पकड़ने के व्यवसाय का महत्व—मनुष्य के भोजन प्राप्त करने के साधनों में आदिकाल से ही मछली पकड़ने के व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वर्तमान काल में मछली पकड़ने के व्यवसाय का विशेष व्यापारिक महत्व है और समुद्र तथा नदियों से पकड़ी हुई मछलियों में काफी व्यापार होता है। मछलियों को प्राप्त करने के दो मुख्य साधन है—(अ) मीठे पानी के जलाशय जैसे नदियां, झीलें व तालाब इत्यादि और (ब) खारे पानी के जलाशय जैसे समुद्र व खाड़ियां। सच तो यह है कि नदियों, झीलों व तालाबों से प्राप्त मछलियों का केवल स्थानीय महत्व है। इन जलाशयों से पकड़ी हुई मछलियों में कोई विशेष व्यापार नहीं होता है। समुद्र से पाई जाने वाली मछलियां का स्थानीय महत्व तो है ही साथ ही साथ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भी बहुत अधिक है। अतएव समुद्र से मछली पकड़ने का व्यवसाय ही विशेषतया महत्वपूर्ण है।

मछली पकड़ने के साधन—नदियों, झीलों व तालाबों से तो लोग जाल अथवा बन्सी द्वारा मछली पकड़ते हैं। समुद्र से मछली पकड़ने का काम मछुवे जहाजों द्वारा होता है। वर्तमान समय में अधिकतर देशों में ड्रिफ्टर (Drifter) और ट्रॉलर (Trawler) जहाजों की सहायता से मछली पकड़ी जाती है। ये जहाज समुद्र में बहुत दूर जा सकते हैं और मौसम की अदल-बदल इन पर अधिक असर नहीं डालती है। इस कारण इनकी सहायता से काफी अधिक संख्या में और दूर-दूर से मछलियां पकड़ी जा सकती हैं। भूमंडल के समस्त मछली पकड़ने वाले स्थानों से साल में करीब-करीब १,३५० लाख टन मछलियां पकड़ी जाती हैं। संसार की औसतन सालाना पकड़ का ३७ फीसदी जापान और उसके आस-पास के समुद्रों से प्राप्त होता है और करीब १८ फीसदी ब्रिटिश द्वीपसमूह तथा उनके अन्य आश्रित राज्यों से प्राप्त होता है।

मछली प्रायः समुद्र की तलैटी में या ऊपरी सतह से थोड़ी दूर नीचे किनारों पर कम गहरे पानी में पाई जाती है। समुद्र की तलैटी में गहरे पानी में पाई जाने वाली मछलियों को ट्रॉलर (Trawler) जहाजों की सहायता से पकड़ा जाता है। इन जहाजों से मछली पकड़ने का जाल पानी में लटका दिया जाता है और फिर समुद्र की तलैटी के सहारे से ६ मील फी घंटे की रफ्तार से घसीटते हैं। इस प्रकार उसमें मछलियां फंस जाती हैं। और तब जाल को ट्रॉलर जहाज में ऊपर खेंच लेते हैं।

कम गहरे पानी में ड्रिफ्टर (Drifter) जहाज द्वारा मछलियां पकड़ी जाती हैं। इस जहाज में १० चालक और करीब ६० जाल रहते हैं। इन जालों को ऊपर व नीचे से छोटी-छोटी रस्सियों द्वारा बांध देते हैं। फिर जहाज से नीचे लटका कर पानी में हिलोरते हैं।

मछली पकड़ने के मुख्य प्रदेश— जैसा कि साथ दिये हुए चित्र से स्पष्ट हो जायगा भूमंडल पर मछली पकड़ने के मुख्य प्रदेश प्रायः समुद्र तट से कुछ सौ मील के भीतर ही स्थित हैं। मछली पकड़ने के ये मुख्य प्रदेश या तो भूखंड के किनारे वाले समुद्रों में पाये जाते हैं या किनारे से कुछ दूर समुद्र के उन भागों में पाये जाते हैं जहां समुद्र की तलैटी अन्य प्रदेशों की अपेक्षा ऊंची है। दूसरे प्रकार के प्रदेशों में उत्तर सागर के डागर बैंक (Dogger Bank) विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

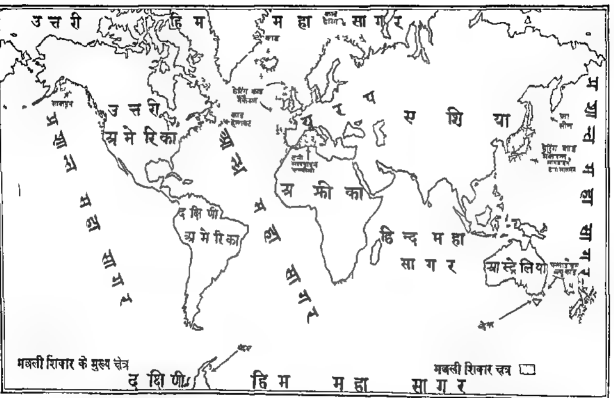
वास्तव में कई कारणों से छिछले पानी में मछलियों का आधिक्य होता है। किनारे के पास के छिछले पानी में नदियों द्वारा लाई हुई सामग्री इकट्ठा होती रहती है। इसे खाकर या इन के सहारे कई प्रकार के छोटे छोटे कीड़े पैदा हो जाते हैं और इन्हीं कीड़ों व जन्तुओं को खाने के लिये दूर दूर से मछलियां किनारे के पास छिछले पानी में आती हैं। इसके अलावा मछलियां आम तौर से छिछले पानी में ही अंडे देती हैं। अतएव संसार के सभी मुख्य मछली पकड़ने के प्रदेश किनारे वाले छिछले समुद्रों में स्थित हैं जिन्हें (Continental Shelf) के नाम से पुकारा जाता है।

मछली पकड़ने वाले प्रदेशों के वितरण में एक और बात भी ध्यान देने योग्य है। वह यह कि प्रायः सभी मुख्य मछलीमार प्रदेश शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित हैं। उष्ण कटिबन्धीय समुद्रों में अनेक प्रकार की मछलियां तो जरूर पाई जाती हैं पर उनमें से बहुत-सी जहरीली व खाने के लिये सर्वथा अयोग्य होती हैं। इसके विपरीत शीतोष्ण कटिबन्ध में पाई जाने वाली मछलियों के प्रकार व जाति तो कम होती हैं, परन्तु जो थोड़ी जातियां मिलती हैं उनमें मछलियों का आधिक्य होता है। और वे खाने के लिये उपयुक्त होती हैं। इसके अलावा शीतोष्ण कटिबन्ध में मछलियों को अधिक समय तक रक्खा जा सकता है और इसी लिये शीतोष्ण प्रदेशों में मछली का व्यापार भी अधिक है।

भूमंडल पर मछली पकड़ने वाले मुख्य प्रदेश निम्नलिखित चार हैं—

(१) न्यूफाउंडलैंड, कनाडा और न्यू इंग्लैंड का उत्तरी अटलांटिक किनारा।
(२) उत्तरी पश्चिमी यूरोप का किनारा।
(३) जापान और उसके आसपास के समुद्री किनारे।
(४) उत्तरी अमरीका का उत्तरी पैसिफिक किनारा।

१. उत्तरी अमरीका का उत्तरी अटलांटिक किनारा—इस प्रदेश में नदियों, खाड़ियों और छिछले समुद्रों की अधिकता के कारण मछलियों के लिये आदर्श दशायें वर्तमान हैं। न्यूफाउंडलैंड और लैब्रेडर के लोग उन्हीं मछलियों को पकड़कर अपना बसर



चित्र न ३८—संसार के मुख्य मछली पकड़ने वाले प्रदेश—उत्तर सागर संसार का सबसे प्रधान मछलीमार प्रदेश है।

करते हैं। नोवा स्कोशिया (Nova Scotia) में भी मछली पकडना मुख्य धंधा है। न्यू इंग्लैंड और न्यूफाउंडलैंड के किनारे पर हैरिंग और हेलिबट जाति की मछलियां विशेषतया पाई जाती है। मछली पकडने व व्यापार के मुख्य केंद्र बोस्टन, हेलिफैक्स, सेंट जान, मान्ट्रियल और पोर्टलैंड हैं। इस प्रदेश में गहरे सागर की मछलियां न्यूफाउंडलैंड के दक्षिण में और ग्रैन्ड बैन्क्स (Grand Banks) में पकडी जाती हैं। इस प्रदेश के निर्यात व्यापार का दो-तिहाई भाग मछलियां और उनसे बनाई हुई वस्तुएं होती हैं।

२. उत्तरी पश्चिमी यूरोप का समुद्री किनारा—उत्तर सागर संसार का सब से बड़ा व विस्तृत मछली पकडनेवाला प्रदेश है। इस प्रदेश के चारों ओर ग्रेट ब्रिटेन, नार्वे, हालैंड, जर्मनी, फ्रांस, डनमार्क और बेल्जियम जैसे घन बसे देश स्थित हैं। इन में से प्रत्येक देश इस प्रदेश से मछली पकडता है।

ग्रेट ब्रिटेन—संसार के मछली पकडने वाले देशों में जापान के बाद ग्रेट ब्रिटेन का दूसरा स्थान है। ग्रेट ब्रिटेन के विभिन्न व्यवसायों में मछली पकडने का छठा स्थान है और चालीस हजार से अधिक लोग इस काम में लगे हुए हैं। यद्यपि इस देश में मछली बहुत मात्रा में पकडी जाती है परन्तु फिर भी बहुत अधिक मात्रा में मछली आयात करना पडता है। हैरिंग, काड, मैकेरेल, आयस्टर और मैडिक जाति की मछलियों की प्रधानता है परन्तु इनमें हैरिंग का विशेष महत्त्व है। ग्रेट ब्रिटेन में पकडी गयी कुल मछलियों में आधी से अधिक हैरिंग जाति की मछलियां रहती हैं। इसे सुखा कर और नमक में रख कर यूरोप महाद्वीप के देशों को निर्यात किया जाता है। दक्षिणी पूर्वी इंग्लैंड और उत्तरी स्काटलैंड के समुद्री किनारे पर स्थित अनेक नगर इस व्यवसाय के मुख्य केंद्र हैं। विक, ठरसो, फ्रेजरवर्ग, पीटरहेड और एबरडीन उत्तरी स्काटलैंड के मुख्य केन्द्र हैं। दक्षिणी पूर्वी इंग्लैंड में यारमाउथ और लोस्टोफ्ट का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। ब्रिटेन के पश्चिमी किनारे पर झीलों से मछलियां पकडी जाती है और फ्लीटवुड व मिलफर्ड इसके मुख्य केन्द्र हैं। लन्दन में बिलिंग्स गेट (Billings Gate) मछली की सब से बडी मंडी है। सन् १९४९ में ग्रेट ब्रिटेन में १० लाख टन मछलियां पकडी गई परन्तु फिर भी १,८३,००० टन मछलियां बाहर से आयात की गई।

नार्वे—नार्वे में मछली पकडने के व्यवसाय और भौगोलिक परिस्थितियों में बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। समुद्रतट के कटे-फटे होने से अनेकों सुन्दर बन्दरगाह हैं, जलवायु बडी ही स्वास्थ्यप्रद है और देश के पहाडी होने से उपजाऊ खेतिहर भूमि की कमी है। इन्हीं सब कारणों से नार्वे के लोग समुद्र की सम्पत्ति के सहारे ही समृद्ध व उन्नतिशील हो सके हैं। यहां के मुख्य मछली पकडने वाले प्रदेश प्रायः लोफोटन द्वीपसमूह के दक्षिण में स्थित हैं और बहुत अधिक मात्रा में काड व हैरिंग मछलियां पकडी जाती हैं। काड पकडने के मुख्य केन्द्र हैमरफेस्ट और ट्रोमसो हैं तथा हैरिंग पकडने के लिए ट्रानधीमय और बर्गन (Bergen) विशेषतया उल्लेखनीय हैं। नार्वे में संसार

का ५० फीसदी मछली का तेल प्राप्त होता है। यह तेल प्राय ह्वेल (Whale) मछली से निकाला जाता है। सच तो यह है कि नार्वे के निर्यात व्यापार में एक-तिहाई भाग मछली, मछली का तेल तथा अन्य वस्तुओ का रहता है।

३ **जापान और उसके आसपास के समुद्री किनारे**—जापान द्वीपसमूह के चारो ओर का छिछला समुद्र ससार के मछली पकडने वाले प्रदेशो में बडा ही महत्त्व रखता है। ससार के सभी देशो की अपेक्षा जापान में मछली की खपत बहुत अधिक है और इसीलिए इस व्यवसाय का जापान में बडा महत्त्व है। मछली यहा के लोगो का मुख्य भोजन है और यद्यपि इस व्यवसाय में करीब १५ लाख आदमी लगे हुए है, इसका निर्यात व्यापार अधिक नही है।

होनशू (Honshiu), होकेडो (Hokkaido) और केराफूटो (Karafuto) द्वीपो के उत्तर मे ठडे सागर प्रदेश मछली पकडने के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जापान के किनारो से होकर गर्म व ठडी जलधाराये बहती है और इनके सहारे दूरस्थ प्रदेशो की मछलिया भी किनारे के छिछले जल में आ जाती है। इसीलिये जापान के समुद्रो से पकडी हुई कुल मछलियो का ८० फीसदी भाग होकेडो (Hokkaido), कोरिया, कूराईल द्वीपसमूह और सेखालीन (Sakhalin) के किनारे वाले भागो से प्राप्त होता है। पश्चिमी किनारे पर काड, हेरिग, मैकेरेल सालमन और केंत्र जाति की मछलियां पकडी जाती है। पूर्वी किनारे पर थोमिट, टनी और टर्टिल जाति की मछलिया प्रधान है। जापान मे आयस्टर मछली का पालन कर और उनके अन्दर बालू के कण प्रवेश कर के बनावटी मोती तैयार किये जाते है। आज कल इन झूठे मोतियो का बडा व्यापार है।

४ **उत्तरी अमरीका का उत्तरी पैसिफिक किनारा**—मछली पकडने वाला यह प्रदेश अलास्का की खाडी से लेकर उत्तरी कैलीफोर्निया तट तक फैला हुआ है। इस पैसिफिक तटीय प्रदेश पर यद्यपि आबादी कम है परन्तु मछली पकडने के व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह बहुत ही उन्नत है। यहा पर प्रधानत सालमन जाति की मछली पकडी जाती है और अलास्का तथा ब्रिटिश कोलम्बिया का तटीय प्रदेश इसके लिए विशेषतया महत्त्वपूर्ण है। इन प्रदेशो का किनारा कटा फटा है, सामने द्वीप है, भूखड पर से बहती हुई बहुत-सी नदिया गिरती है और गर्म व ठडी जलधारायें किनारो पर ही बहती है। इसलिए फ्रेसर, स्कीना और सालमन नदिया तथा क्वीन चारलोट द्वीप के आस-पास का सागर सालमन मछली पकडने का मुख्य प्रदेश है। सालमन के अलावा हेरिग, काड और हेलिबट जाति की मछलिया भी पकडी जाती है। कैलीफोर्निया के किनारे पर सारडाइन जाति की मछलिया पकडी जाती है। विक्टोरिया, सिटका, वैनकूवर, प्रिंस रूपर्ट द्वीप और पोर्टलैंड इस प्रदेश म मछली पकडने व व्यापार के मुख्य केन्द्र है।

मछली पकडने के व्यवसाय के अन्य प्रदेश—मछली अन्य प्रदेशो म भी पकडी

जाती है । आस्ट्रेलिया, इन्डोनेशिया और भूमध्यसागर तटीय प्रदेशों में भी मछली पकडी जाती है। रूस, मध्य यूरोप उत्तरी अमरीका, पूर्वी भारत और चीन की नदियों में भी मछलियां पकडी जाती हैं पर उनका केवल स्थानीय महत्त्व है।

नार्वे और न्यूफाउन्डलैंड के बीच का आर्कटिक सागर और दक्षिणी गोलार्द्ध का रौस सागर (Ross Sea) भी मछली पकडने के प्रधान प्रदेश हैं। इन प्रदेशों में ह्वेल और सील मछलियां विशेष रूप से मिलती हैं। ये मछलियां खाने के योग्य तो होती नहीं इसलिये इनका मुख्य व्यापारिक महत्त्व इनकी चर्बी से प्राप्त तेल के कारण है। ह्वेल मछली का तेल तो दवाई के रूप में प्रयोग होता है परन्तु सील का तेल साबुन बनाने में प्रयोग किया जाता है। सील मछली की खाल को साफ करके विभिन्न प्रकार के चमड़े के सामान बनाने में प्रयोग करते हैं। ह्वेल और सील मछली पकडने वाले देशों में न्यू-फाउडलैंड नार्वे और रूस का स्थान सबसे बढ़ा चढ़ा है।

लंका (Ceylon), फारस की खाडी, सूलू द्वीपसमूह, न्यू गायना और आस्ट्रेलिया के समुद्र तट के कुछ भागों में सच्चे मोती निकाले जाते हैं। मोती की लम्बाई-चौड़ाई, वजन, रंग, चमक और शुद्धता के अनुसार ही मूल्य आंका जाता है। सब से बहुमूल्य मोती वे होते हैं जो पूर्णतया गोल होते हैं और उनसे उतर कर वटनाकार व अंडाकार मोतियों का स्थान आता है।

प्रश्नावली

१ प्रमुख मछलीमार प्रदेशों की भौगोलिक व प्राकृतिक विशेषताएं कौन कौन सी हैं ? उदाहरण देते हुए समझाइये।

२ संसार में मछली पकडने के लिये मुख्य क्षेत्र कौन-कौन से हैं ?

३ जापान में मछली पकडने के व्यवसाय पर एक छोटा-सा लेख लिखिये।

४ "मछली पकडने के सभी प्रधान क्षेत्र शीतोष्ण कटिबंध में स्थित हैं।" इस वक्तव्य पर अपने विचार प्रकट कीजिये।

५ मछली पकडने के दृष्टिकोण से छिछले समुद्रों का आर्थिक महत्त्व बतलाइये।

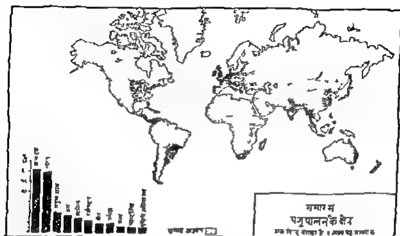
६ संसार के प्रधान मछली पकडने वाले क्षेत्रों का विवरण दीजिये और बतलाइये कि इनमें कौन से प्रदेश ग्रेट ब्रिटेन के लिये विशेष महत्त्व के हैं।

७ ग्रेट ब्रिटेन के पूर्वी तट पर स्थित मछली पकडने के व्यवसाय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

८ भौगोलिक दृष्टिकोण से पूर्वी इगलैंड के मछली पकडने के व्यवसाय का विवरण दीजिये।

९ कनाडा में मछली पकडने के व्यवसाय पर एक लेख लिखिये।

संयुक्त राष्ट्र में इसके प्रमुख क्षेत्र विसकौंसिन और इलिनॉय हैं। संयुक्त राष्ट्र की दुग्धशालाओं में दो करोड़ से भी अधिक गायें हैं।



चित्र न० ३५—संसार के दूध व्यवसाय के प्रदेश—ध्यान देने की बात है कि अफ्रीका में घास के विस्तृत मैदान होते हुए भी पशु नहीं पाले जाते। यूरोप, भारत और आस्ट्रेलिया में भौगोलिक परिस्थिति अनुकूल न होने पर भी मनुष्य के प्रयत्न से वहां के घास के मैदान पशुपालन के उपयुक्त हो गये हैं।

यूरोप के उत्तर पश्चिमी भाग में घास के उत्तम मैदान हैं। डेनमार्क की दुग्धशालाएं विश्वविख्यात हैं। यहां पर इस सफलता का आधार यहां की सहकारी समितियां हैं। इस समय देश में लगभग ६,००० सहकारी समितियां काम कर रही हैं। यहां पर ८० प्रतिशत दूध का मक्खन और १० प्रतिशत दूध का पनीर व जमा हुआ दूध तैयार किया जाता है। बाकी १० प्रतिशत घरेलू उपभोग में लाया जाता है। डेनमार्क के कुल निर्यात का ७५ प्रतिशत इसी की वस्तुएं होती हैं। दूध के धंधे के लिए हालैंड भी प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त स्विटज़रलैंड फ्रांस स्वीडन आयरलैंड जर्मनी और फिनलैंड में भी इसी का धंधा होता है।

न्यूज़ीलैंड भी दूध के व्यवसाय के लिये एक प्रधान देश है। इस व्यवसाय में यहां की सरकार सक्रिय सहायता देती है और स्वयं भाग भी लेती है। परन्तु न्यूज़ीलैंड संसार की मुख्य मंडियों से बहुत दूर स्थित है। इसलिये इन वस्तुओं के व्यापार में पहले कुछ कठिनता होती थी परन्तु शीत भंडार रीति (Cold Storage) की उन्नति हो जाने से अब यहां का दूध व दूध की बनी हुई वस्तुयें दूर २ देशों को भेजी जाती हैं। इसी दूर स्थिति के फलस्वरूप यहां का मुख्य व्यापार दूध पनीर और सुखाये हुए दूध हैं।

संसार के भिन्न देशों में पशुओं की संख्या
(लाख संख्या में)

देश	औसत १६३६-४०	१६४७	देश	१६३६-४०	१६४७
भारत+पाकिस्तान	२०६७	—	चीन	४६०	२२८
संयुक्तराष्ट्र	६६७	८१२	जर्मनी	१६१	१६०
ब्राजील	६००	६६०	फ्रांस	१५५	१५१
सोवियत रूस	५६८	६६८	आस्ट्रेलिया	१३३	१३४
अर्जेन्टाइना	३३८	४१३	दक्षिणी अफ्रीका	११६	१२१
युरगुए	६६३	७००	मैक्सिको	११७	१२४

भारतवर्ष में पशुओं की संख्या तो संसार भर में सब से अधिक है परन्तु यहाँ पर दुग्धशाला तथा माँस का व्यवसाय नगण्य हैं। डेनमार्क फ्रांस तथा आयरलैंड का मक्खन प्रसिद्ध है। कनाडा इटली और हालैंड पनीर के प्रमुख उत्पादक तथा निर्यातक देश हैं। नीचे दी हुई तालिका से विविध देशों में दूध के उत्पादन की अनुमानित मात्रा स्पष्ट हो जायगी—(लाख गैलन)

देश	उत्पादन	देश	उत्पादन
न्यूजीलैंड	८,७००	ग्रेट ब्रिटेन	१४,०४०
डेनमार्क	१२,०००	संयुक्तराष्ट्र	१०३,८००
आस्ट्रेलिया	१०,४६०	चीकोस्लोवाकिया	१२,०००
कनाडा	१५,८००	जर्मनी	५०,६६०
हालैंड	६,७००	भारत	६४,०००

मुर्गीपालन का व्यवसाय—कुछ ही वर्षों से संयुक्त राष्ट्र, डेनमार्क और रूस में मुर्गियाँ भी पाली जाने लगी हैं। इस धंधे की बड़ी उन्नति हो रही है और इसके लिये कोई विशेष दशा की भी आवश्यकता नहीं है। घर के कूड़ा-करकट व जूठन को खाकर मुर्गियाँ पल जाती हैं। इन्हें विशेषतया माँस तथा अंडा के लिये पालते हैं और खेती के साथ साथ इस धंधे को भी करते रहते हैं।

मुर्गियाँ (१९४६-४७)
(लाख संख्या में)

देश	संख्या	देश	संख्या
संयुक्तराष्ट्र	४,७५०	फ्रांस	६६०
चीन	३,४५०	कनाडा	८६०
रूस	२,०८०	डेनमार्क	१९०
जर्मनी	९००	आयरलैंड	१८०
ग्रेट ब्रिटेन	६२०	हालैंड	१००

ऊन का व्यवसाय—ऊन पशुओं से प्राप्त होने वाली एक प्रधान वस्तु है और इस से मूल्यवान वस्त्र बनाये जाते हैं। संसार की ९० प्रतिशत ऊन ऊंटों, भेड़ों और बकरियों से प्राप्त होती है। सब से अधिक ऊन भेड़ों से प्राप्त होती है और इसीलिये भेड़ पालने का धंधा न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका, युरुगुवे, भारत और सोवियत रूस में बहुत बढ़ा-चढ़ा है।

उत्तम ऊन वाली भेड़ों के लिये चूने के पत्थर वाली भूमि तथा शुष्क, उष्ण, शीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। भेड़ के लिये छोटी घास भी ठीक होती है इसलिये वे पहाड़ी ढाल जो खेती के लिये सर्वथा अनुपयुक्त होते हैं, भेड़ चराने के लिये बिल्कुल ठीक होते हैं। मेरिनो का ऊन सब से अच्छा होता है।

ऊन के उत्पादन क्षेत्र—ऊन उत्पन्न करने वाले बड़े २ क्षेत्र प्रायः कम संख्या वाले घास के मैदानों में पाये जाते हैं। सब से अधिक ऊन आस्ट्रेलिया में उत्पन्न होती है। दुनिया भर का एक-चौथाई ऊन आस्ट्रेलिया से ही प्राप्त होता है। यहां पर मरे नदी के बेसिन से लेकर उत्तर में मध्य क्वीसलैंड तक पूर्वी पहाड़ों की वायु से सुरक्षित पहाड़ी ढालों व मैदानी प्रदेशों में भेड़ें पाली जाती हैं। पूर्व के तटवर्ती प्रदेशों की तर जलवायु में भेड़ों की संख्या कम है। आस्ट्रेलिया में ऊन के अन्य क्षेत्र क्वींसलैंड में २० प्रतिशत, विक्टोरिया में १५ प्रतिशत और पश्चिमी आस्ट्रेलिया में १० प्रतिशत भेड़ें पाली जाती हैं। अलबरी, सिडनी, मेलबोर्न, जीलौंग, बैलराट और ब्रिसबेन ऊन के प्रमुख केन्द्र हैं।

ऊन के लिये भेड़ पालने वाले अन्य महत्वपूर्ण देश क्रमशः संयुक्त राष्ट्र, अर्जेन्टाइना और न्यूज़ीलैंड हैं। इन चारों देशों में कुल मिलाकर संसार के आधे से अधिक ऊन प्राप्त होता है। न्यूज़ीलैंड में दक्षिणी द्वीपों के तटवर्ती शुष्क ढालों और मैदानों पर भी काफी भेड़ पाली जाती हैं।

१९४७ में ऊन का विश्वव्यापी उत्पादन और भेड़ों की संख्या

(महस्र मीट्रिक टन) (लाख में)

देश	उत्पादन	संख्या	देश	उत्पादन	संख्या
आस्ट्रेलिया	४५४	९५७	दक्षिणी अफ्रीका	८६	३०७
संयुक्त राष्ट्र	१५४	३७८	सोवियत रूस	११८	६००
अर्जेन्टाइना	२११	५४०	भारत	३६	५०२
न्यूज़ीलैंड	१६८	३२६	ग्रेट ब्रिटेन	२७	१६७
युरुगवे	७२	२०५	चीन	४१	२२०

१९४८ में ऊन का विश्वव्यापी उत्पादन ३ अरब ८३ करोड़ पौंड था। इसमें से आस्ट्रेलिया में २ अरब २० करोड़ पौंड, उत्तरी अमरीका में ३१ करोड़ २५ लाख पौंड, एशिया के देशों में ३३ करोड़ २५ लाख पौंड, अफ्रीका में २७ करोड़ ८० लाख पौंड और दक्षिणी अमरीका में ७८ करोड़ ६८ लाख पौंड ऊन प्राप्त हुआ था।

दूसरे महायुद्ध के बाद से ऊन का विश्व उपभोग १०—१५ प्रतिशत बढ़ गया है और इसी कारण उत्तम श्रेणी का ऊन कम मिलता है। परन्तु हाल में ही कुछ नई खोज हुई है। उन में से विशेष उल्लेखनीय खोज है कि मध्यम व निम्न श्रेणी के ऊन की उपयोगिता किस प्रकार बढ़ाई जाए। इस खोज के फलस्वरूप आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिणी अफ्रीका और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ऊन की उत्पादन की दशा बहुत कुछ सुधर गई है।

भेड़ों के अतिरिक्त ऊँट और बकरी से भी ऊन प्राप्त होता है। ईरान, अरब, एशिया माइनर उत्तरी अफ्रीका और मध्य एशिया में ऊँट के ऊन का बड़ा महत्व है। वास्तव में ऊँट की गर्दन और कूबड़ से बाल मिलते हैं। भेड़ों के अलावा अंगोरा बकरियों तिब्बत की बकरियों, अल्पाका, लामा तथा ऊँटों से भी ऊन प्राप्त होती है। दक्षिण अफ्रीका की अंगोरा बकरियों से प्राप्त ऊन को 'मोहेर' कहते हैं। तिब्बत की बकरियों का ऊन बड़ा मुलायम होता है और इन के ऊन से काश्मीरी शाल-दुशाले बनाये जाते हैं। ये तिब्बती बकरियां तिब्बत, काश्मीर और दक्षिणी चीन में पाई जाती हैं। दक्षिणी अमरीका के पीरू और बोलीविया राज्यों में अल्पका और लामा नामी पशु से 'अल्पका' ऊन प्राप्त होती है। इसका उपयोग अस्तर, गोटा, फीता लगाने तथा मामूली वस्त्र बनाने में होता है।

पशुओं से प्राप्त अन्य वस्तुयें—पशुओं से प्राप्त अन्य वस्तुयें गौण हैं परन्तु छोटे उद्योगों में प्रयोग की जाती हैं। ये वस्तुयें हड्डी, सींग, खाल, चर्बी, खुर, समूर आदि हैं। हड्डियों से बटन, कंघे, शृंगार की वस्तुयें बनती हैं। चमड़े व खाल से मनुष्य के काम की बहुत-सी चीजें बनती हैं। जूतों के अतिरिक्त चमड़े के थैले, सन्दूक, सूटकेस, घोड़ों की जीन, लगाम इत्यादि साज, कुप्पियां, मशीनों के पट्टे, मोटर की सीटें, बन्दूक के केस तथा अन्य बहुत-सी आवश्यक चीजें बनाई जाती हैं। इसलिये चमड़े की मांग बराबर बढ़ती ही जा रही है। खाल और चमड़ा अधिकतर गाय, बैल, भैंस, घोड़े, भेड़ और बकरियों से प्राप्त होता है। अर्जेन्टाइना, युरुग्वे, मध्य अमरीका, रूस, कनाडा और दक्षिणी अफ्रीका से दुनिया में खालों की मांग की पूर्ति होती है। जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र में चमड़ा साफ करने और कमाने का काम होता है। ये चमड़ा गाय, बैल, भैंस की खाल से तैयार होता है। भारत, चीन, स्पेन और ब्राजील में बकरी की खालें मिलती हैं। इस सिलसिले में ध्यान देने-योग्य बात यह है कि ये गौण वस्तुयें उन देशों में अधिकतर होती हैं जहां मांस का व्यवसाय होता है। ठंडे शीतोष्ण प्रदेशों के बड़े बाल वाली लोमड़ियों, गिलहरियों और ऊदबिलावों से समूर या फरदार खालें प्राप्त होती हैं।

पशुओं से अन्य लाभ—सच तो यह है कि पशु हमारे बहुत काम करते हैं। वे बोझा ढोते हैं और गाड़ी खींचते हैं। दलदली भूमि पर हाथी, पहाड़ी भूमि पर घोड़ा और मरुस्थली भूमि पर ऊँट मनुष्य का बोझा ढोता है और सवारी के भी काम आता है।

वर्तमान समय में यान्त्रिक साधनों की उन्नति के साथ-साथ पशुओं से बोझा ढोने का काम कम लिया जाता है। फिर भी बहुत से प्रदेशों में यातायात व गमनागमन के लिये मनुष्य का एकमात्र सहारा पशु ही हैं। ध्रुव प्रदेशों में रेनडियर व कुत्ते ही बोझा ढोने के अतिरिक्त गमनागमन के एकमात्र साधन है। इसी प्रकार मरुस्थलों, भूमध्यरेखीय घने जंगलों और पहाड़ी प्रदेशों मे मनुष्य का एकमात्र सहारा पशु ही हैं। फिर भारतवर्ष और अन्य एशियाई कृषि प्रधान देशों में जुताई से ले कर सभी काम पशुओं से ही लिया जाता है। यूरोप और अमरीका में वैज्ञानिक रीति से खेती की जाती है परन्तु फिर भी घोड़े खेती का एक विशेष सहारा है।

प्रश्नावली

१ भेड़ पालने और दूध के लिये पशु पालन के व्यवसाय का विश्वव्यापी वितरण बतलाइये और विभिन्न प्रदेशों में केन्द्रित होने के कारण लिखिये।

२ व्यापार के लिये ऊन का व्यवसाय किन प्राकृतिक दशाओं पर आश्रित रहता है। प्रधान ऊन उत्पादक देशों से उदाहरण देते हुए समझाइये।

३ उत्तरी अमरीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में भेड़ पालने के व्यवसाय का वितरण दीजिये और बतलाइये कि किन दशाओं के वर्तमान होने से भेड़ पालना सुगम व लाभप्रद होता है।

४ डेनमार्क में दुग्धशालाओं और पशु-पालन के व्यवसाय का विवरण लिखिये। किन कारणों से यह व्यवसाय उस प्रदेश में केंद्रित है। यह भी बतलाइये कि वहां के निवासी कहां तक अपनी आय व जीविका के लिये इस पर निर्भर रहते हैं।

५ "सभ्य मनुष्य के भोजन की प्रधान वस्तुओं में रोटी और मक्खन सर्वप्रथम है।" यूरोप के किस देश से ग्रेट ब्रिटेन मक्खन मंगवाता है? किन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण वहां मक्खन का इतना उत्पादन होता है?

६ ऊन का अधिकतर उत्पादन दक्षिणी गोलार्द्ध में ही होता है। इसका क्या कारण है? विस्तार से बतलाइये।

७. संसार में मांस व्यवसाय के केन्द्र कौन २ से है। उन सब का संक्षिप्त विवरण दीजिये और दुनिया के मानचित्र पर दिखलाइये।

८ संयुक्त राष्ट्र में पशु पालन व्यवसाय के विकास व उन्नति का विवरण दीजिये और बतलाइये कि किन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यह व्यवसाय प्रधानतः संयुक्त राष्ट्र के मध्य भाग में पाया जाता है।

९ आर्थिक उपभोग के दृष्टिकोण से कौन से पशु मनुष्य के लिये सब से महत्त्व-पूर्ण हैं। उनके आधार पर होने वाले मानव व्यवसायों का संक्षिप्त विवरण दीजिये और प्रत्येक के लिये आवश्यक भौगोलिक दशाओं का निरूपण कीजिये।

१० अपनी प्राकृतिक परिस्थितियों पर विजय पाने और आर्थिक क्षेत्र में उन्नति करने में मनुष्य को विभिन्न प्रकार के पशुओं से क्या सहायता मिलती है? समझा कर लिखिये।

वन-सम्पत्ति और लकड़ी काटने का व्यवसाय

पृथ्वीतल का एक चौथाई भाग वनों से ढका हुआ है। वनों का वितरण विशेषतया जलवायु पर निर्भर रहता है।

वन-सम्पत्ति का विश्वव्यापी वितरण

महाद्वीप	लाख एकड़	सम्पूर्ण क्षेत्रफल का प्रतिशत
एशिया	७०,६६०	२२
दक्षिणी अमरीका	७०,६३०	४८
उत्तरी अमरीका	१६,६४०	२७
अफ्रीका	७,६३०	११
योरोप	७,३६०	३१
आस्ट्रेलिया	२,८३०	१५

वनों से लाभ—वनों से अनेक लाभ हैं। उनमें कुछ तो प्रत्यक्ष हैं पर अधिकतर अप्रत्यक्ष। वनों के प्रत्यक्ष लाभ मुख्यतया वनों से प्राप्त होने वाली बहुमूल्य लकड़ी, ईंधन तथा अन्य वस्तुओं से सम्बन्धित हैं। लकड़ी का प्रयोग सन्दूक, खाँचे, छड़ी, तख्ते, शहतीर, अन्य इमारती सामान, मेज, कुर्सी, मस्तूल व जहाजों इत्यादि के बनाने में होता है। लकड़ी की लुग्दी कागज बनाने के काम में आती है। इसके अतिरिक्त लकड़ी से अर्क, रंग की वस्तुएँ तथा बाड़ों के खम्भे आदि भी बनाये जाते हैं। रबड़, गटापार्चा, कुनैन, राल, तारपीन का तेल, बिरोजा, लाख, कार्क इत्यादि वस्तुएँ भी पेड़ों से प्राप्त होती हैं। वनों में पशु चराने का भी काम होता है।

परोक्ष रूप से वन जलवायु और भूमि को प्रभावित करते हैं (१) वन जलवायु को सम बनाते हैं और वर्षा की वृद्धि करते हैं, (२) भूमि के उपजाऊपन को बढ़ाते हैं और हवा की तेजी को कम करते हैं, (३) भूमि के कटाव को रोकते हैं और इस प्रकार उपजाऊ भूमि को नष्ट होने से बचाते हैं।

वन राष्ट्रीय सम्पत्ति हैं और सरकार की आय के साधन हैं। इसके अतिरिक्त वनों के निकट ग्रामवासियों को वनों से गृहोपयोगी लकड़ी, ईंधन तथा अन्य जीविका-सम्बन्धी आवश्यक वस्तुएँ मिलती हैं।

वनों के प्रकार—वन मुख्यतया तीन प्रकार के होते हैं (१) नोकदार पत्तीवाले मुलायम लकड़ी के सदाबहार वन; (२) शीतोष्ण कटिबंध के कड़ी लकड़ी वाले पतझड़ वन, (३) उष्ण कटिबंध के कड़ी लकड़ी वाले सदाबहार वन।

१. नोकदार पत्तीवाले मुलायम लकड़ी के वन—ये वन शीत कटिबंध में पाये जाते हैं। चीड़, देवदार, सनोवर, सरो तथा जूनिपर के वृक्ष इन वनों में विशेषरूप से पाये जाते हैं। वर्तमान काल में संसार की लकड़ी का आधा भाग इन्हीं वनों से प्राप्त होता है। ये वन साइबेरिया तथा कनाडा के ठंडे बर्फीले भागों में अधिकतर पाये जाते हैं। काश्मीर के समीप के ५००० से ७००० फीट ऊँचाई वाले ढालों, तिब्बत की सीमा के समीप पश्चिमी चीन के कुछ दूरवर्ती पहाड़ों, दक्षिणी चिली के एन्डीज पर्वत के ढालों पर तथा न्यूज़ीलैंड में नोकदार पत्ती वाले वन पाये जाते हैं। चीड़ की मुलायम लकड़ी बहुत अच्छी और व्यापारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है। इसका उपयोग मस्तूलों, जहाज के तख्तों, घरेलू सामानों, माल भर कर भेजने वाले बक्सों, दियासलाई तथा कागज के उद्योग में किया जाता है। चीड़ अधिकतर कनाडा, नारवे और स्वीडन के वनों में पाई जाती है। संयुक्त राष्ट्र के पूर्वी भाग, तस्मानिया और न्यूज़ीलैंड में भी चीड़ की लकड़ी प्राप्त की जाती है।

२. पतझड़ वाले वन—इन वनों में कड़ी लकड़ी के वृक्ष पाये जाते हैं और शीतोष्ण कटिबंध प्रदेशों में बलूत, बर्च, मेपिल, ऐश, अखरोट तथा ऐल्म के वृक्ष विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनकी कड़ी लकड़ी से मेज़-कुर्सी आदि बनते हैं। संसार की ४० प्रतिशत लकड़ी इन्हीं वनों से प्राप्त होती है। ये वन आल्प्स, पिरेनीज, मध्य रूस, मध्य साइबेरिया, जापान, संयुक्त राष्ट्र के अपलेशियन प्रदेश, पैटेगोनिया और दक्षिणी चिली में पाये जाते हैं।

३. उष्ण कटिबंध के सदाबहार वन—भूमध्यरेखीय प्रदेशों के ये वन सदा हरे-भरे रहते हैं और इनमें सागौन, आबनूस, रोज़वुड, डाईवुड इत्यादि कड़ी लकड़ी के वृक्ष पाये जाते हैं। ये वन तीन प्रदेशों में विशेष रूप से प्रधान हैं—दक्षिणी अमरीका में अमेज़न प्रदेश में जहाँ इन्हें सेल्वाज कहते हैं, अफ्रीका में ऊपरी गायना के तट और कांगो नदी के बेसिन में तथा इन्डोनेशिया द्वीपसमूह में। इन वनों की लकड़ी कड़ी व मजबूत होती है और शहतीर, जहाज, मेज़-कुर्सी आदि बनाने में प्रयोग की जाती है। सागौन की लकड़ी से शहतीर, जहाज व भारी किस्म का फर्नीचर बनाया जाता है। आबनूस की लकड़ी से सन्दूक व रंग बनाया जाता है। मेज़-कुर्सी के लिये सब से अच्छी लकड़ी आबनूस व रोज़वुड होती है। यह लकड़ी मध्य अमरीका तथा पश्चिमी द्वीपसमूह में विशेषकर मिलती है। तुन की लकड़ी भी मेज़-कुर्सी के लिये अच्छी होती है और क्यूबा, जमैका, मैक्सिको तथा हेटी में विशेष रूप से मिलती है।

वनों का प्रादेशिक वितरण

यूरोप के वन—यूरोप का लगभग एक-तिहाई भाग वनों से घिरा हुआ है। यहाँ संसार की १० प्रतिशत लकड़ी उत्पन्न होती है। स्केंडिनेविया, फिनलैंड, बाल्टिक राज्य तथा उत्तरी रूस में कोणधारी (नोकदार पत्ती वाले) वन हैं। इस भाग में नदियों द्वारा

यातायात की सुगमता तथा सस्ती शक्ति की सुविधा है। इसीलिए यहां पर लकड़ी काटने तथा लकड़ी का सामान बनाने के उद्योगों का विकास हुआ है।

स्वीडन में यूरोप की सबसे अधिक लकड़ी उत्पन्न होती है। यहां से खिड़कियों के चौखटे, कागज, दियासलाई, लकड़ी की लुग्दी तथा प्लाइवुड का निर्यात किया जाता है। नारवे का एक चौथाई भाग वनों से ढका हुआ है और यहां के निर्यात का एक-तिहाई भाग लकड़ी की बनी हुई वस्तुएं होती हैं। नारवे से अन्य देशों को लकड़ी नहीं भेजी जाती परन्तु काठ की लुग्दी, अखबारी कागज, सिलोफ्रेन, गत्ता (Cardboard) दियासलाई और अन्य प्रकार के कागज बनाने में प्रयोग की जाती है। यहां का तट साल-भर खुला रहता है। इसलिए नावों व जहाजों द्वारा लकड़ी व उसकी वस्तुएं बराबर बाहर भेजी जा सकती हैं।

रूस में संसार के एक तिहाई भाग से भी अधिक वन हैं। यहां पर चीड़, फर, लार्च तथा स्प्रूस आदि वृक्षों की प्रचुरता है। इन वनों की लकड़ी से इमारती सामान, कागज तथा सिलोफ्रेन बनाया जाता है। यहां के लकड़ी व्यवसाय की व्यापकता का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि १९३५ में जबकि रूस में ११ करोड़ ७० लाख मीट्रिक टन लकड़ी उत्पन्न होती थी तो कनाडा में जिसका संसार में दूसरा स्थान है केवल ८ करोड़ ८० लाख मीट्रिक टन ही लकड़ी काटी गई थी।

अमरीका के वन—संसार के वनों का लगभग २० प्रतिशत भाग अमरीका में है। कनाडा को तो "साम्राज्य की कोमल लकड़ी का भण्डार" कहते हैं। यहां पर लकड़ी का उत्पादन इतना अधिक है कि इसके बाद के पांच प्रधान लकड़ी उत्पन्न करने वाले देशों की समस्त उपज मिलकर भी इससे कम ही रहती है। ब्रिटिश कोलम्बिया, उत्तरी प्रैरी प्रान्त, ओन्टरियो, क्यूबेक तथा न्यूब्रन्सविक में लकड़ी चीरने का धंधा व्यापक होता जा रहा है। कनाडा के लकड़ी व्यवसाय संघ ने कटे हुए जंगलों की कमी को पूरा करने के लिए आधुनिक उपायों की योजना को स्वीकार कर लिया है। यहां पर जंगल लगाने का काम फिर आरम्भ कर दिया गया है। कनाडा में सस्ती जल-विद्युत के उपलब्ध होने से लकड़ी काटने का व्यवसाय विशेष उन्नति कर गया है। यहां कागज बनाने की ११० मिलें हैं और सन १९५० में इनमें ८० लाख मीट्रिक टन लुग्दी उत्पन्न की।

संयुक्त राष्ट्र में कोमल लकड़ी की पूर्वी और पश्चिमी दो प्रधान पट्टियां हैं। पूर्वी पट्टी में न्यू इंग्लैण्ड, अप्लेशियन पर्वत तथा एटलांटिक तटीय मैदान शामिल हैं। पश्चिमी पट्टी में राकी पर्वत तथा प्रशान्त महासागरीय ढाल शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र के वन यहां के ३० प्रतिशत धरातल को घेरे हुए हैं। सन् १९५० में संयुक्त राष्ट्र के वनों से ६९० लाख घन फीट मुलायम लकड़ी प्राप्त हुई थी। इसी साल १३४ लाख मीट्रिक टन लुग्दी तैयार हुई। आजकल संसार की ६० प्रतिशत लुग्दी और ६० प्रतिशत मुलायम लकड़ी संयुक्त राष्ट्र से ही प्राप्त होती है।

एशिया के वन—एशिया का २८ प्रतिशत भाग वनों से ढका हुआ है। साइबेरिया में नोकदार पत्तीवाले वृक्षों के वन भरे पड़े हैं परन्तु अधिक शीत व यातायात की असुविधा के कारण लकड़ी काटने के धंधे में अधिक प्रगति नहीं हुई है। जापान, चीन तथा भारत में वनों की बहुलता है।

वन-सम्पत्ति के दृष्टिकोण से भारत एक धनी देश है। देश का १/५ वां भाग या उससे भी अधिक वनों से ढका हुआ है। भारत में साधारणतया ४ प्रकार के वन पाये जाते हैं।

१ **पतझड़ के वन**—हिमालय पर्वत के निम्न भागों तथा प्रायद्वीप में फैले हुए हैं।

२ **सदाबहार वन**—भारी वर्षा के प्रदेशों में—प्रायद्वीप के पश्चिमी भाग तथा पूर्वी हिमालय के निचले भागों में पाये जाते हैं।

३ **पहाड़ी वन**—ऊंचाई तथा जलवृष्टि के अनुसार ये वन भिन्न होते हैं। पूर्वी हिमालय तथा आसाम के वनों में ओक तथा मैगनोलिया के वृक्ष मिलते हैं। अधिक ऊंचे पश्चिमी ढालों पर स्प्रूस, फर और चीड़ तथा देवदार के वृक्ष पाये जाते हैं।

४. **गोरन अथवा बाढ़ के वन**—ये प्रायः उन समुद्र तटों पर या नदियों के मुहानों पर पाये जाते हैं जहां सदैव ज्वारभाटे का जल आता रहता है। इनमें सुन्दरी वृक्षों की अधिकता रहती है।

भारत के वन प्रायः पर्वतों के ढालों पर पाये जाते हैं और यातायात की असुविधा के कारण लकड़ी काटने का व्यवसाय कोई विशेष प्रगति नहीं कर पाया है। पाकिस्तान में शुष्क प्रदेशों के कांटेदार जंगल पाये जाते हैं और इनका मुख्य पेड़ बबूल है।

वनों की रक्षा—आजकल प्रत्येक देश में लकड़ी का उपयोग वहां के उत्पादन से अधिक ही होता है। संसार में वनों की कटाई का वार्षिक औसत नये लगाये गये वृक्षों से ३० प्रतिशत अधिक है। इसीलिए यूरोप और अमरीका में विभिन्न राष्ट्रीय सरकारें वनों का संरक्षण करती हैं। वहां पर केवल तैयार वृक्षों को ही काटा जाता है। छोटे और बीजवाले वृक्षों को बढ़ने दिया जाता है। कनाडा की सरकार वृक्षों के बगीचों को प्रोत्साहन देती है क्योंकि वहां के लकड़ी चीरने तथा कागज बनाने के कारखानों का काम केवल वनों के वृक्षों से नहीं चल सकता।

यद्यपि लकड़ी का उपयोग वृक्षों के उत्पादन से अधिक है परन्तु सन्तोष की बात यह है कि दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, दक्षिणी पूर्वी एशिया तथा इन्डोनेशिया में विशाल वन हैं। इन क्षेत्रों में जलवायु की सुविधा के कारण वृक्ष तेजी से उगते हैं परन्तु यातायात व गमनागमन की असुविधाओं के फलस्वरूप यहां के वनों से पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता।

हां, द्वितीय महायुद्ध के बाद से संसार के वनों में निश्चित रूप से वृद्धि हुई है। १९४६ में वनों की गोल लकड़ी की उपज का अनुमान १४,१००० घन मीट्रिक या और

उनका वजन १० ००० लाख मीट्रिक टन था। इस समस्त उपज का मूल्य ७१,००० लाख डालर था और इसके महत्व का अन्दाज इस बात से हो सकता है कि लकड़ी का यह मूल्य कायज के वार्षिक उत्पादन के मूल्य से तिगुना है।

प्रश्नावली

१ उष्णकटिबंध के प्रधान वन प्रदेश कौन २ से हैं ? प्रत्येक का व्यापारिक महत्व समझाइये।

२ भारत की प्राकृतिक सम्पत्ति का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि कहा तक इसका उपयोग हो सका है।

३ ग्रेट ब्रिटेन में लकड़ी कहा से प्राप्त होती है ? ब्रिटिश कामनवेल्थ की वन सम्पत्ति का वर्णन कीजिए।

४ शीतोष्ण कटिबंध के वन प्रदेशों का वर्णन कीजिये। स्केन्डिनेविया और बाल्टिक राज्यों में वन से प्राप्त विभिन्न सामग्री का क्या महत्व है ?

५ भारत के मानचित्र पर व्यापारिक लकड़ी उत्पन्न करने वाले प्रमुख वन प्रदेशों को दिखलाइये। इस समय इस सम्पत्ति का कहा तक उपभोग हो पाता है ? भविष्य में भारतीय लकड़ी के निर्यात व्यापार को बढ़ाने की क्या सम्भावनायें हैं ?

६ कनाडा के निर्यात व्यापार में वन-उपज का स्थान सर्वप्रथम है। इसका क्या कारण है और वहा के वनों से प्राप्त होने वाली ऐसी कौन सी वस्तुएँ हैं ?

७ कनाडा के विभिन्न वन प्रदेशों की विशेषतायें व त्रुटियां बतलाइये। इनसे प्राप्त होने वाली विभिन्न वस्तुएँ कौन २ सी हैं और उनमें निर्यात व्यापार बढ़ाने की भविष्य में क्या सम्भावनायें हैं ?

८ संयुक्त राष्ट्र अमरीका में पाये जाने वाले वनों के वितरण व महत्व पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये।

९ उत्तरी यूरोप में पाये जाने वाले प्रधान वनप्रदेशों का विवरण दीजिये और बतलाइये कि उनका वर्तमान उपभोग किस प्रकार होना है ?

अध्याय : : आठ

यातायात

यातायात के साधनों का महत्त्व—वस्तुओं के पारस्परिक क्रय-विक्रय अथवा अदल-बदल में प्रयुक्त मानवी चेष्टाओं को वाणिज्य या व्यापार कहते हैं। मनुष्य की इस व्यापार क्रिया में अनेक बाधायें उपस्थित होती हैं। इन बाधाओं का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार के मनुष्यों, स्थानों अथवा समय से होता है। अतएव इन कठिनाइयों को दूर करना वाणिज्य का ही अंग है। समय तथा मनुष्यों से सम्बन्धित कठिनाइयां तो व्यापारियों द्वारा हल हो जाती हैं परन्तु स्थानों की विभिन्नता व दूरी से सम्बन्धित कठिनाइयां केवल यातायात के साधनों द्वारा ही दूर की जा सकती हैं।

प्राचीन काल में यातायात की व्यवस्था व प्रणाली बड़ी सरल थी। मनुष्य और पशु ही यातायात के साधन थे। परन्तु आजकल न केवल स्थानीय क्षेत्रों में बल्कि दूर-दूर स्थानों में भी बोझा ढोने के लिए मनुष्य जल, पवन, भाप तथा बिजली की शक्तियों से काम लेता है। फलतः सैकड़ों वर्ष पूर्व जिस यात्रा में महीनों लगते थे वही आज कुछ दिनों में ही पूरी हो जाती है। क्रमशः उन्नत वायुयानों द्वारा तो दूर २ के स्थानों के बीच का अन्तर और भी कम हो गया है। सच तो यह है कि यातायात के विभिन्न साधनों के विकास के साथ-साथ पिछले ५० वर्षों की अपेक्षा संसार अब छोटा हो गया है।

यातायात के वर्तमान साधन और उनसे लाभ—साधारणतया वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान को लाने ले जाने को ही यातायात कहते हैं। वस्तुओं के उत्पादन और वितरण में यातायात का बड़ा ही महत्त्व है। अतः यदि इसे व्यापार का 'जीवन रक्त' कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। देशीय तथा विदेशीय व्यापार की उन्नति व विकास का यही आधार है। ऐसा कोई भी सभ्य देश नहीं है जो खाद्य सामग्री और कच्चे माल के लिए दूसरे देशों पर निर्भर न हो। पश्चिमी यूरोप के देश इन्हीं वस्तुओं के वास्ते एशिया तथा अमरीका पर आस लगाये रहते हैं। यदि रेल और जहाज न होते तो कनाडा तथा अर्जेन्टाइना इतना गेहूं पैदा नहीं कर सकते थे क्योंकि वहां का गेहूं विशेषकर यूरोप की मंडियों के लिए उत्पन्न किया जाता है।

वस्तुओं का अधिक उत्पादन तथा निर्माण इसी कारण होता है कि दूरी की समस्या अब बहुत कुछ सरल हो गई है। यातायात के साधनों के ही सहारे नवीन प्रदेशों में उपनिवेश स्थापित हो सके हैं और यूरोप निवासियों ने सुलभ यातायात की ही वजह से अमरीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका और न्यूजीलैंड में उपनिवेशों की स्थापना की है।

यातायात के रूप और साधन—धरातल तथा जलवायु की भिन्नता के कारण भिन्न २ देशो मे यातायात के साधन भी भिन्न है। कुछ देशो मे बहुत से साधन है तो कही एक या दो ही से काम लिया जाता है। टुन्ड्रा प्रदेश मे बेपहिय की गाडी को रेनडियर खीचता है और मरुस्थल म ऊट ही काम आता है। नीचे दी हुई तालिका से यातायात के विभिन्न प्रकार स्पष्ट हो जायग।

अ—थल	ब—जल	स—वायु
१ मनुष्य	१ नदिया	१ भारी वायुयान
२ पशु	२ नहर	२ हल्के वायुयान
३ सडके	३ झील	३ थोडी जगह म उतरने वाले हलीकोप्टर जहाज
४ रेल	४ महासागर	४ ग्लाइडर जहाज

अ—थल यातायात

अनेक देशो में अब भी मनुष्य ही बोझा ढोता है—मध्य अफ्रीका, चीन तथा जापान मे बोझा ढोने वाले पशुओ की कमी के कारण थोडी दूर तक बोझा लाने ले जाने के लिए मनुष्य काम करता है। सूडान से कैम्बीसी तक अफ्रीका की जलवायु तथा भूरचना इस प्रकार की है कि यहा पर सडके तथा रेले बनाना बडा ही कठिन है। हाथीदात, रबर, नारियल आदि घास के मैदानो की उपज इन्ही कुलो ही ढोते है। जहा बोझा ढोने वाले पशु मिल भी सकते है वहा भी मनुष्य उनका उपयोग नही कर सकता। बहुत से पर्वतीय ढालो पर जैसे चीन, तिब्बत तथा बिली मे पशु काम नही कर सकते। मध्य अफ्रीका तथा मध्य अमेजन के बेसिन म विषैले कीडो के कारण पशु द्वारा यातायात मे बाधा पडती है। इन भागो मे भारी बोझा कुली ही लाते ले जाते है। परन्तु पिछडे हुए देशो मे ही मनुष्य से बोझा ढोने का काम लिया जाता है। खोज से पता चला है कि मनुष्य द्वारा १५० मील बोझा ढुलवाने का व्यय रेल द्वारा ८००० मील के भाडे से तिगुना बैठता है।

पशु भी अनेक स्थानो पर बोझा ढोते है—शीतोष्ण कटिबंध म घोडा यातायात का साधन है। रेगिस्तानो मे ऊट बोझा ढोने का काम करता है और दिनभर मे ३० मील से भी अधिक दूर बोझा ले जा सकता है। भारत, ब्रह्मा तथा अफ्रीका के कुछ भागो मे हाथी बोझा ढोते है। एशिया के उष्णकटिबंधीय भागो के वनो मे हाथी बडा काम करता है। उत्तरी भारत तथा तिब्बत के पहाडो पर याक बोझा ढोता है। भूमध्यसागर के निकटवर्ती पर्वतो तथा मैक्सिको म खच्चर काम आता है। कनाडा के उत्तर पश्चिम तथा साइबेरिया मे जमे हुए बर्फ पर बलिष्ठ कुत्ते स्लेज (बेपहिये की गाडियो) खीचते है। अलास्का तथा कनाडा के कुछ भागो मे रेनडियर भी काम आने लगा है।

सडकें और उनका महत्त्व—पशुओं का सबसे लाभकारी प्रयोग उन्हें पहियेदार गाड़ियों में जोतना है। ये गाड़ियां सड़कों पर ही चल सकती हैं। थलमार्गों में सबसे प्राचीन साधन सड़कें ही हैं। सड़कें लगभग सभी देशों में पाई जाती हैं। किसी देश के प्राकृतिक साधनों का सर्वोत्तम विकास आवागमन के उत्तम साधनों पर ही निर्भर रहता है। भद्दी व टूटी-फूटी सड़कें मनुष्यों के आवागमन तथा वस्तुओं के आदान प्रदान में बाधा उत्पन्न करती हैं। अतः ऐसे देश जहां आवागमन के उत्तम साधन न हों अवनत ही रह जाते हैं।

सडकें और मोटर—व्यापारिक देशों में सड़कें ही यातायात का उत्तम साधन होती हैं। माल का इकट्ठा करने तथा वितरण में सड़कें बड़ी सहायक होती हैं। सड़कों पर चलने वाली गाड़ियों को पशु अथवा इंजन खींचते हैं। मोटरगाड़ियां तेज चलती हैं और विश्वसनीय होती हैं। प्रत्येक सभ्य देश में इनका प्रचार है। मोटरों का पूरा पूरा लाभ पक्की सड़कों पर ही उठाया जा सकता है। मोटरों के ही कारण पिछले ४० वर्षों में प्रत्येक देश में सड़कों की बड़ी उन्नति हुई है। आजकल तो सहारा तथा अरब के रेगिस्तानों में भी मोटरें आने-जाने लगी हैं।

सडकों द्वारा यातायात के लाभ—रेलों तथा नावों की अपेक्षा सड़कों द्वारा यातायात में सुविधा होती है क्योंकि सामान की अदल बदल नहीं करनी पड़ती (एक गाड़ी से दूसरी में नहीं बदलना पड़ता)। दूसरे सड़कों और मोटरों की सहायता से देश के भीतरी भागों में भी व्यापार किया जा सकता है। गांवों में रेलों की अपेक्षा मोटरों द्वारा व्यापार करने में सुविधा रहती है। कलकत्ता-बम्बई आदि बड़े २ व्यावसायिक नगरों में निकटवर्ती गांवों की उपज की वस्तुएं मोटर द्वारा ही एकत्रित की जाती हैं। इन्हीं कारणों से प्रायः प्रत्येक देश में और सब मिलाकर भूमंडल पर सड़कों का विस्तार बहुत है जैसा नीचे दी हुई तालिका से स्पष्ट हो जावेगा—

देश	मोटर सडकों का विस्तार (मीलों में)	मोटरों की संख्या (लाख में)
संयुक्त राष्ट्र	३०,००,०००	३०१
फ्रांस	४,०६,२५०	२२
ग्रेट ब्रिटेन	१,७३,०००	२६
जर्मनी	१,७२,२५०	१६
कनाडा	३,६४,३००	१४

संसार की लगभग एक तिहाई सड़कें संयुक्त राष्ट्र में हैं। इस देश में सड़कों की लम्बाई ३०,००,००० मील है जबकि संसार की समस्त सड़कों की कुल लम्बाई ९२,२५,००० मील है। संयुक्त राष्ट्र में सबसे अधिक मोटर चलते हैं। यहां पर संसार

की ७५ प्रतिशत से भी अधिक मोटरें हैं। साधारणतया चार मनुष्यों पर एक मोटर का औसत पड़ता है।

कनाडा में मोटर यातायात के विकास के लिए अच्छी सड़कें नहीं हैं। वहां की सड़कों की कुल लम्बाई ३,६६,२०० मील है परन्तु करीब ६० प्रतिशत सड़कें कच्ची हैं और ये कच्ची सड़कें सर्दी के महीनों में बन्द रहती हैं। आन्टेरियो प्रान्त में सबसे अधिक सड़कें हैं और समस्त कनाडा की ४० प्रतिशत से भी अधिक मोटर गाड़ियां इसी प्रान्त में हैं।

भारतवर्ष में सड़कों की लम्बाई ३,००,००० मील है। इसमें से केवल ७५,००० मील सड़क मोटर चलाने योग्य है। भारत के विस्तार तथा जनसंख्या के विचार से यहां की सड़क बहुत ही कम हैं। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में यातायात के लिए सड़कों की बड़ी आवश्यकता है। अब यह बात प्रतीत होने लगी है कि भारत की भविष्य में समृद्धि के लिए वर्तमान सड़कों का सुधार तथा अधिक सड़कों का निर्माण परमावश्यक है।

रेल और ट्रामगाड़ियों द्वारा यातायात—सड़कों के अतिरिक्त स्थल यातायात के दो अन्य साधन रेलें व ट्रामगाड़ियां हैं। ट्रामगाड़ियां बिजली से चलती हैं तथा बड़े बड़े नगरों के समीप ही काम आती हैं। लम्बी यात्रा के लिए ट्रामगाड़ियां सुविधाजनक नहीं हैं। अतः रेलगाड़ियां ही अधिक काम में आती हैं। रेलों की चाल तेज होती है और ये भारी सामान ढो सकती हैं। इसी कारण इनका विश्वव्यापी विकास हो गया है।

वर्तमान समय में प्रत्येक देश के अन्दर यातायात का सर्वोत्तम साधन रेलें ही हैं। रेलों के ही द्वारा जनता दूसरे देशों में जाकर बस गई है। रेलें न होतीं तो वे देश कम बसे ही रह जाते। कनाडा और साइबेरिया की उन्नति व आबादी का आधार वहां की रेलें ही हैं।

रेलें और उन पर जलवायु व प्राकृतिक दशा का प्रभाव—रेलों के निर्माण पर पृथ्वी की बनावट और जलवायु का बड़ा प्रभाव पड़ता है। जलवायु का प्रभाव तो बहुत ही अधिक पड़ता है। बर्फ से पहाड़ी दर्रे जम जाते हैं और पहाड़ी रेलों के चलने में बाधक हो जाते हैं। भारी वर्षा से रेलों के बांध नष्ट हो सकते हैं। ध्रुवप्रदेशों में हिम के कारण रेलें बन ही नहीं सकतीं और इसी प्रकार भूमध्यरेखीय वन प्रदेशों में लगातार वृष्टि के कारण रेलों का निर्माण असम्भव-सा है।

देश की बनावट पर रेलों की दिशा निर्भर होती है। पर्वतीय सीमाओं के कारण रेलों को मोड़ना या समाप्त करना पड़ता है। मैदानों में रेलें सरलता से बन सकती हैं परन्तु पहाड़ी प्रदेशों की कठिनाइयां कभी-कभी अजेय होती हैं। बड़े-बड़े पर्वतों को पार करने के लिए सुरंगों का भी प्रयोग करना पड़ता है। पर लम्बी सुरंगों को बनाने और पहाड़ों को गहरा काटने में बड़ा खर्च पड़ता है इसलिए जहां तक हो सकता है इस प्रकार की योजना को बचाया ही जाता है।

प्रमुख देशो में रेलों का विस्तार (मीलो मे)

संयुक्त राष्ट्र	(१९४२)	२,४२,७४४	ब्रिटिश द्वीप	(१९३७)	२२,६१५
सोवियत रूस	(१९४०)	६०,०००	जापान	(१९३७)	१५,२५४
जर्मनी	(१९३९)	४२,३००	पोलैंड	(१९३७)	१२,९००
कनाडा	(१९४१)	५०,३००	दक्षिणी		
भारतवर्ष	(१९४०)	४१,१५६	अफ्रीकी संघ	(१९४३)	१३,२८४
आस्ट्रेलिया	(१९४२)	२७,९६२	इटली	(१९३८)	१४,५५०
अर्जेन्टाइना	(१९४३)	२६,२४२	चिली		५,२००
फ्रान्स	(१९३८)	२६,४२७	बेल्जियम	(१९३९)	३,१८९
ब्राजील	(१९४३)	२४,०००	पाकिस्तान	(१९४८)	१,६००

रेलमार्ग और सडकें—रेलों के इस युग मे सडकों की बड़ी महत्ता है। सडको द्वारा ही माल रेलों तक पहुचाया जाता है। ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रास तथा सयुक्त राष्ट्र में बडी अच्छी सडकें हैं। वर्तमान काल में मोटरें रेलों का मुकाबला करती हैं। कम दूरी की यात्रायें मोटर द्वारा शीघ्र पूरी हो जाती हैं। स्टेशनो पर ठहरने, पटरी बदलने, माल इकट्ठा करने और छुडाने की कठिनाइयों के कारण रेलों द्वारा यातायात में बडा समय लग जाता है। परन्तु लम्बी यात्रा में और विशेषकर भारी वस्तुओं के लाने ले जाने मे रेलें शीघ्रगामी, लाभप्रद और विश्वसनीय सिद्ध हुई हैं। फिर भी एक बात में सडकें अधिक उपयोगी हैं। मोटर गाड़िया पटरियों पर आश्रित नही होतीं, इसलिए सडकों द्वारा विभिन्न दिशाओं में माल ले जाया जा सकता है। मोटरें इच्छानुसार इधर-उधर आ-जा सकती हैं और गावो में तो मोटर ही सर्वोत्तम साधन है। दूसरे गावों में व्यापारिक वस्तुओं का परिमाण अधिक न होने के कारण रेलें लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकतीं।

कुछ प्रमुख रेलें—भूमंडल पर मुख्य महाद्वीपीय रेलमार्ग निम्नलिखित हैं —

१ ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग
२ ट्रान्स कैस्पियन रेलमार्ग
३ केप से केरो तक रेलमार्ग
४ कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग
५ चिली अर्जेन्टाइना रेलमार्ग

ट्रास साइबेरियन रेलमार्ग

यह रेलमार्ग रूस को सुदूरपूर्व से मिलाती है और मास्को से व्लाडीवास्टक तक जाती है। यह ५८०० मील लम्बी है। मध्य और पूर्वी साइबेरिया में आबादी बढ़ने का श्रेय इसी रेलमार्ग को है। सोवियत रूस में इस रेलमार्ग की राजनीतिक व फौजी महत्ता

व्यापारिक महत्ता में कहीं अधिक है। परन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि यूरोप से प्रशान्त तटवर्ती एशिया के देशों में यात्रियों तथा डाक ले जाने का यह वैकल्पिक मार्ग है। जार सरकार ने इस लाइन को एशियाई रूस में शासन की सुविधा के लिए बनवाया था परन्तु इस समय इसका व्यापारिक महत्त्व बहुत अधिक है। इसी रेलमार्ग के कारण साइबेरिया में खेती व खनिज की उन्नति व विकास हो गया है।

यह रूसी लाइन दुहरी है। मास्को से यह लाइन ओमस्क पहुँचती है और मार्ग में यूराल पर्वत तथा कृषि-प्रधान स्टेपी प्रदेश से होकर गुजरती है। ओमस्क से यह सीधे



चित्र नं० ३६—ट्रान्ससाइबेरियन रेलमार्ग—मास्को से लेनिनग्राड तक एक रेलमार्ग जाता है और एक शाखा ओमस्क से ताशकन्द तक जाती है।

पूर्व की ओर जाती है और ओबी तथा यनीसी नदियों को पार करके इर्कुटस्क तथा बैकाल झील पहुँचती है। बैकाल से मास्को ३६७० मील दूर है और यहाँ से आमूर की घाटी तथा मंचूरिया होती हुई अन्त में व्लाडीवास्टक पहुँचती है। मंचूरिया में हारबिन से इसकी एक शाखा मुकडन होती हुई पोर्ट आर्थर तक जाती है। मुकडन से पीकिंग को भी एक रेल जाती है।

ट्रान्स कैस्पियन रेलमार्ग—यह लाइन मध्य एशिया को यूरोपीय रूस से मिलाती है। यूरोप तथा भारत के मध्य भावी रेलमार्ग इसी ओर से जायगा। यह लाइन कैस्पियन तटस्थित क्रासनोवोड्स्क से तुर्किस्तान के कपास उत्पन्न करने वाले प्रदेशों से होकर जाती है। इसकी एक शाखा अफगानिस्तान की सीमा पर मर्व से कुश्क तक जाती है और फिर क्रासनोवोड्स्क से ताशकन्द होते हुए मास्को तक भी जाती है।

केप से केरो तक का रेलमार्ग—केपटाउन से केरो तक ६००० मील का अन्तर है। इस फासले को रेल, नदी, झील व सड़क द्वारा पार किया गया है। सेसिल रोड्स (Cecil Rhodes) ने केप टाउन को काहिरा से एक ऐसी रेल द्वारा मिलाने की योजना बनाई थी जिस पर केवल अंग्रेजों का अधिकार होगा। परन्तु इसमें उसे सफलता न मिली। केपटाउन से बुलावेयो तथा एलिजाबेथविले से होता हुआ एक रेलमार्ग बेल्जियन कांगो की सीमा तक जाता है। वहा से—कटगा की राजधानी एलिजाबेथविले से—विक्टोरिया झील तक नदी तथा कारवां का मिलाजुला रास्ता है। विक्टोरिया झील से नील-गार्ज (Nile Gorge) तक एक मोटर की सड़क जाती है और वहा से खारतुम तक जहाज चलते हैं। खारतुम से वादी हैफा तक फिर रेलमार्ग है। वहा से शैलाल तक नदी भाग और शैलाल से काहिरा तक रेल जाती है।

कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग—यह रेलमार्ग सन् १८८२-८६ में बनाया गया था और ३५०० मील लम्बा है। यह लाइन कनाडा के एटलांटिक तथा प्रशान्त महासागरीय तटों को मिलाती है। इस लाइन के द्वारा लीवरपूल से चीन जापान तट तक का मार्ग करीब १२०० मील छोटा हो जाता है। यह लाइन हैलिफेक्स तथा सेंट जॉन्स से मान्ट्रीयल तक जाती है। मान्ट्रीयल से यह लाइन कनाडा के गेहूं के मुख्य केन्द्र विनीपेग को जाती है और फिर वहा से रेगिना होती हुई राकी पर्वतों के बीच मैडिसिन हाट पहुचती है। राकी पर्वत श्रेणी को यह लाइन किकिंग हार्स दर्रे से पार करके कनाडा के प्रशान्त महासागरीय तट पर वैन कुवर में समाप्त हो जाती है।

इस रेल से कनाडा राज्य के राजनैतिक व आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण उन्नति हुई है। शुरू में कनाडा में उपनिवेश स्थापित करने में अनेक कठिनाइयां थी। यहा की विषम जलवायु और विस्तृत दूरी के कारण बस्तियां बनाने में बड़ी रुकावटें थी। देश के जल मार्गों से निःसंदेह बड़ी सहायता मिली परन्तु विषम जलवायु के कारण ये नदियां लम्बे शीतकाल में जम जाती थी और उनपर गमनागमन बन्द हो जाता था। परन्तु अब इस रेलमार्ग के बन जाने से कनाडा की बिखरी हुई जनसंख्या में अटूट सम्बन्ध स्थापित हो गया है। इसलिये कनाडा के रेलमार्गों का निर्माण का इतिहास ही कनाडा राज्य की आर्थिक, व्यापारिक व राजनैतिक उन्नति की कहानी है।

चिली अर्जेन्टाइना का रेलमार्ग—यह रेलमार्ग दक्षिणी अमरीका में है। यह लाइन ब्यूनस आयर्स को वाल परेसो से मिलाती है। इन दोनों स्थानों में ६०० मील का अन्तर है। इस मार्ग पर आवागमन का कार्य १६१० से आरम्भ हुआ था। यह मार्ग यात्रियों तथा डाक के लिये ही अधिक उपयोगी है। अर्जेन्टाइना की ओर मेन्डोजा तथा चिली की ओर लॉस ऐंडीज पर पटरी की चौड़ाई भिन्न हो गई है अतः माल ढोने में असुविधा होती है। इसके अलावा महाद्वीप के पूर्वी तथा पश्चिमी भागों की उपज का क्रय विक्रय भी अधिक नहीं है। इसलिये इसका सबसे अधिक महत्त्व डाक और मुसाफिर लाने ले

जाने के लिए है। और दक्षिणी अमरीका की ४ प्रमुख रेलों में व्यापारिक महत्त्व भी इसी का सब से अधिक है।



चित्र नं० ३७—कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग—शिकागो में कनाडा के रेल मार्ग संयुक्त राष्ट्र के रेल मार्गों से मिल जाते हैं।

ब—जल-यातायात

जल-यातायात दो प्रकार का होता है—आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय। आन्तरिक यातायात नदियों, नहरों और झीलों द्वारा होता है। अन्तर्राष्ट्रीय यातायात समुद्रों, महासागरों और समुद्री नहरों द्वारा होता है। जल-यातायात थल की अपेक्षा सस्ता होता है क्योंकि जल मार्गों को बनाना नहीं पड़ता और उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयोग में लाया जा सकता है। परन्तु जल-यातायात मन्द गति व अनिश्चित होता है। यही इसका दोष है।

नदियों द्वारा यातायात—देश के भीतर व्यापार और वाणिज्य का सर्वोत्तम साधन नदियां ही होती हैं। नाव चलाने योग्य नदियां गहरी तथा वर्ष भर युक्त होनी चाहिये। जिन नदियों का वेग तेज होता है अथवा जिन नदियों में बहुत से प्रपात होते हैं, वे यातायात के लिये सर्वथा भयानक होती हैं। नदियों में लगातार जल प्रवाह का होना भी आवश्यक है। इसलिये वे नदियां जिन में अक्सर बाढ़ आती है या जो साल के कुछ महीने सूखी पड़ी रहती हैं, यातायात के दृष्टिकोण से बिल्कुल अयोग्य होती हैं। इसके विपरीत जो नदियां उपजाऊ और घनी सख्या वाले प्रदेशों में से बहती हुई वर्फ-रहित खुले सागरों में गिरती हैं उनका महत्त्व वास्तव में बहुत है। ध्रुव प्रदेश के महासागरों अथवा भीतरी सागरों में गिरने वाली नदियों में यातायात भी सीमित हो जाता है।

यूरोप के जलमार्ग—यूरोप की अनेक नदियां नाव चलाने योग्य हैं। परन्तु सब देशों में नाव चलाने योग्य नदियों के विचार से जर्मनी सब से अधिक उन्नत व प्रगतिशील है। जर्मनी की नदियां उसकी समुद्रतट की कमी को पूरा कर देती हैं। सम्भवतः अन्य किसी देश की नदियों के किनारे इतने बड़े औद्योगिक तथा व्यापारिक नगर नहीं हैं जितने जर्मनी की नदियों के किनारे हैं। जर्मनी की सब से बड़ी तथा यूरोप की सब में महत्त्वपूर्ण नदी राइन संसार भर में सब से बड़ा जल-मार्ग बनाती है। अब समुद्री जहाजों से सामान कोलोन बन्दरगाह पर उतारा जाता है। इस नदी में मेन (Maine), मैनहीन (Maineheine) और स्ट्रासबर्ग (Strassberg) तक स्टीमर आ सकते हैं।



चित्र नं० ३८—प्रायः सभी नदियां दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम को बहती हैं।

जर्मनी की अन्य प्रमुख नदियां वेसर, एल्ब तथा ओडर हैं। एल्ब नदी केवल जर्मनी में ही नाव चलाने योग्य नहीं है परन्तु प्राग में चेकोस्लोवाकिया के अन्य भागों तक भी इस में नाव चलाई जा सकती है। इसके किनारे पर ड्रेसडन, मैगडबर्ग (Magdeberg) तथा हैम्बर्ग आदि महत्त्वपूर्ण नगर स्थित हैं। ओडर नदी में भी नाव चलती है। यह नदी साइलेशिया के उद्योगशील तथा खनिज सम्पन्न प्रदेशों में होकर बहती है। इस नदी पर ब्रेसलाव तथा फ्रैंकफर्ट दो महत्त्वपूर्ण नगर स्थित हैं।

जर्मनी की नदियां नहरों द्वारा परस्पर मिली हुई हैं। वेसर तथा एल्ब नदियां मैगडबर्ग तथा हैम्बर्ग दो स्थानों पर मिलती हैं। हैम्बर्ग का इसी नहर द्वारा रूहर (Ruhr) के कोयला क्षेत्र से सीधा सम्बन्ध है। लडविग्स की नहर डैन्यूब नदी को राइन की सहायक मेन से मिलाती है।

फ्रांस में भी अनेक उपयोगी जलमार्ग हैं और जलमार्गों की उपयोगिता व विस्तार के दृष्टिकोण से फ्रांस जर्मनी से बहुत अधिक पीछे नहीं है। आन्तरिक जलमार्गों का पूरा लाभ उठाने के लिये महत्त्वपूर्ण नदियों को नहरों द्वारा परस्पर मिला दिया गया है। अपने ऊपरी भागों को छोड़कर ये नदियां अन्य सभी स्थानों में नाव चलाने योग्य हैं। राइन नदी ४०० मील लम्बी जरूर है परन्तु अधिक लाभप्रद नहीं है। इसके विपरीत सिओन (Seone) नदी एक उत्तम जलमार्ग है। सीन (Seine) नदी अपनी सहायक योन, मैरीन और आइस नदियों के सहित बर्गन्डी की पहाड़ियों से निकलती है और पेरिस के प्रदेश में बहकर उत्तर में इंगलिश चैनल (English Channel) में जा गिरती है। यह नदी भी नाव चलाने योग्य है और उत्तम जलमार्ग बनाती है। लायर (Loire) भी जो बिस्के की खाड़ी में गिरती है नाव चलाने योग्य है और व्यापार के लिये एक महत्त्वपूर्ण जलमार्ग बनाती है। डार्डोन तथा गारोन नदियों में भी नावें चलती हैं और ये भी महत्त्वपूर्ण जलमार्ग बनाती हैं।

रूस में कई बड़ी २ नाव चलाने योग्य नदियां हैं जिनके नाम ड्वाइना, वॉल्गा, डॉन, नीपर तथा नीस्टर हैं। इनमें से कुछ तो उत्तरी ध्रुवीय सागर में और कुछ कैस्पियन बाल्टिक या काले सागर आदि आन्तरिक सागरों में गिरती हैं। इन नदियों में एक बहुत बड़ा दोष है कि उत्तरी भाग जाड़े में बर्फ से जम जाता है और किसी प्रकार का यातायात सम्भव नहीं होता। फिर आन्तरिक सागरों में गिरने के कारण कोई निकास का मार्ग नहीं है। इन दोषों के होते हुए भी देशी और विदेशी व्यापार के दृष्टि से ये नदियां बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। वॉल्गा योरोप की दूसरे नम्बर की नदी है। इससे उत्तरी तथा दक्षिणी रूस के व्यापार का सम्बन्ध स्थापित होता है। परन्तु थल से घिरे हुए कैस्पियन सागर में गिरने के कारण इसके द्वारा इसके मार्ग पर स्थित केन्द्रों के बीच ही यातायात सम्भव है।

आस्ट्रेलिया के जलमार्ग—आस्ट्रेलिया में जलमार्गों की कमी है। यहां की नदियां छोटी २ धाराओं के रूप में पर्वतों से निकल कर समुद्रों में गिर जाती हैं। यहां की पूर्वी

नदियों मे वर्षा ऋतु मे ही थोडा बहुत यातायात मभव है। इस प्रकार मरे और डार्लिंग दो ही महत्त्वपूर्ण नदिया है। मरे नदी आस्ट्रेलियन आल्पस से निकलती है। इसमे बर्फ का पिघला हुआ जल या वर्षा का जल आता है। मरे तथा उसकी सहायक नदिया सिंचाई के लिये उत्तम साधन है। इसके लिये उपयुक्त स्थानों में नदी पर बाध बाधे गये है और पानी को रोक कर नालियों द्वारा खेतो में पहुचाया जाता है। पहले मरे नावो के लिये एक प्रमुख जलमार्ग थी लेकिन आजकल मोटरलारियों के कारण नावो द्वारा व्यापार बहुत कम होता है। मरे का दक्षिणी किनारा विक्टोरिया और न्यूसाउथवेल्स की सीमा बनाता है।

कनाडा के जलमार्ग—कनाडा में सेंट लारेंस नदी और बडी झीलें ससार का सब से सुन्दर जलमार्ग बनाती है। इस सुन्दर जलमार्ग के अतिरिक्त यहा पर अनेक बड़ी-बड़ी झीलें व नदिया हैं जिनमें हजारों मील तक नावें चल सकती है। सेंट लारेन्स तथा बडी झीलो के जलमार्ग में ३ बडे दोष हैं (१) नदी के मुहाने पर सदैव गहरा कोहरा छाया रहता है, (२) जाडे में बर्फ जम जाती है, (३) नदी के बीच में अनेकों तीव्र धारायें व प्रपात पाये जाते हैं। कोहरे से होने वाली दुर्घटनाओं से बचाने के लिये (Search Light) और हार्न का प्रयोग किया जाता है। जाडे के दिनों में बर्फ तोडने वाले बर्फ हटा कर नदी को नाव चलाने योग्य बनाते है। नदी को गहरा कर के तथा नहरें निकाल कर नदी में तेज धाराओं व प्रपातों से होने वाली रुकावटों को दूर किया गया है। रेड रिवर, अल्बेनी, सस्केचवान, मेकजी और यूकान कनाडा की अन्य नाव चलाने योग्य नदियां हैं। फ्रेसर, स्कीना और कोलम्बिया अन्य कम महत्त्वपूर्ण नदियां हैं। परन्तु सेंट लारेन्स तथा बडी झीलो के अतिरिक्त अन्य जलमार्गों पर यातायात स्थानीय ढग का है।

सयुक्त राष्ट्र की नदियां—सयुक्त राष्ट्र में २०,००० मील के लगभग जलमार्गों का जाल-सा बिछा हुआ है। मिसीसीपी तथा मिसौरी यहा की सब से महत्त्वपूर्ण नदिया है। मिसीसीपी नदी के मुहाने से २००० मील अन्दर सेन्ट पाल बन्दरगाह तक जहाज आ सकते है। इसके ऊपरी भाग मे वर्षभर खूब व्यापार होता है। मिसीसीपी का निचला भाग बहुत कम इस्तेमाल होता है। इसमें सब से बडा दोष यह है कि अक्सर जबरदस्त बाढ आ जाती है। इसकी सहायक ओहियो नदी मे पैसिलवेनिया तक जहाज आते हैं और विशेषकर कोयला लाया ले जाया जाता है। सेंट पाल पर मिसौरी नदी मिसीसीपी से मिलती है और इस नदी पर राकी पहाड तक जहाज आ-जा सकते हैं। इसमे भी अक्सर बाढ आती है। मिसीसीपी और सेंट लारेन्स नदियों का उद्गम स्थान करीब होने से नहरों द्वारा दोनों को मिला दिया गया है।

दक्षिणी अमरीका के जलमार्ग—दक्षिणी अमरीका की नदिया व्यापार के लिये बडी महत्त्वपूर्ण हैं। यहा की सभी बडी-बडी नदिया पूर्वी तट की ओर बहती है। पश्चिम

की ओर बहने वाली नदियां नाव चलाने योग्य नही हैं। यहा की सब से लम्बी नदी अमेजन है। वर्षा काल में इसकी सहायक नदियों को मिलाकर ५०,००० मील लम्बा जलमार्ग बन जाता है परन्तु गर्मी के मौसम में केवल २०,००० मील ही रह जाता है। इसकी सहायक नदियों में भी जहाज आ-जा सकते हैं। परन्तु अमेजन नदी गहन वन प्रदेश से बहती है जो अविकसित, अज्ञात और कम बसा हुआ है। इसलिये इससे पूरा-पूरा लाभ नही उठाया जा सकता। ओरिनोको (Orinoco) नदी जो बेनजुला में होकर बहती है लम्बा जलमार्ग बनाती है। दक्षिणी अमरीका में सब से अधिक लाभदायक जलमार्ग पराना नदी का है। यह अर्जेन्टाइना, पैराग्वे, युरूग्वे तथा दक्षिणी ब्राजील के बीच से होकर बहती है। दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी भाग में रियोनीग्रो पेटगोनिया के भेडो के प्रदेश में होकर बहती है।

अफ्रीका के जलमार्ग––अफ्रीका में व्यापार के मुख्य साधन वहा की नदियां हैं। उत्तरी पूर्वी अफ्रीका में नील सब से महत्त्वपूर्ण नदी है। पर इस नदी के ऊपरी व मध्य भाग में झरनों, प्रपातों की अधिकता तथा तेज प्रवाह के कारण अधिक दूर तक नावें नही चल सकती परन्तु डेल्टा व निचले भाग में नावें खूब चलती हैं––दक्षिणी अफ्रीका की नदियों में अधिक यातायात नही हो सकता। जैम्बीसी में २५० मील तक और लिम्पोपो में कुछ ही मील तक नावें चल सकती हैं। औरेंज नदी में जहाज नही चल सकते। कांगो नदी भी एक सुन्दर जलमार्ग बनाती है। यह टेंगानीका तथा न्यासा झीलों के मध्य के पठार से निकलती है। झरनों तथा वेगपूर्ण प्रवाह के कारण यह यातायात के योग्य नही है। कांगो की सहायक उवांगी नदी पर उदगम स्थान तक नावें चल सकती हैं। पश्चिमी अफ्रीका में नाइजर नदी पर ५०० मील तक जहाज चल सकते हैं। गैम्बिया नदी में मुहाने से लेकर २०० मील तक जहाज चल सकते हैं। अभी कुछ और वर्षों तक अफ्रीका में नदियां ही व्यापार का प्रमुख साधन रहेंगी। सम्भव हो सकता है कि भविष्य में अफ्रीका की बडी-बडी झीलें सुन्दर जलमार्ग बनावें।

एशिया की नदियां और जलमार्ग––एशिया की नदियों के प्रमुख जलमार्ग भारत तथा चीन में ही सीमित हैं। उत्तरी भारत की तीनों बडी-बडी नदियां तो वास्तव में प्रकृति का उदार वरदान हैं। इन से २०,००० मील लम्बा जलमार्ग बनता है। गगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र बहुत काफी दूर तक नाव चलाने योग्य हैं। गगा में कानपुर तक जहाज आ सकते हैं। गगा नदी बडे उपजाऊ तथा घने बसे हुए भागों में होकर बहती है। इसीलिये यातायात के लिये इसका बड़ा महत्त्व है। रेलों के विकास व विस्तार से जलमार्ग पर चलने वाले स्टीमरों की महत्ता बहुत कम हो गई है, विशेष कर गगा के ऊपरी भाग में परन्तु इस नदी के निचले भाग की अभी उतनी ही महत्ता है।

पाकिस्तान की सिन्धु नदी पर मुहाने से ८०० मील दूर डेरा इस्माईल खा तक स्टीमर आ-जा सकते हैं। इस पर अधिकतर गेहू, कपास तथा ऊन का व्यापार होता है।

सिंधु की सहायक चिनाव और येलम में भी छोटे-छोटे जहाज चल सकते हैं। परन्तु बराबर मार्ग बदलते रहने से और इसकी तली में रेत के ढेर बन जाने के कारण अब इस में स्टीमर कम चलते हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी आसाम तथा पूर्वी पाकिस्तान में होकर बहती है। इस में डिब्रूगढ़ तक जहाज चलते हैं और इसकी सहायक सूरमा पर सिलहट तथा कछार तक भी स्टीमर पहुंचते हैं।

दक्षिणी भारत की नदियां कम गहरी हैं, व्यापार के सर्वथा अयोग्य हैं। इनकी तली में चट्टान है और बाढ़ भी आती है। इससे और भी बाधा पड़ती है। बरसात के दिनों में इन नदियों का प्रवाह बहुत तेज हो जाता है पर गर्मियों में ये छिछले पानी का तालाब या रेत के विशाल मैदान बन जाती हैं। केवल महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियां के ऊपरी भागों में नावें चल सकती हैं पर अधिक यातायात नहीं होता।

ब्रह्मा में बहुत-सी नदियां नाव चलाने योग्य हैं। यहां की सब में लम्बी और महत्त्वपूर्ण नदी ईरावदी है जिस पर मुहाने से ५०० मील ऊपर तक स्टीमर जहाज चल सकते हैं। देशी नावें तो और भी ऊपर तक जा सकती हैं।

चीन में नदियां ही यातायात व गमनागमन की मुख्य साधन हैं। ह्वांगहो, यागटीसीक्यांग तथा सीक्यांग चीन की ३ महत्त्वपूर्ण नदियां हैं और पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं। यांगटीसीक्यांग चीन की सब से लम्बी नदी है। इसकी लम्बाई ३,२०० मील है और चीन का प्रमुख जलमार्ग यही है। इस से ७,५६,५०० वर्गमील भूमि पर सिंचाई होती है। तिब्बत से निकल कर अपनी सहायक नदियों के साथ यह चीन के बीचो-बीच में बहती है। इसके मुहाने से १००० मील तक स्टीमर आ-जा सकते हैं। यूरोप और अमरीका को चाय तथा अन्य वस्तुयें ले जाने के लिये इसपर ६०० मील भीतर हैंकाऊ बन्दरगाह तक समुद्री जहाज आ-जा सकते हैं। यागटीसीक्यांग के ३ विभाग किये जा सकते हैं—(१) पूर्वी तिब्बत से १५०० मील तक। यहां नदी की धारा बड़ी तेज है और इस भाग में इस किंशाक्यांग या 'सुनहरे बालू की नदी' कहते हैं। (२) मध्यम भाग में समुद्र तट से १६२० मील अन्दर सैफू (Saifu) तक यह छोटी-मोटी नाव चलाने योग्य रहती है। इस प्रदेश में यह सीचान (Szechan) और पश्चिमी हूपेह (Hupei) की गहरी कन्दराओं में होकर बहती है। चीन में सीचान का प्रान्त रेशम, अफीम, कपास तथा खनिज पदार्थों से सम्पन्न है। अतः इस भाग में व्यापार की अधिकता है। (३) तीसरा भाग इचांग (Ichang) से लेकर समुद्र तक फैला है और १००० मील लम्बा है। यहां नदी की गहराई ३० फीट से १०० फीट तक है और नाव चलाने के लिये बहुत सुगम है। यांगटीसी की घाटी के समान विस्तृत व समृद्ध प्रदेश संसार में शायद ही कोई और है। यहां के लोग केवल एक ही जलमार्ग और एक ही निकास के स्रोत पर निर्भर रहते

है और लगभग देश की आधी जनसंख्या इस उपजाऊ प्रदेश में निवास करती है तथा इस नदी की सहायक नदियों तथा नहरों के सहारे अपना बसर करती है।

ह्वांगहो भी तिब्बत से निकलती है। परन्तु प्रवाह तेज होने और छिछली होने के कारण यह नाव चलाने योग्य नहीं है। पीली मिट्टी के प्रदेश में से होकर बहने के कारण इसे पीली नदी कहते हैं। इसमें बाढ़ भी बहुत आती हैं और जन-धन की विशेष हानि हो जाती है। इसलिये इसे चीन की नदी भी कहते हैं।

सीक्यांग नदी यनान के पठारों से निकल कर पूर्व की ओर सीधे रूप में बहती है। इसका अधिकतर भाग नाव चलाने योग्य है। पीहो नदी भी महत्त्वपूर्ण जलमार्ग है और इस पर टीटसन तक नावें चल सकती हैं।

महासागरीय यातायात—वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अधिकतर महासागरों द्वारा होता है। समुद्री मार्ग विभिन्न देशों को मिलाते हैं और विदेशी व्यापार का विकास करते हैं। समुद्री यातायात थल की अपेक्षा सस्ता भी होता है और लम्बे समुद्री मार्गों का उपयोग किसी भी समय हो सकता है। इसीलिये जो देश समुद्र के किनारे या समुद्रों से घिरे हुए होते हैं, उनकी स्थिति दूर के देशों की अपेक्षा अधिक अच्छी मानी जाती है।

ग्रेट ब्रिटेन में जहाजों की संख्या तथा टनभार संसार भर में सब से अधिक है। निम्न तालिका से द्वितीय महायुद्ध से पूर्व संसार के भिन्न-भिन्न देशों के जहाजों की संख्या और टनभार की तुलना की जा सकती है—

देश	संख्या	टन	संख्या	टन
	१९३४ में		१९३८ में	
ग्रेट ब्रिटेन	७४६९	१७,७३४,०००	६७२२	१७,९००,०००
ब्रिटिश साम्राज्य	२४९८	३,१०६,०००	२२५५	३,१००,०००
फ्रांस	१५६७	३,२९८,०००	१२३१	२,९००,०००
जर्मनी	२०४३	३,६६०,०००	२४५९	४,५००,०००
जापान	१९४९	४,०७२,०००	२३३७	५,९००,०००
नार्वे	१९०८	३,९८१,०००	१९८७	४,८००,०००
संयुक्त राष्ट्र	३०४५	१०,३५४,०००	३०००	११,४००,०००
विश्वयोग	२०,४७९	४६,२३५,०००	१९,९९१	५०,२००,०००

द्वितीय महायुद्ध में नष्ट हुये जहाजों के भार का योग इतना अधिक था कि उसकी पूर्ति तथा पुनर्निर्माण का कार्य अभी तक भी पूरा नहीं हो सका है। लम्बी यात्रा के मार्गों पर तो अभी तक जहाजों का इतना अभाव है कि नियमित दशा की प्राप्ति के लिये अभी बहुत-कुछ करना शेष है।

समुद्री जहाजो के प्रकार—समुद्री जहाज दो प्रकार के होते हैं—लाइनर और ट्रैम्प। लाइनर (Liner) जहाज एक निश्चित मार्ग पर चलते है। उनके निश्चित व्यापारिक स्थान होते है और विज्ञपित समय पर चलते है। ये जहाज यात्रियो व माल दोनों ही को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाते है। यात्री लाइनर जहाज विशेषकर मनुष्यो तथा डाक ले जाने का काम करते हैं। इन जहाजो को सुखप्रद व शीघ्रगामी बनाया जाता है। व्यापारिक लाइनर जहाज उन मार्गों से चलते हैं जहा अधिक शीघ्रता की आवश्यकता नही होती। (ब) ट्रैम्प जहाजों का मार्ग तथा प्रस्थान का समय निश्चित नही होता। *जहा माल मिल जाता है वही चले जाते हैं।*

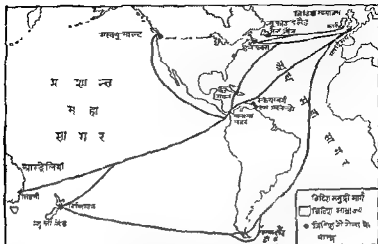
यद्यपि जहाज समुद्रो पर सभी दिशाओ में आते जाते हैं परन्तु उन्हे अधिकतर निश्चित मार्गो का ही अनुसरण करने मे सुविधा रहती है और भय भी नही रहता।

✓*ससार के मुख्य समुद्री मार्ग*—१ *उत्तरी अटलांटिक जलमार्ग*—यह मार्ग सब मे अधिक व्यस्त रहता है। ससार के व्यापारी जहाजों का एक चौथाई माल इसी मार्ग से आता-जाता है। व्यापार की अधिकता तथा व्यापारिक वस्तुओ की विभिन्नता में यह मार्ग सब से बढकर है। यह मार्ग पश्चिमी यूरोप के बन्दरगाहों को उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट के बन्दरगाहो से मिलाता है। ये दोनो ही भाग ससार के सब से घने बसे हुए तथा औद्योगिक प्रदेश हैं। इन्ही दोनो प्रदेशो मे ससार की सब से अधिक तथा भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन होता है। ग्लासगो, लिवरपूल, मैनचेस्टर, साउथम्पटन, लदन, राटरडम, ब्रीमन, बोर्डो तथा लिस्बन से जहाज चलते हैं और क्वीवेक, माण्ट्रीयल, हैलिफैक्स, सैंट जान, बोस्टन, न्यूआर्क, बाल्टीमोर, चार्ल्सटन, गालवेस्टन तथा न्यू आर्लियन्स पर माल उतारते तथा चढाते हैं। इस मार्ग पर जहाज चलाने वाली मुख्य *कम्पनिया क्यूनार्ड स्टीमशिप कम्पनी तथा व्हाइट स्टार लाइन कम्पनी है।*

कनाडा और सयुक्त राष्ट्र से यूरोप को बहुमूल्य लकडी, पशु, ताजा मास, दूध, मक्खन, चमडा तथा खाले, फल, मछली, गेहू, कपास, मक्का, तम्बाकू, तेल, लोहा, इस्पात तथा एसबेस्टॉस आदि वस्तुओ का निर्यात होता है।

२ *पनामा नहर का जलमार्ग*—यह मार्ग प्रशान्त और अटलांटिक महासागरो को मिलाता है। इस मार्ग पर कोलोन (Colon), सान डीगो, वैनकुवर, प्रिंस रूपर्ट, वालाओ तथा न्यूज़ीलैंड का आॅकलैंड मुख्य व्यापारिक बन्दरगाह हैं। इस मार्ग पर जहाज *चलाने वाली मुख्य नाविक कम्पनिया—न्यूज़ीलैंड शिपिंग कम्पनी और रॉयल मेल स्टीम* पैकेट कम्पनी हैं।

पनामा नहर के बन जाने से कई नये रास्ते ही नही खुल गये हैं बल्कि कुछ पुराने रास्ते बदल भी गये हैं। इस नहर के बनने के पहले उत्तरी अमरीका के पूर्वी और पश्चिमी किनारो को मिलाने का मार्ग केवल एक ही था—केप हार्न का चक्कर लगा कर। सुदूर पूर्व और अमरीका के पूर्वी तट का व्यापार स्वेज नहर के द्वारा होता था।



चित्र नं० १९—उत्तरी अटलांटिक मार्ग—एक उत्तरी अमरीका को और दूसरा दक्षिणी अमरीका को जाता है।

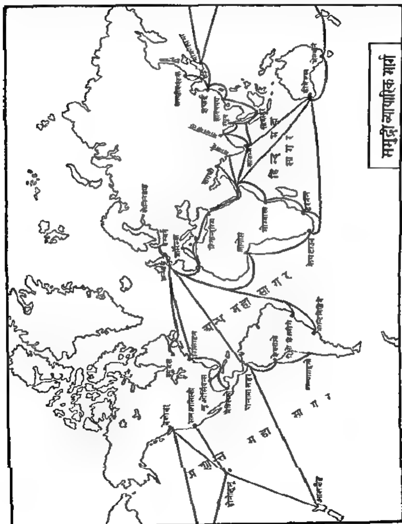
अब संयुक्त राष्ट्र के पूर्वी तट का आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जापान, चीन तथा उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी भागों से व्यापार पनामा नहर के द्वारा होता है।

३. **स्वेज़ नहर का मार्ग**—उत्तरी अटलांटिक मार्ग के बाद इसका दूसरा नम्बर है और पूर्वी अफ्रीका, ईरान, अरब, भारत, दूरपूर्व, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को मंडियों का व्यापार इसी मार्ग से होता है। वास्तव में यह मार्ग संसार के मध्य से होकर जाता है और अन्य मार्गों की अपेक्षा इस मार्ग का सम्बन्ध कहीं अधिक देशों तथा निवासियों से पड़ता है। अनेक बन्दरगाहों से होता हुआ यह मार्ग संसार की तीन-चौथाई जनसंख्या के सम्पर्क में आता है। लाल सागर पार करने पर इस मार्ग की दो शाखायें हो जाती हैं। एक शाखा तो अफ्रीका के किनारे-किनारे डरबन तक जाती है और दूसरी शाखा अधिक पूर्व की ओर भारतवर्ष, आस्ट्रेलिया इत्यादि पहुँचती है। इस मार्ग पर चलने वाले जहाज लन्दन, लिवरपूल, साउथैम्पटन, हेमवर्ग, राटरडम, लिस्बन, मारसेल, जिनोआ और नेपल्स से चलते हैं। रास्ते में अदन, बम्बई, कलकत्ता, रंगून, सिंगापुर, मैनीला, हांगकांग, पर्थ, एडीलेड, मेलबोर्न, सिडनी, मोम्बासा, जंजीबार, मोजम्बीक और डरबन में ठहरते जाते हैं।

स्वेज़ कैनाल कम्पनी का कर इतना ऊंचा है कि साधारणतया प्रत्येक जहाज इस मार्ग का लाभ नहीं उठा सकता। इसलिये सस्ता माल ढोने वाले स्टीमर आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड पहुँचने के लिये केप मार्ग से ही जाते हैं। इसीलिये आस्ट्रेलिया से पश्चिमी

यूरोप जाने वाली आधी से अधिक वस्तुयें केप मार्ग से ही भेजी जाती हैं। कभी-कभी तो यूरोप से आस्ट्रेलिया जाने वाले यात्री भी सस्ते भाड़े के कारण केप मार्ग द्वारा ही यात्रा करते हैं।

हां, इस महान जलमार्ग के द्वारा पूर्वीय देश अपना कच्चा माल तथा खाद्य सामग्री पश्चिमी देशों की मंडियों को भेजते हैं और वहां से बदले में पक्का माल मंगाते हैं। चीन



चित्र नं० ४०—स्वेज नहर मार्ग तथा केप मार्ग—इन दोनों मार्गों से यूरोप से आस्ट्रेलिया पहुंचा जा सकता है।

तथा जापान की मुख्य उपज चावल, चाय, रेशम तथा चीनी है और भारत की कहवा, चाय, चावल, गेहू, नील, मसाले, रूई, सागौन, जूट, रेशम, खाल, चमडा और तिलहन है।

इस मार्ग पर पेनिनसुलर ओरियन्टल एस० एन० कम्पनी, ब्रिटिश इण्डिया लाइन और आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ लाइन तथा जापान मेलशिप कम्पनी के जहाज चलते हैं।

४ केप का जल-मार्ग—यह मार्ग पश्चिमी यूरोप को अफ्रीका के पश्चिमी तथा दक्षिणी भागो से मिलाता है। यह मार्ग आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड भी जाता है। स्वेज मार्ग की अपेक्षा इस पर कम व्यय होने से यूरोप के अनेक उपनिवेश निवासी आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड पहुंचने के लिये इसी मार्ग से जाते है। अफ्रीका के पश्चिमी तटवर्ती भागो की अवनत दशा के कारण इस मार्ग से व्यापार कम होता है। इसके अतिरिक्त तट से कई मील तक का समुद्र भी उथला है। यूरोप के पश्चिमी तटवर्ती प्रमुख बन्दरगाह लदन, लिवरपूल, कार्डिफ, साउथम्पटन, ग्लासो, लिस्बन, एमेशन है। दक्षिणी अफ्रीका के पोर्ट एलिजाबेथ, ईस्ट लन्दन, केप टाउन और आस्ट्रेलिया मे एडीलेड सिडनी मेलबोर्न और ब्रिसबेन बन्दरगाहो पर जहाज कोयला लेने के लिये ठहरते हैं।

उष्णकटिबधीय तथा दक्षिणी अफ्रीका से ताड का तेल, हाथीदात गोंद, रबर, सन्दूक बनाने की लकडी, खाले तथा शुतुरमुर्ग के पख निर्यात किये जाते है।

यूनियन कैसिल लाइन, आस्ट्रेलियन कामनवेल्थ लाइन तथा पी० एड० ओ० के जहाज इस मार्ग पर चलते है।

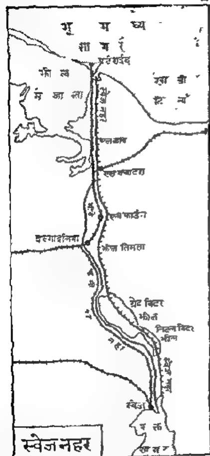
५ वेस्ट इन्डीज और दक्षिणी अटलान्टिक का जलमार्ग—यह मार्ग वैस्ट इडीज, ब्राजील तथा अर्जेन्टाइना को जाता है। किंगस्टन (जमैका), हवाना, वेराक्रूस, टैम्पिको परनम्बुको, बाहिया, रियोडिजैनिरो, सेन्टोस, माटी वीडियो, ब्यूनस आयर्स तथा रोजारियो बन्दगाहो पर जहाज कोयले के लिये ठहरते है। चीनी, केला, रूई, तुन की लकडी, तम्बाकू, चादी, रबर, कहवा, रोजवुड, हीरे, अनाज, ऊन तथा मास का व्यापार होता है।

इस मार्ग से यूरोप का व्यापार पश्चिमी द्वीपसमूह, कैरिबियन सागर तट, ब्राजील, युरुगुवे तथा अर्जेन्टाइना से होता है।

रायल मेल स्टीम पैकट कम्पनी, पैसिफिक स्टीम नैविगेशन कम्पनी, लैम्पोर्ट एण्ड होल्ड लाइन, ऐल्डर्स एण्ड फाइफस तथा इम्पीरियल डाइरेक्ट वैस्ट इडियन मेल सर्विस कम्पनी के जहाज इस मार्ग पर चलते हैं।

६ प्रशान्त महासागर के जलमार्ग—यह जलमार्ग उत्तरी अमरीका के पश्चिमी किनारे के भागो को एशिया के पूर्वी भाग से मिलाता है। इस मार्ग की दो मुख्य शाखायें है। एक तो छोटा मार्ग एल्यूशियन द्वीपो से होकर जाता है और दूसरा लम्बा मार्ग हवाई द्वीपो से होकर गुजरता है। पैनामा कैनाल के बन जाने से पैसिफिक महासागर वाणिज्य और व्यापार का मुख्य मार्ग बन गया है। अमरीका तथा आस्ट्रेलिया और न्यूजी-

लैंड का व्यापारिक सम्बन्ध इसी मार्ग के द्वारा स्थापित होता है। चीन और जापान की औद्योगिक उन्नति के कारण इस मार्ग का व्यापारिक महत्व और भी बढ़ गया है। इसी मार्ग के द्वारा सुदूरपूर्व के देश चाय, रेशमी कपड़े, चीनी, तम्बाकू, चावल, सन तथा दरियों को अमरीका भेजते हैं और संयुक्त राष्ट्र से कपास, ऊन, तेल, धातु के सामान, मशीन और रेलों का सामान मंगवाते हैं।



चित्र नं० ४१—स्वेज नहर—यह नहर सदा खुली रहती है और अंतर्राष्ट्रीय आधिपत्य में है। अतः युद्ध व शांति काल में किसी भी राष्ट्र के व्यापारिक या सैनिक जहाज बिना किसी भेद भाव के आ जा सकते हैं।

अटलान्टिक महासागर को प्रशांत महासागर से मिलाने के लिये पनामा नहर से २०० मील दक्षिण-पूर्व में एक नहर बनाने की योजना है। इसके बन जाने से इस प्रदेश के जल-मार्गों का महत्व और भी बढ़ जावेगा।

इस मार्ग पर पेनिनसुलर एण्ड ओरियन्टल लाइन तथा जापान मेल स्टीमशिप कम्पनी के जहाज चलते हैं।

नहर तथा जहाजी नहरें—नहरें पानी की कृत्रिम प्रणालियां होती हैं जिनमें नावें व जहाज चल सकते हैं। नहर विशेषकर निम्न-लिखित कारणों से बनाई जाती हैं—(अ) समुद्रों और महासागरों तथा खाड़ियों को मिला कर मार्गों को छोटा करने के लिये (ब) देश के भीतरी केन्द्रों को बन्दरगाहों से मिलाने के लिये (स) नदियों के प्रपातों व झरनों को बचाने के लिये, (द) जिन देशों की नदियां विदेश से होकर बहती हैं, उन देशों में आन्तरिक व्यापार सम्भालने के लिये नहरों का निर्माण

होता है। जहाजी नहरों की लम्बाई-चौड़ाई अधिक होती है और उनमें बड़े-बड़े जहाज आ-जा सकते हैं। अधिकतर दो समुद्रों या महासागरों के बीच के पतले थल भाग को काट कर ही नहरें निकाली जाती हैं। इसीलिये भिन्न-भिन्न देशों के बीच की दूरी कम हो जाती है। फिर देश के बहुत भीतर के भाग भी नहरों द्वारा समुद्रों से मिला दिये जाते हैं और बन्दरगाह के समान उपयोगी हो जाते हैं।

स्वेज नहर

सब से पहले सन् १८६६ में फारमीसिया के दिमाग में लाल सागर और भूमध्यसागर को नहर द्वारा मिलाने का विचार उत्पन्न हुआ क्योंकि इन दोनों सागरों के मध्य एक सिधाई में केवल ७५ मील का अन्तर था। सन १८५९ में सर फर्डिग डी लेसप्स, एक फ्रांसीसी इन्जीनियर की देख-रेख में इस नहर की खोदाई का काम आरम्भ हो गया। १० वर्ष में नहर पूरी बन कर तैयार हो गई और नवम्बर सन् १८६९ में इसका उद्घाटन हुआ।

यह नहर १०३ मील लम्बी, १५० फीट चौड़ी और ३३ फीट गहरी है। यह नहर सभी जगह समुद्र धरातल पर है। इस नहर का आधिपत्य किसी एक सरकार के पास नहीं है, बल्कि यह एक कम्पनी के आधीन है यद्यपि इस कम्पनी के अधिक हिस्से (Shares) अंग्रेजों के पास हैं।

स्वेज नहर से आपेक्षिक लाभ—इस नहर के बनने से पहले यूरोप से एशिया वाले जहाजों को अफ्रीका का चक्कर काटना पड़ता था। इस नहर से दोनों महाद्वीपों के बीच ५००० मील मार्ग की बचत हो गयी है। स्वेज नहर खुलने के बाद केप मार्ग और केप बन्दरगाहों की महत्ता बहुत कम हो गयी है। सच तो यह है कि पिछले सौ सालों में स्वेज नहर के समान महत्त्वपूर्ण कोई काम भी नहीं हुआ है। नीचे दिये हुए आकड़ों से इस मार्ग का लाभ स्पष्ट हो जायगा—

यूरोप, एशिया और आस्ट्रेलिया को स्वेज मार्ग से आपेक्षिक लाभ

लिवरपूल से	बम्बई	बटाविया	हांगकांग	सिडनी
केप मार्ग से	१०,७३०	११,२०५	१३,१९५	१२,६२६
स्वेज मार्ग से	६,१८९	८,५१६	९,७८५	१२,२३५
दूरी की बचत	४,५४१	२,६८९	३,४१०	३९१

पनामा कैनाल के बनने से पहले उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट और सुदूर पूर्व के देशों का व्यापार स्वेज मार्ग से ही होता था। स्वेज नहर के मार्ग से उत्तरी अमरीका को विशेष लाभ था क्योंकि केप मार्ग की अपेक्षा यह बहुत छोटा है।

उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट और सुदूरपूर्व के देशों के बीच स्वेज मार्ग से आपेक्षिक लाभ

न्यूयार्क से	बम्बई	बटाविया	हांगकांग
केप मार्ग से	११,५११	११,८८६	१३,९९६
स्वेज मार्ग से	८,१०२	१०,४२६	११,६७६
दूरी की बचत	३,४०९	१,४६०	२,२६०

ब्रिटिश साम्राज्य को तो इस नहर से और भी अधिक लाभ है। इसी मार्ग के द्वारा ब्रिटिश द्वीप का पूर्वी राज्यों से सम्बन्ध स्थापित होता है। इस मार्ग की सुरक्षा के लिये ब्रिटिश जहाजी बेड़ा भूमध्य सागर में जिब्राल्टर और स्वेज पर प्रवेश तथा प्रस्थान द्वारों की रक्षा करता है।

स्वेज नहर के मार्ग से यूरोप और पूर्वीय देशों के बीच समय व व्यय दोनों ही की बचत हो गयी है। इस नहर द्वारा लगभग ६००० जहाज प्रति वर्ष गुजरते हैं और इन में से करीब दो-तिहाई जहाज अंग्रेजों के होते हैं। ब्रिटिश के बाद इटली, जर्मनी, हालैंड, फ्रांस और जापान का स्थान क्रमशः महत्वपूर्ण है। नीचे दी हुई तालिका से यह बात स्पष्ट हो जायेगी।

स्वेज मार्ग से गुजरने वाले जहाजों के आंकड़े

वर्ष	टनभार	गुजरने वाले जहाजों की संख्या	मुसाफिरों की संख्या
१८७०	४३६,६०९	४८६	२६,७५८
१९००	९,७३८,१५२	३४४१	२८२,५११
१९३०	३१,६६८,७५९	५७६१	३०५,२०२
१९३७	३६,४९१,३३२	६६३५	६९७,८००

स्वेजमार्ग की सुविधाएं—स्वेज मार्ग पुरानी दुनिया के बिल्कुल बीच से जाता है और अन्य मार्गों की अपेक्षा इस मार्ग का सम्पर्क अधिक देशों से है तथा अधिक मनुष्यों को इस से लाभ पहुंचता है। इस मार्ग में बन्दरगाहों की अधिकता है। इसलिये छोटे छोटे जहाजों द्वारा और थोड़ी दूर माल ढोने का काम खूब अच्छी तरह हो सकता है। इस मार्ग के दोनों सिरों पर तेल या कोयला प्राप्त है—ईरान और इंडोनेशिया में तेल और पश्चिमी योरप में कोयला। इन सुविधाओं के होते हुए भी पनामा नहर खुलने से इस मार्ग पर व्यापार की कुछ कमी हो गयी है। संयुक्तराष्ट्र से जापान, हांगकांग और फिलीपाइन का व्यापार अब पनामा नहर के द्वारा ही होता है। यही नहीं बल्कि यूरोप का आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और जापान से होने वाला व्यापार जो पहिले स्वेज मार्ग से होता था अब बहुत कुछ पनामा नहर के मार्ग से भी होने लगा है।

स्वेज मार्ग के दोष—सुविधाओं के साथ-साथ इसमें कुछ दोष भी हैं। यह नहर कम गहरी और कम चौडी है। इसलिये इसमें आधुनिक बडे-बडे जहाज नहीं गुजर सकते। नहर का यह दोष उसको चौडा व गहरा करके दूर किया जा रहा है। इसमें अब ४०,००० टन के जहाज भी आ जा सकेंगे। इस मार्ग से केवल २४ जहाज ही प्रतिदिन गुजर सकते हैं।

दूसरा दोष यात्रा सम्बन्धी है। पहले एक जहाज को नहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंचने में ३० घंटे लगते थे परन्तु अब केवल १२ घंटों में ही यह यात्रा पूरी हो जाती है। पहले कम चौडाई के कारण जब एक जहाज गुजरता था तो दूसरे को किनारे से खींच कर बांध देते थे। परन्तु अब नई योजनाएं की जा रही हैं और नहर को चौडा करके बहुत कुछ सुधार कर दिया गया है। मार्ग पर बहुत से सर्चलाइट और प्रकाशस्तम्भ भी बन गये हैं जिनसे अब सफर करना सुगम हो गया है।

इसका सब से भारी दोष यह है कि गुजरने वाले जहाजों से कर लिया जाता है। इसलिये जब जल्दी पहुंचने की जरूरत नहीं होती है तब बोझा ढोने वाले बहुत से जहाज केपमार्ग से जाते हैं ताकि उन्हें भारी कर न देना पडे। हाल में नहर कर में कमी कर दी गई है।

इसकी एक बडी विशेषता यह है कि १८८६ के अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि-पत्र के अनुसार यह मार्ग प्रत्येक देश के व्यापारिक व सैनिक जहाजों के लिये शान्ति या युद्ध काल में सदैव खुला रहता है। वैसे तो यह नहर मिस्र की हद में आती है परन्तु सन् १९६८ तक कम्पनी का ही अधिकार रहेगा। उसके बाद सम्पूर्ण मार्ग मिस्र को मिल जायगा।



चित्र नं० ४२— पनामा नहर—यह ४०½ मील लम्बी है।

पनामा नहर

स्वेज नहर के बन जाने से मध्य अमरीका के जलडमरूमध्य से नहर निकाल कर अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागरों को मिला देने के प्रस्ताव को बडा बल मिला। शुरू में दो मार्गों पर विचार हुआ—एक तो पनामा जलडमरूमध्य से और दूसरा निकारा

गुआ से। सम्बाई तथा स्थिति के विचार से पनामा मार्ग ही सब से अधिक लाभप्रद था परन्तु पनामा राज्य की राजनैतिक उथल पुथल के कारण १९०७ तक कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका। पनामा नहर के मार्ग में पड़ने वाला प्रदेश पहाड़ी और कड़ी चट्टानों का बना है। इन कठिनाइयों का चट्टानें काटकर तथा द्वार (Locks) बना कर दूर किया गया।

पनामा नहर का उद्घाटन १५ अगस्त सन् १९१४ को हुआ। इस नहर पर संयुक्त-राष्ट्र का अधिकार है। अटलाण्टिक तथा प्रशान्त महासागरों के तटों के बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक इसकी लम्बाई, ४०½ मील है और एक ओर के गहरे पानी से लेकर दूसरी ओर के गहरे पानी तक इसकी लम्बाई ५० मील है। यह ४१ फीट गहरी है और जहाजों को इस नहर से होकर गुजरने में ७-८ घंटे लगते हैं। इस नहर से होकर ४८ जहाज प्रतिदिन गुजर सकते हैं।

पनामा जलमार्ग से आपेक्षिक लाभ—इस नहर के खुलने से अनेक नये मार्ग बने और कई पुराने मार्गों में परिवर्तन हो गया। पहले उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के पूर्वी तटों से पश्चिमी तटों तक जाने के लिए केप हार्न का चक्कर लगा कर जाना पड़ता था। परन्तु अब दोनों महाद्वीपों के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों के बीच बड़ा निकट व घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो गया है। समय पड़ने पर इस नहर के मार्ग से संयुक्त राष्ट्र अमरीका का जहाजी बेड़ा पूर्वी तथा पश्चिमी तटों पर आसानी से काम कर सकता है।

यह तो हुआ इस मार्ग का राजनैतिक व सैनिक महत्व। इस के अलावा इस मार्ग के खुल जाने से नई और पुरानी दुनिया के बीच के वाणिज्य पर बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है—

(अ) दक्षिणी अमरीका के प्रशान्त महासागरीय तट तथा उत्तरी अमरीका के अटलांटिक महासागरीय तट के बीच का फासला इस नहर के द्वारा कम हो गया है।

न्यूयार्क से	वालपरैसो तक
मैगलन मार्ग से	८,४००
पनामा मार्ग से	४,६००

अतः पनामा नहर मार्ग द्वारा उपरोक्त दोनों प्रदेशों के व्यापार में काफी उन्नति हो गयी है।

(ब) इस मार्ग के द्वारा संयुक्तराष्ट्र अमरीका से आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड बहुत पास हो गये—

न्यूयार्क से	वैलिंगटन (न्यूजीलैंड)	सिडनी (आस्ट्रेलिया)
पनामा मार्ग से	८,५००	पनामा मार्ग से ९,७००
मैगलन मार्ग से	११,३००	स्वेज मार्ग से १३,४००

(स) यूरोप से आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड जाने के लिये पनामा द्वारा एक नया मार्ग

खुल गया है। वास्तव में दूरी की अधिक बचत तो किसी मार्ग से भी विशेष नहीं होती और इसीलिये अब भी स्टीमर अधिकतर स्वेजमार्ग से ही जाते हैं।

लिवरपूल से	सिडनी	वैलिंगटन
पनामा मार्ग से	१२,४००	११,१००
स्वेज मार्ग से	१२,२००	१२,५००

(द) इस मार्ग से जापान के बन्दरगाहों और उत्तरी अमरीका के अटलांटिक तटीय बन्दरगाहों के बीच का अन्तर कम हो गया है।

न्यूयार्क से	याकोहामा
पनामा मार्ग द्वारा	६,७००
स्वेज मार्ग द्वारा	१३,१००

(ह) उत्तरी अमरीका के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच पनामा मार्ग द्वारा ७००० मील के लगभग दूरी कम हो गई है। पनामा नहर बनने से पहले अमरीका के दोनों तटों के बीच सामुद्रिक व्यापार का अभाव था।

(फ) उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी तटीय प्रदेश और यूरोप के बीच ५००० मील की दूरी कम हो गई है।

पनामा नहर विशेषतया अमरीका की नहर है। आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और एशिया के साथ यूरोप के व्यापारिक सम्बन्ध को इससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है। पनामा नहर के खुलने से यद्यपि समुद्री मार्गों में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं परन्तु यह मानना पड़ेगा कि इससे विश्व व्यापार और वाणिज्य पर स्वेज नहर की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण असर पड़ा है। हां, एक बात जरूर है कि इस मार्ग के खुल जाने से चीन और जापान का संयुक्तराष्ट्र अमरीका के साथ व्यापार काफी बढ़ गया है।

इस मार्ग पर ईंधन की भी दिक्कत नहीं है और एक माने में स्वेज मार्ग की अपेक्षा इस मार्ग पर अमरीकन कोयला व तेल दोनों ही सस्ते व बहुतायत से हैं। फिर भी कई दोषों के कारण यह स्वेज नहर की तरह उन्नत व महत्वपूर्ण नहीं हो पाई है।

पनामा मार्ग के दोष—जलडमरू मध्य को पार करने में ८५ फीट का उतार-चढ़ाव पड़ता है। इस कारण इस मार्ग में ६ स्थानों पर दुहरे द्वार (Locks) बनाये गये हैं जिन्हें बार-बार खोलना व बन्द करना पड़ता है। इस कारण बड़ा समय लगता है और काफी असुविधा होती है। फिर इस मार्ग के आसपास का प्रदेश कम बसा हुआ व कम उपजाऊ है तथा व्यापारिक दृष्टि से कम महत्त्व वाला है। तीसरे, प्रशान्त महासागर बहुत विस्तृत है और उसमें बन्दरगाह बहुत थोड़े हैं।

इसीलिये इस नहर का विशेष महत्व उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के लिये ही सब से अधिक है।

कील नहर

यह नहर जर्मनी की सीमा पर है। ऐल्ब नदी से बाल्टिक सागर तक का रास्ता ६०० मील लम्बा है और जटलैंड का चक्कर लगा कर जाना पड़ता है। इस रास्ते से यात्रा भी बड़ी भयानक है। इस दूरी को कम करने और खतरे से यात्रा को बचाने के लिये कील नहर का निर्माण हुआ। यह नहर १८६५ में बन कर तैयार हुई। यह नहर बाल्टिक सागर को उत्तरी सागर से ऐल्ब नदी के मुहाने पर मिलाती है। इस मार्ग से वही यात्रा ६१ मील लम्बी रह जाती है और मार्ग का खतरा भी हट जाता है।

यह नहर ३८ फीट गहरी और १४४ फीट चौड़ी है। इसके द्वारा बड़े-बड़े व्यापारी व सैनिक जहाज आ जा सकते हैं और इसीलिये जर्मनी के लिये इस मार्ग का विशेष व्यापारिक व सैनिक महत्व है।

मैनचेस्टर शिप कैनाल

ब्रिटिश द्वीप में यह नहर सब से महत्वपूर्ण है। यह १८९५ में बनी। मर्सी नदी के बायें तट स्थित ईस्थाम से मैनचेस्टर तक यह नहर ३५½ मील लम्बी है। इसकी गहराई २८ फीट और चौड़ाई १२० फीट है। इससे व्यापार को बड़ा लाभ हुआ है। इसके बनने से पहले लिवरपूल बन्दरगाह से मैनचेस्टर तक कपास रेल द्वारा आती थी परन्तु अब इस नहर के बन जाने से जहाज सीधे मैनचेस्टर तक पहुंच जाते हैं।

इनके अलावा अन्य महत्वपूर्ण जहाजी नहरें एमस्टरडम शिप कैनाल, स्टालिन कैनाल और वोल्गा डोन कैनाल इत्यादि हैं। एमस्टरडम शिप कैनाल उत्तरी सागर से एमस्टरडम को सीधे मिलाती है। यह नहर १८७६ में बनाई गई थी। रूस की स्टालिन कैनाल बाल्टिक सागर को आर्कटिक सागर से मिलाती है और श्वेतसागर से लेनिनग्राड का सीधा सम्बन्ध स्थापित करती है। वोल्गा डान कैनाल ६० मील लम्बी है और डान नदी को वोल्गा से मिलाती है। इस नहर के बन जाने से काला सागर (Black Sea) से मास्को तक सीधा जलमार्ग बन गया है और मास्को से आगे इसका सम्बन्ध स्टालिन कैनाल के द्वारा उत्तर में श्वेत सागर और पश्चिम में बाल्टिक सागर से भी स्थापित हो गया है। इस नहर के बन जाने से रूस की औद्योगीकरण में बड़ी सहायता मिलेगी और रूस की रेलों पर भीड़ कम हो जायगी।

हवाई यातायात के क्षेत्र में वायुयानों का विकास एक नया अध्याय है। वर्तमान युग के दो महायुद्धों से वायुयानों को विशेष प्रोत्साहन मिला है और यातायात में वायुयानों की उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है। यातायात में उपयोग किए जाने वाले हवाई जहाज दो प्रकार के होते हैं—वायुपोत (Airships) और वायुयान (Airplanes) साधारणत: वायुपोत वायुयानों से हल्के होते हैं। फिर भी वायुयानों का प्रचार दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इनके द्वारा यातायात में कई सुविधाएं व दोष हैं—यद्यपि वायुयान

यातायात के सब से वेगशील साधन है परन्तु सस्ते दामों में भारी वस्तुओं को ले जाने के लिये रेल और जहाज ही अधिक लाभप्रद रहते हैं। हां, बहुमूल्य सामग्री तथा यात्रियों के लिये अन्य साधनों की अपेक्षा हवाई यातायात अधिक सुविधाजनक रहता है। इन दो प्रकार के जहाजों के अलावा आजकल कम जगह में उतरने वाले हेलीकोप्टर तथा ग्लाईडर जहाजों का प्रयोग बढ़ रहा है।

हवाई यातायात और भौगोलिक परिस्थितियां—हवाई यातायात पर जलवायु सम्बन्धी स्थिति का बड़ा प्रभाव पड़ता है। भारी वर्षा, गहरे बादल तथा बर्फ व बालू की आंधियां इस में बाधा डालती हैं। कोहरे के समय भी वायुयानों को उतारने में बड़ी कठिनाई होती है। भूमि की बनावट का भी काफी प्रभाव पड़ता है। हवाई अड्डे बनाने के लिये समतल भूमि ही उपयुक्त होती है और ऊंची-नीची भूमि प्रदेश पर उड़ान करना भी खतरे से खाली नहीं है। इन्हीं कारणों से हवाई यातायात का विशेष विकास संयुक्तराष्ट्र अमरीका, जर्मनी, रूस, संयुक्तराज्य और हालैंड के समतल विभागों में विशेष रूप से हुआ है। सुरक्षा और संचालन की सुविधा के विचार से वायुमार्गों की दिशा नदियों तथा नगरों आदि भूमि स्थित चिह्नों द्वारा ही निश्चित की जाती है।

यूरोप के हवाई मार्ग—हवाई यातायात, डाक, यात्रियों और भाड़े आदि की आय के विचार से फ्रांस का यूरोप में प्रथम तथा संसार में छठा स्थान है। इंग्लैंड हालैंड और बेल्जियम क्रमशः अन्य महत्वपूर्ण देश हैं। ग्रेट ब्रिटेन में हवाई यातायात की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। भिन्न-भिन्न हवाई कम्पनियों की संयोजित ब्रिटिश ओवरसीज एयर कारपोरेशन ब्रिटेन और अन्य विभिन्न दूरस्थ कामनवेल्थ देशों में हवाई सम्बन्ध स्थापित करती है। भारत, दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया से बराबर आना-जाना लगा रहता है। ग्रेट ब्रिटेन में इस समय सैनिक व सुरक्षा सम्बन्धी हवाई यातायात को छोड़ कर अन्य सभी हवाई मार्गों व उड़ानों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है।

संयुक्तराष्ट्र के हवाई मार्ग—संयुक्तराष्ट्र अमरीका में हवाई यातायात अन्य सभी देशों के योग से कहीं अधिक है। यहां पर यूनाइटेड एअर लाइन्स, अमरीकन एयर लाइन्स और ट्रान्स काटिनेंटल एंअर लाइन्स तीन प्रमुख हवाई कम्पनियां हैं और कनाडा तथा दक्षिणी अमरीका के वायुमार्गों से भी सम्बन्ध रखती हैं।

वायुमार्गों की लम्बाई (१९३८)
(सैनिक उड़ानों व मार्गों को छोड़ कर)

संयुक्त राष्ट्र अमरीका	७१,२०० मील
रूस	४१,००० ,,
जर्मनी	३३,००० ,,
संयुक्तराज्य	२५,५०० ,,
भारतवर्ष	६,७०० ,,

सन १९४९ म ससार के २,५०,००,००० से भी अधिक मनुष्यों ने वायुयानो द्वारा यात्रा की। प्रति दिन की उडानो का औसत ७०,००० यात्रियो का था। नियमित उडानो की सख्या इतनी अधिक थी कि दिन रात प्रति ५ सैकड पर ससार के किसी न किसी हवाई अड्डे पर वायुयान के उतरने या ऊपर चढने का ताता लगा ही रहता था। इसी काल म द्राग अटलाटिक वायुमार्ग पर उत्तरी अटलाटिक सागर के आरपार प्रतिदिन ३० उडानो का औसत था और करीब ३,००,००० यात्री सफर करते थ।

भूमडल के मुख्य वायु-मार्ग

१ **यूरोप और अमरीका के बीच के वायु-मार्ग**—इस मार्ग पर फ्रासीसी, अमरीका तथा ब्रिटिश वायुयान चलते है। यह मार्ग अफ्रीका के प्रशान्त तट के साथ-साथ डाकर (Dakar) या वाथरस्ट तक जाता है। यहा से यह मार्ग आधमहासागर को पार कर के ब्राज़ील के पारनाम्बुको नगर पहुचता है। यहा से एक मार्ग चिली में सैंटियागा तक जाता है। अटलाटिक महासागर के किनारे-किनारे सयुक्तराष्ट्र अमरीका के वायुमार्ग भी परनाम्बुको म जाकर मिलते है।

२. **यूरोप, एशिया और आस्ट्रेलिया के बीच के वायु मार्ग**—इन मार्गों पर फ्रासीसी, डच तथा ब्रिटिश वायुयान चलते है। ब्रिटिश वायु मार्ग लन्दन से शुरू होकर मार्सेल्स, अथेन्स, सिकन्दरिया, काहिरा, गाजा, बगदाद, बहरीन, शरहाज, कराची, जोधपुर, दिल्ली, इलाहाबाद, कलकत्ता, रगून, बैंगकाक, पीनाग, सिंगापुर, बटाविया, डारविन, ब्रिसबेन तथा सिडनी होता हुआ मेलबोर्न तक जाता है। डच तथा फ्रासीसी हवाई जहाज भी लगभग इसी मार्ग पर चलते है। कुछ दिनो से रूस ने मास्को से ब्लाडी वास्टक तक एक नया वायु मार्ग खोला है।

३ **यूरोप और अफ्रीका के बीच के वायु-मार्ग**—इस मार्ग पर इटालियन, फ्रासीसी और ब्रिटिश वायुयानो का नियन्त्रण है। अफ्रीका के महत्वपूर्ण मार्ग ब्रिटेन के अधिकार में है। ब्रिटिश वायुमार्ग साउथैम्पटन से आरम्भ होकर भूमध्य सागर के पार सिकन्दरिया तक जाता है। सिकन्दरिया से यह मार्ग सीधा खारतूम को जाता है और फिर वहा से यह दो दिशाओ या शाखाओ में बट जाता है—एक शाखा तो पश्चिम में लागोस तक जाती है और दूसरी दक्षिण में केप टाउन तक।

फ्रासीसियो ने अफ्रीका में दो वायुमार्ग स्थापित किये है। एक अफ्रीका के पश्चिमी तट के सहारे-सहारे वाथर्स्ट होता हुआ फ्रासीसी भूमध्यरेखीय प्रदेश तक पहुचता है। दूसरा मार्ग सहारा तथा कागो को पार कर के मैडागास्कर म समाप्त होता है। इटली के वायुमार्ग ट्रिपोली तथा काहिरा होते हुए अबीसीनिया म अदीस अबाबा तक जाते है।

४. **अमरीका और एशिया के बीच के वायु मार्ग**—प्रशान्त महासागर के लिये सयुक्तराष्ट्र के वायुयानो द्वारा यात्रा की जाती है। यह मार्ग सैन फ्रासिस्को से आरम्भ होता

है और प्रशान्त महासागर के मध्य होनोलूलू, मिडवे द्वीप, वेक द्वीप और मेनीला होता हुआ केन्टन तक जाता है।

जर्मनी से वायुमार्ग विभिन्न दिशाओं में जाते हैं। यहां से उत्तर में नारवे, स्वीडन, फिनलैंड को दक्षिण पूर्व में चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया और यूनान को पूर्व में पोलैंड को और दक्षिण में इटली को दक्षिण पश्चिम में स्पेन तथा पुर्तगाल को और पश्चिम में फ्रांस तथा संयुक्त राज्य (U K) को वायुयान चलते हैं। दूसरे महायुद्ध से पहले पश्चिमी तथा दक्षिणी यूरोप में डच तथा फ्रांसीसी वायुयानों की जर्मन वायुयानों से स्पर्धा थी।

वायु-मार्गों तथा हवाई यातायात के विकास में संयुक्तराष्ट्र अमरीका का स्थान सर्वप्रथम है। इस देश में एक किनारे से दूसरे किनारे तक आने जाने वाले कई वायु मार्ग हैं। पूर्वी तट पर बोस्टन, न्यूयार्क तथा वाशिंगटन और पश्चिमी तट पर सियाटिल (Seattle), सैन फ्रांसिस्को और लास एंजिलीस प्रसिद्ध हवाई अड्डे हैं।

प्रश्नावली

१ वर्तमान वाणिज्य व व्यापार में यातायात का क्या महत्त्व है? यातायात के विभिन्न साधनों पर एक लेख लिखिये।

२ कनाडा में यातायात की किन सुविधाओं के बन जाने से खेतिहर उपज को लाभ पहुंचता है और किस प्रकार यातायात की प्रगति के कारण वहां की खेती में उन्नति हुई है?

३ "हाल के दिनों में पनामा नहर के द्वारा यातायात व गमनागमन में आश्चर्य-जनक वृद्धि हुई है।" जिन कारणों से यह उन्नति हुई है उनका संक्षिप्त विवरण दीजिये। इस नहर से किन वस्तुओं का व्यापार होता है? पूर्व के देशों के दृष्टिकोण से इस मार्ग में क्या दोष है और उनको किस प्रकार दूर किया जा सकता है?

४ पनामा नहर का वर्णन कीजिये। किन देशों को उससे अधिक लाभ हुआ है और क्यों?

५ पनामा नहर और स्वेज नहर से जाने पर आपको क्या अन्तर दिखाई पड़ेगा। विस्तार से लिखिये।

६ न्यूयार्क की उन्नति में रेल व आन्तरिक जलमार्गों का क्या महत्व रहा है। समझा कर लिखिये।

७ पूर्व में ब्रिटिश हवाई मार्ग का वर्णन कीजिये। भारत में हवाई यातायात के विकास की क्या संभावनाएं हैं।

८ हवाई मार्गों के विकास और उन्नति के लिये किन परिस्थितियों का होना आवश्यक है ? यूरेशिया के प्रधान हवाई मार्गों में से किन्हीं दो का व्यापारिक व आर्थिक महत्व समझाइये ।

९ इग्लैंड और जर्मनी तथा जापान और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बीच होने वाले समुद्री व्यापार का विवरण दीजिये ।

१० बनावट व व्यापारिक महत्व के दृष्टिकोण से पनामा और स्वेज़ नहरों का अन्तर विश्लेषण कीजिये ।

११ ससार के प्रमुख समुद्रतट स्थित देशों में व्यापारिक जहाजों व समुद्री यातायात की वर्तमान दशा क्या है ? इस दिशा में भारत ने क्या प्रगति की है ?

१२ "पनामा नहर के खुल जाने से ससार के समुद्री जलमार्गों में काफी महत्व-पूर्ण हेर-फेर हो गया है परन्तु फिर भी ससार के वाणिज्य व व्यापार पर स्वेज़ नहर के समान व्यापक व महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड सका है । इसके कारण व्यापार व गमना-गमन में उतना तीव्र विकास व उन्नति नहीं हो पाई है जितनी स्वेज़ जलमार्ग के खुलने से हुई थी।" इस वक्तव्य पर अपने विचार प्रकट कीजिये ।

✓ १३ भारत के विदेशी व्यापार के दृष्टिकोण से स्वेज़ मार्ग का क्या महत्व है ? अगर इस मार्ग को कुछ समय के लिये बन्द कर दिया जाय तो इसके विदेशी व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

१४ स्वेज़ जलमार्ग का वर्णन कीजिये और इसका व्यापारिक महत्व दिखलाइये ।

१५ ट्रैम्प और लाइनर जहाजों का अन्तर स्पष्ट कीजिये । भारत से दक्षिणी अमरीका के पैसिफिक-तटीय बन्दरगाहों को पहुचने के लिये कौन से जलमार्ग सुगम है ?

१६ पश्चिमी यूरोप से पूर्वी एसिया को जाने के लिये स्वेज़ और पनामा जल मार्गों के तुलनात्मक लाभ व दोष क्या है ?

१७ कलकत्ता से दक्षिणी अमरीका के पैसिफिक-तटीय बन्दरगाहों को बहुत-सा पटसन भेजा जाता है । इस व्यापार के लिये जहाज किन रास्तों से जाते है और क्यों ?

१८ इस समय ससार के व्यापारिक जहाजों के प्रादेशिक वितरण की क्या विशेषता है ? पिछले महायुद्ध से विभिन्न देशों की व्यापारिक जहाज सम्बन्धी स्थिति में क्या परिवर्तन हुआ है ? भारत के समुद्री व्यापार के क्या साधन है ? ट्रैम्प जहाज क्या होते हैं और क्या वस्तुए ले जाते हैं ।

१९ इगलैंड और जर्मनी के आन्तरिक जलमार्गों का तुलनात्मक विवेचन करिये ।

२० भारत से यूरोप जाने के वास्ते केप मार्ग और भूमध्यसागर मार्गों की तुलना कीजिये । यदि युद्ध काल में भूमध्यसागर मार्ग को बन्द कर दिया जाय तो भारत के व्यापार पर क्या असर पड़ेगा ?

२१. ब्रिटिश कामनवेल्थ देशों में हवाई यातायात की वर्तमान उन्नति का वर्णन

कीजिये। दुनिया का मानचित्र खीच कर यूरोप और एशिया के मध्य विभिन्न हवाई मार्गो को दिखलाइये।

२२ भारत और यूरोप के बीच रेलमार्गो के खुलने की क्या सभावनाए हैं ?

२३ पनामा नहर के बन जाने से विभिन्न देशो के व्यापार व वाणिज्य तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध पर क्या प्रभाव पडा है और क्या प्रभाव पडने की भविष्य मे सभावना है ?

२४ यातायात के अन्य साधनो की अपेक्षा वायु यातायात की विशेष सुविधाए व लाभ क्या हैं ? दुनिया के मानचित्र पर मुख्य हवाई मार्ग दिखलाइये।

२५ थल-यातायात की अपेक्षा जल-यातायात की क्या विशेषताए हैं ? अपने उत्तर में गुण व दोष दोनो ही दिखलाइये।

२६ उत्तरीय अटलांटिक महासागर के प्रधान जलमार्ग एक रेखा-चित्र बना कर दिखाइये और उनका वर्णन करिये।

२७ थल-यातायात के विभिन्न साधन क्या हैं ? रेलो व सडकों का महत्व बतलाइये और ससार की प्रमुख रेलो का वर्णन कीजिये।

२८ "रूस की वर्तमान उन्नति वहा के यातायात की सुविधाओं के कारण ही हुई है ?" इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिये और रूस की यातायात व्यवस्था समझाइये।

२९ मनुष्य के यातायात सम्बन्धी प्रयत्नो पर उसकी आर्थिक उन्नति व समृद्धि किस प्रकार निर्भर रहती है ? समझा कर लिखिये।

३० यातायात के साधन के दृष्टिकोण से यागटीसीक्याग और नील नदी की तुलना कीजिये।

३१. व्यापार व वाणिज्य के मार्गों के दृष्टिकोण से स्वेज और पनामा नहरों की तुलना कीजिये और उनके निर्माण व विकास के विषय में एक संक्षिप्त विवरण दीजिये।

अध्याय : : नौ

पोताश्रयों और बन्दरगाहों का विकास

बन्दरगाह समुद्रतट पर स्थित देश के वे द्वार है जहा देश के आन्तरिक व समुद्री व्यापारिक मार्ग मिलते हैं। समुद्री जलमार्ग पर बन्दरगाह वे स्थान हैं जहा जहाजो को माल लादने व उतारने की सुविधा रहती है। माल लादने व उतारने के लिये कुछ दशाओ का होना अनिवार्य है—वे बाते हैं आश्रय, सुरक्षा और विस्तृत स्थान।

पोताश्रयों में सुरक्षित आश्रय का महत्त्व—समुद्र तट पर खुले अरक्षित स्थान पर जहाज से माल उतारना व चढाना बडा ही कठिन है। ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका में तटीय समुद्र छिछला है इस लिये जहाजो को समुद्र तट से कुछ दूर ही लगर डालना पडता है। यदि समुद्र वर्ष भर अशान्त रहता हो तब भी जहाजो के लादने अथवा माल उतारने के कार्य में बडी कठिनाई रहती है। इस लिये माल को आसानी से व सुरक्षित तरीके से चढाने-उतारने के लिये जहाजो को तट पर सुरक्षित स्थान की आवश्यकता होती है। पोताश्रय (पोत+आश्रय) शब्द में ही सुरक्षित स्थान का महत्व निहित है। पोताश्रय वे स्थान हैं जहा जहाज सुरक्षित रह सकते है। इस दृष्टिकोण से पोताश्रय दो प्रकार के होते हैं—(१) कृत्रिम और (२) प्राकृतिक। प्राकृतिक पोताश्रय साधारणतया तट रेखा में भूमि की विशेष बनावट के कारण घिरा हुआ सुरक्षित स्थान होता है जिस में जहाजो के ठहरने के लिये शान्त जल मिल जाता है। सैन फ्रासिस्को, लिवरपूल और कार्क जैसे बन्दरगाह के सर्वोत्तम प्राकृतिक पोताश्रय है।

कृत्रिम पोताश्रय उन स्थानो पर बनाये जाते है जहा भूमि की बनावट व अन्य स्वाभाविक दशायें अनुकूल नहीं होती है। यहा पर तरग भगी दीवारो तथा ग्रामो से सदा ही काम लिया जाता है। ये दीवारें पोताश्रय क्षेत्र के अन्दर प्रवेश करने वाली जल-तरगों के वेग को रोकने के लिये बनाई जाती हैं जिस से वहा पर जहाज सुरक्षित रूप में खडे रहे। जहा समुद्र का जल छिछला होता है वहा ग्रामो द्वारा गहरा रखा जाता है। लास एजिलीस तथा मद्रास के पोताश्रय कृत्रिम है।

आदर्श पोताश्रय की दशायें—एक आदर्श पोताश्रय के लिये निम्नलिखित बाते होना चाहिये—(१) समुद्री तूफानो तथा तरगो से सुरक्षा, (२) शीत काल म हिम से मुक्ति, (३) तट के पास जल की काफी गहराई, (४) बडे-बडे जहाजो के मुडने के लिये काफी चौडाई, (५) सामान उतारने व चढाने के लिये डॉक व व्हर्फ का होना, (६) पृष्ठ प्रदेश का उन्नत तथा समृद्ध होना तथा (७) सीधे व समतल मार्गों द्वारा पृष्ठ प्रदेश से सम्बन्ध होना।

बन्दरगाहों की दूसरी विशेष आवश्यकता विस्तृत स्थान की है। विस्तृत स्थान होने से व्यापार के कार्य में सुविधा रहती है। इसलिये केवल आदर्श पोताश्रय में ही बन्दरगाह की सभी आवश्यकतायें पूरी नहीं हो जाती। इसमें सुविधाजनक निरन्तर गमनागमन, माल व मुसाफिरों के उतारने-चढ़ाने की सुविधायें भी होनी चाहिये। इनके अलावा घाट जटी, छायादार स्थान, गोदाम, भारी वस्तुओं को उठाने के लिये तथा आने जाने के लिये सड़कों, रेलें तथा जहाजों व गाड़ियों के मरम्मत के कारखाने भी पास में होना जरूरी है।

बन्दरगाहों की अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकता व्यापार का होना है। व्यापार के महत्व-पूर्ण द्वार होने के कारण ही बन्दरगाह बनने व उन्नति करते हैं। और व्यापार वहीं बढ़ता है जहां निम्नलिखित दशायें प्रस्तुत हों—(१) वस्तुओं के उत्पादन तथा उपभोग के लिये एक विशाल व सम्पन्न पृष्ठ प्रदेश, (२) पृष्ठ प्रदेश से बन्दरगाह तक यातायात व गमना-गमन के सुगम साधनों का प्रस्तुत होना, (३) संसार के प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर या उनके समीप स्थित होना।

पृष्ठ प्रदेश का महत्व—बन्दरगाह का विशेष महत्व उसके पृष्ठ प्रदेश के विस्तार तथा उत्पादन शक्ति में सन्निहित रहता है। 'हिन्टरलैंड' (Hinterland) जर्मनी भाषा से लिया गया है और जैसा पृष्ठ प्रदेश शब्द से ही प्रगट होता है, इसका अर्थ वह प्रदेश है जिस के लिये बन्दरगाह द्वार का काम करता है। बंगाल और बिहार का व्यापार कार्य कलकत्ते के बन्दरगाह के द्वारा होता है। इसीलिये ये दोनों प्रान्त कलकत्ता के पृष्ठ प्रदेश कहलाते हैं।

बन्दरगाह की उन्नति के लिये पृष्ठ प्रदेश का सम्पन्न व समृद्धिशाली होना आवश्यक है। घनी आबादी, बहुमूल्य आर्थिक उपज तथा यातायात की सुविधा होने से पृष्ठ प्रदेश 'सम्पन्न' कहलाता है। संक्षेप में बात यह है कि पृष्ठ प्रदेश में व्यापार के लिये आकर्षण होना चाहिये।

बन्दरगाह के पृष्ठ प्रदेश का विस्तार वहां के आवागमन के साधनों पर निर्भर रहता है। आवागमन के साधन ही पृष्ठ प्रदेश के भिन्न भिन्न भागों को बन्दरगाह के निकट सम्पर्क में लाते हैं। जल और थल के बीच व्यापार का मुख्य साधन बन्दरगाह ही होता है। इसलिये अपने चारों ओर के निकटवर्ती क्षेत्रों से रेल, सड़क व नदी-नहरों द्वारा सम्बन्धित होना आवश्यक है।

पृष्ठ प्रदेश दो प्रकार के होते हैं वितरक (Distributory) और सहायक (Contributory)। वितरक पृष्ठ प्रदेश अपनी घनी आबादी के लिये या तो भोजन सामग्री आयात करता है या उन्हीं निवासियों के लिये आवश्यक अथवा विलास सामग्री जुटाता है। कारखानों के लिये कच्चा माल भी मंगाता है। जिस पृष्ठ प्रदेश से माल निर्यात होता है वह सहायक कहलाता है। ये वस्तुएं भोज्य पदार्थ, कच्चे माल अथवा बने हुए माल

के रूप में हो सकती है। इस प्रकार किसी भी बन्दरगाह के व्यापार की मात्रा से उस के पृष्ठ प्रदेश में वर्तमान उत्पादन, उपभोग तथा यातायात की सुविधाओं का पता चलता है।

एक ही पृष्ट प्रदेश में कई बन्दरगाह भी हो सकते हैं। जिन बन्दरगाहों में व्यापारिक सुविधायें अधिक होती हैं व्यापार भी उन्हीं के द्वारा अधिक होता है। भारत के पश्चिमी तट पर बम्बई, ओखा, पोरबन्दर तथा नवलक्खी बन्दरगाहों में होड़-सी लगी रहती है। पोताश्रय कर में कमी के कारण बम्बई की अपेक्षा काठियावाड़ के बन्दरगाहों से ज्यादा व्यापार होता है।

बन्दरगाहों के विभिन्न प्रकार—स्थिति के अनुसार ही बन्दरगाह निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं —(१) समुद्री बन्दर, (२) नदी बन्दर और (३) नहरी बन्दर। इन बन्दरगाहों से होने वाला व्यापार व कार्य भी विभिन्न होता है। कच्चे माल की प्राप्ति की सुगमता और व्यापार की मंडियों के अनुरूप ही इन बन्दरगाहों की व्यापारिक उन्नति हो जाती है।

१ **समुद्री बन्दरगाह**—पोताश्रयों की प्रकृति तथा देश प्रदेश के थल भागों के सम्बन्ध के अनुसार समुद्री बन्दरगाहों को चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है:—

(**अ**) **खुले बन्दरगाह** जैसे कोलोन। यह प्राय हीन दशा में ही रहते हैं। यहां न तो जहाजों के लिए सुरक्षित पोताश्रय, न पानी की पर्याप्त गहराई और न हवा व लहरों से बचाव का कोई प्रबंध होता है। बड़ी-बड़ी नदी घाटियों के मुहाने पर स्थित न होने के कारण भीतरी भागों से सम्पर्क कम रहता है और यातायात व गमनागमन की अनेकों असुविधायें रहती हैं।

(**ब**) **खाड़ी स्थित बन्दरगाह** जैसे बोस्टन। ऐसे स्थानों पर पोताश्रय सुरक्षित, सुविस्तृत और गहरे होते हैं तथा उनमें जहाजों के ठहरने के लिए पर्याप्त स्थान होता है।

(**स**) **नदी बन्दरगाह** जैसे कलकत्ता और चिटगाव। इन में भीतरी प्रदेशों से यातायात की सुविधा तो रहती है पर गहराई, लंगर स्थान, घाट, माल लादने व उतारने के स्थान की कमी रहती है। इन असुविधाओं को नदी की तलैटी को गहरा व चौड़ा करके दूर किया जाता है अथवा नदी के बहाव में ऊपर या नीचे की तरफ काफी दूर जा कर सुविधाजनक विस्तृत स्थान मिलता है।

(**द**) **नदी खाड़ी बन्दरगाह**—वे बन्दरगाह जो नदी के मुहाने और खाड़ी के तट पर स्थित होते हैं व्यापार की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ होते हैं। उनमें विस्तृत व सुरक्षित लंगर स्थान भी मिल जाता है और घाटों व माल उतारने चढ़ाने के लिये पर्याप्त क्षेत्र भी मिल जाता है। इनके अलावा भीतरी भागों से सम्पर्क की सभी सुविधायें भी प्रस्तुत रहती हैं।

इनके अलावा प्रत्येक नाव चलाने योग्य नदी व नहर के किनारे कुछ व्यापारिक नगर उत्पन्न हो जाते हैं। इन केन्द्रों पर निकटवर्ती प्रदेश की उपज एकत्रित की जाती है

तथा नदियों द्वारा इधर-उधर भेजी जाती है। इन बन्दरगाहों का विकास व महत्व नदियों की नाव्य क्षमता, नदी तट पर उनकी अनुकूल स्थिति और निकटवर्ती क्षेत्रों की उत्पादनशीलता पर निर्भर रहता है।

पुनर्निर्यात केन्द्र (Entrepots)—बन्दरगाहों के विषय में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने के लिये पुनर्निर्यात केन्द्रों के विषय में मुख्य-मुख्य बातें जान लेना बहुत जरूरी है। Entrepots व बन्दरगाह होते हैं जहां पर फिर से निर्यात करने के लिये वस्तुओं को आयात किया जाता है। इस प्रकार ये बन्दरगाह मध्यस्थ का काम करते हैं और इनका मुख्य काम माल का फिर से वितरण करना है। इन केन्द्रों पर व्यापार की वस्तुयें स्थानीय उपभोग के लिये नहीं वरन् उन प्रदेशों को भेजने के लिये इकट्ठा की जाती हैं जो सीधे उत्पादन क्षेत्र से माल नहीं मंगा सकते। मलाया प्रायद्वीप स्थित सिंगापुर में इसी प्रकार आसपास के द्वीपों से माल इकट्ठा कर के संसार के भिन्न भिन्न भागों को भेज दिया जाता है।

पुनर्निर्यात व्यापार—पुनर्निर्यात केन्द्रों से सम्बन्धित माल की कुछ विशेषतायें होती हैं। ये वस्तुयें आमतौर से बहुमूल्य, कम लम्बाई-चौड़ाई की और टिकाऊ होनी चाहिये। पुनर्निर्यात केन्द्रों के व्यापार पर किसी वस्तु विशेष के उत्पादन क्षेत्र और उपभोग क्षेत्र के बीच दूरी का भी काफी गहरा असर पड़ता है। जब इन दोनों स्थानों के बीच की दूरी अधिक होती है तो पुनर्निर्यात केन्द्रों पर व्यापार का जोर अधिक रहता है। यूरोप में मसाले, दवाइयां, सिल्क और दूसरी उष्णकटिबंधीय वस्तुओं की खपत कम रहती है। अतः किसी पश्चिमी पुनर्निर्यात केन्द्र से इन वस्तुओं के वितरण में काफी बचत रहती है। इसीलिये इन वस्तुओं का नार्वे, स्वीडन तथा बाल्टिक राज्यों के लिये पुनर्निर्यात केन्द्र ऐल्ब नदी पर स्थित हैम्बर्ग है। सैयद बन्दरगाह (Port Said) पुनर्निर्यात केन्द्र का सर्वोत्तम उदाहरण है। पश्चिम से आने वाले सभी मार्ग स्वेज नहर में प्रवेश करने से पहले यहीं पर मिलते हैं। संसार के प्रमुख पुनर्निर्यात केन्द्र लन्दन, कोलम्बो, सिंगापुर, हैम्बर्ग और शंघाई हैं।

बन्दरगाहों के महत्व की तुलना के मापदंड—बन्दरगाहों की महत्ता तथा सम्पन्नता की तुलना के अनेक मापदंड हैं। इसी लिये बन्दरगाहों का तुलनात्मक और अपेक्षाकृत महत्व जानना सरल या आसान नहीं है। साधारणतया निम्नलिखित आधार काम में लाये जाते हैं।

१ एक वर्ष में बन्दरगाह पर आने जाने वाले जहाजों की संख्या।
२ जहाजों के टनभार का योग।
३ आयात व निर्यात वस्तुओं के टनभर का योग।
४ बन्दरगाह पर आने-जाने वाले सामान का बाजार मूल्य।

जहाजों के छोटे-बड़े होने के कारण बन्दरगाह की महत्ता का मूल्यांकन आने-जाने

वाले जहाजों की संख्या के आधार पर करना उचित नहीं है। जहाजों का परिमाण तथा महत्व कुछ अंश तक उनके टनभार के अनुसार निर्धारित किया जा सकता है। साथ ही साथ किसी बन्दरगाह द्वारा आयात तथा निर्यात किये गये माल के टनभार को तुलना का आधार बनाया जा सकता है। परन्तु इसमें भी एक बड़ी त्रुटि है कि इस में वस्तुओं की प्रकृति स्पष्ट नहीं होती—कि वे वस्तुयें बहुमूल्य हैं अथवा केवल भारी और सस्ती।

संसार के कुछ प्रमुख बन्दरगाह

यूरोप—यूरोप के बन्दरगाह अधिकतर उत्तर पश्चिमी तट पर स्थित है। इन में ऐल्ब नदी पर हैम्बर्ग, राइन पर राटरडम, शेल्ट पर एन्टवर्प और सीन पर हावर प्रधान बन्दरगाह है। इन बन्दरगाहों के पृष्ठ प्रदेश भी बहुत विशाल और उपजाऊ हैं।

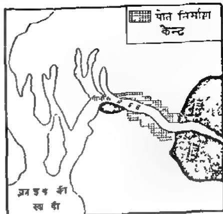
स्वेज नहर के खुलने के बाद भूमध्यसागर संसार के व्यापार का प्रसिद्ध मार्ग हो गया है। इसमें भूमध्य सागर के बन्दरगाहों के पृष्ठ प्रदेशों की महत्ता भी बहुत बढ़ गई है। इस पर मार्सेल्स, जिनोआ, नेपिल्स और ट्रीस्ट प्रसिद्ध बन्दरगाह है। बाल्टिक तथा काला सागर थल से घिरे हुए समुद्र है, इसीलिये इनके बन्दरगाह प्रसिद्ध नहीं है फिर भी कुस्तुनतुनिया और कोपेनहैगेन की स्थिति बड़ी सुविधापूर्ण है।

लन्दन—टेम्स नदी पर स्थित यह प्रसिद्ध बन्दरगाह समुद्र से ५५ मील अन्दर बसा हुआ है। लन्दन ब्रिज के समीप ज्वारभाटे का उभार १६ से २१ फीट तक होने के कारण यहां थामों की आवश्यकता नहीं पड़ती। बहुत दिनों से लन्दन एक अन्तर्राष्ट्रीय गोदाम बन गया है। यहां पर संसार के सभी भागों से वस्तुएं आती हैं और तत्काल ही पुनर्निर्यात कर दी जाती हैं। पुनर्निर्यात केन्द्र से बढ़ते-बढ़ते अब यह संसार का सब से महत्वपूर्ण द्रव्य केन्द्र हो गया है। यहां पर ऊन, अनाज, इमारती लकड़ी, मांस, चाय, काफी, चीनी, मदिरा, स्प्रिट, तम्बाकू, रबर, फल, कालीन, दरियां और डरी की वस्तुएं आती हैं।

लन्दन नगर एक प्रमुख व्यापारिक व औद्योगिक केन्द्र भी है। यहां पर कागज, रासायनिक पदार्थ और बनावटी रेशम के अनेक कारखाने हैं। मेज, कुर्सी, वस्त्र, आभूषण टोप इत्यादि भी यहां बनते हैं। ब्रिटिश द्वीपों का सब से प्रसिद्ध बन्दरगाह लन्दन ही है। यहां पर ब्रिटेन में आने वाली वस्तुओं का ३० से ४० प्रतिशत भाग आयात किया जाता है और यहीं से बाहर भेजी जाने वाली वस्तुओं के २५ प्रतिशत भाग का निर्यात होता है।

ग्लासगो—संसार भर में जहाजों के निर्माण का सब से बड़ा केन्द्र है। ग्रीनोक से २० मील पूर्व यह क्लाइड नदी पर बसा है। ग्रीनोक से ग्लासगो तक क्लाइड नदी के किनारों पर जहाज बनाने के बहुत-से कारखाने हैं और अनेक डॉक है। क्लाइड की सुरक्षित स्थिति, पास ही लोहे-कोयले की खानों का होना तथा नदी की गहराई के कारण क्लाइड का मुहाना आदर्श पोत निर्माण क्षेत्र बन गया है। इंजीनियरी की वस्तुओं के अतिरिक्त

यहाँ पर ऊनी माल, दरियाँ, रंग, शीशे की वस्तुएं, रासायनिक पदार्थ, तेल साफ करने, साबुन, मिठाई, मुरब्बे आदि बनाने के अनेक कारखाने हैं। स्थानीय उपभोग के अतिरिक्त ये वस्तुएं बाहर भी भेजी जाती हैं।



चित्र न० ४३—ग्लासगो का पोताश्रय व बन्दरगाह

लिवरपूल—मर्सी नदी के मुहाने पर स्थित है। यह भी लन्दन की बराबरी का बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह में रुई, अनाज तथा खाद्य सामग्री का आयात तथा ऊनी माल, इस्पात, बर्तन, रासायनिक पदार्थ, लोहे तथा पीतल की बनी वस्तुओं का निर्यात होता है। लिवरपूल के पृष्ठ प्रदेश में केवल दक्षिणी लंकाशायर ही नहीं बल्कि यार्कशायर, स्टैफोर्डशायर और चेशायर भी शामिल हैं। ग्रेट ब्रिटेन के एक-तिहाई से भी अधिक यात्री लिवरपूल से आते जाते हैं। यहाँ पर आटा पीसने, चीनी साफ करने, रासायनिक पदार्थ बनाने और साबुन तैयार करने के कारखाने हैं। यहाँ हवाई अड्डा भी है।

कार्डिफ—कोयले के व्यापार का यह प्रमुख बन्दरगाह है और इस दृष्टि से यह न केवल ग्रेट ब्रिटेन का बल्कि संसार का महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। कोयले के अतिरिक्त इमारती लकड़ी, अनाज और कच्चे लोहे का व्यापार भी होता है। इस बन्दरगाह के करीब घनी संख्या वाले क्षेत्रों में भोजन की वस्तुओं की भी आवश्यकता रहती है। इस बन्दरगाह के क्षेत्र में भी लोहे व इस्पात के प्रमुख कारखाने हैं। भिन्न-भिन्न कारणों से दूरस्थ प्रदेशों में कोयले की माँग में कमी हो जाने के कारण कुछ दिनों से यहाँ की सम्पन्नता को बड़ा धक्का लगा है। एक तो जहाजों तथा इंजनों में कोयले के स्थान पर तेल का प्रयोग होने लगा है दूसरे कुछ देशों में जल विद्युत का विकास हो गया है। इन्हीं कारणों से कार्डिफ के कोयला निर्यात व्यापार को बड़ी हानि हुई है।

मैनचेस्टर—यह मर्सी की सहायक इरवैल (Irwell) नदी पर स्थित है। नहर द्वारा इसका सम्बन्ध लिवरपूल से भी है। ग्रेट ब्रिटेन में इसका पाँचवां स्थान है। केन्द्रीय स्थिति के कारण यह रुई निर्यात का केन्द्र बन गया है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि लंकाशायर के ९० प्रतिशत तकुवे (Spindles) मैनचेस्टर से १७ मील की परिधि के भीतर स्थित हैं।

हैम्बर्ग—जर्मनी का सर्वप्रथम और यूरोप का एक प्रधान बन्दरगाह है। समुद्र से ७० मील दूर ऐल्ब नदी पर स्थित है। ड्रामो की सहायता से ऐल्ब नदी के मुहाने को गहरा कर दिया गया है। रेल व जलमार्ग के द्वारा ये जर्मनी के मैदानो से मिला हुआ है और इसी कारण यह जर्मनी के व्यापार का केन्द्र बन गया है। यह भी पुर्ननिर्यात केन्द्र है और गोदाम बन्दरगाह है। यहा पर काफी, कोको, चीनी, कोयला, रुई, ऊन और मिल के बने हुए सामान केवल जर्मनी के लिये ही नही बल्कि स्कैंडिनेविया और बाल्टिक राज्यो के लिये भी आयात किये जाते है। यहा से बना हुआ सामान, नमक, चीनी, पशु, डेरी की वस्तुऐं बाहर भेजी जाती है। व्यापारिक दृष्टिकोण से यह बन्दरगाह राटरडम और एन्टवर्प की टक्कर का है।

हैम्मवेसर और हसा नहरो के द्वारा इसका सम्बन्ध रूर की घाटी से हो गया है। इसलिये ऐंटवर्प और राटरडम मे होने वाला बहुत-सा व्यापार अब हैम्बर्ग द्वारा ही होने लगा है। कुक्सहैवन हैम्बर्ग का बाहरी बन्दरगाह है।

राटरडम—राइन की सहायक न्यूमास नदी पर बसा हुआ है और न्यूवाटरवे नहर द्वारा यह समुद्र से मिला हुआ है। इस बन्दरगाह पर जहाजो से माल उतारा-चढाया जाता है और राइन नदी की शाखाओं तथा भीतरी जल मार्गों द्वारा वेस्टफेलिया (Westphalia) के व्यावसायिक मिलो को तथा जर्मनी, हालैंड और बेल्जियम के भीतरी शहरो को माल भेज दिया जाता है। यद्यपि राइन नदी का स्वाभाविक द्वार राटरडम ही है परन्तु जर्मनी ने रूर प्रदेश के व्यापार को हसा नहर द्वारा हैम्बर्ग की ओर कर दिया है।

ऐन्टवर्प—बेल्जियम मे शै-ट नदी पर स्थित ससार का एक प्रमुख बन्दरगाह है। यह एक पुर्ननिर्यात केन्द्र भी है। इसके पृष्ठ प्रदेश में बेल्जियम, पूर्वी फ्रास, राइन की घाटी और रूर का कोयला क्षेत्र भी शामिल है। इस बन्दरगाह पर अधिकतर लाइनर या बोझा ढोने वाले जहाज ही ठहरते है। यह राटरडम और हैम्बर्ग की टक्कर का है और सन् १९४७ में यूरोपीय महाद्वीप के समुद्री बन्दरगाहोमे इसका स्थान सर्वप्रथम था।

मार्सेल्स—फ्रास का सब से प्रधान बन्दरगाह और द्वितीय श्रेणी का नगर यह रोन नदी पर बसा है और यूरोप के सुदूर पूर्व से व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यह रोन नदी के मुहाने से ३० मील पूर्व की ओर बसा है। रोन की घाटी के मुह पर लियोन्स की खाडी में इसकी स्थिति बडी केन्द्रीय है और स्वेज नहर के खुल जाने से इसका महत्व और भी बढ गया है। एक नाव चलाने योग्य नहर द्वारा इसको रोन से मिला दिया गया है। यहा पर गेहू, तिल्हन, चीनी, कहवा, खालें, रेशम, मसाले और पूर्वी देशो की अन्य वस्तुए आयात की जाती हैं। तेल को साफ करने और साबुन बनाने के कई कारखाने भी हैं।

उत्तरी अमरीका के बन्दरगाह

उत्तरी अमरीका के प्रमुख बन्दरगाह मांट्रियल, न्यूयार्क, बोस्टन, हेलिफैक्स, न्यूआरलियन्स, मोबाइल, गैलवेस्टन, सैन फ्रांसिस्को, ओकलैंड, सियटिल, वैनकुवर और पोर्टलैंड हैं। इनमें से प्रथम सात तो अटलांटिक सागर तट पर हैं और अन्य पांच प्रशान्त महासागर तट पर। प्रशान्त महासागर तट के बन्दरगाहों की अपेक्षा अटलांटिक महासागर तट के बन्दरगाह अधिक उपयोगी व महत्वपूर्ण हैं। इसका कारण यह है कि उनका पृष्ठ प्रदेश विस्तृत व औद्योगिक दृष्टिकोण से विशेष उन्नत है।

बाल्टीमोर—चैसापीक खाड़ी पर स्थित यह एक बड़ा बन्दरगाह व वितरण केन्द्र है। सरल व सस्ते जल-मार्गों द्वारा यह मध्य अपलेशियन प्रदेश से सम्बन्धित है। तम्बाकू, लोहा व इस्पात का सामान तथा रासायनिक खाद बनाने के कारखाने हैं और फलों को डिब्बों में भरने का धंधा भी विशेष उन्नत है। दक्षिण पूर्वी संयुक्त राष्ट्र में यह सब से बड़ा शहर है और ८०० ००० से अधिक लोग यहां रहते हैं।

बोस्टन—न्यू इंग्लैंड के विशाल औद्योगिक क्षेत्र के व्यापार का यही द्वार है। इसका पोताश्रय सुरक्षित खाड़ी पर बना है। अटलांटिक महासागर के व्यापारिक मार्गों के दृष्टिकोण से इस की स्थिति बड़ी अच्छी है। रेल द्वारा यह पोर्टलैंड, न्यूब्रसविक, मांट्रियल और न्यूयार्क से मिला हुआ है।



चित्र नं० ४४—बोस्टन का पोताश्रय एक सुरक्षित खाड़ी में है।

यद्यपि न्यूयार्क के बाद बोस्टन दूसरा महत्वपूर्ण बन्दरगाह है और यूरोप के देशों के लिये निकटतम बन्दरगाह है, फिर भी इसका मुख्य महत्व इसके उद्योग धंधों के कारण है न कि व्यापार के कारण। यहां की आबादी घनी है और इसका पृष्ठ प्रदेश धनी है। यह बन्दरगाह वर्ष भर बराबर खुला रहता है। इसका तटीय व्यापार बहुत अधिक है। आसपास के प्रदेश के वास्ते चमड़ा, खाले, रूई व ऊन का आयात होता है और चीनी, कपड़े, कागज, जूते, लोहा, व इस्पात यहां की मुख्य औद्योगिक उपज हैं।

माट्रियल—ओटावा और सेंट लॉरेन्स नदियों के संगम पर बसा हुआ है और समुद्री जहाज यहा तक आ जा सकते हैं। यह कनाडा का सब से महत्वपूर्ण बन्दरगाह है और न्यूयार्क की अपेक्षा लिवरपूल से ३०० मील पास है। विस्तार तथा सामान के दृष्टिकोण से यह बहुत बढिया बन्दरगाह है परन्तु इसका सब से बडा दोष यह है कि यह जाडो म जम जाता है। यह कनाडा का सब से बडा नगर है और इसकी आबादी ८००,००० से भी अधिक है।

न्यूआरलियन्स—मेक्सिको की खाडी से १० मील अन्दर को यह बन्दरगाह मिसीसीपी नदी के मुहाने पर बसा हुआ है। सयुक्त राष्ट्र के कपास क्षेत्र का यह सब से बडा शहर व बन्दरगाह है। मिसौरी—मिसीसीपी की घनी तलैटी ही इसका पृष्ठ प्रदेश है। पहले फर(रोयेंदार खाल) के व्यापार के लिये यह बडा महत्वपूर्ण था परन्तु अब यहा से उत्तरी पश्चिमी यूरोप को कपास, साफ किया हुआ पेट्रोल और गेहू निर्यात किया जाता है। पशु, लकडी और मक्का भी बाहर भेजे जाते है। परन्तु फिर भी बोस्टन या न्यूयार्क की अपेक्षा इसकी स्थिति कम अच्छी है विशेष कर यूरोप के साथ व्यापार के दृष्टिकोण से।

न्यूयार्क—अमरीका का सर्वप्रधान व्यापारिक बन्दरगाह है। सयुक्त राष्ट्र का आधा वैदेशिक व्यापार इसी के द्वारा होता है। तटीय व्यापार भी यहा सब से अधिक होता है। यहा पर भारी वस्तुओं को उतारने, चढाने व रखने की विशेष सुविधाएं हैं। इसीलिये गेहू, कोयला और इमारती लकडी का सब से अधिक व्यापार इसी बन्दरगाह द्वारा होता है। इसका पोताश्रय आदर्श है और रेल व नहरो द्वारा यह अपने पृष्ठ प्रदेश से सम्बन्धित है।

उत्तरी अमरीका के प्रशान्त महासागर स्थित प्रमुख बन्दरगाहो को प्राय सभी सुविधाएं हैं पर कुछ दोष भी हैं (१) इन के पृष्ठ प्रदेश छोटे तथा उनमें आबादी कम है, (२) इन तटीय प्रदेशो म औद्योगिक विकास की कमी है, (३) लम्बी दूरी तथा कठिन पहाडी मार्गो के कारण ये बन्दरगाह महाद्वीप के भीतरी भागों से अलग हैं।

संयुक्त राष्ट्र के वैदेशिक व्यापार में भिन्न भिन्न बन्दरगाहों का भाग
(१९३९)

आयात		निर्यात	
न्यूयार्क	३४ प्रतिशत	न्यूयार्क	३४ प्रतिशत
गालवेस्टन	१३ प्रतिशत	बोस्टन	६ प्रतिशत
न्यूआरलियन्स	७ प्रतिशत	फिलेडेलफिया	९ प्रतिशत
सेन फ्रान्सिस्को	५ प्रतिशत	न्यूआरलियन्स	६ प्रतिशत

सैन फ्रांसिस्को—प्रशान्त महासागर तट पर सब से महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। गोल्डन गेट के दक्षिण में यह एक पर्वतीय प्रायद्वीप पर स्थित है। रेलों तथा नावों द्वारा इसका सम्बन्ध ओकलैंड से भी है। यहां पर अनाज, तेल, फल तथा लकड़ी का व्यापार होता है। पूर्व के देशों से चाय, रेशम और चीनी का आयात भी यहीं होता है।



चित्र सं० ४५—सैन फ्रांसिस्को का पोताश्रय प्राकृतिक तथा आदर्श है। इसका प्रवेश द्वार गोल्डन गेट है।

दक्षिणी अमरीका के बन्दरगाह

यद्यपि यूरोप से इसका क्षेत्रफल दुगना है परन्तु इसके बन्दरगाह बहुत थोड़े हैं। अटलांटिक महासागर के तटीय बन्दरगाहों से व्यापार अधिक होता है। उन बन्दरगाहों के पृष्ठ प्रदेश भी अधिक विस्तृत हैं। प्रशान्त महासागर के तट के बिल्कुल करीब एंडीज पर्वत श्रेणी फैली हुई है। इसीलिए प्रशान्त महासागर के तटीय बन्दरगाहों का व्यापार सीमित है। दक्षिणी अमरीका के प्रसिद्ध बन्दरगाह रियोडि जैनिरो, ब्यूनस आयर्स, वाल परेसो, मांटी वीडियो, बाहिया, ग्वायाकिल तथा बाहिया ब्लांका है।

रियोडि जैनिरो—ब्राज़ील की राजधानी तथा प्रमुख बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय सुरक्षित एवं विस्तृत है। पृष्ठ प्रदेश विस्तृत है और उसमें सआपोलो मिनास जिरायस, पनामा तथा ट्रवमिया सम्मिलित है। रेल द्वारा यह इन सब भागों से जुड़ा हुआ है। सआपोलो, डवरावा, सेंट मरिया बेलो, हौरिजन्टो और विक्टोरिया से इसका सम्पर्क है।

ब्यूनिस आयर्स—अर्जेन्टाइना की राजधानी है और प्लाटा नदी पर बसा हुआ है। यह एक प्रमुख बन्दरगाह भी है। रियोडि प्लाटा एक विशाल खुले मुहाने की नदी है और इसकी चौड़ाई १२० मील है। नदी कम गहरी है इसलिए ड्रामों से बराबर गहरा किया जाता है। हाल में यहां पर अच्छे डाक बनवा दिये गये हैं। अर्जेन्टाइना की उपज—गेहूं, मक्का, तिलहन इस बन्दरगाह से बाहर भेजी जाती है। यह रेलों का भी एक विशाल केन्द्र है।

वालपरेसो—प्रशान्त तट पर सब से महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। यह एक अच्छी खाड़ी पर बसा है और इसकी स्थिति सैन फ्रांसिस्को की तरह है। चिली के प्रमुख खनिज प्रदेश

इसके पृष्ठ प्रदेश में आते हैं। इसलिये शोरे की खाद, ताबा, चादी और सोने का निर्यात होता है। रेलो द्वारा यह ब्यूनस आयर्स से भी मिला हुआ है। वालपरेसो से ४३ मील दक्षिण में सट अटोनियो स्थान पर एक और पोताश्रय बना दिया गया है।

माटीविडियो—युरगुवे की राजधानी व प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय विशाल है पर रेत जमने के कारण बडे-बडे जहाजो को किनारे से दो-तीन मील दूर ठहरना पडता है। वहा से नावो द्वारा सामान किनारे पर लाया जाता है।

गयाकिल—इक्वेडर का प्रमुख बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय आदर्श है परन्तु जलवायु अस्वास्थ्यकर होने से इसका पूर्ण विकास नही हो पाया है। फिर भी यहा से हाथीदात और कहवा का काफी निर्यात होता है।

एशिया के बन्दरगाह

कराची—पाकिस्तान का प्रमुख बन्दरगाह है और सिन्धु नदी के मुहाने के समीप स्थित है। अभी तक यह औद्योगिक केन्द्र नही बन पाया है। यह पश्चिमी पाकिस्तान के उपज की मडी और निर्यात का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहा से गेंहू, कपास, चावल, अनाज, तिलहन, ऊन, खाल व हड्डिया बाहर भजी जाती है। ऊनी कपडे, चीनी मशीनें, लोहा और इस्पात, खनिज तेल, कोयला और पत्थर का कोयला बाहर से आते है।

बम्बई—अपनी श्रेष्ठ भौगोलिक स्थिति और समुद्र प्राकृतिक पोताश्रय के कारण इतना प्रसिद्ध है। यह बम्बई प्रान्त में एक द्वीप पर स्थित है। इसका पोताश्रय सुरक्षित तथा विशाल है। इसका विस्तार ७४ वर्ग मील है। यह वर्ष भर बराबर खुला रहता है और माल लादने-उतारने का काम चलता रहता है। इसके पोताश्रय में पहुचने का मार्ग दक्षिण पश्चिम से है। बम्बई के धुर दक्षिण में कोलावा प्रायद्वीप एक पतली पट्टी के रूप में फैला है, और मानसूनी पवनो से इसकी रक्षा करता है। इसका पृष्ठ प्रदेश बहुत विस्तृत है और दक्षिण व मध्य भारत तथा पूर्वी पजाब इसी के भाग है। मध्य तथा पश्चिम रेलो और कई बडी सडको द्वारा यह अपने पृष्ठ प्रदेश के विभिन्न भागो से मिला हुआ है। हा, कलकत्ते के समान नाव चलाने योग्य कोई नदी या नहर इसे भीतरी भागो से नही मिलती है।

दक्षिण तथा मध्य भारत की कपास यहीं से बाहर भजी जाती है। इसके अतिरिक्त यहा से चमडा, अनाज, बीज, तिलहन और मैंगनीज बाहर भेज जाते है। मशीन, तेल, चीनी, लकडी, मोटर आदि वस्तुए यहा पर आयात की जाती है। कपडे बनाने के उद्योग-धंधे का यह एक बडा केन्द्र भी है। इसके अलावा यहा अन्य बहुत से उद्योग-धंधे भी हैं जिससे बम्बई का औद्योगिक महत्व भी स्पष्ट है।

कोचीन—बम्बई तथा कोलम्बो के मध्य यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। बम्बई की अपेक्षा यह अदन से ३०० मील पास है। तट के समानान्तर विपरीत जल प्रवाह की

व्यवस्था होने से यातायात के साधन सस्ते है और कोचीन तथा ट्रावनकोर राज्यो के बहुत से स्थानो से यह जलमार्गों द्वारा जुड़ा हुआ है। अतएव स्पष्ट है कि जब इस प्राकृतिक बन्दरगाह का पूर्ण विकास हो जायेगा, इसका व्यापार अवश्य चमक उठेगा।

मद्रास—मद्रास राज्य का प्रमुख बन्दरगाह है और एक कृत्रिम बन्दरगाह है। कृत्रिम पोताश्रय बनने से पहले मद्रास जहाजो के लिये एक खुला लंगर स्थान था और इसके किनारा पर लहर टक्कर मारा करती थी। इसका पृष्ठ प्रदेश पठारी व कम उपजाऊ है परन्तु उत्तरी भारत व दक्षिण भारत के प्राय सभी भागों से यह रेलो द्वारा जुड़ा हुआ है। यहा से मुख्य निर्यात वस्तुए मूगफली, तम्बाकू, कच्चे खनिज, खाद, कहवा और प्याज इत्यादि है। कोयला, तेल, खाद, कागज, लकडी, चीनी, धातु शीशा व शीशे की वस्तुए, रासायनिक पदार्थ मशीन और मोटर-गाड़ियाँ बाहर से यहा मगाई जाती हैं।

कलकत्ता—भारत का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है और यद्यपि समुद्र से ~~१८०~~ मील दूर हुगली पर बसा हुआ है फिर भी व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है। इसका पृष्ठ प्रदेश बड़ा ही विस्तृत है और बगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, आसाम और उडीसा सम्मिलित है। पूर्वी पजाब और दक्षिणी भारत के उत्तरी भागो का व्यापार भी इसी द्वारा होता है। यहा से बगाल, आसाम का जूट, चाय और कोयला, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के गेहू, चावल तथा तिलहन का व्यापार होता है। यहा की मुख्य आयात वस्तुए कटपीस, धातुए, खनिज पदार्थ, तेल, मशीनें, लोहे का सामान, कागज, मोटर गाड़ियाँ और शराब आदि है। जूट, चाय, चावल, दालें, खालें लाख, कच्चा लोहा, अभ्रक, मैंगनीज आदि वस्तुए निर्यात की जाती है।

यहा के पोताश्रय में अनेक सुविधाये है परन्तु हुगली नदी म जहाज चलाना मुश्किल है। कलकत्ता से ४० मील तक तो जहाजो का चलाना और भी भयानक है। बालूदार किनारे व दीवारे सदा ही गिरती रहती है। अत बराबर झामो द्वारा रेत निकाल कर नदी को गहरा करना पड़ता है।

अक्याब—ब्रह्मा के पश्चिमी तट पर केवल यही एक बन्दरगाह है। यह सुरक्षित खाडी मे बसा हुआ है परन्तु बडा ही महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। इसका पृष्ठ प्रदेश न तो बहुत उपजाऊ है और न विस्तृत ही है। इसके अतिरिक्त भीतरी भागो से रेल द्वारा सम्बन्ध नही है।

रगून—समुद्र में २४ मील दूर रगून नदी पर स्थित यह बर्मा का मुख्य बन्दरगाह है। यहा से मुख्य निर्यात वस्तु इमारती लकडी है। इसके अतिरिक्त चावल और मिट्टी का तेल भी बाहर भेजा जाता है।

सिंगापुर—स्टेट सैटिलमेंट के दक्षिण मे सिंगापुर द्वीप पर बसा है। यह द्वीप २७ मील लम्बा तथा १४ मील चौडा है। मलाया की खाडी इसे सुमात्रा से अलग करती है। इसकी आबादी ५०,००० है। समस्त मलाया द्वीपसमूह के लिये यह प्रमुख पुनर्निर्यात केन्द्र

है। यहां से टीन रबर तांबा और अनानास का निर्यात होता है। मिट्टी का तेल, तम्बाकू चीनी, लोहा, इस्पात तथा यन्त्रों का आयात किया जाता है।



चित्र नं० ४६—सिंगापुर

हांगकांग—क्वैन्टन नदी पर स्थित यह एक द्वीप है। इस नदी पर ६०० मील तक नाव व जहाज चलाये जा सकते हैं। इसलिये इसके द्वारा चीन की उपज स्टीमर जहाजों द्वारा हांगकांग तक लाई जाती है और फिर वहां से दूसरे बड़े जहाजों के द्वारा बाहर भेजी जाती है। यह एक पुनर्निर्यात केन्द्र भी है। यहां की मुख्य व्यापारिक वस्तु चावल है जो भीतरी भागों में वितरण और अन्य देशों को पुनर्निर्यात के लिए यहां लाई जाती है। चीनी कपास चाय कोयला आटा तेल और अफीम यहां के व्यापार की अन्य वस्तुएं हैं। हांगकांग का पोताश्रय विस्तृत और बना है। इसमें केवल एक दोष है कि समुद्री तूफान के समय भयंकर तरंगें उठने लगती हैं और लंगर डाले हुए जहाज अरक्षित रह जाते हैं।

व्यापारिक केन्द्रों की उत्पत्ति और विकास

व्यापारिक केन्द्र व स्थान होते हैं जहां व्यापार होता है और जहां व्यापारिक वस्तुओं का संग्रह वितरण तथा यान-परिवर्तन किया जाता है।

नगरों अथवा व्यापारिक केन्द्रों की उत्पत्ति अपने आप ही संयोगवश नहीं होती है।

घरों अथवा भवनों के अव्यवस्थित संग्रह को भी नगर नहीं कह सकते हैं। श्रम विभाजन, भौगोलिक नियन्त्रण और मनुष्य की परिस्थितियों के परिणाम व प्रभाव के फलस्वरूप ही उनकी उत्पत्ति व वृद्धि होती है। अतएव सच है कि नगरों की उत्पत्ति केवल स्थान-विस्तार में ही नहीं होती है बल्कि समय विस्तार में मनुष्य व प्रकृति की नाटक रूप क्रियाओं प्रतिक्रियाओं से नगरों का प्रादुर्भाव व वृद्धि होती है।

प्राचीनकाल में वर्तमान समय की अपेक्षा वाणिज्य कम होता था। उस समय मनुष्यों के बीच क्रय विक्रय व वस्तु विनिमय किसी एक सामान्य केन्द्र स्थान पर हुआ करता था। ऐसे ही सामान्य मिलन-स्थानों की आवश्यकता से व्यापारिक केन्द्रों का विकास प्रारम्भ हुआ। वस्तुओं के क्रय विक्रय व विनिमय में पहले वस्तुएं व्यापारिक केन्द्रों को भेजी जाती हैं। इसीलिये यातायात साधनों की सुविधा होना व्यापारिक केन्द्रों के विकास व उन्नति के लिये बहुत आवश्यक है। यातायात के साधनों का सस्ता होना भी बहुत जरूरी है।

नगरों की उत्पत्ति के लिये अनुकूल परिस्थितियां

१ धर्म में नगरों की उत्पत्ति व विकास की महान शक्ति सन्निहित होती है। बहुत से नगर धार्मिक महत्व तथा तीर्थ-स्थानों के कारण बस जाते हैं। इस तरह के नगर या तो मैदानों में या पहाड़ों पर या रेगिस्तानों में बस जाते हैं ताकि वहां जाने पर लोग दुनिया से अलग अनुभव करें। रोम, बनारस, मथुरा, हरद्वार, ल्हासा, अमरनाथ और बद्रीनाथ इसी प्रकार के नगर हैं। यातायात के साधनों की सुविधा के कारण प्रथम चार नगर प्रमुख व्यापारिक केन्द्र भी हो गये हैं परन्तु ल्हासा, अमरनाथ और बद्रीनाथ केवल तीर्थ स्थान ही रह गये।

२ स्वास्थ्यवर्धक, पर्यटन व आमोद प्रमोद के स्थान होने से बहुत से नगर उत्पन्न हो जाते हैं। जहां पर औद्योगिक केन्द्रों के खराब वातावरण से मुक्ति पाने के लिये लोग चले जाया करते हैं। मधुपुर, बाथ और रिवेरा के नगर इसी प्रकार के केन्द्र हैं।

बहुत से देशों के समुद्र-तटीय तथा पर्वतीय स्थान आनन्दप्रद होने के कारण अवकाश के दिनों में लोगों को आकर्षित करते हैं। गर्मी के मौसम में ये स्थान बड़े रमणीक हो जाते हैं और सहस्रों नर-नारी वहां का आनन्द उठाने के लिये जाते हैं।

३ खनिज केन्द्र—प्राकृतिक सम्पत्ति, विशेषकर बहुमूल्य धातुएं और खनिज पदार्थ सदैव ही मनुष्यों का ध्यान अपने क्षेत्रों की ओर आकर्षित करती हैं। फलतः बहुत से नगर उत्पन्न हो जाते हैं और उनके व्यापार की वृद्धि होने लगती है। बंगाल बिहार के कोयला क्षेत्र के आसपास ऐसे बहुत से नगर उत्पन्न हो गये हैं। ऐसे स्थानों में जलवायु या अन्य दशाओं के प्रतिकूल होने पर भी वहां की खानों में सुरक्षित बहुमूल्य धातुओं तथा खनिज पदार्थों के कारण अगम्य मनुष्य बस जाते हैं और नये नगरों का प्रादुर्भाव हो जाता है जैसा कि आस्ट्रेलिया के गर्म मरुस्थल में हुआ है।

४ **विनिमय केन्द्र**—भिन्न भिन्न वस्तुओं को उत्पन्न करने वाले दो प्रदेशों के मिलन स्थान पर भी नगरों की उत्पत्ति हो जाती है। ऐसे स्थानों पर दोनों प्रदेशों के निवासियों को अपनी उपज की वस्तुओं के पारस्परिक विनिमय के लिये सामान्य मिलन स्थान प्राप्त हो जाता है। आल्पस पर्वत श्रेणी की तलैटी में 'मिलान' इसका उत्तम उदाहरण है। यहां पर पर्वतीय व मैदानी उपज का विनिमय होता है।

५ **प्रपात नगर**—जल-विद्युत उत्पादन की सुविधा वाले स्थानों पर भी अच्छे नगर बस जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में रिचमाड, सेंट पाल, बफैलो, मीनियापोलिस इसी प्रकार के नगर हैं।

६ **वितरक व सहायक केन्द्र**—उन स्थानों पर भी जहां व्यापारिक वस्तुओं को अधिक परिमाण में संग्रह तथा वितरण करने की सुविधाएं होती हैं अच्छे नगर बस जाते हैं। इसीलिये संसार के सभी प्रमुख नगर बन्दरगाह अथवा रेलों के केन्द्र है।

७. **राजधानियाँ**—राजधानियों की उत्पत्ति व विकास पर प्राकृतिक दशाओं की अपेक्षा ऐतिहासिक व राजनैतिक आन्दोलनों का अधिक प्रभाव पड़ता है। दिल्ली, वाशिंगटन, पेरिस आदि इसके उदाहरण हैं।

८. **सुरक्षा सम्बन्धी स्थान**—स्थान विशेष की स्थिति के व्यापारिक या सुरक्षा सम्बन्धी विशेषताओं से भी नगरों का प्रादुर्भाव व विकास हो जाता है। पेशावर और इस्तान्बुल इसी प्रकार के स्थान हैं।

९ **शिक्षा केन्द्र**—आधुनिक काल में महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र होने के कारण अनेक नगर उन्नति कर रहे हैं। ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज इसी प्रकार के नगरों के उदाहरण है।

१० प्रमुख जल अथवा थल मार्गों के सम्मिलन स्थान पर भी नगरों का जन्म तथा उत्थान हो जाता है। कोलम्बो और सिंगापुर इसी प्रकार की केन्द्रीय स्थिति के कारण विकसित हो गये हैं। अमरीका का सेंट लुइस इसी प्रकार का नगर है। दो नदियों के संगम स्थान पर भी नगर बस जाते है और विभिन्न वस्तुओं के संग्रह व वितरण के केन्द्र हो जाते हैं।

११. **सैनिक शिविर**—गढ़, सैनिक रक्षा और नौसेना के आधार पर भी नगरों का जन्म हो जाता है। अदन, जिब्राल्टर इसी प्रकार के नगर हैं।

समस्त संसार में एक लाख से अधिक आबादी वाले नगरों की संख्या ६०० से अधिक है। इनमें ४० प्रतिशत से अधिक नगर यूरोप में ही हैं। नगरों में रहने वाली जनता की संख्या के दृष्टिकोण से आस्ट्रलिया सर्वप्रथम है। यहां के ४४ प्रतिशत मनुष्य नगरों में रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में २९ प्रतिशत, यूरोप में १६ प्रतिशत, दक्षिणी अमरीका में ११ प्रतिशत, एशिया में ५ प्रतिशत और अफ्रीका में २½ प्रतिशत लोग नगरों में रहते हैं।

प्रश्नावली

१ अच्छे बन्दरगाहों के लिये क्या परिस्थितियां आवश्यक होती हैं। माट्रियल, फ्रीमेन्टल, शांघाई, ब्यूनस आयरस और ट्रीस्ट का उदाहरण लेते हुए समझाइये।

२ निम्नलिखित बन्दरगाहों म से किन्हीं चार की स्थिति पर विचार कीजिये और बतलाइये कि प्रत्येक का अपने देश के व्यापार और उद्योग में क्या स्थान है ? (अ) राटरडम, (ब) याकोहामा, (ग) जीनोआ, (ड) गैलवेस्टन, (ड) ब्यूनस आयर्स।

३ एक सफल नदी बन्दरगाह के विकास के लिये कौन-सी दशाएं आवश्यक होती हैं ? कुछ प्रमुख उदाहरण भी दीजिये।

४. बन्दरगाह की पृष्ठभूमि से आप क्या समझते हैं ? संसार के विभिन्न भागों में स्थित कुछ बन्दरगाहों का उदाहरण लेकर समझाइये।

५ निम्नलिखित में से किन्हीं चार की स्थिति बतलाते हुए महत्व के कारण समझाइये।—हारबिन, मारसेलीज, कोलम्बो, मीनियापोलिस, शिकागो और मैनचेस्टर।

६ निम्नलिखित म से किन्हीं पांच की स्थिति बतलाइये और उन्नति के कारण समझाइये।—ब्यूनस आयर्स, शिकागो, डन्जिग, डरहम, होबर्ट, सेन फ्रांसिस्को, सिडनी, वैन्कूवर और याकोहामा।

७. निम्नलिखित में से किन्हीं ५ की स्थिति बतलाते हुए उनकी उन्नति व विकास के कारणों का निरूपण करिये।—अलक्जेन्ड्रिया, डरबन, मारसेल्स, न्यू आरलियन्स, शांघाई, सिडनी और वैनकुवर।

८. व्यापार केन्द्रों के विकास व उन्नति के लिये किन भौगोलिक परिस्थितियों का होना आवश्यक है ?

९ "बन्दरगाह का महत्व उसके पृष्ठ प्रदेश के विस्तार व उन्नति पर निर्भर है।" इस उक्ति पर अपने विचार प्रगट कीजिये।

१० समुद्री बन्दरगाहों की उत्पत्ति व विकास किन परिस्थितियों पर निर्भर रहती है ? भारतीय बन्दरगाहों का उदाहरण देते हुए उत्तर लिखिये।

११ निम्नलिखित म से किन्हीं ५ पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिये—राटरडम, याकोहामा, मारसेल्स, सियेटल, लिवरपूल, हैम्बर्ग, सिडनी और न्यूयार्क।

१२ 'पोताश्रय की रूपरेखा का बन्दरगाह के विकास पर बड़ा असर पड़ता है, परन्तु साधारणतया केवल आदर्श पोताश्रय होने से महत्वपूर्ण बन्दरगाह नहीं बन जाता।" इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं ?

१३ रेखाचित्रों की सहायता से निम्नलिखित स्थानों के महत्व को स्पष्ट करिये—हैम्बर्ग, न्यू ओर्लियन्स, सिंगापुर, कैन्टन।

१४ किन भौगोलिक कारणों से निम्नलिखित नगरों की वृद्धि हुई है—पैरिस, शंघाई, डैन्जिग, हैलीफैक्स।

१५ पिट्सवर्ग, शिकागो, मान्ट्रियल और विनीपेग के विकास व महत्व के कारण समझाइये।

१६ संयुक्त राष्ट्र अमरीका के गल्फ बन्दरगाहों की उत्पत्ति व महत्व के भौगोलिक कारण बतलाइए और एक रेखाचित्र खींच कर समझाइये।

१७ "बहुधा प्राकृतिक मार्गों के कारण बड़े-बड़े शहर बस जाते हैं।" इस कथन पर उत्तरी अमरीका के शहरों का उदाहरण देते हुए अपने विचार प्रगट करिये।

१८ टोकियो, न्यूयार्क, पैरिस और लन्दन के विकास और उन्नति के भौगोलिक कारण क्या हैं? रेखाचित्र देकर समझाइये।

१९ बन्दरगाह के दृष्टिकोण से डन्जिग के भौगोलिक लाभ व दोष क्या हैं? पोलैन्ड और जर्मनी के लिये इसका व्यापारिक महत्व क्या है? डन्जिग की स्थिति को एक रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

२० हैंबर और हैम्बर्ग तथा हल और लिवरपूल के भौगोलिक महत्व का तुलनात्मक विवेचन करिये।

अध्याय : : दस

यूरोप महाद्वीप

यूरोप एक छोटा-सा महाद्वीप है। वास्तव में आस्ट्रेलिया को छोड़कर यह महाद्वीपों में सबसे छोटा है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ३७,६०,००० वर्गमील है। एशिया महाद्वीप इससे पांच गुना बड़ा है। भौतिक दृष्टि से यूरोप का महाद्वीप एशिया का एक प्रायद्वीप मात्र है।

यूरोप की सभ्यता तथा व्यापार——यूरोप संसार भर में सब से सभ्य प्रदेश है। आधुनिक काल में यहां के शिल्प उद्योग तथा वाणिज्य-व्यवसाय उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच गये हैं। यूरोप की इस महत्ता में कुछ भौगोलिक कारणों ने विशेष सहयोग दिया है।

यूरोप की स्थिति——यूरोप की केन्द्रीय स्थिति से उसका औद्योगिक व व्यापारिक महत्त्व बहुत बढ़ गया है। यूरोप से दुनिया के सब स्थानों में पहुंचा जा सकता है। जिब्राल्टर का जलडमरूमध्य इसे अफ्रीका महाद्वीप से अलग करता है और डार्डनेल्स व बासफोरस के जलडमरूमध्य द्वारा यह एशिया महाद्वीप से अलग है। इन दोनों महाद्वीपों से यूरोप हमेशा अपने उद्योग धन्धों के लिए कच्चा माल प्राप्त करता रहा है। इन महाद्वीपों में भोजन तथा कच्चे माल की खपत की मुख्य मंडियां भी इन्हीं दो महाद्वीपों में हैं। यूरोप के राष्ट्रों के राज्य विस्तार के लिए भी इन महाद्वीपों में पर्याप्त क्षेत्र रहा है। अमरीका के दृष्टिकोण से भी इसकी स्थिति बड़ी ही अच्छी है।

समुद्रतट तथा जलवायु——क्षेत्रफल के विचार से इसका समुद्र-तट संसार में सब से लम्बा है। बाल्टिक सागर, भूमध्यसागर तथा काला सागर महाद्वीप के भीतरी भागों में घुसे हुए हैं जिन के कारण भारी वस्तुओं को समुद्र-मार्गों द्वारा स्थानान्तरित करने में अल्पतम व्यय होता है। ऊंचे अक्षांशों में स्थित होने के कारण इसकी जलवायु समशीतोष्ण है अर्थात् न अधिक शीत है न अधिक उष्ण ही। टुन्ड्रा तथा टैगा को छोड़कर यूरोप के सभी भागों में मनुष्य सुखपूर्वक निवास कर सकते हैं। इसकी जलवायु के कारण भी यहां के निवासियों की बड़ी उन्नति हुई है।

वन-सम्पत्ति——यूरोप के समस्त क्षेत्रफल के ३१ प्र० श० भाग पर वन फैले हुए हैं। प्रमुख वनों की मेखला स्कैंडिनेविया से यूराल पर्वत तक चली गई है। इस वन प्रदेश की सम्पत्ति का स्वीडन, फिनलैंड तथा सोवियत रूस ने पूरा-पूरा लाभ उठाया है। वनों की दूसरी महत्त्वपूर्ण पेटी का विस्तार दक्षिण जर्मनी के पठारों से यूगोस्लाविया तक फैला है।

काष्ठ सम्बन्धी स्थानीय उपभोग की अधिकता के कारण यूरोप से काष्ठ का यथेष्ठ मात्रा में निर्यात नही होता ।

खनिज सम्पत्ति की सुविधायें—कोयला—समस्त ससार की लगभग आधी खनिज वस्तुओ का उत्पादन यूरोप मे ही होता है । ग्रेट ब्रिटेन, फ्रास, बैल्जियम, दक्षिणी हालैंड, जर्मनी, दक्षिणी रूस तथा उत्तरी स्पेन मे कोयला क्षेत्र पाये जाते हैं । नारवे, स्वीडन तथा फिनलैंड की प्राचीन रवेदार चट्टानो (Crystalline rocks) तथा भूमध्य-सागरीय कछार की अत्यन्त अस्त-व्यस्त चट्टानो में वस्तुत कोयले का अभाव ही है । यूरोप में समस्त ससार का ५० प्र० श० कोयला प्राप्त होता है। यूरोप का अधिकतर कोयला ऐंथ्रेसाइट अथवा उत्तम विटुमिनिस श्रेणी का है । अधिकतर कोयला क्षेत्रो की स्थिति समुद्र-तट अथवा नदियो की उपत्यकाओ के समीप होने के कारण कोयले के स्थानान्तर करने म अल्पतम व्यय होता है ।

लोहा तथा मिट्टी का तेल—कच्चे लोहे में भी यूरोप का स्थान सर्वप्रथम है । खनिज लोहे के प्रधान क्षेत्र उत्तरी स्पेन, पूर्वी फ्रास, उत्तरी तथा दक्षिणी स्वीडन तथा रूस में क्रिवोइ रौग, कुर्स्क तथा मैगनीटोगार्स्क (Magnitogorsk) हैं । खनिज तेल के विशाल क्षेत्र काकेशस, यूराल तथा रूमानिया म हैं । यूरोप में खनिज तेल की उपलब्धि समस्त ससार की १३ ७ प्र० श० होती है । सीसा, जस्ता प्लैटिनम, ताबा, पोटाश तथा अल्यूमिनियम भी बडे परिमाण में पाये जाते हैं, परन्तु यूरोप मे खनिज तेल, सीसे (१७ प्र० श०), रागे (टिन) तथा मैंगनीज आदि खनिज पदार्थों की अत्यन्त अल्पता है। इन खनिज पदार्थों की अल्पता इस दृष्टिकोण से और भी गम्भीर है कि यूरोप में इन खनिज पदार्थों का उपभोग समस्त ससार का ५० प्र० श० होता है । परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि यूरोप में खनिज तेल की अल्पता अथवा अभाव का उद्योगो के विकास पर अधिक प्रभाव नही पडता क्योकि ससार भर में कही भी खनिज का तेल शिल्प उद्योगो के लिये शक्ति का महान साधन नही है । हा, युद्ध सम्बन्धी आवश्यकताओ तथा यातायात के साधनो के दृष्टिकोण से खनिज तेल वास्तव म महत्वपूर्ण पदार्थ है । यूरोप मे न्यूनाधिक परिमाण में चादी, सोना, रागा (Tin) तथा निकिल भी पाये जाते हैं ।

यूरोप के कृषि क्षेत्र इस के लिये सर्वोत्तम साधन है—गेहूं, जौ, जई, राई तथा सन की उपज अन्य महाद्वीपो की अपेक्षा यूरोप में सब से अधिक होती है जैसा कि निम्न तालिका मे प्रकट होता है —

	विश्वव्यापी उत्पादन (लाख क्विन्टल में)	यूरोप का उत्पादन (१९३५)
गेहूं	१३१६०	६४००
जौ	४२६०	२३३०

	विश्वव्यापी उत्पादन (लाख विवन्टल में)	यूरोप का उत्पादन (१९३५)
जई	६८७०	४१५.०
राई	४६२०	४७००
आलू	२०१८०	१८४८०
चुकन्दर	७८१०	६८६०
सन	६०	६०

कृषिप्रधान भाग तथा उपज—कृषि प्रदेशों में भूमध्यसागरीय प्रदेश, उत्तर-पश्चिमी तथा मध्य यूरोप की समतल भूमियां तथा पूर्वी निम्न भूमियां भी सम्मिलित हैं। यहां पर उच्च स्तर की सघन खेती तथा वैज्ञानिक ढंग द्वारा कृषि कार्य किया जाता है। प्रति एकड़ उपज भी अधिक ही होती है। यूरोप के लगभग ५६ प्र० श० निवासी खेती पर गुजर करते हैं अतः यूरोप को हम ग्राम्य प्रधान महाद्वीप कह सकते हैं। यूरोप में साधारण-तया संसार का आधा गेहूं उत्पन्न होता है। डैन्यूब के बेसिन से दक्षिणी यूराल तक की एक चौड़ी पट्टी में गेहूं की खेती की जाती है। यूरोप में विश्वव्यापी उत्पादन की ६२ प्र० श० जई तथा ९४ प्र० श० राई की उपज होती है। यहां पर आलू, चुकन्दर तथा जौ की उपज अन्य समस्त महाद्वीपों के योग से भी अधिक होती है। कृषि उपज का परिमाण इतना विशाल होते हुए भी सघन जन-संख्या तथा जीवन के उच्च स्तर के ढंग के कारण यूरोप को संसार के अन्य सभी भागों से भोजन सम्बन्धी तथा कृषि सम्बन्धी अन्य वस्तुएं मंगानी पड़ती हैं।

यूरोप की शिल्प प्रधानता के कारण तथा शिल्प प्रधान क्षेत्र—यूरोप संसार भर में सबसे अधिक शिल्प प्रधान भूभाग है। यहां पर शिल्प-उद्योगों के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां १८वीं शताब्दी में ही विद्यमान थीं जिनके परिणामस्वरूप औद्योगिक क्रान्ति का श्रीगणेश यहीं से हुआ। ये अनुकूल परिस्थितियां ये थीं—सम्भावित अथवा शक्ति-शाली बाजार का जुटाने के लिए यहां के निवासियों का उच्चस्तर, घरेलू उद्योग-धंधों से अनुभव द्वारा प्राप्त की हुई यहां के निवासियों की कला-कौशल संबंधी उन्नति, यंत्रों तथा यांत्रिकशक्ति की जननी यहां के निवासियों की आविष्कारक प्रतिभा तथा महाद्वीप में विशाल कोयला क्षेत्रों की विद्यमानता। आधुनिक काल में यूरोप के भारी तथा मौलिक उद्योग कोयला क्षेत्रों पर ही सीमित हैं। यूरोप के कोयला क्षेत्र सभी स्थानों में समान रूप से वितरित नहीं हैं। यहां के प्रमुख उद्योग क्षेत्र उस पट्टी पर स्थित हैं जो कि महाद्वीप के मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई है। इस पट्टी में ग्रेट ब्रिटेन, उत्तरी फ्रांस, बैल्जियम, पश्चिमी तथा मध्य जर्मनी, चैकोस्लोवाकिया, दक्षिणी पोलैंड तथा रूस का मध्य भाग सम्मिलित हैं। रासायनिक पदार्थों, सीमेंट, सूती तथा लोहे की वस्तुओं के दृष्टिकोण से तो यूरोप सर्वप्रधान है ही परन्तु मोटर गाड़ियों, विद्युत सामग्री तथा धातु निर्मित वस्तुओं के उत्पादन में भी केवल संयुक्त राष्ट्र ही इस से बढ़कर है।

यूरोप के आवागमन के साधन--गमनागमन तथा यातायात के साधनो मे भी यहाँ पर उल्लेखनीय उन्नति हुई है। यूरोप के व्यापारिक पोत समूहो का टनभार समस्त ससार का ७० प्र० श० है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि अब ग्रेट ब्रिटेन के पोतसमूहो की भार क्षमता तो घट रही है परन्तु नार्वे, इटली, फ्रास तथा हालैंड के पोतो की क्षमता तीव्र गति से बढ रही है।

यूरोप में रेल मार्ग तथा हवाई मार्ग—यूरोप के रेलमार्गों की लम्बाई २,३०,४०० मील है अर्थात् प्रति १०,००० निवासियो पर ४ ८ मील तथा प्रति ४० वर्ग मील पर १ ३ मील रेलमार्ग का औसत पडता है। भारतवर्ष मे समस्त रेलमार्गो की लम्बाई ४०,००० मील से कुछ ही अधिक है (८,००० निवासियो पर १ मील तथा १०० वर्ग मील पर २ मील रेलमार्ग का औसत है) परन्तु यूरोप में रेलमार्गों की लम्बाई सबसे अधिक नही है। संयुक्त राष्ट्र तथा कनाडा की रेलो की लम्बाई २,७०,२०० मील से भी अधिक है। हा, यूरोप में वायुमार्गों की प्रधानता अवश्य है। यहा से एशिया, अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया को नियमित रूप से वायुयान चलते हैं।

सामान्य दशा में यूरोप का व्यापार विश्व व्यापार का ५२ प्र० श० रहता है। यह व्यापार विश्वव्यापी जन-सख्या के केवल १६ प्र० श० मनुष्यो के हाथ म है तथा ससार के समस्त क्षेत्रफल के केवल ४ प्र० श० भाग पर ही सीमित है।

विश्वव्यापी विदेशी व्यापार, जनसख्या तथा क्षेत्र का प्रतिशत वितरण १९३९

प्रदेश	व्यापार प्र० श०	जनसख्या प्र श	क्षेत्र प्र श
यूरोप (सोवियत रूस के अतिरिक्त)	५२	१६	४
एशिया (सोवियत रूस के अतिरिक्त)	१८	५३	२०
उत्तरी अमरीका	१५	७	१८
लेटिन अमरीका	८	५ ५	१६
अफ्रीका	६	७	२३
आस्ट्रेलिया	३	० ५	६
सोवियत रूस	१	८	१६

यूरोप की जनसख्या का वितरण—यूरोप की जनसख्या भी ४० करोड से अधिक है। यह सख्या समस्त भूमडल के एक चतुर्थांश से भी अधिक है। यहा की जन-सख्या का वितरण सर्वत्र एक समान नही है। आइसलैंड का पर्वतीय प्रदेश, स्काटलैंड के पर्वत, स्केंडिनविया के विराट पर्वत, स्वीडन के नारलैंड, फिनलैंड का उत्तर-पूर्वी प्रदेश, उत्तरी शीतवायु वाले वन प्रदेश तथा उत्तरी ध्रुवनटीय टुन्ड्रा प्रान्त तो निजनप्राय ही है। यूक्रेन, सारविया, साइलेशिया, बोहिमिया, सैक्सनी, वेस्टफालिया, राइनलैंड, दक्षिणी हालैंड

बल्जियम, उत्तरी भाग तथा इंगलैण्ड में प्रतिवर्ग मील २६० से भी अधिक व्यक्ति रहते हैं। ये घनी जनसंख्या वाले प्रदेश हैं।

यूरोप के २० प्र० श० के लगभग निवासी (रूस तथा तुर्किस्तान के अतिरिक्त) नगरों में निवास करते हैं।

सोवियत रूस (U S S. R)

सोवियत रूस का विस्तार तथा सीमायें—सोवियत रूस का विस्तार बाल्टिक सागर से प्रशान्त महासागर तक लगभग ६,००० मील है। इसमें पूर्वी यूरोप का सम्पूर्ण विशाल मैदान तथा उससे जुटे हुए एशिया के राज्य सम्मिलित हैं। यह प्रदेश समस्त यूरोप का दुगना है तथा समस्त भूमंडल के एक सप्तमांश पर फैला हुआ है। राजनैतिक इकाई के दृष्टिकोण से केवल ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का क्षेत्रफल ही इससे बढ़कर है। इसके उत्तर में उत्तरी ध्रुव सागर तथा पश्चिम में रूमानिया, पोलैंड बाल्टिक सागर तथा फिनलैंड स्थित हैं। इसकी पूर्वी सीमा पर प्रशान्त महासागर तथा दक्षिणी सीमा पर अनेक पर्वत, पठार, मरुस्थल, अर्धमरुस्थल तथा कास्पियन समुद्र स्थित है।

सोवियत रूस में दो विषम क्षेत्र सम्मिलित हैं। छोटा क्षेत्र (समस्त का २५ प्र० श०) यूरोपीय रूस तथा दीर्घ क्षेत्र (७५ प्र० श०) एशियाई रूस का भाग है।

सोवियत रूस का समुद्र-तट तथा बन्दरगाह—सोवियत रूस का समुद्र-तट सपाट तथा देश के विस्तार के विचार से बहुत कम है। ध्रुवीय वृत्त में स्थित होने के कारण उत्तरी तट तो जमा ही रहता है परन्तु शीत ऋतु में प्रशान्त महासागरीय तट पर भी नौकासंचालन का कार्य सम्पादन नहीं हो सकता। रूस की सम्पूर्ण तट-रेखा पर मुरमान्स्क ही केवल एक ऐसा बन्दरगाह है जो जमता नहीं। यह बन्दरगाह धुर उत्तर-पश्चिम में स्थित होने के कारण उत्तरी आन्ध्र महासागरीय धारा (North Atlantic Drift) के प्रभाव से गर्म रहता है। कुछ वर्षों से इसका सम्बन्ध रेल द्वारा लेनिनग्राड से भी स्थापित हो गया है।

धुर दक्षिण को छोड़कर लगभग सारे ही रूस में शीत ऋतु में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। इसकी सीमा पर स्थित समुद्रों का यहाँ के तापक्रम तथा जलवृष्टि पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। यहाँ पर जो कुछ जलवृष्टि होती है वह प्रायः गर्मियों में ही होती है।

यनीसी नदी के पश्चिम में सम्पूर्ण प्रदेश का अधिकतर भाग समतल भूमि अथवा निम्न प्रदेश ही है। इन मैदानों की अधिकतम ऊंचाई १,००० फीट से कुछ ही अधिक है। यनीसी नदी के पूर्व स्थित प्रदेश अधिकतर उच्च भूमि अथवा पर्वतीय प्रदेश है।

सोवियत रूस का क्रमिक विवरण तथा क्षेत्रफल—सोवियत रूस एक विशाल साम्यवादी राष्ट्र है। सन् १९१७ की बोलशेविक क्रान्ति से पूर्व रूस एकतन्त्र राज्य था। वर्तमान रूस में १६ राष्ट्र सम्मिलित हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—रूस, यूक्रेन

श्वेत रूस, अदरबेजान, आर्मीनिया, जार्जिया, तुर्किस्तान, उजबेकिस्तान, ताजीकिस्तान, कज्जाक, किरजीनिया, करेला (फिनलैंड), मोल्डाविया, इस्टोनिया, लटेविया तथा लिथूनिया। इन सबको मिलाकर सन् १९४० में सोवियत रूस का क्षेत्रफल ८३,४८,००० वर्गमील था। सन् १९४५ में कर्जन रेखा से आगे पोलैंड का पूर्वी भाग भी सोवियत रूस में मिला लिया गया। इस प्रकार ६९,८८६ वर्गमील क्षेत्रफल वाले पूर्वी पोलैंड का रूस में लय हो जाना द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त यूरोप का सबसे बड़ा राज्य-परिवर्तन है।

रूस की जातियां तथा जन-संख्या में वृद्धि—रूस में अनेक जातिसमूह हैं जिनमें महान् रूसी (५४ प्र श), यूक्रेनियन (१७ प्र श), श्वेत रूसी (३ ११ प्र श), उजबेक (३ प्र श), तातारी (३ प्र श), कज्जाक (१ ८३ प्र श), यहूदी (१ ७३ प्र श), जार्जियन्स (१ ३४ प्र श) तथा आर्मिनियन्स (१ २७ प्र श) हैं। रूस की जनसंख्या में भी सदैव ही द्रुतगति से वृद्धि होती रहती है। १८५८ की ७,४०,००,००० जनसंख्या बढ़ते २ सन् १९१२ में १७८,०००,००० हो गई। १९४० की जनसंख्या १९,६०,००,००० थी जोकि समस्त संसार की ९ प्र श है। जनसंख्या का सबसे अधिक महत्वपूर्ण केन्द्र यूक्रेन है जहां रूस के २० प्र श से भी अधिक मनुष्य निवास करते हैं। यूरोपीय रूस में जनसंख्या के घनत्व का औसत प्रति वर्ग मील २५ व्यक्ति है तथा एशियाई रूस में प्रतिवर्ग मील औसत २ व्यक्ति से भी कम है। १९२६ में सम्पूर्ण सोवियत रूस की जनसंख्या के घनत्व का प्रतिवर्ग मील औसत केवल ७ व्यक्ति ही था। यद्यपि रूस में १ लाख से ऊपर जनसंख्या वाले नगरों की संख्या १५० से भी अधिक है फिर भी समस्त जनसंख्या का लगभग आधा भाग गांवों में ही बसा हुआ है।

आर्थिक विकास की प्रगति

आर्थिक विकास सबंधी योजनायें तथा देश की कृषि और उद्योग धंधों की उन्नति—१९१७ की क्रान्ति के पूर्व रूस उद्योग व्यवसाय के दृष्टिकोण से अविकसित दशा में था। अब सोवियत सरकार ने यहां पर नवजीवन का संचार कर दिया है। रूसी राष्ट्रों के आर्थिक विकास में कुछ वर्षों में ही उल्लेखनीय उन्नति हो गई है। १९२८ २९ में रूसी सरकार ने केवल कृषि सम्बन्धी आर्थिक व्यवस्था का सुधारने के उद्देश्य से ही नहीं परन्तु भारी शिल्प-उद्योगों को पुन सगठित करने के लिए भी एक पंचवर्षीय योजना का निर्माण किया। सन् १९३३-३७ के लिए भी द्वितीय पंचवर्षीय योजना बनाई तथा कार्यान्वित की गई। इस योजना का उद्देश्य देश के उद्योग धन्धों को शक्ति के साधनों तथा कच्चे माल की सुविधा वाले प्रदेशों में स्थानीयकरण द्वारा पुनर्गठित करना तथा देश के भिन्न-भिन्न भागों की श्रमिक शक्ति का पूरा-पूरा लाभ उठाकर देश को औद्योगिक दृष्टिकोण से पूर्णतया आत्मनिर्भर बनाना था। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय रूस में तृतीय पंचवर्षीय

योजना कार्यान्वित हो रही थी जिसका उद्देश्य (१) प्रादेशिक आत्मनिर्भरता की वृद्धि (विशेषकर भोजन सामग्री, खाद की वस्तुओं, ईंटों तथा सीमेन्ट इत्यादि के दृष्टिकोण से) तथा (२) औद्योगिक केन्द्रों को अधिक पूर्व की ओर केन्द्रित करना था। १९४६-५० की चतुर्थ पंचवर्षीय योजना रूस के युद्ध-ग्रस्त प्रदेशों की पुनः स्थापना के विशेष उद्देश्य को लेकर बनाई गई है। १९४१-४५ में जर्मनी के द्वारा रूसी आर्थिक व्यवस्था को गम्भीर हानि उठानी पड़ी थी। रूस को अपने इस्पात तथा कोयले की आधी तथा बचे लोहे की दो तिहाई उत्पादन क्षमता से हाथ धोना पड़ा था। इसी प्रकार तेल उद्योग को कठोर धक्का लगा और कृषि को भी पर्याप्त हानि हुई। इसके अतिरिक्त बमबारी में भवनों तथा निवासस्थानों का नाश होने के कारण ढाई करोड़ व्यक्ति गृहहीन हो गये थे। सोवियत सूचनाओं के अनुसार रूसी सामग्री की हानि यूरोप की समस्त सामग्री की आधी थी जिसका मूल्य ६७ खरब ९० अरब (679 Billion) रूबल आंका जाता है। इस योजना का उद्देश्य रूसी कृषि तथा उद्योग-व्यवसायों को युद्ध-पूर्व के स्तर पर लाना ही नहीं परन्तु उससे भी अधिक आगे ले जाना है। इस योजना में रूस के कुछ भागों के विकास पर भी जोर दिया गया है।

रूसी खेती का विस्तार—रूस ने रुई की उपज में भी यथेष्ट विस्तार कर दिया है। गेहूं, चीनी, चुकन्दर, कपास तथा चावल की उत्पादनवृद्धि तथा समुचित प्रादेशिक वितरण पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। गेहूं उत्पादन में रूस अब विश्वभर में सर्वप्रथम अग्रगण्य देश है।

रूसी खेती के प्रकार—वर्तमान काल में रूसी खेती की दो शैलियां प्रचलित हैं, कालखोज़ (अर्थात् विस्तृत सामूहिक क्षेत्र) तथा सावखोज़ (अर्थात् विस्तृत सरकारी क्षेत्र) की शैलियां। कालखोज़ प्रणाली के अनुसार कृषक लोग मिलकर सामूहिक रूप में सरकारी सहायता द्वारा कृषि करते हैं। सरकार उन्हें कृषि सम्बन्धी यंत्र, बीज तथा ट्रैक्टर इत्यादि की सहायता देती है। इस प्रकार रूस के लगभग ७५ प्रतिशत कृषक सामूहिक क्षेत्रों पर काम करते हैं। प्रत्येक सामूहिक क्षेत्र पर साधारणतया ७९ कृषक परिवार काम करते हैं। प्रत्येक सदस्य कृषक को साल के १२० दिन तक सामूहिक खेतों पर काम करना पड़ता है और शेष दिनों में अपना स्वयं का काम। सावखोज़ अथवा सरकारी क्षेत्र अधिकतर यूरोपीय रूस के दक्षिणपूर्व तथा साइबेरिया में पाये जाते हैं। इन सरकारी खेतों पर अधिकतर बीज उगाये जाते हैं, या वैज्ञानिक रीति से पशु-पालन किया जाता है या यान्त्रिक खेती के तरीकों के विषय में खोज होती है। कुल खेतिहर भूमि के १० प्रतिशत भाग में सरकारी खेत स्थित हैं।

कृषि विषयक तापक्रम तथा वृष्टि सम्बन्धी सीमायें—यहाँ के निवासियों तथा उनकी सरकार के महान प्रयत्न करने पर भी वर्तमान समय में रूस की समस्त भूमि के क्षेत्रफल में केवल १० प्रतिशत भाग पर ही खेती का कार्य होता है। यहां की खेती के अधिक

विस्तार में जलवायु सम्बन्धी कठिनाइयां बाधक सिद्ध होती हैं। ध्रुवों की ओर तो खेती के प्रसार को तापक्रम सम्बन्धी दशायें सीमित करती हैं तथा मध्य एशिया में जलवृष्टि का अभाव विशेष बाधा उत्पन्न करता है। सोवियत रूस का एक चौथाई से भी अधिक भाग पर्वतों अथवा जलवायु की प्रतिकूलता के कारण कृषि के सर्वथा अयोग्य है। दूसरे चौथाई भाग में ऐसी धरती है जो कृषि-सम्भव प्रदेशों में होते हुए भी अभी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

रूसी कृषि की विशेष रूपरेखा यह है कि यहां पर कृषि की उपज का स्थानीय उपभोग इतना अधिक होता है कि विदेशी मंडियों के लिए कृषि की उपज बहुत ही कम बचती है। दूसरी विशेष बात यह है कि रूस के उत्तरी भाग में अनाज की खपत तो बहुत अधिक है परन्तु उपज इतनी कम होती है कि इससे वहां की जनता की मांग के केवल पष्ठांश की ही पूर्ति हो सकती है।

विश्वव्यापी कृषि-उत्पादन की कुछ वस्तुओं में रूस का भाग (प्रतिशत)

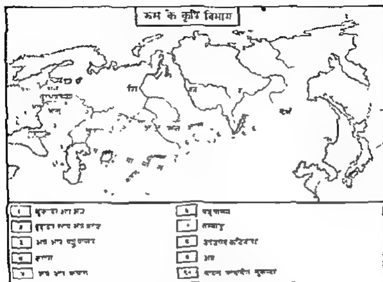
	१९१३	१९३९		१९१३	१९३९
अनाज	१६	२५	सन (Flax)	३०	५८
चुकन्दर	१०	२५	कपास	३	१०

सोवियत रूस में गेहूं के उत्पादन-क्षेत्र—रूस की प्रमुख उपज गेहूं है। यूरोपीय रूस में केवल दक्षिण के काली मिट्टी के प्रदेशों में ही गेहूं-उत्पादन नहीं किया जाता परन्तु वनों को साफ करके अधिक उत्तरी अक्षांशों में भी वैज्ञानिक विधि से इसका उत्पादन किया जाता है। पश्चिमी साइबेरिया में भी द्रुतगति से गेहूं की उपज में वृद्धि हो रही है। गेहूं-उत्पादन के अन्य प्रमुख क्षेत्र ओरेन बर्ग प्रदेश, कज्जाक तथा कारा-काल्पाक है। यद्यपि अन्य क्षेत्रों में भी गेहूं-उत्पादन के विस्तार में वृद्धि की जा रही है परन्तु रूस में अभी तक भी यूक्रेन प्रान्त ही गेहूं-उत्पादन में अग्रगण्य प्रदेश है।

रूस में चुकन्दर उत्पादन क्षेत्र—कीवा (Kiev) तथा कुर्स्क ट्राम कार्केसिया, पश्चिमी साइबेरिया तथा बैकाल झील के मध्य के प्रदेशों में चुकन्दर की खेती की जाती है। चुकन्दर उत्पादन में रूस का प्रथम स्थान है। यहां पर समस्त संसार का एक चतुर्थांश चुकन्दर उत्पादन किया जाता है। अन्य कृषि की उपज राई, जौ, सन, चाय तथा तम्बाकू हैं। रूस में संसार की आधी राई उत्पन्न होती है। यूक्रेन स्टेप प्रदेश तथा साइबेरिया में जौ का उत्पादन होता है। रूस में संसार का एक-पष्ठांश जौ उत्पन्न होता है। संसार के सन की आवश्यकता के आधे भाग की पूर्ति भी रूस द्वारा ही होती है।

कपास तथा अन्य उपज—वस्त्र व्यवसाय सम्बन्धी उपज की वस्तुओं में यहां कपास सर्वप्रधान है। वर्तमान समय में रूस अपनी सभी घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति करके भी रुई का निर्यात कर सकता है। कपास का उत्पादन (अ) जीमिया,

(ब) काले सागर के उत्तरी भागों तथा (स) अजोव सागर के उत्तरी तथा पूर्वी प्रदेशों में होता है। चाय तथा चावल भी यथेष्ठ मात्रा में उत्पन्न होते हैं।

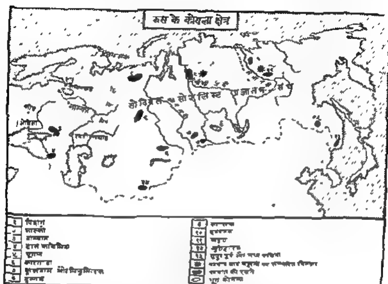


चित्र नं० ४७

अनावृष्टि तथा भूमि क्षयीकरण के रोकथाम की १५वर्षीय योजना—अनावृष्टि पर विजय प्राप्त करने तथा कृषि में क्रान्ति उत्पन्न करने के विचार से १९४८ में एक पन्द्रह-वर्षीय योजना बनाई गई है। इस योजना के अनुसार १३५ लाख एकड़ भूमि पर १९५६ तक वन लगा दिये जायगे। भूमि के क्षयीकरण को रोकने के लिए वनों का लगाना ही एक विश्वसनीय उपाय माना जाता है। इस योजना के आधीन वोलगा, यूराल, डौन तथा उत्तरी डोनेटज नदियों के किनारे-किनारे ३,२०० मील के विस्तार में वनों की विशाल रक्षा पेटियों की अनेक पंक्तियां लगाई जायेंगी। सिचाई का कार्य सम्पादन करने के लिए ४४,००० तालाब तथा बांध बनाये जायेंगे तथा उनसे नहरें निकाली जायेंगी।

रूस की खनिज सम्पत्ति—खान खोदना—खनिज पदार्थों में रूस एक सम्पन्न देश है। वर्तमान युद्ध-प्रणाली के लिए यन्त्रों तथा शस्त्रास्त्र सम्बन्धी आवश्यकताओं की सभी खनिज वस्तुओं में रूस प्राय आत्मनिर्भर है। कोयले के विश्वव्यापी उत्पादन में रूस का स्थान चतुर्थ, खनिज तेल तथा लोहे में द्वितीय तथा मैंगनीज और फास्फेट्स में प्रथम है। १९३८ से अनेक नवीन क्षेत्रों की खोज हुई तथा उनसे पूरा २ लाभ उठाया गया।

सोवियत रूस के कोयला-क्षेत्र तथा कोयले की उपलब्धि—कोयले के विश्वव्यापी उत्पादन में रूस का चतुर्थ स्थान है तथा यहा पर विश्व का दसमाश कोयला प्राप्त किया जाता है। यहा पर ६ करोड तीस लाख टन से भी अधिक कोयला निकलता है। १९१३



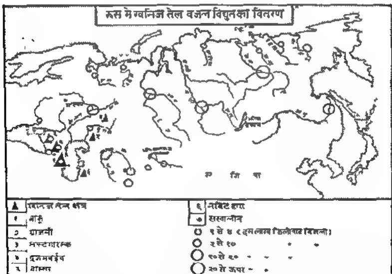
चित्र न० ४८　रूस के कोयला उत्पादक क्षेत्र

(ऐसा अनुमान है कि रूस में मास्को से कमस्कटा तक के प्रदेश में १५०० लाख टन कोयले का विस्तृत भडार है। इसका ९० प्रतिशत भाग ऐशियाई रूस में स्थित है।)

म केवल २ करोड ६० लाख टन कोयला निकाला गया था। १९१७ की राज्य क्रान्ति से पूर्व रूस के कोयले का ६० प्र श भाग से भी अधिक केवल डोनेटस के कोयला क्षेत्र से ही प्राप्त हो जाता था परन्तु वहा की कोयला पूर्ति अब केवल ६० प्र श ही है। वर्तमान रूस के प्रधान कोयला क्षेत्र कुजबुज (पश्चिमी साइबेरिया), तुगुज (यनीसी कछार), इर्कुटस्क, डोनवास, पेचौरा (यूरोपीय रूस के उत्तर टुड्रा प्रदेश में), बुरेन (आमूर के कछार मे), युकत (लीनाकछार)—कास्क (भूरा कोयला), कारागडा (एशियाई रूस के स्टेप प्रान्त में), मिनूसिस्क, मास्को, मध्य एशिया (फरगाना के दक्षिण), यूराल (स्वर्डलोवस्क तथा चेल्याबिस्क के समीप), दूर पूर्व (ब्लाडीवास्टक के समीप) तथा पातुम के समीप ट्रास काकेशस भाग मे स्थित है। एशियाई रूस स्थित कुजबुजमिनूसिस्क, इर्कुटस्क, बुरेन तथा ब्लाडीवास्टक के कोयलाक्षेत्र ट्रास-साइबेरियन रेल के लिए कोयला पूर्ति करते है।

सोवियत रूस के तेल-क्षेत्र—१९३९ तक रूस का विश्व में खनिज तेल उत्पादन करने वाले देशों में द्वितीय स्थान था। परन्तु अब यह स्थान वेनजुला को प्राप्त हो गया है। तेल उत्पादक प्रदेशों में काकेशस कैस्पियन क्षेत्र (६० प्र श) मध्य एशिया (४६ प्र श) वोल्गा यूराल (४ प्र श) तथा दूर पूर्व (११ प्र श) के क्षेत्र प्रमुख हैं। बाकू ग्रोजनीनीफ्टरगोर्स्क इशुम्बव (Ishunbavev) डौमार नबिट डाग तथा सखालीन प्रधान तेल केन्द्र हैं। यूराल के पश्चिमी पार्श्व में उत्तर की ओर दस्ता में पम के पूर्व शमोव में तथा समारा के पूर्व स्टअरलिटामक में तेल पाया जाता है। १९३८ में यहां पर तेल का उत्पादन ३२७ ३ लाख टन था जबकि १९१३ में केवल ९२ ३ लाख टन ही था। १९६२ में तृतीय पंचवर्षीय योजना से सोवियत रूस का तेल उत्पादन ३८५ लाख टन हो गया।

(१) काले सागर पर बाकू से बातुम तक तथा (२) ग्रोजनी और गाढ़नोप से रस्टोव तक औद्योगिक प्रान्तों को निर्यात के लिए तेल नलों द्वारा लाया जाता है।



चित्र न० ४९ रूस के खनिज तेल व जलविद्युत क्षेत्र

रूस में कच्चा लोहा—रूस में लोहा भी बहुत मिलता है। लोहे के विश्वव्यापी उत्पादन में इसका स्थान तीसरा है। कच्चे लोहे के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं —

(१) कुर्स्क के समीपवर्ती स्थानों में

(२) दक्षिणी यूराल में उस्क के समीप

(३) कुजु प्रदेश में तैल्बेज (Telbez)

(४) मुर्मान्स्क प्रायद्वीप

(५) यूराल में मैगनिटोगोर्स्क के समीप मैगनेट पर्वत तथा

(६) यूक्रेन में क्रिवाइ रॉग (Krivoi Rag)

१९३८ में रूस में ३ करोड़ टन कच्चा लोहा निकाला गया था। अनुमान है कि रूस में १० खरब टन से अधिक कच्चे लोहे का भंडार है। क्रिवाइराग और यूराल के क्षेत्र में लोहे का उत्पादन सब से अधिक होता है।

रूस में मैंगनीज तथा अन्य धातुयें—सोवियत रूस समस्त संसार में मैंगनीज उत्पादन का भी प्रधान क्षेत्र है। यूरोपीय रूस में दो प्रमुख स्थानों पर मैंगनीज निकलता है—(अ) जार्जिया के काकेशस में चियातूर (Chiature) के समीप तो निर्यात के लिए तथा (ब) दक्षिणी यूक्रेन में निकोपोल के समीप, (क्रीमिया के १०० मील उत्तर-पश्चिम में), स्थानीय उपभोग के लिए। मैंगनीज के अन्य क्षेत्र अधिक पूर्व की ओर मध्य वोल्गा में ओरनबर्ग, दक्षिण यूराल में बाशकीरिया तथा माउवरिया में यूजल नदी के समीप है। रूस की अन्य महत्वपूर्ण धातुयें सोना, तांबा और खनिज अल्यूमिनियम, बाक्साइट, लिग्नाइट, प्लेटिनम, सीसा तथा जस्ता है। प्लेटिनम का तो रूस प्रधान उत्पादक है। सोने की खानें यूराल में, लीना नदी के बेसिन में तथा बैकाल झील प्रदेश में है। १९३६ में रूस में विश्व का १२ प्र० श० सुवर्ण तथा २२ प्र० श० क्रोमियम उत्पन्न हुआ था। क्रोमियम की खानें यूराल, ओरनबर्ग, बाशकीरिया तथा कजाकस्तान (Kasaksky) में स्थित है।

रूसी वन-सम्पत्ति

सोवियत रूस की वन-सम्पत्ति तथा वन प्रदेश—रूस में समस्त संसार के एक-तृतीयांश से भी अधिक वन सम्मिलित है। पाइन, फर, लार्च, स्प्रूस जिनकी लकड़ी भवन सामग्री, कागज़ तथा सैलूलोज बनाने के काम आती है यहां पर विशाल मात्रा में पाये जाते हैं। काष्ठ-उद्योग की विशालता का पता इस बात से चलता है कि १९३५ में रूस में तो १,१२० लाख मीट्रिक टन लकड़ी प्राप्त हुई जबकि कनाडा में, जिसका दूसरा स्थान है, केवल ४८० लाख मीट्रिक टन ही हुई। परन्तु यहां की वन-सम्पत्ति के सम्यक उपभोग में बड़ी-बड़ी कठिनाइयां पड़ती है। वनों के भौगोलिक वितरण की विषमता, यातायात व्यवस्था का अपर्याप्त विकास, स्थानीय तथा विदेशी उपभोग के स्थानों की दूरी तथा मजदूरों की कमी रूस में विशेष बाधायें हैं। रूस के वन प्रदेशों का विस्तार २३,१०० लाख एकड़ से भी अधिक है जिसका अधिकतर भाग एशियाई रूस में स्थित है। यूरोपीय रूस के वन प्रदेश अधिकतर उत्तर में है यद्यपि काकेशस पर्वत भी भिन्न भिन्न प्रकार की बहुमूल्य लकड़ी का अपार भंडार है।

सोवियत रूस के वन प्रदेशों में बहुमूल्य लकड़ी का उत्पादन तथा वितरण

प्रदेश	क्षेत्रफल (समस्त का प्र०श०)	लकड़ी (समस्त का प्र०श०)	प्रदेश	क्षेत्रफल (समस्त का प्र०श०)	लकड़ी (समस्त का प्र०श०)
साइबेरिया तथा सुदूर पूर्व	७५	३३	काकेशस	२	२
यूरोपीय रूस का उत्तरी प्रदेश	१२	२२	दक्षिणी प्रदेश (यूक्रेन तथा श्वेत रूस)	१	६
वोल्गा प्रदेश	८	२१	प्राचीन औद्योगिक प्रदेश (लेनिनग्राड, मास्को तथा गोर्की)	२	१५

शिल्प उद्योग तथा औद्योगिक क्षेत्र

सोवियत रूस की औद्योगिक प्रगति तथा औद्योगिक प्रदेश—१ मास्को प्रदेश— आधुनिक काल में सोवियत रूस में शिल्प उद्योगों का यथेष्ठ विकास हुआ है। सोवियत संगठन का यह उद्देश्य है कि समस्त देश में उद्योगों का पुनर्वितरण कर दिया जाय जिससे कि किसी प्रदेश विशेष में उद्योगों का एकाधिकार न रहे। यंत्रनिर्माण, खेती के औजार, मोटर ट्रैक्टर, मोटर गाड़ियां, सूती वस्त्र, चमड़े की वस्तुयें, मिट्टी के बर्तन, रासायनिक पदार्थ, चीनी शोधन आदि के यहां पर बड़े-बड़े कारखाने हैं। इस रीति से सोवियत रूस का औद्योगिक संगठन केवल उन्हीं कच्ची वस्तुओं पर निर्भर रहता है जोकि रूस ही में प्राप्त हो सकती हैं। सोवियत रूस में छः प्रधान औद्योगिक प्रदेश हैं जिनमें सबसे प्रधान मास्को प्रदेश है। सूती वस्त्र के ६० प्र० श० कारीगर मास्को प्रदेश ही में केन्द्रित हैं। मास्को तथा इवानोव (Ivanove) ही दो प्रधान सूती वस्त्र केन्द्र हैं। धातु उद्योगों का स्थानीयकरण टूला, मास्को तथा गोर्की में हो गया है। देश के रासायनिक उद्योगों का ६० प्र० श० भाग मास्को प्रदेश में ही स्थित है।

२ यूक्रेन का औद्योगिक प्रदेश—दूसरा महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रदेश **यूक्रेन तथा उसके समीप का भाग है**—डोनेट्ज नदी के बेसिन से ही सोवियत रूस के ४५ प्र० श० इस्पात तथा ७० प्र० श० अल्यूमिनियम की पूर्ति होती है। यूक्रेन का डोनटज बेसिन चीनी मिलों, आटे की मिलों तथा चमड़े के कारखानों के लिये भी प्रसिद्ध है। खीवा (अनाज की मंडी), ओडेसा (खेती के औजार), क्रिवोई रॉग (लोहा तथा इस्पात), नीप्रोपेट्रोवस्क (इंजीनियरी की वस्तुओं तथा कोयले से उत्पन्न बिजली का स्टेशन), रोस्टोव (खेती के औजार), वोरोशिलोवग्राड (मोटर गाड़ी) तथा स्टालिनग्राड (लोहा तथा इस्पात) इस प्रदेश के मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं।

३ **यूराल औद्योगिक प्रदेश**—यह प्रदेश अपेक्षाकृत नवीन ही है। इस क्षेत्र में स्वर्डलोवस्क, शोलियाबिस्क (Chelyabinsk) ओरेनबर्ग तथा बाश्कीर प्रदेश सम्मिलित हैं। इस प्रदेश में सोवियत रूस का २० प्र० श० के लगभग लोहा तथा २५ प्र० श० के लगभग इस्पात उत्पन्न होता है। अन्य शिल्प उद्योगों में रासायनिक उद्योग, रेलों के कारखाने तथा शस्त्रास्त्र ढालने के कारखाने हैं। इस प्रदेश के प्रधान नगर मैगनीटोगोर्स्क निझनी टागिल (Nizhni Tagil), शोलियाबिस्क स्वर्डलोवस्क तथा उस्क हैं। इस प्रदेश को ट्रान्ससाइबेरियन रेलवे तथा कैस्पियन रेल दोनों ही जाती हैं।



चित्र न० ५०

(मास्को का औद्योगिक प्रदेश सबसे प्रधान है। यहां सूती कपड़े के ९० प्रतिशत कारखाने स्थित हैं।)

४ **कुजबुज प्रदेश**—पश्चिमी साइबेरिया में है। कुछ ही दिनों में यह महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रदेश बन गया है। कैमेरोवो (तेल शोधन तथा धातु उद्योग) स्टालिन्स्क (लोहा इस्पात तथा मोटर गाड़ियाँ) तथा टोमस्क (वायुयानों के लिए) यहां के प्रमुख औद्योगिक नगर हैं।

५ **मध्य एशिया प्रदेश**—सोवियत मध्य एशिया प्रदेश में सूती वस्त्र उद्योग रासायनिक पदार्थ लोहा तथा इस्पात आदि के उद्योग होते हैं। ताशकन्द बुखारा तथा स्टालिनाबाद मध्य एशिया प्रदेश के प्रमुख नगर हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के छिड़ने से सुदूरपूर्व का औद्योगिक प्रदेश भी महत्वपूर्ण हो गया है। यूराल पर्वत से २००० मील के अन्तर पर होने से सोवियत सरकार ने इस प्रदेश को आर्थिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर बना दिया है। सुदूरपूर्व स्थित इस प्रदेश के याकुत्स्क, विटिम कोमसोमोल्स्क आरलोवोस्क तथा ब्लागोवेश्चेन्स्क प्रसिद्ध नगर हैं।

वैदेशिक व्यापार

रूस का व्यापार—आयात तथा निर्यात की वस्तुए—विश्वव्यापी व्यापार में सोवियत रूस का भाग अपेक्षत अल्प ही है। यहा का वैदेशिक व्यापार सरकार के ही अधिकार में है। यहा से निर्यात की वस्तुओ में मुख्यकर खनिज तेल, बहुमूल्य काष्ठ, फर (Furs) तथा सन आदि कच्ची वस्तुए और गेहू, जई, मक्खन तथा खली आदि भोजन की वस्तुए सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त थोडी बहुत कपास तथा तैयार की गई वस्तुए पूर्वी देशो को जाती है। आयात की वस्तुओ मे विशेषकर तावा, रबर, ऊन तथा कपास आदि कच्ची वस्तुए सम्मिलित हैं जिन का कि अभी तक सोवियत रूस मे यथेष्ट परिमाण मे उत्पादन नही होता। इन के अतिरिक्त चाकू, उस्तरे, कैंची आदि तथा मशीनें (यन्त्र) भी विदेशो से आती है। सोवियत रूस का वैदेशिक व्यापार जर्मनी, सयुक्त राज्य (U K) तथा सयुक्त राष्ट्र से होता है। वर्तमान काल मे सोवियत रूस का एशियाई देशो से व्यापार प्रतिवर्ष उन्नति कर रहा है।

यातायात के साधन

रूसी यातायात के साधनो की महत्ता—रूसी राज्यो के विशाल विस्तार, बहु-संख्यक परन्तु बिखरी जनसंख्या, प्राकृतिक साधनों के असमान वितरण, उद्योगधन्धो की असुविधाजनक स्थिति तथा देश के दक्षिणी भागो में अन्न उत्पादन के केन्द्रों की स्थिति के कारण सोवियत रूस में यातायात के साधनो की बडी महत्ता है। गमनागमन के मुख्य साधन नदिया, रेले तथा वायुयान है।

सोवियत रूस की नदिया तथा जल-मार्ग—यद्यपि यहा की नदिया नौकासचालन के अनुकूल है तथा यातायात के लिये अधिक उपयोग मे आती हैं परन्तु रूस के लिये यह दुर्भाग्य की बात है कि वे या तो आन्तरिक समुद्रो मे अथवा उत्तरी ध्रुवीय महासागर मे गिरती हैं। इस के अतिरिक्त यहा की नदिया जाडो मे जम जाती है और ग्रीष्म ऋतु मे सूख जाती है। कही-कही पर वेग प्रवाह के कारण भी नौकासचालन में बाधा पडती है। उत्तर की ओर को प्रवाहित होने वाली नदियो के मुहानो के चारो ओर के प्रदेशो मे ग्रीष्म ऋतु के आरम्भकाल मे प्राय बाढ आ जाया करती है क्योकि इन नदियो के ऊपरी भागो मे ही सब मे पूर्व हिम पिघलना आरम्भ होता है। परन्तु यहा की नदिया लम्बी हैं। उन का ढाल समान तथा धारा मन्द है। इस कारण उनके उद्गम स्थानों तक नौका-सचालन का कार्य होता है। उनमे अनेक सहायक नदिया भी मिलती है तथा उनका मार्ग कृषि-प्रधान प्रदेशो मे होकर है। रूस की नदियो से जल-विद्युत भी बनाई जाती है।

नदियो द्वारा व्यापार—सोवियत रूस में सब मिला कर नदियो का जलमार्ग १,८०,००० मील से भी अधिक है। यूरोपीय रूस की मुख्य नदिया डवाइना, नीपर, डौन तथा वोल्गा हैं। वोल्गा नदी सब से लम्बी है और इसके कछार मे रूस का आधे से अधिक

भाग स्थित हैं। साइबेरिया की मुख्य नदियां ओबी, यनीसी, लीना तथा अमूर हैं। रूस की नदियों द्वारा यहां का केवल १० प्र. श. व्यापार होता है। इन नदियों से जल-विद्युत शक्ति भी उत्पन्न की जाती है। रूस की नदियों से २८०० लाख किलोवाट जलविद्युत उत्पन्न की जा सकती है। इनसे सिंचाई का भी सम्यक प्रबन्ध हो सकता है परन्तु इस दिशा में अभी तक कुछ विशेष प्रयत्न नहीं किये गये हैं।

उत्तरी मार्ग की योजना—कुछ वर्षों से सोवियत रूस उत्तर ध्रुवीय सागर के किनारे २ एक उत्तरी मार्ग स्थापित करने में प्रयत्नशील है। यद्यपि इस मार्ग पर वर्ष में कुछ ही महीनों तक नावें चलाई जा सकती हैं परन्तु इसके द्वारा मुरमान्स्क, लैनिनग्राड तथा ब्लाडीवोस्टक के मध्य सीधा जल-मार्ग सम्बन्ध स्थापित होता है।

रूस के रेल मार्ग—रूस में ६०,००० मील के लगभग रेल-मार्ग हैं जिसमें आर्थिक तथा युद्ध-सम्बन्धी दोनों ही प्रयोजन सिद्ध होते हैं। रेल मार्गों का केन्द्र बिन्दु मास्को रेलों द्वारा यूराल प्रदेश तथा रूस के अन्य उत्तर-दक्षिणी उद्योग क्षेत्रों से सम्बन्धित है।

रूस के हवाई मार्ग—वायु-यातायात में रूस ने आश्चर्यजनक उन्नति की है। रूस के सभी महत्वपूर्ण नगर वायुमार्गों द्वारा परस्पर सम्बन्धित हैं। यहां पर तीन प्रधान वायु-मार्ग हैं जो मास्को से ही आरम्भ होते हैं। प्रथम वायु मार्ग तो कजन, स्वर्डलोस्क, ओमस्क, इर्कुटस्क चीटा तथा खबरोस्क होता हुआ प्रशान्त महासागर स्थित ब्लाडीवोस्टक तक जाता है। दूसरा वायुमार्ग रीगा होता हुआ मास्को से स्टाकहोम तक जाता है। रीगा पर इसका सम्बन्ध जर्मन वायु-मार्ग से है। तीसरा मार्ग ओरनबर्ग तथा ताशकन्द होता हुआ मास्को से काबुल तक जाता है।

व्यापारिक केन्द्र

मास्को—रूस का सब से महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र मास्को मोस्क्वा (Moskva) नदी से ऊपर की ओर एक उच्च स्थान पर स्थित है। मास्को रूस की राजधानी ही नहीं है अपितु रूसी मार्गों का भी महान ग्रन्थिल केन्द्र है। यहां से भिन्न २ दिशाओं को रेलमार्ग जाते हैं। यहां पर सूती वस्त्र, धातु तथा चमड़े की वस्तुओं और कागज बनाने के कारखाने हैं। यहां की जनसंख्या ४० लाख से भी अधिक है।

लैनिनग्राड—नीवा नदी पर स्थित है। यह बाल्टिक सागर का बन्दरगाह है। पश्चिमी यूरोप को जाने के लिये यह रूस का प्राकृतिक द्वार है। वर्ष में पांच मास के लगभग यह जमा रहता है। जलपोतों के निर्माण के लिए यह प्रसिद्ध स्थान है विशेषकर यहां पर हिमत्रोटक पोत बनाये जाते हैं। यहां पर कागज, सैलूलोज तथा अल्यूमिनियम का उद्योग भी होता है। यहां की जनसंख्या ३० लाख से ऊपर है।

अन्य प्रसिद्ध नगर—**बाकू**—कैस्पियन सागर पर स्थित विश्वविख्यात तेल उत्पादन का केन्द्र है। यहां से निर्यातार्थ तेल पाइप द्वारा काले सागर पर स्थित बातुम में

भेजा जाता है। यहा की जनसंख्या लगभग १० लाख है। वोल्गा नदी के मुहाने पर स्थित अस्ट्राखान (Astrakhan) मछली व्यवसाय का बन्दरगाह है। कोला प्रायद्वीप के उत्तरी तट पर स्थित केवल मुरमांस्क ही हिममुक्त बन्दरगाह है। इसका सम्बन्ध रेल द्वारा लैनिनग्राड से है। काले सागर के उत्तरी तट पर स्थित ओडेसा दक्षिणी रूस का महान बन्दरगाह है। यहा से गेहू का निर्यात होता है। नीपर नदी पर स्थित खोवा महत्वपूर्ण अनाज की मंडी है। यहा की जनसंख्या ५ लाख है और यह यूरोप के प्राचीन नगरों में से है। अज़ोव सागर के उत्तर-पूर्वी तट के समीप डोन नदी पर रोस्टोव (Rostov) एक औद्योगिक केन्द्र है। यहा पर कृषि यंत्र बनाये जाते हैं। यूक्रेन की राजधानी खारकोव में ट्रैक्टर, मोटरकार तथा कृषियंत्रो का निर्माण होता है। यहा की जनसंख्या ५ लाख से भी अधिक है। नीपर नदी-स्थित नीप्रोपीट्रोवस्क मे इंजीनियरी (यंत्र-निर्माण) के कारखाने हैं। नीपर नदी पर एक बांध बनाया गया है। जहा से उद्योग-व्यवसायो के लिये जल-विद्युत शक्ति की पूर्ति होती है। यहा की जन-संख्या ४ लाख है।

स्विटजरलैंड (Switzerland)

महाद्वीपीय स्थिति—यह एक महाद्वीपीय राज्य है जिसका समुद्र से सीधा संबंध नही है। स्विटजरलैंड के पश्चिम मे फ्रांस, उत्तर तथा पूर्व में जर्मनी तथा दक्षिण में इटली है। इस प्रकार की भौगोलिक परिस्थिति के फलस्वरूप स्विटजरलैंड के लिये अनेक महत्व-पूर्ण आर्थिक तथा राजनैतिक विशेषतायें उत्पन्न हो गई है।

स्विटजरलैंड की समष्टि में व्यष्टि—यूरोप भर मे स्विटजरलैंड सब से अधिक पहाडी देश है। विस्तार के विचार से यह यूरोप का सब से छोटा राज्य है। यद्यपि इसका समस्त क्षेत्रफल १६००० वर्गमील ही है परन्तु यहा की जनसंख्या ४० लाख से भी ऊपर है। इस राज्य मे तीन प्रधान भाषायें बोली जाती हैं। ७० प्र श मनुष्य जर्मन भाषा, २० प्र श फ्रांसीसी भाषा तथा ६ प्र श इटालियन भाषा बोलते हैं। भाषाओं की यह विभिन्नता पारस्परिक विरोध अथवा मतभेद का कारण होने के स्थान पर स्वयं स्विटजरलैंड की जीवन स्थिति का मूलाधार ही सिद्ध हुई है। स्विटजरलैंड ने राष्ट्रीयता संबंधी उन कठिन समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान कर लिया है जो कि आज अनेक अन्तर्राष्ट्रीय उलझनो के मूल में व्याप्त है। अत यह राज्य विभिन्न जाति समुदायो की त्रिवेणी (संगम-स्थान) बन गया है।

स्विटजरलैंड का २२ प्र श क्षेत्रफल अनुपजाऊ अथवा बंजर भूमि है। देश की उर्वरा भूमि के ४० प्र श भाग पर कृषि भूमि तथा पर्वतीय चारण भूमि (Pastures) स्थित है तथा २२ प्र श. भूमि मे वन प्रदेश है।

स्विटजरलैंड में कृषि तथा पशुपालन व्यवसाय—गेहू, राई, जई, जौ, मक्का, आलू तथा तम्बाकू मुख्य उपज की वस्तुये है। फल तथा अंगूरो की व्यापक कृषि होती है। स्वि-

टजरलैंड में पशुचारण भूमि का बड़ा ही महत्व है जिन में कि पशुपालन तथा दुग्धशालाओं का कार्य किया जाता है। इन धंधों का विकास स्विटज़रलैंड की आय का एक महत्वपूर्ण साधन हो गया है। दुग्ध तथा मांस के उत्पादन के अतिरिक्त पशु निर्यातार्थ परम्परागत पशु-पालन का प्राचीन धंधा भी विशेष महत्व का है। स्विटज़रलैंड की दुग्धशाला सम्बन्धी मुख्य उत्पादन वस्तु पनीर है जिस का कि घरेलू तथा विदेशों में पर्याप्त मात्रा में उपयोग होता है। पनीर का व्यापार बर्न, लूसर्न, ज्यूरिच तथा सेंट कैलन में होता है।

जल विद्युत उत्पादन केन्द्र—खनिज पदार्थों के दृष्टिकोण से देश निर्धन है। कोयले का तो पूर्णतः अभाव ही है। परन्तु स्फटिक, ऐस्फाल्ट, लवण तथा शीशा बनाने का रेत यहां पर मिलता है। असंख्य जल प्रपातों तथा नदी की तीव्र धाराओं की विद्यमानता के कारण जल-विद्युत शक्ति के उत्पादन में बड़ी सुविधायें हैं तथा इसी शक्ति से कोयले के अभाव की पूर्ति की जाती है। उद्योग धंधों तथा यातायात के साधनों में भी जल विद्युत का ही प्रयोग किया जाता है। स्विटज़रलैंड में जल विद्युत उत्पादन के ३१ विशाल केन्द्र हैं जिन में से प्रत्येक में २०,००० हय शक्ति से भी अधिक विद्युत उत्पादन होता है।

उद्योग व्यवसाय तथा उनकी प्रवृत्ति—स्विटज़रलैंड के औद्योगिक विकास में विशाल उन्नति हुई है। यहां पर मुख्यतः शिल्प उद्योग की वस्तुओं का ही निर्माण होता है। यातायात के साधनों की अपर्याप्तता तथा अपव्ययता और कोयले तथा कच्ची वस्तुओं के अभाव को दूर करने के लिये यहां के उद्योग व्यवसायों की प्रवृत्ति अधिकतर उन्हीं वस्तुओं के निर्माण की ओर है जिन में कुशल कारीगरों की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे व्यवसायों में विद्युत व्यवसाय, रासायनिक व्यवसाय तथा घड़ी बनाना ही महत्वपूर्ण है। स्विटज़रलैंड निर्मित शिल्प वस्तुओं का संसार की मंडियों में बड़ा आदर है।

उद्योग व्यवसाय —

(अ) वस्त्र व्यवसाय
(ब) यंत्र तथा धातु व्यवसाय
(स) घड़ी बनाना तथा अन्य सहयोगी व्यवसाय
(द) रासायनिक वस्तुओं का व्यवसाय
(ड) भोजन की वस्तुओं तथा तम्बाकू व्यवसाय

वस्त्र व्यवसाय—वस्त्र व्यवसाय में रेशमी वस्त्र उद्योग का विशेष स्थान है। यह उद्योग भौगोलिक दृष्टिकोण से दक्षिणी स्विटज़रलैंड में ही सीमित है। चार पंचमांश रेशमी वस्त्रों का निर्माण, निर्यात के लिये ही होता है। यहां के बने रेशमी वस्त्रों की संसार भर में बड़ी मांग रहती है। इस उद्योग का केन्द्र ज्यूरिच है। रेशमी फीते बेसल (Basle) में बनते हैं। फीते की अधिकतर मांग की पूर्ति यहां से होती है तथा यहां के फीता उत्पादन का ९५ प्र० श० भाग निर्यात किया जाता है। वस्त्र व्यवसाय में चिकन-लैस, मोजे, बनियान, गोटा-लैस आदि अन्य व्यवसाय भी हैं जिन की इस देश में उतनी ही प्रधानता है जितनी

कि वस्त्र व्यवसाय की है।

धातु सम्बन्धी उद्योग तथा घड़ी का यत्र व्यवसाय—धातु निर्मित वस्तुओ मे स्विटज़रलैंड में अल्यूमिनियम, ताबा, पीतल, निकिल तथा अन्य अनेक धातुओ की वस्तुये बनाई जाती है। बड़े परिमाणो में अल्यूमिनियम की छड़ बननी है। **घड़ियो का निर्माण तो यहा का सबसे पुराना तथा सबसे समृद्ध व्यवसाय है।** आधुनिक काल म यह व्यवसाय जूरा प्रान्त म होता है तथा इस में ६०००० व्यक्ति काय करते है। ६५ प्र श घड़िया निर्यात की जाती है। यह व्यवसाय यहा पर विश्व भर म सब से प्रसिद्ध है।

भोजन पदार्थो के व्यवसाय की प्रधान वस्तुये जमा हुआ दूध, चाकलेट पनीर, बिस्कुट इत्यादि है।

यहा के अलौकिक दृश्य तथा छटा 'आय का स्रोत' है—पर्यटन सम्बन्धी तथा होटलो का धधा भी काफी महत्वपूर्ण है। स्विटजरलैंड के अतिरिक्त ससार भर मे अन्य कोई भी देश इतने सीमित क्षेत्र म चित्ताकर्षक दृश्यो तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की भिन्न २ प्रकार की अलौकिक छटायें नही प्रदर्शित करता है। इसीलिये तो इस देश को "**यूरोप का विहार-स्थल**" कहते है। इसकी सीमाओ में यूरोप की लगभग प्रत्येक भाति की जलवायु है। ससार भर के भिन्न २ प्रदेशो के वर्णन यहा की छटा का आनन्द उठाने तथा विहार करने के लिए आते है जिस से इस देश को बहुमूल्य आय होती है।

आवागमन के साधन विद्युत्-रेलें—स्विटजरलैंड का समुद्र से सीधा सम्बन्ध नही है। यहा पर रेल-मार्गों की महान उन्नति हुई है। इगलैंड तथा बैल्जियम को छोड़ कर रेल-मार्गो मे इसका तीसरा स्थान है। रेल मार्गो का योग ३३७८ मील है और प्रति सहस्र जन-सख्या पर इसका औसत ८५ मील है। रेलो के विषय में सब से महत्वपूर्ण बात उनमे विद्युत् द्वारा सचालन की प्रगति है। स्विटजरलैंड की वर्तमान ७० प्र श रेलो का सचालन विद्युतशक्ति से ही होता है। रेल तथा सडको का सयुक्त मार्ग १०००० मील के लगभग है। वायु-यातायात का भी विकास किया जा रहा है।

प्रसिद्ध नगर—बर्न—आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन का केन्द्र तथा राजधानी है। यहा की जनसख्या १०००० है। यह मार्गो का केन्द्र भी है। यहा का सबसे बड़ा नगर **ज्यूरिच** है। यह रेलो का केन्द्र ही नही वरन् एक महान व्यावसायिक नगर भी है। यहा पर सूती, रेशमी वस्त्र तथा मशीने (यत्र) बनाये जाते है। **बेसिल** (**Basle**) राइन के मोड पर स्थित है तथा स्विटजरलैंड, जर्मनी, और फ्रांस के मध्य व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र है। अन्य नगरो के नाम जिनेवा, विन्टरथर (Winterthur), लौसेन तथा लौसिन है।

हगरी (Hungary)

यह एक छोटा-सा राज्य है जो डैन्यूब क्षेत्र मे स्थित है। इसका क्षेत्रफल ३५,८९५ वर्गमील तथा जनसख्या ८६,८४,००० है। हगरी निवासी अथवा मगयार

लोगो की उत्पत्ति एशिया में है। १९१९ तक हंगरी का देश आस्ट्रिया हंगरी के युग्मराजतंत्र मे सम्मिलित था। प्रथम महायुद्ध के फलस्वरूप हंगरी एक स्वाधीन प्रजातंत्र राज्य बन गया परन्तु उसका दो तिहाई प्रदेश रूमानिया, चीकोस्लोवाकिया तथा यूगोस्लाविया मे बँट गया।

जलवायु तथा भौतिक दशायें—हंगरी एक समतल देश है जिस में होकर डैन्यूब नदी तथा उसकी सहायक द्रव, सव, तीसा तथा कोरोस नदियां बहती है। इस देश के चारो ओर आल्पस पर्वत की श्रेणियां फैली हुई है। यहा की जलवायु महाद्वीपीय है। यहा पर गर्मियों म गरमी तथा सर्दियों में सरदी पड़ती है। ग्रीष्म ऋतु में थोड़ी वर्षा भी हो जाती है। इस जलवायु के अनुसार यह प्रदेश एक घास का मैदान है जहा अनाज उत्पन्न हो सकते है।

खेती की उपज—**हंगरी की समतल उर्वर भूमि शताब्दियों तक यूरोप का अन्न-भडार रही है।** खेती योग्य ८० प्र श भूमि में गेहू तथा मक्का उत्पन्न होता है। यद्यपि हंगरी म गेहू की पर्याप्त उपज होती है परन्तु प्रति एकड उपज मध्यम श्रेणी की है। गेहू के विशाल उत्पादक देशो म प्रति एकड उपज का औसत ३० बुशल रहता है। परन्तु हंगरी में २० बुशल से अधिक कभी नहीं रहा। अन्य प्रमुख उपज की वस्तुये राई, जौ, जई, चुकन्दर, आलू, तम्बाकू इत्यादि है। जनसख्या के दो तिहाई मनुष्यो का निर्वाह कृषि से होता है। कुछ वर्षों से अंगूर के उद्यानो की बडी उन्नति हो रही है तथा यहा पर १० करोड गैलन म अधिक मदिरा बनाई जाती है।

खनिज पदार्थ—कभी भेडो का पालना एक विशेष धधा था परन्तु अब इसका ह्रास हो रहा है। खनिज पदार्थो का भी अभाव है। दक्षिण पश्चिम मे स्थित पैक्स (Pecs) के समीप उत्तम श्रेणी का कोयला मिलता है। यहा से ७० लाख टन कोयले की प्राप्ति होती है। फिर भी जर्मनी, पोलैंड तथा चीकोस्लोवाकिया से कोयला मगाने की आवश्यकता पडती है। सालगोतार्जन के समीप कुछ कच्चा लोहा मिलता है परन्तु धातु-शोधन सम्बन्धी व्यवसाय की आवश्यकता पूर्ति के लिये यथेष्ट परिमाण में बहुत-सा माल मगाना पड़ता है।

उद्योग-धंधे—यहा पर अधिकतर वे ही उद्योग होते है जिन का आधार कृषि है। इस म आटा पीसना, चीनी शोधन तथा मद्य निर्माण आदि सम्मिलित हैं। आटा पीसने का उल्लेखनीय केन्द्र बुडापेस्ट है। इसी कारण इसे यूरोप का 'मिनियापोलिस' कहते है। कुछ वर्षों में सूती वस्त्र व्यवसाय की भी स्थापना हो गई है। चमडा बनाना तथा यंत्र निर्माण अन्य उद्योग हैं।

समुद्री प्रवेश द्वार की समस्या—हंगरी में लगभग ३७,५०० मील लम्बी सडके है जोकि वर्षा ऋतु म दलदली हो जाती है तथा वर्तमान यातायात के लिये निरर्थक है। यहा की नदियां सभी नाव्य है तथा वे ही यातायात के महत्वपूर्ण साधन है परन्तु सब मे

प्रधान समस्या समुद्र में प्रवेश की है। निम्न डैन्यूब द्वारा जाने के लिये रूमानिया जाना पड़ता है। यद्यपि हंगरी को व्यापार की सुविधा हैम्बर्ग द्वारा ही है परन्तु यह दूर पड़ता है और इसके लिये भी अन्य देशों में होकर जाना पड़ता है। सब से गंभीर दोष यही है कि समुद्र में प्रवेश के लिये कोई भी सीधा द्वार नहीं है। यहां का व्यापार हैम्बर्ग, फ्यूम तथा स्पिलट के द्वारा होता है और ये तीनों ही बन्दरगाह हंगरी के बाहर स्थित हैं।

सन १९३९ में हंगरी ने रुथनिया को (जीनकर) मिला लिया। यह पहले चीकोस्लोवाकिया का बन्दरगाह था। परन्तु यह बन्दरगाह पहाड़ी है और यहां के निवासी भी निर्धन हैं—यहां के निवासियों का मुख्य धंधा भेड़ों का पालना है।

प्रमुख नगर—बुडापेस्ट राजधानी तथा प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है। इस में दो नगर सम्मिलित है जो नदी के दोनों ओर स्थित हैं। बुडा डैन्यूब के बाय और पैस्ट बायें किनारे पर है। यहां यूरोप भर में सब से अधिक आटे की चक्कियां हैं। यहां बिजली के यंत्र भी बनते हैं। यह रेलों का प्रसिद्ध जंकशन है तथा मैदानों की उपज को एकत्रित करने के लिये प्राकृतिक केन्द्र है। यहां की जनसंख्या दस लाख से कुछ अधिक है। जगेद (Szeged) एक ग्राम्य नगर है। यहां पर चीनी शोधन और अर्क तथा मद्य खींचने के उद्योग होते हैं।

बाल्कन राज्य (The Balkan State)

रियासतें तथा धंधे—रूमानिया, यूगोस्लाविया, बल्गारिया, अलबानिया तथा ग्रीस और तुर्किस्तान मिल कर बाल्कन राज्य कहलाते हैं। ये राज्य अधिकतर पर्वतीय हैं। यहां का व्यापार नगण्य ही है। कृषि कार्य तथा पशु-पालन यहां के निवासियों के दो ही प्रधान धंधे हैं।

बलगारिया (Bulgaria)

सीमा-विस्तार तथा निवासी—यह देश निम्न डैन्यूब के दक्षिण में स्थित है। यह बाल्कन प्रायद्वीप का पूर्वी भाग है। इसके उत्तर में डैन्यूब, दक्षिण में यूनान, पूर्व में काला-सागर तथा पश्चिम में यूगोस्लाविया है। इसका क्षेत्रफल ४०,००० वर्ग मील तथा जन संख्या ५५ लाख है। बल्गारिया में स्लाव तथा मंगोल जाति के मिले-जुले निवासी रहते हैं।

भू-प्रकृति तथा जल-वायु—इस देश में भिन्न २ प्रकार की बनावट, मिट्टी तथा जल वायु पाई जाती है। अधिकतर जल-वायु महाद्वीपीय श्रेणी की है। दक्षिण की जलवायु प्रधानतः भूमध्यसागरीय है। देश का लगभग आधा उत्तरीय भाग पर्वतीय प्रदेश है किन्तु धुर उत्तर का भाग मैदान है। यहां का सब से अधिक उर्वर तथा उत्पादनशील प्रदेश बाल्कन पर्वतों के दक्षिण में है। इस प्रदेश में मेरिट्जा नदी बहती है। इस देश के सारे दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग में रोडोप पर्वत फैले हुए हैं।

खनिज पदार्थ—बल्गारिया यूरोप के सब से निर्धन तथा अनुन्नत प्रदेशों में से है। इस में पर्याप्त खनिज सम्पत्ति भरी है। यहा पर तांबे, मैंगनीज़, कोयले, सीसे, जस्ता, स्फटिक तथा ग्रेनाइट की खानें हैं। परन्तु ईंधन के अभाव, यातायात की असुविधा तथा पूंजी की अल्पता के कारण खनिज पदार्थों को खोद कर निकाला नहीं जाता। यहा पर विदेशी कम्पनियों के द्वारा ही न्यूनाधिक परिमाण में तांबे तथा कोयले को निकालने का कार्य होता है।

वन-सम्पत्ति तथा रेशम के कीड़े पालना—ओक, बीच तथा अन्य प्रकार के पतझड़ के वृक्षों से जो कि पर्वतीय प्रदेशों में विस्तृत रूप में पाये जाते हैं निर्यातार्थ बहुमूल्य लकड़ी प्राप्त होती है। यहा पर रेशम के कीड़ों को पालना तथा कोये प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण उद्योग है।

कृषि, फल तथा गुलाब के पौधों का उत्पादन—यहा के निवासियों का मुख्य धंधा कृषि है। ८० प्र० श० से अधिक मनुष्यों के जीवन निर्वाह का प्रत्यक्ष साधन कृषि उद्योग ही है। कृषि उपज की वस्तुएं में गेंहू, मक्का, जौ, तम्बाकू, चुकन्दर, अंगूर की बेलें तथा फल महत्वपूर्ण हैं। दक्षिण-पश्चिम की उपत्यका में फलों की बाहुल्यता है। कपास तथा जई की भी खेती होती है। बाल्कन पर्वत के पहाड़ी ढालों पर इत्र तथा सुगंधित तेल बनाने के लिये गुलाब के पौधे लगाये जाते हैं। काज़नलिक (Kazanlık) की घाटी गुलाब के पौधों के लिये एक महत्वपूर्ण प्रदेश हो गया है। गुलाब के फूलों से इत्र बनाना कभी यहा का महत्वपूर्ण तथा प्रसिद्ध व्यवसाय था। अब भी न्यूनाधिक रूप में इत्र बनाया जाता है। पशुचारण सबंधी धंधे भी यहा पर महत्वपूर्ण हैं।

रेल मार्ग तथा समुद्री मार्ग—यहा पर रेल-मार्गों का विकास नहीं हुआ है। बेल्ग्रेड से दो रेल-मार्ग चलते हैं—एक तो उत्तर में बुडापेस्ट को जाता है तथा दूसरा दक्षिण में सालोनिका तक जाता है। तीन समुद्री मार्ग हैं—(१) सोफिया से काले सागर पर स्थित वार्ना तक बाल्कन पर्वत के उत्तरी पार्श्व के साथ-साथ, (२) फिलिपोपोलिस से काले सागर पर स्थित बुर्गास तक बाल्कन पर्वत के दक्षिणी पार्श्व के साथ-साथ तथा (३) मेरित्ज़ा की घाटी से दीद अगाच (Dede Agach) तक जो कि बल्गारिया का सबसे समीप का बन्दरगाह है।

व्यापार—यहा का वैदेशिक व्यापार बहुत ही कम है। तम्बाकू, मक्का, गुलाब का इत्र तथा अंडे ही निर्यात की प्रमुख वस्तुएं हैं।

निर्यात		आयात	
जीवित पशु	३.६ प्र० श०	निर्मित वस्तुएं	६१.७ प्र० श०
भोजन की वस्तुएं	८०.३ प्र० श०	कच्ची वस्तुएं	८३.३ प्र० श०
कच्ची वस्तुएं	५२.३ प्र० श०	भोजन की वस्तुएं	८० प्र० श०
निर्मित वस्तुएं	३.५ प्र० श०		

कुर्गास, वार्ना, सोफिया तथा फिलियोपोलिस प्रमुख व्यापारिक नगर हैं। काले सागर पर स्थित वार्ना तथा बुर्गास से तम्बाकू अंड गुलाब का इत्र मक्का तथा रेशम का निर्यात किया जाता है। शीत ऋतु म डैन्यूब नदी हिम से जम जाती है अत इन दिनो यथष्ट व्यापार नही हो सकता। सोफिया राजधानी है। यही बल्गारिया का सबसे बडा नगर है। यहा की जनसख्या २ लाख ८० हजार है।

अलबानिया (Albania)

स्थिति, विस्तार तथा निवासी—यह छोटा-सा ऊबड-खाबड देश बाल्कन देशों म सबसे निधन तथा अनुन्नत है। इस देश का क्षेत्रफल लगभग ११००० वर्गमील है। युगोस्लाविया तथा यूनान के मध्य यह देश एडियाटिक सागर पर स्थित है। तटीय प्रदेश के अतिरिक्त सारा ही देश पहाडी है। इसकी जनसख्या १०००००० है जिसम अधिकतर मुसलमान ह। यहा के निवासी प्रधानत गडरिये हैं। ये लोग वीर तथा बदला लेने वाले हैं। तटीय मैदानो की जलवायु भूमध्यसागरीय है जहा पर फल तथा खाद्यान्न उत्पन्न किये जाते है। देश म रेलमार्गों का नितान्त अभाव है सडक भी अपर्याप्त हैं तथा देश का अधिकतर भाग बजर तथा निरथक है।

महत्वपूर्ण स्थिति—इटली देश की एडी के समीप स्थित होने से अलबानिया का देश एड्रियाटिक सागर के द्वार पर युद्धसबधी महत्त्व का स्थान है।

अलबानिया के खनिज सबधी साधन अभी तक अज्ञात अवस्था म हैं। एक तैल-क्षेत्र का पता लगा है तथा उस पर काय भी आरम्भ हो गया है। टिरेन (Tirane) राजधानी है तथा मुख्य तटीय समतल भूमि के आतरिक छोर पर देश के मध्य में स्थित है। इसकी जनसख्या तीस सहस्र (३०,०००) से कुछ ऊपर है। सिकुतरी (Scutari) सबसे विशाल नगर है। इसकी स्थिति सिकुतरी झील के समीपवर्ती मैदान म है। यहा के खरबूज प्रसिद्ध हैं। डुराज्जो (Durazzo) यहा का मुख्य बन्दरगाह है।

यूनान (Greece)

स्थिति, तटरेखा तथा निवासी—यूनान सब से पूर्व का पहाडी प्रायद्वीप है जो कि दक्षिण की ओर भूमध्यसागर म घुसा चला गया है तथा साथ ही साथ क्रीट तथा अन्य असख्य द्वीप इजियन तथा आयोनियन सागरो में फैले है। यह भी एक पर्वतीय प्रदेश है। इस प्रायद्वीप का तट इतना छिन्न भिन्न तथा कटानपूर्ण है कि यहा के निवासी सदैव से ही मुख्यत नाविक तथा व्यापारी रहे है। देश का कोई भाग भी समुद्र से ८० मील से अधिक अन्तर पर नही है। यहा की जलवायु आदश रूप से भूमध्यसागरीय है परन्तु यहा पर जलवृष्टि पर्याप्त नही होती जिसके फलस्वरूप पानी की अल्पता के कारण कृषि काय म कठिनाई पडती है।

यूनान देश में तीन प्राकृतिक विभाग हैं—(अ) प्रायद्वीप, (ब) मैसिडोनिया के तटीय प्रदेश तथा (स) द्वीप समूह।

प्रायद्वीप में पशुपालन तथा अंगूर की उपज—(अ) प्रायद्वीप नितान्त पहाड़ी भाग है। तटीय भाग निम्न भूमियां हैं। यहां के निवासियों का मुख्य उद्यम भेड़ बकरी तथा पशु-पालन है। यूनान में संसार के अन्य किसी भी देश की अपेक्षा प्रति वर्ग मील बकरियों की संख्या अधिक है। प्रायद्वीप के तटीय भागों में भूमध्यसागरीय उपज होती है। मोरिया के पश्चिमी तट पर प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में अंगूरों की विस्तृत कृषि होती है। अंगूरों को सुखाकर मुनक्का के रूप में बाहर भेज दिया जाता है। **दाख या मुनक्का के निर्यात में यूनान सबसे प्रधान देश है।** कभी-कभी तो अंगूरों का उत्पादन इतना अधिक होता है कि अंगूर की कृषि पर सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है।

(ब) मैसिडोनिया के तटीय प्रदेश उपजाऊ होने के कारण कृषि उद्योग के लिये बड़े महत्वपूर्ण हैं। गेहूं, तम्बाकू, चावल जैतून तथा अंगूरों की यहां पर कृषि होती है। पूर्वी मैसिडोनिया की भूमि तथा जलवायु सर्वोत्तम तम्बाकू उत्पादन के लिये बड़ी उपयुक्त है।

यूनान की कृषि—यद्यपि यूनान एक कृषि-प्रधान देश है परन्तु यहां की भूमि के एक-पचमांश पर ही खेती हो सकती है। यहां की खेती के ढंग प्राचीन हैं अतः प्रति एकड़ उपज भी अत्यल्प होती है। यूनानी उद्योगों में सबसे महत्त्वपूर्ण उद्योग जैतून का तेल उत्पादन है। यूनान में ऐसा कोई भाग नहीं है जहां जैतून न पाया जाता हो।

यूनान के खनिज पदार्थ—खनिज क्षेत्र अधिक तो नहीं है परन्तु जो भी है वे बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। यहां के प्रमुख खनिज पदार्थ हैं—नमक, सीसा स्फटिक तथा कच्चा लोहा। इनके अतिरिक्त जस्ता, तांबा, चांदी तथा सुरमा भी पाये जाते हैं। अटिका की लारियम नामी प्राचीन खानों का सीसा बहुमूल्य होता है परन्तु मैगनसाइट अपेक्षतः महत्त्वपूर्ण है जिसका वार्षिक उत्पादन लगभग ५०,००० टन के होता है। क्रोमियम की खानें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध में यूनान की मैगनेसाइट तथा क्रोमियम की खानों से जर्मनी को बड़ी सहायता मिली थी। युद्ध सामग्री के लिये इन दोनों धातुओं की बड़ी आवश्यकता होती है और जर्मनी में उन दिनों इनका अभाव हो गया था।

यूनान के उद्योग व्यवसाय—यूनान के शिल्प उद्योग नितान्त अविकसित दशा में हैं। यहां के उद्योगों में ऊनी-सूती वस्त्रों का निर्माण, मदिरा तथा जैतून का तेल और रासायनिक पदार्थों का व्यवसाय सम्मिलित है। सिगार तथा सिगरेट भी बनाये जाते हैं। मदिरा तथा फलों का बड़े परिमाण में निर्यात होता है। खाद्य पदार्थों के लिये आत्मनिर्भर न होने के कारण यूनान को फलों और मदिरा के बदले में भोजन की वस्तुएं मंगानी पड़ती हैं।

यूनान की सड़कें तथा रेलमार्ग—यूनान में अब १,५०० मील से भी अधिक लम्बे रेलमार्ग बन गये हैं परन्तु ये मार्ग अधिकतर पूर्वी भाग में ही सीमित हैं। प्रायद्वीप के उत्तर

पश्चिमी भाग में उनका नितान्त अभाव है। सड़क अपर्याप्त है तथा दुर्गम दशा में है। यहां की नदियां भी छोटी तथा वेग प्रवाहयुक्त हैं अतः यातायात के लिए निरर्थक हैं।

यहां का प्रत्येक प्रमुख नगर समुद्रतट पर स्थित है अतः यहां के निवासी मुख्यतः नाविक रहे हैं। यूनान की समृद्धि समुद्री व्यापार पर ही अवलम्बित है। भोजन सम्बन्धी वस्तुओं के लिए यूनान आत्मनिर्भर नहीं है इसीलिए भोजन की वस्तुएं अधिकतर दक्षिणी देशों से समुद्र द्वारा लाई जाती हैं। अतः यूनान के लिए समुद्री व्यापार का बड़ा ही महत्त्व है।

यूनान के प्रसिद्ध नगर—**अथेन्स**—राजधानी है। तीन सहस्र से अधिक वर्षों से यह नगर प्रसिद्ध रहा है। इसकी जनसंख्या ८ लाख के लगभग है। पिरास (Pirocus) यूनान का प्रमुख बन्दरगाह है। यूनान का सबसे महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र सालोनिका है। यह नगर दक्षिणी यूरोप का एक प्रमुख बन्दरगाह है। इसकी स्थिति थैसालोनिका खाड़ी पर है। बाल्कन के अन्य प्रमुख नगरों से इसका सम्बन्ध रेलों द्वारा है। यहां से अनाज, पशु सम्बन्धी वस्तुएं (खाल, हड्डी इत्यादि) तथा तम्बाकू का निर्यात होता है। इसके द्वारा वस्त्र तथा लोहे की वस्तुओं का आयात किया जाता है। लारीसा, स्टावरोस, कालाबाका, एलेक्जैंड्रोपोलिस तथा कालामोटोन अन्य प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र स्थान हैं।

यूनानी द्वीपसमूह—(१) **क्रीट** एक लम्बा-पतला पर्वत प्रधान द्वीप है। इसकी स्थिति ईजियन सागर के मुहाने पर है। यहां की जलवायु उष्ण तथा आर्द्र है। यहां के निवासी अधिकतर कृषि कार्य करते हैं। यहां से मदिरा तथा तेल का निर्यात होता है।

(२) **आयोनियन द्वीप**—यह द्वीपसमूह यूनान के पश्चिमी तट के परे है। इसमें अनेक छोटे पहाड़ी द्वीप जैसे कार्फ्यू, ल्यूकस, कैफालोनिया, इथाका, जान्ते (Zante) तथा काईथरा (Kythera) सम्मिलित हैं। फलों का उत्पादन महत्त्वपूर्ण होता है।

(३) **ईजियन द्वीपसमूह**—यह द्वीपसमूह अधिकतर अनुपजाऊ है परन्तु यहां बड़ी मात्रा में मदिरा बनाई जाती है।

यूगोस्लाविया (Yugoslavia)

यूगोस्लाविया की स्थापना—यूगोस्लाविया में डन्यूब के मैदान का दक्षिणी भाग तथा प्रायद्वीप का मध्य तथा उत्तर-पश्चिमी भाग सम्मिलित है। इसका अविकृत नाम सर्ब्स, क्रोआटो तथा स्लावनों का राज्य (Kingdom of Serbs, Croats and Slovenes) है। प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८) के पश्चात् सर्बिया तथा मान्टीनीग्रो के वासीनिया, डालमाटिया तथा क्रोटिया को मिलाकर (जो कि पहिले आस्ट्रिया के साम्राज्य के भाग थे) एक संयुक्त राज्य की स्थापना की गई जिसका नाम यूगोस्लाविया पड़ा। यूगोस्लाव शब्द का अर्थ है दक्षिणी स्लाव। इस देश का क्षेत्रफल लगभग ९६,००० वर्ग मील है तथा इन सब की जनसंख्या १ करोड़ ६० लाख है।

भूमि की बनावट—इस देश का अधिकतर भाग पहाड़ी है। पूर्व के पर्वत तो बाल्कन पर्वतों के भाग है तथा पश्चिमी पर्वत दिनारिक आॅल्पस है। दिनारिक आॅल्पस चूने के बने हैं। एड्रियाटिक तट के समीप तथा उत्तर पूर्व में जो निम्न भूमियां हैं वे हंगरी के मैदान का ही क्रमिक विस्तार है।

कृषियोग्य भूमि तथा उपज की वस्तुएं—पहाड़ी भूमि के कारण कृषियोग्य भूमि का बड़ा अभाव है। अधिक से अधिक एक चतुर्थांश भाग पर ही कृषि हो सकती है। कृषि की मुख्य उपज की वस्तुएं गेहूं मक्का तम्बाकू तथा चावल इत्यादि हैं। खेती करने के ढंग भी अनुन्नत दशा में है फलतः प्रति एकड़ उपज भी अत्यल्प है। यहां के ८० प्र० श० मनुष्य कृषक हैं इसी कारण अधिकतर मनुष्य निर्धन हैं।

पशुपालन, खनिज सम्पत्ति तथा वन-सम्पत्ति—युगोस्लाविया में सहस्रों मनुष्यों के जीवन-निर्वाह का मुख्य आधार पशुचारण तथा पशुपालन ही है। देश के पूर्वी भाग में पशु—भेड़-बकरी तथा सुअर पाले जाते हैं। देश में पर्याप्त खनिज सम्पत्ति के साधन हैं परन्तु अभी तक अविकसित दशा में है। वनों की उपज यहां की आय का प्रमुख साधन है। युगोस्लाविया के एक-तिहाई मनुष्यों को ओक, बीच तथा पाइन के वनों से भोजन तथा वस्त्रों की प्राप्ति होती है।

युगोस्लाविया की सड़कें तथा रेल—देश की सड़कों तथा रेलों की बड़ी शोचनीय दशा है। १,५५,६२५ वर्ग मील के क्षेत्रफल में केवल ७,२५० मील लम्बा ही रेलमार्ग है। रेलें सरकार के अधिकार में हैं। बेलग्रेड रेलों का प्रधान केन्द्र है। यहां से दक्षिण पूर्व में इस्तम्बोल तक तथा उत्तर में बुडापेस्ट तक रेलें जाती हैं। दक्षिण की ओर इसका संबंध सालोनिका से भी है। युगोस्लाविया में २५,००० मील लम्बी सड़कें हैं जिनका औसत १.५ मील प्रति सहस्र मनुष्य पड़ता है।

औद्योगिक तथा व्यापारिक अवनति—**आयात तथा निर्यात**—आटा पीसने तथा मदिरा खींचने के अतिरिक्त इस देश में अन्य किसी प्रकार का शिल्प उद्योग नहीं होता। देश की औद्योगिक तथा व्यापारिक अवनति के अनेक कारण हैं जैसे—(१) कोयले का अभाव, (२) आवागमन के साधनों की कमी (३) देश की पहाड़ी प्रकृति तथा राज्य शासन की दुर्बलता। परन्तु देश में भावी उन्नति की महान् आशायें हैं। यहां से बहुमूल्य लकड़ी, मक्का, सुअर, अन्डे, मांस तथा पशुओं का मुख्यतया निर्यात होता है। मशीनें, वस्त्र तथा सूती माल, लोहे का सामान तथा भोजन की वस्तुओं का आयात किया जाता है।

प्रसिद्ध नगर—**बेल्ग्रेड**—युगोस्लाविया की राजधानी है। यहां की जनसंख्या २ लाख ४० सहस्र है। इसकी स्थिति आन्तरिक उर्वर समतल भूमि में डेन्यूब तथा सार्वे (Sarve) नदियों के संगम पर है। यह नगर रेलों का भी केन्द्र है। जग्रेब इस देश का

प्रमुख शिल्प उद्योग केन्द्र है। यह नगर मार्वे नदी पर स्थित है। यहा की जनसख्या १,८५,००० है। बेल्ग्रेड, स्प्लिट तथा फियूम मे भी यह रेलो द्वारा मिला हुआ है। स्प्लिट की स्थिति एड्रियाटिक तट प्रदेश म है अत यह एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। दो अन्य बन्दरगाह कोटोर तथा सुसाक है। फियूम यद्यपि इटली के अधिकार मे है परन्तु युगोस्लाविया के उत्तर पश्चिमी भाग का प्राकृतिक द्वार है।

यूरोपीय तुर्किस्तान (Turkey in Europe)

स्थिति, विस्तार, जनसंख्या—इस देश का विस्तार स्काटलैंड के आधे के लगभग है। इसकी स्थिति मेरिट्जा नदी तथा काले सागर के मध्य म है। बासफारस तथा दर्रेदानियाल के जलडमरूमध्य तथा मारमोरा सागर इसे एशियाई तुर्किस्तान से पृथक् करते है। इसका क्षेत्रफल केवल ११,००० वर्ग मील तथा इसकी जनसख्या २० लाख के लगभग है। तुर्किस्तान की स्थिति राजनैतिक तथा युद्ध सबधी दृष्टिकोण मे बड महत्त्व की है कारण यह है कि रूस से भूमध्यसागर म जाने का मार्ग यही होकर है।

सत्रहवी शताब्दी मे यूरोपीय तुर्किस्तान म समस्त बाल्कन प्रायद्वीप, रूमानिया तथा हगरी सम्मिलित थ। इस शताब्दी के अन्तिम दिनो के साथ २ तुर्कों की शक्ति का भी ह्रास होने लगा। गत महायुद्ध के उपरान्त यह साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया तथा आज का यूरोपियन तुर्किस्तान, तुर्की प्रजातन्त्र का, एक अग मात्र रह गया है जिसका केन्द्र एशिया मे है।

निवासी तथा धधे—यूरोपीय तुर्किस्तान के उत्तर तथा दक्षिणी भाग पर्वतीय है तथा पूर्वी भाग समतल मैदान है। यहा पर कृषि उद्योग तथा भेड-बकरी पालने का धधा विशेषतया होता है। निवासी अधिकतर निर्धन तथा पुरानी लकीर के फकीर है।

नगर—इस्तम्बोल (कुस्तनतुनिया)—इस प्रजातन्त्र का सबसे बडा नगर है। इसकी स्थिति बडी महत्वपूर्ण है। यहा पर काले सागर तथा भूमध्यसागर के मध्य के समुद्री मार्गों को यूरोप तथा एशिया-माइनर के मध्य के थलमार्ग द्वारा पार करना पडता है। तुर्किस्तान की राजधानी न रहने के कारण अब इसकी महत्ता बहुत कुछ घट गई है। इस्ताम्बोल की जनसख्या ५ लाख से भी अधिक है।

गलीपोली (गली-बोलू)—प्राकृतिक समुद्री बेडे की छावनी है तथा दर्रेदानियाल की रक्षा करता है। यह काले सागर और भूमध्यसागर के बीच २०० मील लम्बे जलमार्ग की रक्षा करता है। इस जलडमरूमध्य से हर प्रकार के जहाज आ सकते है। स्वेज और पनामा नहर के समान यह एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है। चूकि काला सागर और भूमध्यसागर के बीच अन्य कोई मार्ग नही है इसलिये इसका व्यापारिक व युद्ध सबधी महत्व बहुत अधिक है और इसी कारण ग्रेट ब्रिटेन व रूस दोनो ही देश इस मार्ग मे समान रूप से दिलचस्पी रखते है।

ग्रेट ब्रिटेन तो इसलिये इस मार्ग पर आधिपत्य रखना चाहता है क्योंकि पूर्व में उसके साम्राज्य से सम्पर्क रखने के लिये तथा स्वेज मार्ग की सुरक्षा के दृष्टिकोण से इस पर अधिकार रखना बड़ा ही आवश्यक है।

रूस एक विशाल राज्य है परन्तु उसका किसी भी खुले हुये विस्तृत समुद्र में निकास नहीं है। रूस की सारी नदियाँ कैस्पियन और काले सागर में गिरती हैं जो सब ओर से स्थल खंड से घिरे हुये हैं। इसलिये केवल इस मार्ग से ही उसके व्यापारिक व सैनिक जहाज काले सागर से भूमध्यसागर में आ जा सकते हैं।

नीदरलैंड्स (Netherlands)

हालैंड (Holland)

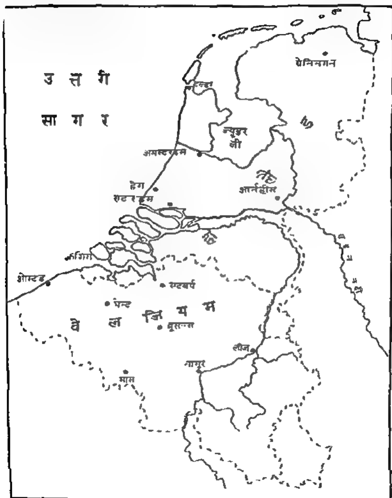
निम्न प्रदेशों में समुद्र से अपहृत भूमि—यूरोप के सबसे छोटे देशों में से हालैंड एक है। यहाँ की जनसंख्या ८० लाख तथा क्षेत्रफल १२,५७६ वर्गमील है। जनसंख्या के घनत्व का औसत प्रतिवर्ग मील ६८७ व्यक्ति पड़ता है। यह औसत यूरोप में दूसरे नम्बर का है। यह देश निम्नभूमि का है तथा इसका एक-चतुर्थ भाग तो वास्तव में समुद्र तल से भी नीचा है। हालैंड की ४० प्र० श० भूमि तो समुद्र से बलपूर्वक छीनकर खेती योग्य बनाई गई है। समुद्रतट के निम्न भागों में समुद्र से सुरक्षित रखने के लिए बाँध या पुश्ते बाँध गये हैं। पुनर्प्राप्त भूमि अथवा पोल्डरलैंड कृषि के लिए बड़ा ही उपयुक्त प्रदेश है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व जुइडर जी को थल में परिणत कर भूमि प्राप्त करने की योजना कार्यान्वित की जा रही थी। इस योजना के द्वारा ८,००० वर्गमील उपजाऊ समुद्री भूमि के प्राप्त होने का अनुमान था।

जनसंख्या का घनत्व—जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक —एक वर्गमील में ६५६ व्यक्ति से भी अधिक है। प्रतिवर्ग मील जनसंख्या के विचार से हालैंड का संसार भर में चतुर्थ स्थान है।

निवासियों पर समुद्र का प्रभाव—इस देश के मध्य वाल लेक तथा राइन नदियाँ बहती हैं। यहाँ का समुद्रतट बहुत ही छिन्न भिन्न है। समुद्रतट तथा धरातल की प्रकृति के कारण ही डच (Dutch) लोग मुख्यतया व्यापार-कुशल जाति बन गये हैं। डच लोगों ने अन्य देशों में प्रवास किया तथा उष्णकटिबंध स्थित सम्पन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना की। ३०० वर्ष पूर्व हालैंड की समुद्री-शक्ति सभी देशों से बढ़कर थी। यहाँ की जलवायु समुद्री है तथा पूर्वी इंग्लैंड की जलवायु के सदृश है।

कृषि उद्योग—यहाँ पर विशेष रूप से गहरी खेती की जाती है। यहाँ की ३० प्र० श० से अधिक भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है। खेती (कृषि) की उपज की मुख्य वस्तुएँ गेहूँ, जौ, जई, राई, सन, चुकन्दर तथा आलू हैं।

खनिज पदार्थ के अभाव का कारण—देश की अधिकतर भूमि कछार (नदियों द्वारा लाई हुई) होने के कारण देश में खनिज पदार्थों का अभाव है । केवल लिम्बर्ग में जोकि दक्षिणी हालैंड में है थोड़ा कोयला निकलता है ।



चित्र नं० ५१

हालैंड में अधिकतर वे ही उद्योगधंधे होते हैं जिनमें (१) कच्ची वस्तुओं तथा ईंधन की अपेक्षा कुशलता की अधिक आवश्यकता हो (२) जो कृषि उपज का

प्रत्यक्ष परिणाम हो तथा (३) जो उपनिवेशो की माग पर आधारित हो ।

हालैंड के उद्योग-व्यवसाय—यहाँ का उल्लेखनीय उद्योग पशुपालन तथा भिन्न-भिन्न वस्तुओं का बनाना है। भूमि की उर्वरता तथा जलवायु की आर्द्रता के कारण यह देश दुग्धशालाओं के लिए आदर्श प्रदेश बन गया है। हालैंड (Netherlands) **में प्रतिवर्ग मील पशुओं की संख्या संसार के अन्य सभी देशों से अधिक है।** यहा पर दूध से मक्खन, पनीर जमाया हुआ (गाढा) दूध तथा दूध का चूर्ण व्यापक रूप में बनाया जाता है। यहा पर दुग्धशालाओं का इतना अधिक विकास हो गया है कि यहाँ के निवासियों को अपने भोजन के लिए अन्न उगाने की भी सुध नही है। आधुनिक समय में मनुष्यो के लिए भोजन की वस्तुएँ तथा पशुओं के लिए खली इत्यादि अन्य देशो से मगाई जाती है। डच लोग अपनी सम्पन्नता के लिए अधिकतर दुग्धशाला-उद्योग पर ही आश्रित रहते है।

अन्य उद्योग—यहाँ के अन्य उद्योगो में मछली पकडना, चाकलेट तथा तम्बाकू की वस्तुयें बनाना और हीरो का काटना सम्मिलित है। समुद्र तल से नीचे के भागो में देश के समतल होने के कारण यहा की चक्कियो तथा शिल्पशालाओ में पवनशक्ति के उपयोग की सुविधा है।

यातायात के साधन—देश की समतल भूमि के कारण सभी दिशाओ में यातायात की सुविधायें है। रेल तथा सडक मार्गों की अपेक्षा जलमार्ग अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ की नदियों तथा नहरो के जलमार्गों का विस्तार ४,००० मील से अधिक है।

व्यापार, आयात तथा निर्यात—इस देश में विशाल परिमाण में पुर्ननिर्यात व्यापार होता है। यहा के व्यापारी पोतसमूह का ससार में आठवाँ स्थान है। यहाँ से निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ—जमा हुआ दूध, पनीर तथा मक्खन इत्यादि है। यहा पर कोयला, सूती वस्त्र तथा यत्र इत्यादि का आयात किया जाता है। हालैड को भोजन की वस्तुएँ जुटाने वाला देश जर्मनी है। हालैंड की एक-चौथाई आयात की वस्तुओं की पूर्ति जर्मनी ही करता है। यहाँ की वस्तुओं के प्रधान ग्राहक भी सयुक्त राज्य (U. K) तथा जर्मनी है। इनके अतिरिक्त इन्डोनेशिया, बैल्जियम, सयुक्तराष्ट्र तथा अर्जेन्टाइना आदि देशों से भी व्यापार होता है।

ऐम्सटर्डम—यहा का सबसे विशाल नगर तथा राजधानी है। यह जुइडर जी (Zuider Zee) के पश्चिम में स्थित है। उत्तरी सागर से यह नगर नहर द्वारा मिला हुआ है। इस नगर के द्वारा इन्डोनेशिया से व्यापार होता है तथा यहा पर रबर, कोको, रागा (टिन), चावल, मसाले, तम्बाकू तथा गोलो (Copra) का आयात किया जाता है। यहा पर हीरो की कटाई तथा पालिश का कार्य भी महत्वपूर्ण होता है।

राटरडम—यह हालेंड का प्रसिद्ध पोताश्रय है। यह राइन नदी की एक शाखा पर स्थित है तथा समुद्र से इसका सम्बन्ध 'हुक आफ हालैंड' Hook of Holland

नामक स्थान पर "New-waterway" नाम की नहर द्वारा होता है। राइन के कछार की उपज के लिए यह नगर एक प्राकृतिक द्वार है। हालैंड का तीन-चतुर्थांश व्यापार इसी पोताश्रय द्वारा होता है। यहां से निर्यात की मुख्य वस्तुयें सन तथा सन के वस्त्र, दुग्धशाला की वस्तुयें तथा पशु हैं तथा आयात की प्रमुख वस्तुयें चावल, चीनी, नील, कोयला तथा मिट्टी का तेल है। राटरडम का अधिकतर व्यापार जर्मनी तथा इन्डोनेशिया से होता है। दि हेग—राजधानी है। यहां पर बर्तनों का काम अधिक होता है। यह नगर अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। अन्य केन्द्रीय स्थान यूट्रैक्ट, हार्लम तथा ग्रोनिंगन हैं।

बैल्जियम (Belgium)

बैल्जियम यूरोप का एक छोटा-सा देश है। यह फ्रांस तथा हालैंड के बीच स्थित है। यहां पर गर्मियों में गर्मी तथा जाड़ों में ठंड पड़ती है।

बैल्जियम का उत्तरी भाग एक मैदान है। इसमें तटीय प्रदेश सम्मिलित हैं। बैल्जियम का तट ४० मील लम्बा तथा सपाट है। रेतीले तट के बिल्कुल नीचे का १० मील के लगभग चौड़ा प्रदेश 'पोल्डर' अथवा समुद्र से प्राप्त दलदली भूमि है जोकि कृषि के लिए प्रसिद्ध हो गया है। उत्तरी बैल्जियम के फ्लैंन्डर्स प्रदेश में समतल भूमि तथा निम्न-पहाड़ियां सम्मिलित हैं। बैल्जियम के पशुओं की सबसे अधिक संख्या इसी प्रदेश में है तथा कुछ उद्योग-धन्धों का भी विकास हुआ है। बैल्जियम का मध्य भाग उत्तरी फ्रांस के कोयला-क्षेत्र तथा उर्वर मैदान का ही विस्तार है। इस भाग में शैल्ट नदी का कछार तथा इस सीमा का समीपवर्ती कैम्पाइन प्रदेश भी सम्मिलित है। मध्य भाग कृषि प्रधान प्रदेश है। खनिज केन्द्रों का भी विकास होता जा रहा है। दक्षिणी बैल्जियम में आर्डिनीज के पठार हैं जोकि मध्यमवर्ग तक कट गये हैं।

बैल्जियम की जनसंख्या अत्यन्त घनी है। यहां ८० लाख मनुष्य रहते हैं। प्रतिवर्ग मील जनसंख्या ७१२ है जोकि यूरोप भर में सबसे अधिक है। फ्लैन्डर्स में तो जनसंख्या ६६० व्यक्ति प्रतिवर्ग मील तक है। इतनी घनी जनसंख्या का जीवन-स्तर ऊंचा उठाने के लिए १६ वीं शताब्दी के मध्य में इस देश को उद्योग-व्यवसायों को अपनाना पड़ा। यहां के भिन्न-भिन्न उद्योग-व्यवसायों को खनिज क्षेत्रों तथा आन्तरिक और वैदेशिक दोनों प्रकार के ही व्यापारों की असाधारण सुविधाएं प्राप्त हैं। (१) समुद्री व्यापारिक मार्गों के केन्द्रबिन्दु के समीप की स्थिति, (२) फ्रांस, जर्मनी, हालैंड आदि तीन व्यापारी देशों से सम्बन्ध तथा (३) इंग्लैण्ड की समीपता के कारण यहां पर अनेक व्यापारिक सुविधायें हैं। इनके अतिरिक्त यह देश राइन नदी के मुहाने के समीप स्थित है जोकि यूरोप महाद्वीप की प्रधान व्यापारिक नदी है।

कृषि, दुग्धशाला तथा खनिज उद्योग—बैल्जियम में खेती वैज्ञानिक ढंग से होती है। यहां गहन खेती की जाती है परन्तु यहां का उत्पादन आवश्यकता से कम ही है। भूमि

की अल्पता के कारण दुग्धशाला का धंधा महत्त्वपूर्ण हो गया है। कोयला, लोहा तथा जस्ता इत्यादि इस देश में पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। देश के उत्तर-पश्चिमी भाग में लोहा तथा कोयला पास ही पास मिलने हैं अत वहा पर लोहे तथा इस्पात के बड़े-बड़े कारखाने है। उद्योग-धंधो के प्रमुख केन्द्र मोन्स, चार्लोआय, समूर तथा वरवियर्स हैं। लीम नदी के बेसिन के उत्तर-पूर्वी भाग म भी कोयला-क्षेत्रों का पता लगा है। जस्ते की प्राप्ति म संयुक्तराष्ट्र तथा कनाडा के उपरान्त बैल्जियम का तीसरा स्थान है। बैल्जियम के उपनिवेशों में खनिज पदार्थों की बाहुल्यता के कारण बैल्जियम को ताबे, सीसे तथा रागे की यथेष्ठ मात्रा मिल जाती है।

बैल्जियम एक महान् शिल्प उद्योग-सम्पन्न देश है। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण इसके उद्योग-धंधो को बहुत अधिक हानि नही हुई। १९४७ म यहा के कारखानों की वस्तुओं का उत्पादन युद्धपूर्व काल का ९३ प्र श था।

बैल्जियम का उत्पादन (सहस्र मीट्रिक टन)

	१९३६ ३८	१९४७		१९३६-३८	१९४७
ढला हुआ लोहा	२६१	२३५	इस्पात	२०४	२११
खनिज लोहा	२५३	२३५	सीमेंट	२५०	२१७
			कोयला	२४२५	२०३६

बैल्जियम में उद्योग-व्यवसायों की स्थिति—कुछ शिल्प उद्योगों में कुशल कारीगरों के अभाव तथा पुरानी मशीनों के प्रयोग करने के कारण उत्पादन म असमानता रही है। इस देश में वस्त्र उद्योग सबसे महत्त्वपूर्ण है। इस उद्योग म प्रत्येक प्रकार के रेशे जैसे सूत, ऊन, सन, पटसन, कृत्रिम रेशम आदि व्यवहार में लाये जाते हैं। तकवा तथा करघों की संख्या तथा कारीगरों की संख्या के विचार से बैल्जियम के वस्त्र उद्योगों में सूती वस्त्र उद्योग सबसे महत्त्वपूर्ण तथा ऊनी वस्त्रों का धंधा सबसे पुराना है। अब इस व्यवसाय का केन्द्र देश के पूर्वी भागों की ओर हो गया है जहा कि पानी की सुविधा है और इस पानी म धुलाई के लिए विशेष गुण है। घैन्ट (Ghent), ऐन्टवर्प तथा कोर्टराय (Courtrai) म सूती वस्त्र उद्योग तथा वरवियर्स म ऊनी वस्त्र बनाये जाते हैं। खेन्ट, कोर्टराय, राउलर्स (Roulers) तथा तूर्ने (Tournai) सन के वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। (१) जुलाहो की परम्परागत कार्यकुशलता (२) मध्य के मैदानों म सन की विशाल उपज तथा (३) बैल्जियम के कोयला क्षेत्रों से कोयले की सुविधा के कारण सन के वस्त्र-उद्योग को बड़ी सहायता मिली है। यहा पर संसार का २ प्र श फौलाद (Steel) बनाया जाता है। यहा पर इस्पात म ढला हुआ सामान, चादर, रेलो का सामान, जहाज, मोटर मशीन, औजार तथा गृहनिर्माण सम्बन्धी अनेक

वस्तुयें बनाई जाती हैं। सन् १९४७ में लोहे के बने हुये सामान की निर्यात मात्रा कुल निर्यात का १५ प्रतिशत थी। यहां के अन्य उद्योग-धन्धे रासायनिक, शीशा, चमड़ा और रबड़ की वस्तुओं के निर्माण से सम्बन्धित हैं।

यातायात के साधन—यहां पर उत्तम थल, जल तथा हवाई मार्गों का सुचारू विस्तार है जिनसे व्यापार में बड़ी सहायता मिलती है। पश्चिमी यूरोपीय देशों के मार्गों के मिलनस्थान पर स्थित होने से बेल्जियम में यूरोप के भिन्न-भिन्न प्रमुख स्थानों को जाने-वाला ३७५० मील लम्बा रेलमार्ग है। ब्रुसेल्स रेलों का केन्द्र है। नदियां भी नाव्य हैं तथा नहरों द्वारा परस्पर सम्बन्धित हैं। बेल्जियम से हवाई-मार्ग यूरोप के सभी भागों को जाते हैं।

व्यापार, आयात तथा निर्यात—इस देश के समीपवर्ती देशों अर्थात् फ्रांस, जर्मनी, हालैंड, इंगलैंड तथा डेनमार्क से घनिष्ट व्यापार होता है। संयुक्तराष्ट्र, कनाडा, अर्जेन्टाइना, आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका से भी इसका व्यापारिक सम्बन्ध है। गेंहू, खनिज लोहा खनिज तेल, लकड़ी ऊन, रुई, तांबा फास्फेट, कहवा तथा अन्य उपज की वस्तुओं का इसके उपनिवेशों से महत्वपूर्ण आयात होता है। यहां से लोहे तथा इस्पात की बनी वस्तुयें, कोयला तथा कोक रासायनिक पदार्थ तथा खाद इत्यादि बाहर भेजे जाते हैं।

बेल्जियम से निर्यात की प्रमुख वस्तुयें लोहा तथा इस्पात, शीशा, सूती माल, शरने की वस्तुयें तथा सीमेंट हैं।

१९४७ में निर्यात	समस्त मूल्य का प्र० श०	१९४७ में आयात	समस्त मूल्य का प्र० श०
निर्मित वस्तुयें	५८	भोजन सामग्री	२१
कच्ची वस्तुयें	३६	कच्ची वस्तुयें	४६
भोजन सामग्री	६	निर्मित वस्तुयें	२८

प्रधान नगर

ब्रुसेल्स—राजधानी है और यह Senne नदी पर स्थित है। कोयला क्षेत्र तथा समुद्र के मध्य अपनी उत्तम स्थिति के कारण ही यह एक व्यापारिक केन्द्र बन गया है। यहां पर लेस, दरियां, मेज, कुर्सी तथा कागज आदि वस्तुयें बनती हैं। रेलों तथा नहर द्वारा यह ऐन्टवर्प से सम्बन्धित है।

ऐन्टवर्प—शेल्ट नदी की खाड़ी पर बेल्जियम का सबसे महान् बन्दरगाह है। यहां से विशाल मात्रा में पुनर्निर्यात व्यापार होता है। यह बन्दरगाह हैम्बर्ग तथा राटर्डम की ही टक्कर का है। इसके पृष्ठ प्रदेश में बेल्जियम के अतिरिक्त पूर्वी फ्रांस का कुछ भाग, राइन तथा रूर की घाटी सम्मिलित हैं। यह एक प्रधान औद्योगिक केन्द्र भी है। **लीज**—बेल्जियम के कोयला क्षेत्र के मध्य भाग में स्थित है। यह नगर रासायनिक पदार्थों, शीशे तथा धातु के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है। घेंट सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है।

वरवियर्स—दक्षिणी पहाड़ो में ऊनी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है।

लक्समबर्ग में कृषि तथा लोहा—लक्समबर्ग यूरोप में सबसे छोटा स्वतन्त्र राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९९९ वर्गमील तथा जनसख्या २,९५,००० है। उत्तरी लक्समबर्ग के लोग खेती करते तथा भेड़-बकरी पालते हैं। दक्षिणी लक्समबर्ग लोहे के लिए प्रसिद्ध है। यहा से प्रतिवर्ष ३० लाख टन लोहा तथा २५,००,००० टन इस्पात उत्पादन होता है जोकि अधिकतर फ्रास तथा जर्मनी को भेज दिया जाता है। व्यापारिक दृष्टिकोण से १९२१ से इसका सम्बन्ध बेल्जियम से है।

डेनमार्क (Denmark)

स्थिति, रचना तथा जन-सख्या—डेनमार्क का क्षेत्रफल लगभग १७,००० वर्गमील तथा नारवे के तट से इसकी स्थिति ७० मील दक्षिण की ओर है। इसका क्षेत्रफल स्वीडन का दसमांश तथा नारवे का अष्टमाश है। इसमे जटलैंड प्रायद्वीप तथा अन्य अनेक द्वीप सम्मिलित है जिनमे फ्यूनन (Fuenen), जीलैंड तथा लालैंड मुख्य द्वीप है। देश का दो तिहाई क्षेत्रफल जटलैंड प्रायद्वीप घेरे हुए है। यह देश मैदानों तथा नीची पहाड़ियों से बना है। इस देश में कोई भाग भी ५५० फीट से अधिक ऊंचा नहीं है। उत्तरी सागर तथा बाल्टिक सागर के मध्य के सभी प्राकृतिक मार्गों पर इसका अधिकार होने से इस देश की स्थिति महत्वपूर्ण हो गई है। डेनमार्क का पश्चिमी भाग एक ऊंचा-नीचा मैदान है जिसके तट रेतीले होने के कारण यहा की जनसख्या बिखरी है। परन्तु बाल्टिक सागर की ओर उर्वर भूमि है और यहा जनसख्या भी अधिक है। १९४५ में डेनमार्क की जनसख्या ४० लाख थी। यहा की जनसख्या में एक ही जाति के लोग है। यहा के निवासी एक ही भाषाभाषी तथा एक ही धर्मावलम्बी है।

डेनमार्क के प्राकृतिक साधन—डेनमार्क में प्राकृतिक सम्पत्ति का अभाव है। काओलिन के अतिरिक्त, जिससे कि बर्तन बनते है, यहा पर अन्य कोई भी खनिज पदार्थ नहीं मिलता। नदिया भी नौका-सचालन अथवा जलविद्युत निर्माण के लिए निरर्थक है। कभी इस देश का बड़ा भाग वनों से ढका था परन्तु अब वन काट कर भूमि पर कृषि की जाती है। इसी कारण यहा पर लकड़ी चीरने का उद्यम भी नहीं होता है और डेनमार्क में वन-सम्पत्ति का अभाव हो गया है।

डेनमार्क में कृषि की स्थिति—डेनमार्क सदा से ही कृषि प्रधान देश रहा है। कभी यहा पर गेहू का उत्पादन तथा निर्यात विशाल परिमाण में होता था परन्तु १८७० के पश्चात यूरोप में अमरीकन गेहू के आयात के कारण इस व्यवसाय को बड़ा धक्का लगा और डेनमार्क के कृषकों को गेहू का धधा त्याग कर पशु पालन उद्योग को अपनाना पड़ा। यहा की समस्त भूमि का ७५ प्रतिशत भाग कृषि योग्य है। यहा पर अनाज तथा अन्य उपज की वस्तुओं का उत्पादन अधिकतर पशुओं को चराने के लिए होता है। खेती की उपज का ८८ प्रतिशत भाग पशुओं, घोड़ा, सुअरों तथा मुर्गियों को खिलाने के काम में आता है।

दुग्धशाला उद्योग—डेनमार्क का देश दूध के लिए पशु-पालन के लिए संसार प्रसिद्ध हो गया है। दुधारू गायों का पालना तथा दूध का उत्पादन ही डेनमार्क के कृषि-उद्योग *का आधारस्तम्भ हो गया है। देश की आय का मुख्य साधन गोपालन उद्योग ही है।* यहां के निवासी मक्खन, पनीर दूध आदि के बदले ही अन्य देशों से आवश्यकता की वस्तुएं मंगाते हैं। यहां की दुग्धशालाओं की विशेष महत्ता निम्नलिखित कारणों से है—(१) बड़े बड़े शिल्प उद्योगों के आधार साधनों का अभाव अर्थात् यहां पर न तो कोयला, लोहा ही है और न जलशक्ति तथा कच्ची वस्तुएं ही उपलब्ध होती हैं। (२) यहां की जलवायु घास इत्यादि की ही उपज के लिए अधिक अनुकूल है। (३) यहां के अधिकतर खेत बहुत छोटे हैं जिससे कि प्रत्येक कुटुम्ब को छोटे छोटे खेतों से ही अधिक मात्रा में उपज प्राप्त करना अनिवार्य है। (४) डेनमार्क में कृषियोग्य भूमि को खेती की अपेक्षा पशुओं के लिए चारा उगाने के उपयोग में लाने की पूर्ण व्यवस्था कर ली गई है। इस प्रकार तृणभूमि *अथवा गोचरण भूमि के उतने ही क्षेत्रफल में अधिक पशुओं का निर्वाह हो सकता है।* परन्तु **डेनमार्क में दुग्धशालाओं (डेरी फार्मिंग) की सफलता का मुख्य कारण सहकारिता है।** यहां की ८८ प्र. श. दुग्धशालाओं का संचालन तथा ९२ प्र. श. दुग्ध का काम सहकारी समितियों द्वारा होता है। ये समितियां सरकारी आज्ञा से नहीं बनीं परन्तु इनका विकास देशव्यापी प्रौढ़ शिक्षा का परिणाम है। इन समितियों में सभी किसान साझेदार हैं। इन समितियों का उद्देश्य, ग्राहकों का विश्वास प्राप्त करने के लिए आदर्श तथा श्रेष्ठतम श्रेणी की वस्तुओं का ही उत्पादन रहा है। यहां के डेरी फार्मों तथा निर्यात की वस्तुओं पर सरकार का भी कठोर निरीक्षण रहता है। आजकल देश में ६,००० के लगभग सहायक समितियां कार्य कर रही हैं। ८० प्र. श. दूध का मक्खन तथा १० प्र. श. का पनीर तथा गाढ़ा दूध बनाया जाता है तथा शेष दूध घरेलू उपभोग में लाया जाता है।

डेनमार्क में दुग्धशालाओं की उपज की वस्तुएं

वर्ष	दूध (१० लाख गैलन)	मक्खन (सहस्र हंडर वेट)	पनीर (सहस्र हंडर वेट)	अंडे (सहस्र पौंड)
१९३५-३९	१,१२८	३,५८०	६५०	१७,१००
१९४५	९१४	२,६००	८७०	७,६००
१९४६	९८४	२,७८०	१,०२०	८,१००
१९४७	८७९	२,४६०	९००	८,८००
१९४८	८९८	२,३८०	१,१००	१३,६००
१९४९	१,०५६	३,०५१	१,२०७	१६,५५४

व्यापार—डेनमार्क म निर्यात की वस्तुओ म ७६ प्रतिशत दुग्धशालाओ की उपज की वस्तुए होती है। इनमें से दो तिहाई भाग से अधिक वस्तुए इग्लैण्ड को जाती है। डेनमार्क का १७ प्र श निर्यात तथा २८ प्र श आयात का व्यापार जर्मनी से होता है।

सन् १९३८ में निर्यात की वस्तुएँ (मीट्रिक टन)

दुग्धशाला की उपज की वस्तुए	४८०७ [*अधिक मात्रा सयुक्तराज्य (U K) को*]
वनस्पति तेल की उपज	२१४०
सीमेंट तथा चाक	२७३ १
मछलिया	६३ १
जीवित पशु	१३१ महस्र पशु (अधिकतर जर्मनी को)
अडे	१०७० महस्र [*७० प्र श सयुक्तराज्य (U.K) का*]

१९३८ में आयात की वस्तुए (मीट्रिक टन)

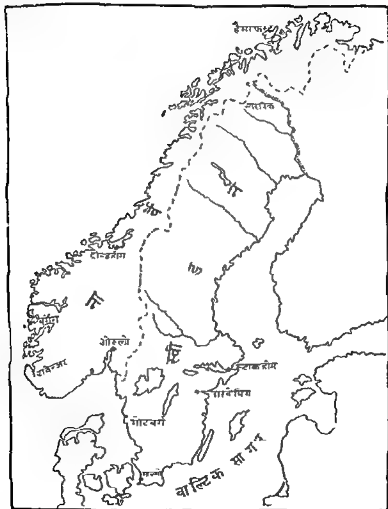
रोटिया	६२२ २
पशुओं के लिए चारा	१४६७ ६
फल पय पदार्थ, चीनी	६२ १
काष्ठमड तथा कागज	१०० ६
रासायनिक पदार्थ	३५८ ८
धातु का सामान	२८११
बनी हुई वस्तुए	१६ २
सूती वस्त्र	२२ १
कोयला तथा कोक	४६०७ ५
खनिज तेल	५८८ ४

मछली उद्योग तथा व्यापारिक पोत—देश की आदर्श स्थिति के कारण यहा पर मछली व्यवसाय तथा व्यापारिक पोतसमूहो का वडा विकास हुआ है परन्तु *डेनमार्क की समृद्धि इसी बात पर निर्भर रहेगी कि यह पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक* प्रदेशों को भोजन की सामग्री जुटाता रहे।

मुख्य नगर—**कोपेनहेगेन**—इस देश का सबसे बडा नगर है। यह नगर जीलैंड के पूर्वी तट पर स्थित है। डेनमार्क की जनसख्या के एक-पचमाश लोग इसी नगर म निवास करते है। यह नगर जल तथा थल मार्गों का मिलनस्थान है। कील नहर के खुल जाने से इसके व्यापार को हानि हुई है। यह नगर बाल्टिक प्रदेशों की सामग्री के क्रय विक्रय के लिए पुनर्निर्यात केन्द्र है। इस प्रदेश की मुख्य वस्तुए सूती माल, जूते बीअर मदिरा तथा बर्तन है। **ऐस्बजर्ग**—जटलैंड के पश्चिमी तट पर स्थित मछलियों का प्रसिद्ध केन्द्र है। देश के पूर्वी भाग में दो अन्य बड़े नगर आरहूस तथा ओडेन्स है।

स्कैंडिनेविया (Scandinavia)

स्कैंडिनेविया का प्रायद्वीप यूरोप में सब से बड़ा है। इसमें नार्वे तथा स्वीडन सम्मिलित है।



चित्र नं० ५२. स्कैंडिनेविया

स्थिति, विस्तार तथा जलवायु—स्कैंडिनेविया प्रायद्वीप का पश्चिमी भाग नारवे एक पतला तथा लम्बाकार देश है जिसका क्षेत्रफल १,२५,००० वर्गमील है। यद्यपि यह देश अधिक उत्तर में स्थित है परन्तु इसके तट कभी नहीं जमते। इसका कारण यह है कि नारवे के सम्पूर्ण तट पर गल्फ स्ट्रीम नामी उष्ण जलधारा तथा पछुआ हवाओं का प्रभाव पड़ता रहता है। यहां का समुद्रतट फियोर्डों (Fiords) के कारण अत्यन्त छिन्न भिन्न है तथा तट से जुड़े हुए अनेक पहाड़ी द्वीप हैं। फियोर्ड—जोकि लम्बे पतले ढालू चटान में हैं वास्तव में निमग्न घाटियां हैं। कहीं-कहीं तो फियोर्डों के पार्श्व, समकोण से ऊपर में कई सौ फीट उठे हुए हैं। यहां की नदियों में सुन्दर प्रपात बने हुए हैं।

कृषियोग्य भूमि—देश का दो तिहाई भाग नितान्त अनुपजाऊ भूमि से बना है। इसके अतिरिक्त ५,१२१ वर्ग मील पर झीलें तथा नदियां हैं और २६,००० वर्गमील पर वनों का विस्तार है। नारवे की समस्त भूमि के केवल ३ ६ प्र श. भाग पर खेती की जाती है।

यहां की जनसंख्या लगभग ३० लाख है तथा जनसंख्या के घनत्व का औसत प्रति-वर्गमील २३ व्यक्ति है। इस देश के दक्षिण-पूर्वी भाग में ही अधिक लोग रहते हैं। यहां के निवासियों के प्रमुख व्यवसाय अधिकतर कृषि, मछली, वन तथा शिल्प-सम्बन्धी हैं।

कृषि उद्योग तथा उपज—खेती का कार्य दक्षिण-पूर्व के सुरक्षित मैदानों में ही सीमित है फिर भी देश के ३१ प्र श से अधिक मनुष्यों का निर्वाह खेती पर ही निर्भर है। गेहूं, जौ, जई, राई, आलू मुख्य उपज होती है। आधुनिक काल में दुग्धशालाओं का पर्याप्त विकास हुआ है। अनाज की खेती त्याग कर लोग अधिकतर दुग्धशालाओं की ओर झुकते जा रहे हैं और अब यहां से डेरी की उपज की वस्तुओं का निर्यात भी होने लगा है।

नारवे में मछली व्यवसाय तथा उसके केन्द्र—मछली पकड़ना देश का महत्त्वपूर्ण उद्योग है। मुख्य मछलियां काड तथा हैरिंग हैं। अधिक छिन्न-भिन्न तटों तथा समीपस्थ सरक्षक द्वीपों में मछली पकड़ने वालों के लिए अगणय पोताश्रय तथा मछलियों के लिए अंडे देने के उत्तम स्थान हैं। उत्तर के फिनमार्क तथा लोफोटन द्वीपों के चारों ओर काड जाति की मछली पाई जाती है तथा स्टवजर और ट्रामूड के दक्षिण में हैरिंग मछलियों की बहुलता है। जिन यूरोपीय देशों में मछलियां नहीं पाई जाती उनमें ये मछलियां तुरन्त ही बिक जाती हैं। यहां के काडलिवर आयल तथा अन्य मछलियों के तेलों की संसार में बड़ी मांग रहती है। स्टेवजर में मछलियों को बाहर भेजने के लिए डिब्बों में भरा जाता है। क्रिश्चियनसूंट सूखी मछलियों के व्यापार का केन्द्र है। बर्जन बन्दरगाह से मछलियों का निर्यात होता है। हैमरफैस्ट तथा ट्राम्सो उत्तरी भाग में मछलियों के केन्द्र हैं।

नारवे की वन-सम्पत्ति—यद्यपि नारवे के एक-चतुर्थ भाग पर वन फैले हुए हैं परन्तु वनों के लिए दक्षिणपूर्वी भाग सबसे प्रसिद्ध है। यहां के वनों की उपज बड़ी महत्वपूर्ण है तथा निर्यात की वस्तुओं का एक-तिहाई भाग वनों की उपज ही होती है। नारवे में ईंधन तथा मकानों में बहुमूल्य लकड़ी का पर्याप्त उपयोग होने पर भी बहुत-सी लकड़ी बच जाती है। यह अवशिष्ट लकड़ी पहले काठ कबाड़ के रूप में अन्य देशों को भेज दी जाती थी परन्तु आजकल नारवे से अधिक लकड़ी का निर्यात नहीं होता। देश में ही इससे काष्ठ-मंड तथा कागज बनाया जाता है।

नारवे के खनिज पदार्थ—यहां पर खनिज पदार्थ भी पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। यहां के प्रमुख खनिज पदार्थ कच्चा लोहा, तांबा तथा चांदी हैं। कोयले का नितान्त अभाव है। स्पिट्सबर्जन में ही कोयले की कुछ खान है। दूर उत्तर में फिनलैंड की सीमा पर कच्चा लोहा प्राप्त होता है। पर्वतों की प्राचीन चट्टानों में उत्तम ग्रेनाइट मिलता है।

नारवे व्यापारिक पोतसमूह का विकास—नारवे में पोतनिर्माण उद्योग का भी बड़ा विकास हुआ है। नारवे के लोग संसार के उत्तम नाविकों में गिने जाते हैं। नारवे का व्यापारिक पोतसमूह संसार में पांचवें नम्बर पर है। इसमें मुख्यतया ट्रेम्प स्टीमर्स (Tramp Steamers) ही अधिक हैं। नारवे की भौगोलिक स्थिति, इसके अनन्य उत्तम पोताश्रय, पोतनिर्माण के लिए लकड़ी की सुविधायें, यातायात में थलमार्गों की कठिनाइयां तथा जलमार्गों की सुगमता, बहुमूल्य लकड़ी तथा मछलियों का निर्यात तथा कोयला, अनाज और पक्की वस्तुओं का आयात, इन सभी सुविधाओं के कारण नारवे में जहाज अधिकतर बनाये जाते हैं।

नारवे के उद्योग धंधे तथा जलविद्युत—नारवे के उद्योग अधिकतर देश में उत्पन्न कच्ची वस्तुओं तथा जलशक्ति पर निर्भर हैं। नारवे में जलविद्युत उत्पादन के लिए अनुपम सुविधायें हैं। यहां पर अनेक जलप्रपात हैं—नदियों की धारायें तेज़ हैं तथा शीत ऋतु में जमती नहीं हैं। जलविद्युत शक्ति काष्ठमंड, कागज तथा दियासलाई बनाने में काम आती है।

नारवे के सुन्दर दृश्यों का आनन्द लेने संसार के भिन्न भिन्न भागों से अनेक व्यक्ति आते हैं। इन लोगों के रुपये से देश को पर्याप्त आय होती है।

आवागमन के साधन तथा आयात और निर्यात की वस्तुएं—देश की पर्वतीय प्रकृति तथा उत्तर और दक्षिण के भाग एक दूसरे से दूर होने के कारण नारवे में आवागमन के साधनों का उत्तम विकास नहीं हो सका है। रेलें तथा सड़कें अधिकतर देश के दक्षिण-पूर्वी भाग में ही सीमित हैं। वैदेशिक व्यापार अधिकतर यूरोपीय देशों के साथ ही होता है। यहां से अधिकतर बहुमूल्य लकड़ी, कागज, मछली, दियासलाई, दुग्धशाला की वस्तुयें तथा डिब्बों में बन्द भोजन की वस्तुओं का निर्यात होता है। रुई, आटा, कोयला, मशीनें, चीनी, कहवा तथा जौ आयात की वस्तुयें हैं।

मुख्य नगर—ओसलो—राजधानी है। इसकी जनसंख्या २५०,००० है। यह नगर नारवे के दक्षिण-पूर्वी मैदान में दीर्घ फियोर्ड (Long Fiord) के सिरे पर स्थित है। यह रेल द्वारा बर्जन तथा ट्रोन्डेम से सम्बन्धित है। बर्जन दूसरा बड़ा नगर है। यहा से यूरोपीय देशों को मछलिया भेजी जाती है। ट्रोन्डेम में, जो कि उत्तर में रेलों का केन्द्र है, हैरिंग मछलियों का निर्यात होता है। यह नारवे की प्राचीन राजधानी है। नारविक उत्तरी महासागर (Arctic Ocean) मे नारवे का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इसका सम्बन्ध स्वीडन के रेल मार्गों से है। शीत ऋतु मे बोथिनिया की खाड़ी मे हिम जम जाने के कारण स्वीडन का कच्चा लोहा नारविक को रेल द्वारा ही भेजा जाता है।

स्वीडन की स्थिति तथा तटरेखा—स्वीडन स्कैंडिनेविया प्रायद्वीप का पूर्वी भाग है। इस देश का अधिकतर भाग बाल्टिक सागर के किनारे है। यह सागर शीत ऋतु में हिम से जम जाता है। यहा का तट अधिक कटा-फटा नही है। जलवायु महाद्वीपीय है। इसके दक्षिणी भाग में मैदान तथा निम्न भूमिया है परन्तु उत्तरी भाग पर्वतीय है।

स्वीडन का क्षेत्रफल १,७३,००० वर्गमील है। इसके आधे से आधे भाग मे वन है। यद्यपि इसका क्षेत्रफल नारवे की अपेक्षा कम है परन्तु यहा पर उर्वर भूमि अधिक है।

स्वीडन के चार भौगोलिक विभाग है।

(१) नारलैंड (Norland)
(२) झीलों का प्रान्त
(३) स्मालैंड का पठार
(४) स्केनिया (Scania)

स्वीडन के भौगोलिक विभाग—नारलैंड स्वीडन का उत्तरी भाग है तथा इसमें देश का ६० प्र० श० भाग सम्मिलित है। यह नवीनतम उपनिवेश का प्रदेश है। नारलैंड के बिल्कुल दक्षिण में निम्न प्रदेश अथवा झीलों का प्रान्त है जिसमें कि कृषि तथा उद्योग-धन्धो का विकास हो गया है। स्मालैंड दक्षिण स्वीडन के मध्यभाग में स्थित है। इस प्रदेश में वन तथा दलदल भरे है और जनसंख्या बहुत बिखरी है। स्वीडन का दक्षिण-पश्चिमी भाग स्केनिया (Scania) कहलाता है जो कि सारे स्वीडन में सबसे अधिक कृषिसम्पन्न प्रदेश है।

खनिज सम्पत्ति—यहा पर यथेष्ट मात्रा म खनिज पदार्थ मिलते हैं। स्वीडन के लोहा-क्षेत्र अपनी उत्तमता के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं। उत्तरी स्वीडन के किरुना तथा गैलिवरा क्षेत्रों म उत्तम श्रेणी का कच्चा लोहा मिलता है। यहा का लगभग सारा ही लोहा जर्मनी तथा इग्लैण्ड को भेजा जाता है जिसमें ३३ प्र० श० नारविक द्वारा तथा ६५ प्र० श० लूलिया के मार्ग द्वारा भेजा जाता है। शीत ऋतु में बाल्टिक सागर के जम जाने से

निर्यात नारविक द्वारा ही होता है क्योंकि नारवे का यह नगर स्वीडन की रेलों से सम्बन्धित है। स्वीडन म समस्त ससार का ५ प्र श ही कच्चा लोहा निकलता है।

जल-विद्युत—स्वीडन में कोयले का अभाव है। अब तो जल-शक्ति का महत्त्वपूर्ण विकास हो गया है। जल विद्युत का सब से बड़ा स्टेशन **पोरजस (Porjus)** है जहा से रेलो तथा औद्योगिक केन्द्रो को बिजली पहुचाई जाती है। यहा पर तावा चादी सीसा, जस्ता *तथा गधक भी पाया जाता है। नारलैंड म बोलिडन (Boliden) की सुवर्ण की खाना* मे ससार का २ प्र श सुवर्ण प्राप्त होता है।

स्वीडन के वनो का महत्त्व—नारवे की वन सम्पत्ति यहा की आय का सब से बडा साधन है। *ससार के अन्य किसी देश को वनो से इतना लाभ नही होता। लकडी तथा* गधक की सुविधाओ के कारण ही स्वीडन म दियासलाई उद्योग प्रसिद्ध हो गया है। स्मालैंड स्थित जानकोपिग (Gonkoping) इस उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। यहा पर दियासलाइया इतने विशाल परिमाण म बनती है कि ससार के सभी देशो को इनका निर्यात होता है।

कृषि की उपज—स्वीडन की ६ प्र श भूमि पर ही कृषि की जाती है। स्केनिया प्रायद्वीप में गेहू, जौ तथा राई की उपज होती है। चुकन्दर भी उत्पन्न होती है। यह देश कृषि के विचार से आत्मनिर्भर ही है।

उद्योग-धंधे तथा व्यापार—यहा के ५ लाख निवासी उद्योग-व्यवसाय म लगे हुए हैं। यहा के प्रमुख उद्योग खान खोदना, लकडी चीरना तथा कागज बनाना है। यहा से कागज, काष्ठमंड, लट्ठे तथा चिरी हुई लकडी, धातुए तथा खनिज पदार्थों का निर्यात होता है। कोयला, सूती माल, भोजन की वस्तुय तथा मशीन बाहर से मगाई जाती है। यहा पर अधिकतर आयात जर्मनी से तथा अधिकतर निर्यात सयुक्त राज्य (U K) को होता है।

प्रमुख नगर—स्टाकहोम—यह स्वीडन की राजधानी है। इसकी जनसख्या ५ लाख है। यह नगर उद्योगो तथा रेलो का केन्द्र है। स्वीडन के पूर्वी भाग मे स्थित होने के कारण यह नगर ससार के व्यापारिक मार्गों से दूर पडता है। इसके अतिरिक्त शीत ऋतु मे फिनलैंड की खाडी के जम जाने से रूस में आने-जाने मे बाधा पड जाती है। गोटेबर्ग स्वीडन का महान व्यापारिक केन्द्र है। यह नगर दक्षिणी स्वीडन के पश्चिम में स्थित है। यह वर्षभर खुला रहता है तथा दक्षिणी स्वीडन के सभी भागो से नहरो और *रेलों द्वारा इसका सम्बन्ध है।*

आइबेरियन प्रायद्वीप (Iberian Peninsula)

स्थिति—आइबेरियन प्रायद्वीप मे स्पेन तथा पुर्तगाल के देश सम्मिलित है। यह प्रायद्वीप यूरोप के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। व्यापार के दृष्टिकोण से तो इसकी स्थिति बडी अनुकूल है परन्तु तटरेखा तथा तटीय जल की प्रकृति इस के विकास म बाधक

सिद्ध हुई है। इसका तट सपाट है और पोताश्रय भी कम हैं। समुद्र की प्रबल तरंगो के कारण उत्तम पोताश्रयो का निर्माण सर्वथा असम्भव है।

स्पेन

स्पेन की अवनति के कारण—यह एक पिछड़ा हुआ देश है। यद्यपि व्यापारिक दृष्टिकोण से इसकी स्थिति अच्छी है, भूमि उपजाऊ है और खनिज सम्पत्ति की प्रचुरता है फिर भी निम्नलिखित कारणो से सभी व्यर्थ है —

(१) लोहे का विशाल भंडार होने हुए भी कोयले की कमी से लोहा उद्योग विकसित नही हुआ।

(२) यहा के पोताश्रयों म जहाजो के लिये काफी स्थान नही है। तट रेखा के सपाट होने के कारण सुरक्षित पोताश्रयों का अभाव है।

(३) देश अधिकतर पहाड़ी है, सड़कों तथा रेलो के बनाने में कठिनाइयां हैं, नदियो म ज्ञान झरने हैं तथा प्रवाह तेज़ है।

(४) जलवायु यद्यपि भूमध्यसागरीय है परन्तु स्वास्थ्यकर तथा बलवर्धक नही है।

(५) बड़े-बड़े भूभागो पर स्वेच्छाचारियो का अधिकार है। साधारण जनता निर्धन है।

(६) कभी स्पेन से गेहूं और ऊन का विशाल निर्यात होता था परन्तु अब संगठन के अभाव से हीन दशायें हे।

स्पेन में कृषि की दशा—स्पेन वास्तव म कृषि प्रधान देश है। खेती का काम केवल ४० प्र श भूमि पर ही होता है और इस में से भी केवल ७ प्र श ही सिंचाई के योग्य है। सिंचाई के साधनों म उन्नति की आवश्यकता है। अब भीतरी गड़बड़ समाप्त हो जाने से सरकार ने सिंचाई की योजना बनाई है।

खेती तथा पशु-पालन—लगभग एक-चौथाई लोग खेती करते है। गेंहू, चावल तथा फलों की व्यापक खेती होती है। जैतून के तेल तथा कार्क उत्पादन मे तथा सन्तरो के निर्यात में स्पेन ससार म प्रथम है। यहा पर पशु, भेड़, घोड़े तथा सुअर भी पाले जाते है। स्पेन की मेरिनो ऊन ससार प्रसिद्ध रही है।

स्पेन की खनिज सम्पत्ति—यूरोप के अन्य किसी भी देश म खनिज सम्पत्ति की इतनी भिन्नता तथा व्यापक विस्तार नही है जितना कि स्पेन में है। यहा पर कच्चा लोहा, मैंगनीज़, जस्ता, सीसा, कोयला, तांबा, पारा, चादी इत्यादि पाये जाते हैं। सीसे तथा तांबे में स्पेन यूरोप भर में प्रथम, पारे और चादी में द्वितीय, तथा जस्ते, मैंगनीज़ और लोहे के प्रथम श्रेणी के उत्पादको में है। स्पेन में ससार का ४० प्र श पारा प्राप्त होता है। अब पिरेनीज में जल विद्युत का विकास भी हो रहा है।

यातायात के साधन—यहा यातायात के साधनो की बड़ी कमी है। रेल मार्ग केवल ६,००० मील लम्बा है जब कि बेल्जियम में जो इस के छठे भाग के बराबर है, ६,००० मील लम्बी रेले हैं। यहा की नदिया यातायात तथा सिंचाई दोनो ही के लिये बेकार हैं।

उद्योग तथा व्यापार—मदिरा उद्योग में स्पेन का संसार में तीसरा स्थान है। यहां पर मुख्यतर वस्त्र निर्माण, मदिरा, खाल, चमड़ा तथा डगो की उपज के उद्योग होते हैं। फल, लोहा, तार, ऊन तथा एस्पार्टो घास (जिस से कागज बनता है) निर्यात की प्रमुख वस्तुए हैं। यहां पर मशीनों, वस्त्र तथा भोजन के पदार्थों का आयात होता है।

मुख्य नगर—**मैड्रिड**—राजधानी है यहां की जनसंख्या १० लाख के लगभग है। यह रेलों का प्रधान केन्द्र है। **बार्सीलोना**—भूमध्यसागर तट पर स्थित है। यह स्पेन का सब से बड़ा नगर तथा प्रधान बन्दरगाह है। यह एक औद्योगिक केन्द्र भी है। अन्य व्यापारिक केन्द्रों के नाम हैं —वेलेन्शिया, मलागा बिल्बाओ तथा काडिज।

पुर्तगाल

स्पेन के पश्चिम में एक छोटा-सा महासागर स्थित देश है।

विस्तार, जल-वायु तथा उद्योग—यहां की जनसंख्या १ करोड़ के लगभग है। यहां की जलवायु सम तथा नम है। भूमि उपजाऊ है। यह देश स्पेन के आधमहासागरीय व्यापार का प्राकृतिक द्वार है। यहां के लोगों का विशेष उद्यम कृषि कार्य है जिस में ६० प्र श व्यक्ति लगे रहते हैं। नीबू अंजीर, नारंगी सेब, बादाम, खजूर तथा अखरोटों की व्यापक खेती होती है। मदिरा ता देश भर में ही बनाई जाती है।

खनिज पदार्थ—यह देश खनिज पदार्थों से धनी है। कच्चा लोहा काफी होता है। टीन तथा वाल्फ्राम में विदेशी पूजी लगी हुई है। यहां की वोल्फ्राम की खान यूरोप भर में प्रसिद्ध है। यहां पर तांबा, सीसा तथा नमक भी बड़े परिमाण में मिलते हैं।

उद्योग-धंधे—पुर्तगाल के वनों में ओक बड़ा महत्वपूर्ण वृक्ष है। इस से कार्क बनते हैं। ईंधन की कमी के कारण उद्योगों की प्रगति मन्द रही है। यहां पर कोयले का तो बिल्कुल अभाव ही है जल-विद्युत की भी बड़ी कमी है। यहां के शिल्प उद्योग अधिकतर मदिरा (शराब) तथा जैतून सम्बन्धी वस्तुएं ही हैं। यहां ऊनी सूती तथा सन के वस्त्र भी बनाये जाते हैं। *पुर्तगालियों का एक विशेष उद्यम चीनी मिट्टी के टाइल्स बनाना है।* यह उद्योग इन्हें मूर लोगों से प्राप्त हुआ। देश में कार्क का बड़ा निर्यात होता है।

लिस्बन—यहां की राजधानी तथा प्रधान नगर है। इसका पोताश्रय बड़ा सुन्दर है। रेल द्वारा यह ओपोर्टो तथा मैड्रिड से मिला हुआ है। यहां की खेती की उपज का निर्यात तथा पक्के माल का आयात लिस्बन द्वारा ही होता है। ओपोर्टो शराब के निर्यात का प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain)

यह देश संसार भर में सब से उन्नत उद्योग प्रधान देश है। १९वीं शताब्दी से ही यहां पर व्यापार तथा उद्योगों में उल्लेखनीय विकास हुआ है। तभी से यह देश इंजीनियरी के विकास, रेलों की प्रमुखता तथा उद्योग-धंधों के आविष्कार में

अग्रगण्य रहा है। सन् १९०० में यहां का व्यापार ससार का एक-पंचमांश तथा ब्रिटिश-साम्राज्य सहित ससार का एक-तृतीयांश था। ग्रेट ब्रिटेन की इस महान् व्यापारिक उन्नति में इसकी प्राकृतिक तथा भौतिक सुविधाओं ने बड़ा योग दिया है।

जलवायु के लाभ—शीतोष्ण कटिबंध में स्थित होने से यहां की जलवायु न अधिक ठंडी है न अधिक गर्म परन्तु सम है जिस के कारण खेती में रुकावट नहीं होती। हिम से मुक्त होने के कारण आवागमन में भी कोई बाधा नहीं। जलवायु के ही कारण खेती और कारखानों में यहां के मनुष्य सारे साल काम कर सकते हैं। लोगों में काफी स्फूर्ति रहती है, जिस से उनके नियमित कार्यों में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती।

तटरेखा—यहां की तटरेखा इतनी कटी फटी है कि ब्रिटेन का कोई भी भाग समुद्र से ७० मील से अधिक दूर नहीं है। १३ मील के क्षेत्रफल पर १ मील तट रेखा पड़ती है। समुद्र की समीपता के कारण ही इसके दोनों ओर के औद्योगिक प्रदेशों को विदेशों में माल भेजने की बड़ी सुविधा है।

स्थिति के लाभ—ब्रिटेन की स्थिति भी आदर्श है। इंगलिश चैनल इसे महाद्वीप से पृथक् करती है। यूरोप से समीपता के कारण यहां पर व्यापारिक उन्नति हो सकी है। साथ ही समुद्र से पृथक् होने के कारण यहां पर थल अथवा जल मार्गों द्वारा विदेशी आक्रमणों का भय नहीं है। हां—हवाई हमले हो सकते हैं। इसकी स्थिति संसार के उन्नत भागों के मध्य में है। सभी देश समीप पड़ते हैं। यूरोप के सभी व्यापारिक देश—जर्मनी, फ्रांस, बैल्जियम इत्यादि समीप ही पूर्व या दक्षिण में स्थित हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में भी आधमहासागर द्वारा सरलता से पहुंचा जा सकता है। छिछले तटीय समुद्र में स्थित होने के कारण यहां के बन्दरगाहों को ऊंचे ज्वार से भी लाभ होता है। जहाज़ बन्दरगाहों में सरलता से पहुंचते हैं और कीचड़ इत्यादि भी उनमें नहीं जमती।

खनिज पदार्थ—ग्रेट ब्रिटेन में लोहे और कोयले की बड़ी-बड़ी खानें हैं जो कि पास ही पास स्थित हैं। कोयला उत्तम श्रेणी का है और लगभग सभी औद्योगिक केन्द्र कोयले की खानों के समीप हैं। थोड़े बहुत परिमाण में चाक, स्लेट, टीन इत्यादि भी मिलते हैं।

नदियां—यहां की नदियां जलमार्ग की दृष्टि से अच्छी नहीं परन्तु उनके मुहानों में जहाज़ों के लिये सभी सुविधाएं हैं। थल व्यापार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निवासी तथा मार्ग व्यवस्था—ब्रिटेन की औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति मानवी तथा आर्थिक कारणों से भी हुई है। यहां की स्थायी सरकार तथा निवासियों के आचार-विचार, उद्यमशीलता और कार्यकुशलता का इस उन्नति में बड़ा हाथ रहा है। यहां पूंजी की बहुलायत और आवागमन के साधनों की सुविधाएं रही हैं। यहां के सभी बन्दरगाहों तक रेलें जाती हैं। रेलों की लम्बाई २५,००० मील है। सड़कें भी उत्तम हैं और मोटरों द्वारा बहुत यातायात होता है। नदी मार्ग उन्नत नहीं है। उनमें रेलों की अपेक्षा केवल ४ प्र० श० ही गमनागमन होता है। १९४७ में यहां की भीतरी यातायात

यातायात व्यवस्था पर जनता का अधिकार हो गया था। १९४८ में मार्ग व्यवस्था की उन्नति के लिये एक बोर्ड बनाया गया। इस बोर्ड के अधिकार में रेल २०,०००, एंजिन ४१,०००, यात्री गाड़ियों के डिब्बे और १२,३५,००० माल गाड़ियों के डिब्बे तथा १०० जहाज और हजारों मोटरगाड़ियाँ हैं। अधिकांश जनता औद्योगिक केन्द्रों में बसी हुई है।

बाजार—ब्रिटिश साम्राज्य संसार में सब से विशाल है जहाँ पर ब्रिटेन के तैयार माल के लिये विस्तृत बाजार है। ब्रिटिश राष्ट्र मंडल तथा साम्राज्य में संसार की ४८ प्र. श. से भी अधिक आबादी है।

व्यापारिक जहाज—ब्रिटेन का व्यापारिक जहाजी बेड़ा दुनिया में सब से बड़ा है। इसी कारण यहाँ का व्यापार भी सब से उन्नत दशा में है।

अंग्रेजी भाषा संसार के सभी भागों में व्याप्त है। इस से भी व्यापार में बड़ी सुविधा होती है। पिछली शताब्दी की निर्विघ्न व्यापार नीति का भी व्यापार पर बड़ा प्रभाव पड़ा है।

व्यापार सम्बन्धी त्रुटियाँ—परन्तु साथ ही साथ कुछ दोष भी हैं—(१) यहाँ की आबादी बहुत बढ़ गई है और उद्योगों की भी बड़ी उन्नति हुई है इसी लिये यहाँ मजदूरी की दर ऊँची हो गई है और जमीन की कमी तथा जल-शक्ति का अभाव हो रहा है। (२) अन्य देशों में यहाँ के माल पर ऊँचे कर लग जाने से व्यापार को धक्का लगा है। (३) लोहे, कोयले की अधिकता होते हुए भी कच्चे माल की कमी है जिस के लिये ब्रिटेन दूसरे देशों पर आश्रित रहता है। नीचे की तालिका में ब्रिटेन की यह निर्भरता समझ में आ सकती है।

मूल कच्ची वस्तुओं के विश्वव्यापी उत्पादन का प्रतिशत जो कि ग्रेट ब्रिटेन में उत्पन्न तथा प्रयोग होता है।

(१९३८)

कच्ची वस्तुएँ	विश्वव्यापी उत्पादन का ग्रेट ब्रिटेन में उत्पादन प्र. श.	विश्वव्यापी उत्पादन का ग्रेट ब्रिटेन में उपभोग प्र. श.
कोयला	१८ ६	१५ ५
लोहा	४ ३	११ ५
खनिज तेल	—	४ ५
गिरिल	—	२७ ०
मैंगनीज	—	६ ५
टीन	१ ३	३५ ०
कपास	—	१० ०
ऊन	२ ७	२ ०

कच्ची वस्तुयें	उत्पादन प्र श	उपभोग प्र श
रबर	—	१५०
बाक्साइट	—	५५
सीसा	१६	२०५
जस्त	०६	७५
तांबा	—	१३५

जन-संख्या

ग्रट ब्रिटन की आबादी बहुत घनी है। १९३१ की आबादी इस प्रकार है।

स्काटलैंड ४८,४२,५५४

इगलैंड तथा वेल्स ३,९९,४७,९३१

इगलैंड की आबादी—इगलैंड म जनसंख्या का औसत प्रति वर्गमील ६८५ व्यक्ति है। बेल्जियम, हालैंड तथा जावा को छोड़कर यहा की आबादी का औसत अन्य सभी देशो से अधिक है। १९४९ म ग्रेट ब्रिटन की आबादी का अनुमान ५ करोड़ ५ लाख व्यक्ति था। यह संख्या सन १९४४ की अपेक्षा १० लाख अधिक थी। सन् १७०० मे इगलैंड की जन-संख्या इससे ४३० लाख कम थी। संख्या मे इस वृद्धि का मुख्य कारण बीसवी सदी के शुरू तक मृत्यु मे कमी और उत्पादन मे निरतर बढती है।

आबादी का औसत—उत्तरी इगलैंड तथा दक्षिणी वेल्स औद्योगिक क्षत्र है इसलिये यहा सब से घनी आबादी है। लदन के आस-पास आबादी बढती जा रही है। औद्योगिक क्षत्रो की आबादी का औसत १००० तथा कृषि प्रान्तो का ५०० व्यक्ति प्रति वर्गमील है। पहाडी प्रान्तो की आबादी बहुत कम है परन्तु अब जन-संख्या के वितरण मे बडा परिवर्तन होता जा रहा है।

खनिज पदार्थ

ग्रेट ब्रिटेन के खनिज पदार्थ बडे महत्वपूर्ण है।

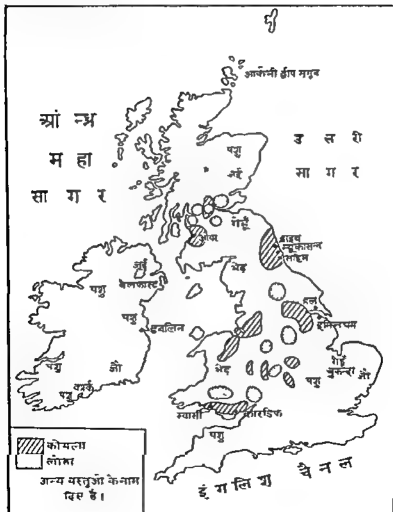
ग्रेट ब्रिटेन के मुख्य खनिज पदार्थ १९४९-५०

(सहस्र मीट्रिक टन)

कोयला	२,१५,१००	जिपसम	१,०६२
लोहा	१४,७००	पत्थर (Sandstone)	४,३४६
सीसा	३८	चूने का पत्थर	१५,६२६
जस्त	१६	खरिया	१०,१६७
टीन	३	मिट्टी (चिकनी)	२६,५००

कोयला—यहा लोहा तथा कोयला पास-पास पाये जाते है। कोयला सभी स्थानो म मिलता है पर विटूमिनस श्रेणी का है। कोयले की खाने समुद्र के पास है। इसका

तर्रीय व्यापार होता है। कोयले के वार्षिक उत्पादन में ग्रेट ब्रिटेन का संसार में तृतीय स्थान है। कोयला उद्योग में १० लाख व्यक्ति लगे हैं तथा ८० लाख व्यक्ति इसी पर आश्रित हैं। खनिज पदार्थों में ६० प्र० श० मूल्य का कोयला निकाला जाता है। प्रत्येक कोयला क्षेत्र औद्योगिक केन्द्र भी है। कोयले का निर्यात भी होता है और निर्यात वस्तुओं में ५ प्र० श० मूल्य का कोयला होता है।



चित्र नं० ५३—ग्रेट ब्रिटेन की आर्थिक उपज

कोयले का उपयोग १९५१

(लाख टन)

गैस	२७४	लोह के कारखाने	८०
बिजली उत्पादन	३५४	कोयले की खान	२३५
रेल कम्पनियां	१४३	घरेलू उपयोग	६१९
तटीय व्यापार पोत	११	अन्य कारखाने	३७४

ग्रेट ब्रिटेन में कोयले के प्रधान क्षेत्र निम्नलिखित हैं —

पीनाइन श्रेणी के क्षेत्र —

(१) नार्थम्बरलैंड तथा डरहम, (२) यार्क डर्बी तथा नाटिंघम, (३) दक्षिणी लंकाशायर तथा (४) उत्तरी स्टैफोर्डशायर

मिडलैंड के क्षेत्र —

(५) वारविक (६) दक्षिणी स्टैफोर्डशायर तथा (७) लीसेस्टरशायर

वेल्स पहाड़ के क्षेत्र —

(८) उत्तरी वेल्स तथा (९) दक्षिणी वेल्स

स्काटलैंड की मध्यवर्ती घाटी के क्षेत्र —

(१०) आयरशायर तथा (११) क्लाइड

इनके अतिरिक्त अन्य छोटे २ कोयला क्षेत्र ब्रिस्टल, ऐडिनबर्ग और आयरलैंड के किल केनी में हैं।

संयुक्त राज्य (U K) में कोयले का वार्षिक उत्पादन

(लाख मीट्रिक टन)

सन् १९१४ में	२८७०
सन् १९३९ में	२३८०
सन् १९५० में	२१६०

सन् १९५१ में ग्रेट ब्रिटेन की विभिन्न खानों में २२२० लाख टन कोयला निकाला गया। इनमें से २११० लाख टन तो गहरी खानों में निकाला गया था और १० लाख टन खुले क्षेत्रों से प्राप्त हुआ था।

स्काटलैंड के कोयला क्षेत्रों में	१४ प्र श
यार्क-नाट्स तथा डर्बी में	३१ प्र श
लंकाशायर के कोयला क्षेत्रों में	६ प्र श
मिडलैंड क्षेत्रों में	११ प्र श
दक्षिणी वेल्स क्षेत्रों में	१६ प्र श

दक्षिणी वेल्स का कोयला क्षेत्र—दक्षिणी वेल्स के कोयला क्षेत्र का कोयला उत्तम श्रेणी का होता है और अधिक परिमाण में मिलता है। यहां का कोयला विशेषकर जहाजों में काम आता है। १९१४ तक यह क्षेत्र संसार का प्रधान कोयला क्षेत्र रहा परन्तु अब कोयले की मांग की कमी के कारण बड़ी बाधा पड़ गई है।

वेल्स कोयला क्षेत्र के ह्रास के कारण—(१) ब्रिटिश कोयले का उच्च मूल्य— ऊपरी भाग का कोयला समाप्त हो जाने के कारण खानों में नीचे कोयला निकाला जाता है। इस कारण उत्पादन व्यय बहुत बढ़ गया है। इसकी अपेक्षा संयुक्त राष्ट्र अमरीका का कोयला बाजारों में सस्ता पड़ता है। (२) फ्रांस, इटली आदि देशों में जल-विद्युत के विकास के कारण कोयले की माग कम हो गई है। (३) आस्ट्रेलिया, नटाल आदि ग्राहक देशों में कोयले की खान निकल आई हैं। अब उन्हें मगाना नहीं पड़ता।

ऊपरी वेल्स के कोयला क्षेत्र का समुद्र से सीधा सम्बन्ध है यद्यपि उनमें कोयला अधिक नहीं है।

यार्क तथा डर्बी कोयला क्षेत्र—यार्क, डर्बी तथा नाटिंघम कोयला क्षेत्र ७० मील लम्बा तथा २० मील चौड़ा है। लोहा पास ही मिलता है। समुद्र पास होने से स्केन्डिनेविया, डेनमार्क तथा बाल्टिक प्रदेश यहीं से कोयला मगाते है। वेस्ट राइडिंग के ऊनी कारखाने तथा शेफील्ड के लोहे के कारखाने इसी क्षेत्र पर निर्भर हैं।

दक्षिणी लंकाशायर क्षेत्र के समीप मुख्यतर सूती कारखाने हैं।

मिडलैंड क्षेत्र का ह्रास—मिडलैंड कोयला क्षेत्र पर लोहे के कारखाने है परन्तु सन् १९२९ से इस्पात उद्योग में ह्रास होने के कारण इन क्षेत्रों की महत्ता घट गई है। अब यहां पर ब्रिटेन के समस्त कोयले का केवल ११ प्र. श. ही निकाला जाता है।

आयरशायर तथा लैनार्कशायर—स्काटलैंड के आयरशायर क्षेत्र का कोयला अधिकतर निर्यात होता है। क्लाइड बेसिन के पोत निर्माण उद्योग में लैनार्कशायर का कोयला तथा लोहा काम में लाया जाता है क्योंकि क्लाइड नदी द्वारा कोयला आसानी से लाया जा सकता है।

१९४६ में कोयला व्यवसाय राष्ट्रीयकरण विधान (Coal Industry Nationalisation Act) के अनुसार कोयले पर जनता का अधिकार हो गया। अब नेशनल कोल बोर्ड का १,५०० कोयले की खानों तथा ३ लाख एकड़ भूमि, १४,००० मकानों, अनेक कारखानों तथा यातायात पर अधिकार है। इसके नीचे ७,२३,००० व्यक्ति काम करते है। घरेलू उपभोग में वृद्धि होने के कारण कोयला उत्पादन में भी वृद्धि की जा रही है। घरेलू उपभोग के लिये २० करोड़ टन तथा निर्यात के लिये २ करोड़ टन और कोयले की मांग का अनुमान है अतः २२ करोड़ टन वार्षिक कोयले की आवश्यकता होगी। सन् १९४७ में कोयले का कुल उत्पादन १९७० लाख टन था। इसमें से १८५० लाख टन की तो देश में ही खपत हो गई और ६० लाख टन का निर्यात कर दिया गया। सन् १९४९ में घरेलू उपभोग की मात्रा २००० लाख टन हो गई और २०० लाख टन निर्यात किया गया।

ग्रेट ब्रिटेन की लोहे की खानें

ब्रिटेन में खनिज लोहा निम्न श्रेणी का है। यहां पर लोहे की खाने अधिकतर

उत्तरी लैनार्कशायर, क्लाइड बेसिन, उत्तरी स्टैफोर्डशायर तथा दक्षिणी वेल्स में स्थित है।

लोहे के क्षेत्र तथा उत्पादन की कमी—दक्षिणी वेल्स की लोहे की खाने प्रायः समाप्त हो गई है और अब यहाँ का लोहे तथा इस्पात का धंधा स्पेन तथा फ्रांस के लोहे पर निर्भर है। ब्रिटेन के सब से महत्वपूर्ण लोहे प्रदेश दक्षिण-पूर्वी इंगलैंड में है। यहाँ से ब्रिटेन का ८५ प्र० श० लोहा निकलता है। लोहे के प्रमुख केन्द्र नीचे दिये हैं — (१) क्लीवलैंड की पहाड़िया, (२) लिंकनशायर के स्कन्थोर्प तथा फ्राडिघम, (३) नार्थम्पटनशायर के कौर्बी तथा कैटरिंग तथा (४) उत्तरी आक्सफोर्डशायर में बैनबरी के समीप। यहाँ के धातु उद्योगों के लिये पर्याप्त लोहा प्राप्त नहीं होता इसलिये बाहर से मंगाया जाता है। लोहे की अनेक खानें अब समाप्त हो गई हैं। इसीलिये स्वीडन, स्पेन, फ्रांस, संयुक्त राष्ट्र तथा न्यूफाउंडलैंड से लोहा मंगाना पड़ता है। १९३८ में संयुक्त राज्य (U K) ने ५१ लाख टन खनिज लोहा बाहर से मंगाया था।

अन्य खनिज पदार्थ—ब्रिटेन में सीसा, जस्ता, तांबा तथा टीन भी मिलता है। चूने का पत्थर, खड़िया, ग्रेनाइट स्लेट और नमक भी वार्नवाल, डैवोन, सोमरसैट, वेल्स तथा कम्ब्रियन प्रायद्वीप में प्राप्त होता है। टीन का अपार भंडार अब समाप्त हो गया है।

ग्रेट ब्रिटेन में सैनिक सुरक्षा सम्बन्धी धातुओं की बड़ी कमी है परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य तथा अन्य देशों में धातुएं मिल सकती हैं। ब्रिटेन में मैंगनीज़, क्रोम, टंगस्टन, तांबा, निकिल तथा अल्यूमीनियम बिल्कुल नहीं होता। **इन धातुओं की प्राप्ति की सुविधा के कारण ही संयुक्त राष्ट्र को छोड़ कर संयुक्तराज्य (U K) की स्थिति संसार में सबसे सुदृढ़ है।** यह नीचे की तालिका से स्पष्ट हो जायगा—

ग्रेट ब्रिटेन में युद्धोपयोगी खनिज की प्राप्ति (१९३८)

(लाख टनों में)

वस्तु	घरेलू उत्पादन	साम्राज्य व कामनवेल्थ	अन्य प्रदेश
कोयला	२३००	७५०	१५०
लोहा	१२०	१००	६०
कच्चा लोहा	७०	३०	१०
इस्पात	१००	३०	—
तेल	—	७०	८४०
मैंगनीज़	—	९५००	१५००
क्रोम	—	३७००	१३००
टंगस्टन	—	५००	१०००
तांबा	—	५०००	९०००
अल्यूमीनियम	—	५५००	८४००
निकल	—	६००	३००

कृषि का धंधा

ब्रिटिश द्वीपों की उपज—ब्रिटिश द्वीप उद्योग प्रधान देश है। फिर भी यहां पर खेती का महत्वपूर्ण स्थान है। यहां के ११ प्र० श० मनुष्य खेती करते हैं। यहां की मुख्य फसलें *गेहूं, जौ, जई, मटर, सेमियां, आलू, शलजम इत्यादि हैं। भूमि की कमी से सघन खेती* की जाती है। पूर्वी इंगलैंड में गेहूं, जौ, जई, चुकन्दर तथा फलों के लिए अनुकूल दशायें हैं। गेहूं की खेती लिंकन, नारफाक, सफाक, एसेक्स तथा कैम्ब्रिजशायर में, जौ की खेती पूर्वी मैदानों में, जई की खेती स्काटलैंड के पूर्वी मैदानों तथा उत्तरी आयर्लैण्ड में होती है। चुकन्दर की खेती पूर्वी इंगलैंड, उत्तरी श्रोपशायर, स्टाफर्डशायर तथा आयरलैंड की बैरो नदी की घाटी में होती है। आजकल इंगलैंड की ८० प्रतिशत भूमि पर खेती की जाती है।

खेतिहर भूमि का उपभोग

(लाख एकड़ में)

अनाज	१९३९	१९५०
गेहूं	१८	२५
जौ	१०	१८
जई	२४	३१
मिली-जुली फसल	१	८
आलू	७	१२
चुकन्दर	३	४
सब्जी	२	५
खेती की भूमि	१२९	१८४
घास के मैदान	१९८	१२८
घास व फसलों का योग	३१७	३११

देश में भूमि की कमी के कारण, गहरी व मिश्रित खेती की जाती है।

ब्रिटेन की खेती में वृद्धि—ब्रिटेन में अपनी आवश्यकता की ३६ प्र० श० ही भोजन की वस्तुएं उत्पन्न होती हैं। अनेक शताब्दियों से बाहर से ही भोजन की सामग्री यहां आती रही है। अनाज पैदा करने वाले देशों के लिये ग्रेट ब्रिटेन सदा ही उत्तम ग्राहक रहा है। अब *बहुत से बगीचों व ऊसर भूमि को ठीक करके यहां पर ७० लाख एकड़ से भी अधिक भूमि* पर खेती की जाती है और खेती की उपज में कल्पनातीत वृद्धि हुई है। पिछले छः वर्ष की वृद्धि का प्रतिशत नीचे दिया जाता है—गेहूं १०६, जौ ११४, जई ५८, आलू १०७, चुकन्दर ३७, शाकभाजी (सब्जी) २४ तथा फल ५५ प्र० श०। वास्तव में दूसरे महायुद्ध के बाद से खाद्यान्नों की कमी के कारण ब्रिटेन में अनाजों की उपज बढ़ाई जा रही है।

पशुओं में वृद्धि—पशु पालन—यह भी ब्रिटेन का एक महत्वपूर्ण धंधा है। पशुओं से दूध, मास और खाल प्राप्त होती है। १९४६ में यहा १०० लाख पशु थे। १९३९ से १९४९ के बीच २,००,००० की वृद्धि हुई। यहा पर डेरी के धंधे में भी महत्वपूर्ण उन्नति हुई है विशेषकर आयरलैंड में। इंगलैंड में अब १,२०,००,००० से भी अधिक पशु है। दुग्धशालाओ का धन्धा निम्नलिखित भागो मे प्रमुख है—

(१) कोर्नवाल, डेवन और सोमरसेटशायर—यहा पनीर व क्रीम बनायी जाती है।

(२) वेल्स के मैदान—दक्षिण वेल्स कोयला क्षेत्र की घनी आबादी के लिये यहा पर दूध व पनीर उत्पन्न किया जाता है।

(३) चैशायर—यह सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। दूध व पनीर यहा की मुख्य वस्तुयें है।

(४) आक्सफोर्ड और ऐलसबरी की घाटियां—यहा से लन्दन को दूध भेजा जाता है।

(५) आयरलैंड में उत्तर और दक्षिणी पश्चिमी भाग के मैदानो में दुग्धशाला का धन्धा होता है।

ब्रिटेन से उच्च कोटि के पशुओं को जिन्दा ही निर्यात कर दिया जाता है। सन् १९४६ में करीब २००० पशु बाहर भेजे गये। मिडलैंड के मैदानो मे मास का धधा होता है।

ग्रेट ब्रिटेन में सुअरो की संख्या कम होती जा रही है। सन् १९३८ में ४४ लाख सूअर थे परन्तु सन् १९४९ में केवल २८ लाख ही रह गये।

ब्रिटेन में भेड़ो की संख्या—भेड़ पालना—किसी समय ब्रिटेन की समृद्धि भेडो पर ही निर्भर थी। परन्तु अब यह धधा महत्वपूर्ण नही रहा फिर भी सयुक्तराज्य (U K) मे न्यूजीलैंड से अधिक भेडे है। १९३९ मे यहा २ करोड ६० लाख भेंडे थी परन्तु सन् १९४९ में उनकी संख्या केवल २ करोड ही रह गई। भेड पालने के मुख्य प्रदेश (१) पीनाइन श्रेणी, (२) वेल्स पहाड़ी प्रदेश, (३) स्काटलैंड का पर्वतीय प्रदेश तथा (४) आयरलैंड है।

मछली का धधा

यह ब्रिटेन का एक मुख्य धधा है। इस धधे में देश की १० % जनता लगी है। ब्रिटेन के चारो ओर छिछले पानी मे असख्य मछलिया पाई जाती है। यह धधा अधिकतर पूर्वी तट पर केन्द्रित है। उत्तरी सागर में हैडाक, हैरिंग, काड और मैकरेल आदि मछलिया अधिकतर मिलती है। और विक, एबरडीन, पीटरहेड, स्टोन हैविन (Stone Haven), हल, ग्रिम्सबी तथा यारमथ आदि बन्दरगाह मछली के मुख्य केन्द्र हैं। इगलिश

सैनन में सिल्वर मछली मिलती है। यहाँ की नदियों में भी सालमन तथा ट्राउट मछलियाँ मिलती हैं। ग्रिम्सबी तथा बिलिंग्सगेट मछली की मंडियाँ हैं।

ब्रिटिश मछली क्षेत्रों का उत्पादन

	मात्रा	मूल्य
	(मीट्रिक टन)	(हजार पौंड)
१९३८	१,०६०,६६०	१३,४४८
१९६०	१,११०,०८०	६१,७[illegible]

मछली का धंधा इतना उन्नत होते हुए भी ब्रिटेन को संयुक्तराष्ट्र, कनाडा तथा नार्वे आदि देशों से मछली मंगाना पड़ता है। सन् १९६० में यह ब्रिटेन में काफी कमी हुई। कमी हुई और ब्रिटेन में कुल ०३६,०८३ टन मछली का आयात किया। ये मछलियाँ संयुक्त राष्ट्र, कनाडा और नार्वे से मंगवाई जाती हैं।

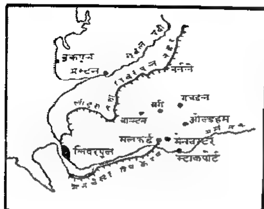
ब्रिटेन के मुख्य उद्योग-धंधे

ग्रेट ब्रिटेन संसार का सबसे मुख्य औद्योगिक देश है। यहाँ के मुख्य धंधे लोहा स्पात, सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र तथा रासायनिक धंधे हैं। यहाँ सबसे प्रधान धंधा लोहा तथा स्टील का है फिर सूती वस्त्रों का जिसमें १० लाख आदमी काम करते हैं। ३ लाख मनुष्य जूट, सन तथा रेशम आदि के धंधों में लगे हैं। अधिकतर स्त्रियाँ वस्त्र उद्योग में लगी हैं। ब्रिटेन के अधिकतर धंधे कोयले की खानों पर केन्द्रित हैं। पिछले दिनों में यहाँ विद्युत का भी उपयोग होने लगा है।

सूती वस्त्र उद्योग

१८वीं शताब्दी के अन्त में निम्नलिखित कारणों से ब्रिटेन के सूती वस्त्र व्यवसाय में असाधारण उन्नति हुई —(१) ब्रिटेन की बड़ी चढ़ी सामुद्रिक शक्ति तथा विस्तृत साम्राज्य के कारण कच्चा माल (कपास) मिलने तथा बने हुए माल के बिकने की सुविधा थी। (२) कपास उत्पादक देशों में औद्योगिक उन्नति नहीं थी। (३) यहाँ की आर्द्र जलवायु, जल शक्ति तथा कोयला वस्त्र उद्योग स्थापना के लिये स्वाभाविक सुविधायें थीं। (४) सूत कातने की मशीनों और यंत्रों की सुविधायें थीं। (५) भारत तथा अन्य कपास के देशों में राजनैतिक स्वतन्त्रता नहीं थी तथा (६) यूरोप के अन्य देशों में राजनैतिक अशान्ति तथा युद्ध का वातावरण था।

सूती वस्त्र उद्योग के केन्द्र तथा सुविधायें—ब्रिटेन का यह धंधा मुख्यतः लंकाशायर तथा समीपवर्ती क्षेत्रों में ही केन्द्रित है। इस धंधे में लगे हुए ८५ प्र० श० व्यक्ति लंकाशायर चेशायर तथा डर्बीशायर में ही रहते हैं। लंकाशायर में इस धंधे के लिये निम्नलिखित सुविधायें प्राप्त हैं —(१) पछुआ हवाओं के कारण सूत कातने के लिये उत्तम नम जल-



चित्र न० ५४—दक्षिणी लंकाशायर के सूती वस्त्र के केन्द्र

वायु। (२) लंकाशायर के सामने अमरीका के बन्दरगाहों की स्थिति से कच्चा माल मगाने की सुविधा। (३) कोयले, चूने के पत्थर तथा जल शक्ति की यथेष्ट प्राप्ति। (४) लिवरपूल के बन्दरगाह की समीपता, मजदूरों की कुशलता, पीढ़ियों से इस व्यवसाय का अनुभव, वस्त्र तैयार करने की मशीनों का आविष्कार, मैनचेस्टर शिप कैनाल की व्यवस्था आदि।

ग्रेट ब्रिटेन में कपास का उत्पादन तो नहीं होता। यहां पर कपास संयुक्त राष्ट्र अमरीका, भारतवर्ष, पीरु, मिश्र, सूडान तथा ब्राजील से मगाई जाती है। चूँकि यहां उत्तम प्रकार का महीन कपड़ा बिना जाता है इसलिये लम्बे रेशे वाली कपास संयुक्त-राष्ट्र, मिश्र और सूडान से मगाई जाती है।

वस्त्र उद्योग सम्बन्धी भिन्न भिन्न कार्य—लंकाशायर के नगरों को सूती वस्त्र उद्योग के विचार से दो श्रेणियों में बांट सकते हैं। प्रेस्टन, ब्लैकबर्न तथा बर्नले आदि उत्तर के केन्द्रों में बुनाई का काम होता है और रोशडेल (Rochdale), ओल्डहम, बोल्टन तथा बरी आदि दक्षिणी केन्द्रों में सूत कातने का धंधा केन्द्रित है। लंकाशायर से ८० प्र श वस्त्र बाहर भेजे जाते हैं। स्काटलैंड में ग्लासगो तथा पेसले भी वस्त्र उद्योग के प्रधान केन्द्र हैं। पेसले में डोरा बहुत बुना जाता है। ग्लासगो में वे सभी सुविधायें हैं जो लंकाशायर को हैं परन्तु इस्पात उद्योग की वृद्धि के कारण सूती वस्त्र उद्योग पीछे रह गया है।

ब्रिटिश सूती वस्त्र के ग्राहक—ब्रिटेन के सूती माल के प्रमुख ग्राहक भारतवर्ष, चीन, मिश्र, जर्मनी, हालैंड, टर्की, वैस्ट इंडीज, दक्षिणी तथा मध्य अमरीका, मध्य अफ्रीका, जापान, आस्ट्रेलिया, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र, स्पेन, इटली, फ्रांस और स्विट्जरलैंड हैं। ब्रिटेन भी जापान, फ्रांस, जर्मनी और स्विटज़रलैंड से काफी सूती वस्तुएं मगाता है।

ब्रिटिश वस्त्र उद्योग का पतन—१९१३ तक संसार के वस्त्र व्यापार पर लंकाशायर का एकछत्र अधिकार था। अब इसके बहुत से पूर्वी बाजार जापान और संयुक्त राष्ट्र के हाथ में आ गये हैं। इसके अतिरिक्त एशिया तथा अफ्रीका के देश अब अपने यहां काफी कपड़ा बनाने लगे हैं। फिर बाहर के देशों में भारी चुंगी लगा दी गई है। और जापान में

सस्ते मजदूरी तथा राज्य के प्रोत्साहन के कारण जापानी वस्त्र चीन तथा भारत में सस्ता पड़ता है। इन्हीं कारणों से लंकाशायर के वस्त्र उद्योग का पतन हो गया है।

ब्रिटेन में सूती वस्त्र व्यवसाय की अवनति के आँकड़े
(लाख गज)

	१९१३ में	१९३७ में
वस्त्र का निर्यात	७०,००० गज	१९,००० गज
कपास का आयात	२१,००० पौंड	१५,००० पौंड
भारत का वस्त्र निर्यात	३०,००० गज	६०,००० गज

ब्रिटेन के वस्त्र उद्योग की स्थिति—यद्यपि ब्रिटेन में वस्त्र उद्योग का पुनः संगठित करने के उद्योग किये जा रहे हैं फिर भी अभी तक पूर्व दशा की प्राप्ति नहीं हो सकी है। बारीक कपड़े के व्यापार में तो ब्रिटेन पहले की ही भाँति बना रहा है परन्तु मोटे कपड़े के व्यापार में कलमाल निर्यात की भी सम्भावना नहीं है। ब्रिटेन को पूर्वी दशा में सुधार करने में कपड़े का मूल्य घटाना पड़ेगा और समय के अनुसार अपने उद्योग में भी परिवर्तन करना पड़ेगा।

सूती वस्त्रों का निर्यात
(लाखों में)

	सूती धागा (पौंड)	सूती कपड़ा (गज)
१९३७	१५९०	१९,२१०
१९४७	३६७	४३३०
१९४९	८३०	९,०४०

लोहे तथा स्टील का धंधा

लोहे के उत्पादन की दृष्टि से ब्रिटेन का संसार में चतुर्थ स्थान है। लोहे और कोयले के समीप ही मिलने के कारण लोहे और स्टील के धंधे में इतनी उन्नति हुई है। ग्रेट ब्रिटेन के इस्पात उत्पादन में बराबर वृद्धि हो रही है। सन् १९३८ में कुल उत्पादन केवल १३० लाख टन था परन्तु अब १६० लाख टन उत्पादन होता है। ब्रिटेन में निम्न-लिखित पाँच मुख्य स्टील क्षेत्र हैं —

(१) काला प्रदेश (The Black Country)—यह ब्रिटेन का मुख्य लोहे और इस्पात का प्रदेश है। लोहे, कोयले, लकड़ी और चूने के पत्थर के पास-पास पाये जाने के कारण ही इस प्रदेश में लोहे तथा स्टील उद्योग की स्थापना हुई है। बर्मिंघम, कावेन्टरी, डडले और रेडिच इस धंधे के प्रमुख केन्द्र हैं। बर्मिंघम में विशेष रूप से मोटर-साइकिल, रेल का सामान, मशीन, औजार, बिजली का सामान तथा पीतल के बर्तन, कवेन्टरी में

तारें और मार्टकिने, रेडिच में सुइया तथा डडले में जंजीरें बनाई जाती हैं। समुद्र से दूर होने के कारण काफी खर्च पड़ता है इसलिये अधिक मूल्य की वस्तुएं बनाई जाती हैं।

(२) शैफील्ड प्रदेश—कटलरी का प्रसिद्ध केन्द्र—यहा पर लोहे का धंधा यहा के कच्चे लोहे, लकड़ी तथा जल-शक्ति के कारण आरम्भ हुआ था, अब लोहा समाप्त हो गया है और अधिकतर कच्चा लोहा लिंकनशायर तथा स्वीडन से आता है। यहा पर छुरी

चित्र नं० ५५—ग्रेट ब्रिटेन के प्रमुख उद्योग-धंधे

उस्तरे, कैंची, चाकू आदि हल्की वस्तुएं तथा मैंगनीज स्टील, क्रोमियम स्टील और टंगस्टन स्टील आदि भी बनाये जाते हैं। इस प्रदेश में रौथरहैम तथा चेस्टरफील्ड मुख्य केन्द्र हैं।

(३) उत्तर पूर्वीय तट—जहाजों, नावों तथा इंजीनियरिंग के केन्द्र—टाइन, वीयर तथा टीज प्रदेश—टी-साइड लोहा गलाने का केन्द्र है। इस क्षेत्र के अन्य नगर हार्टिलपूल, मिडिल्सबरो और डार्लिंगटन हैं जिनमें समस्त जहाज, इंजिन तथा इंजीनियरी का सामान बनाया जाता है। टाइन साइड व न्यूकैसिल में आधुनिक ढंग के जहाज तथा वीअर साइड के सन्डरलैंड में माल ढोने वाली नावें बनाई जाती हैं। इस प्रदेश में बढ़िया लोहा, कोयला, चूने के पत्थर तथा उनमें मिली धातुओं की सुविधायें हैं।

(४) फर्नेस प्रान्त—यह उत्तर पश्चिमी तटीय प्रदेश स्टील तथा पिग आयरन बनाने का केन्द्र है। बारो (Barrow) जहाज बनाने का केन्द्र है।

(५) दक्षिण वेल्स—इस प्रदेश में टीन की चादर बनती है। यहां स्पेन तथा अल्जीरिया से लोहा तथा मलाया, बोलिविया और नाइजीरिया से टीन आता है। स्वान्सी तथा लनली प्रधान नगर हैं।

(६) स्काटलैंड की मध्य घाटी—यह प्रदेश इंजीनियरी तथा पोतनिर्माण के धंधे के कारण प्रसिद्ध है। ग्लासगो, ग्रीनाक तथा डम्बर्टन यहां के प्रधान केन्द्र हैं।

पोत-निर्माण उद्योग

पोत-निर्माण ग्रेट ब्रिटेन का मुख्य धंधा है। इस के लिये दो बातों की आवश्यकता है—(१) नाव्य नदी तथा समुद्री प्रवेश की सुविधा तथा (२) पोत-निर्माण सामग्री की प्राप्ति। पिछली शताब्दियों में पोत-निर्माण सामग्री की भिन्नता के कारण इस धंधे के भिन्न भिन्न केन्द्र रहे हैं। जब लकड़ी के जहाजों का समय था तो लकड़ी की प्राप्ति की सुविधा के कारण टेम्स पोत-निर्माण का केन्द्र था। १९वीं शताब्दी के मध्य भाग में लोहे के जहाज बनने लगे तो यह धंधा लोहे की खानों के समीप हटने लगा। ब्रिटेन में पोत-निर्माण की उत्पत्ति तथा उन्नति निम्न कारणों से हुई—

अ—नदियों के गहरे मुहाने।

ब—कोयले तथा लोहे उद्योग का समीप में ही केन्द्रित होना तथा

ग—जहाजों की बढ़ती हुई मांग

विशिष्ट पोतों के केन्द्र—आजकल पोत-निर्माण उद्योग ग्रेट ब्रिटेन में ४ प्रमुख प्रदेशों में केन्द्रित है—

(१) उत्तर-पूर्वी तट प्रदेश (टाइन, वीअर, टीज, नदियां)

(२) क्लाइड नदी प्रदेश

(३) बेल्फास्ट प्रदेश

(४) वर्कनहैड प्रदेश तथा
(५) बारो प्रदेश

उत्तर-पूर्वी तट प्रदेशों में सभी श्रेणी के जहाज बनते हैं। क्लाइड प्रदेश में यात्री जहाज, बेल्फास्ट प्रदेश में मोटर जहाज, वर्कनहैड प्रदेश में युद्धपोत (जंगी जहाज) तथा बारो प्रदेश में व्यापारी पोत (सौदागरी जहाज) विशेषकर बनते हैं। टेम्स नदी पर अब जहाज नहीं बनते, हां, लन्दन में जहाजों की मरम्मत का धंधा होता है।

ऊन का धंधा

यहां का यह बहुत पुराना धंधा है परन्तु अब इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। यह धंधा यार्कशायर में केन्द्रित है। इस के लिये यहां अनुकूल दशायें हैं—(१) उपयुक्त जलवायु, (२) ऊन धोने और रंगने के लिये पीनाइन पर्वत से जल प्राप्ति, (३) पीनाइन पर चराने के लिये उत्तम चरागाह, (४) जल-शक्ति की सुविधा तथा समुद्र तट की समीपता।

यार्कशायर का वैस्टराइडिंग—ऊन के धंधे का प्रधान केन्द्र वैस्ट राइडिंग है। यहां कोयला बहुत मिलता है। लीड्स, ब्रैडफोर्ड, हैलिफैक्स तथा हडर्सफील्ड नगर यहां के मुख्य केन्द्र हैं। हैलिफैक्स में कालीन बहुत बनते हैं। यहां पर ऊन काफी नहीं होती इसलिये आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, दक्षिणी अफ्रीका, भारत, अर्जेन्टाइना तथा युरुग्वे से मंगाया जाता है। इंगलैंड में न्यूज़ीलैंड का ६० प्र० श०, अर्जेन्टाइना का २५ प्र० श०, दक्षिणी अफ्रीका का ३० प्र० श० और आस्ट्रेलिया का ३५ प्र० श० ऊन आता है। दुनिया का सब से अधिक ऊन यहीं आता है। यहां का ऊनी कपड़ा बहुत बढ़िया होता है और जर्मनी, जापान, स्वीडन, नारवे, रूस, डेनमार्क, इटली, स्पेन तथा संयुक्त राष्ट्र को जाता है।

चमड़े का धंधा

ब्रिटेन के इस धंधे का दुनिया में तीसरा स्थान है। यह धंधा ऊंचे दर्जे का होता है। यहीं के पशुओं से काफी चमड़ा मिल जाता है और बाहर से भी आता है विशेषकर भारत से। लन्दन, ब्रिस्टल, ग्लासगो तथा लिवरपूल इस धंधे के प्रधान केन्द्र हैं। साऊथ लंकाशायर प्रान्त भारी चमड़े का केन्द्र है। यार्कशायर, ऐसेक्स, कैन्ट तथा सरे इस धंधे के अन्य केन्द्र हैं। सन् १९४६ में ३०,००० मनुष्य इस धंधे में लगे हुये थे।

अन्य धंधे—अन्य धंधों में रासायनिक धंधे, शीशे का सामान, नकली रेशम, जूट तथा रेशम का धंधा सम्मिलित हैं। रासायनिक तथा शीशे का उद्योग दक्षिणी लंकाशायर तथा चेशायर में, चमड़े का धंधा मिडलैंड के नगरों में तथा जूट का धंधा डंडी में केन्द्रित है। १९०८ तक जूट की मंडी पर डंडी का ही अधिकार था।

ब्रिटेन का वैदेशिक व्यापार

ब्रिटेन का वैदेशिक व्यापार संयुक्त राष्ट्र के पश्चात् संसार में दूसरे स्थान पर है। यहां का व्यापार समुद्र द्वारा होता है। यहां निर्यात की अपेक्षा आयात अधिक होता है परन्तु

बैंकों, बीमा और जहाजों की आय के कारण ब्रिटेन लाभ में ही रहता है। यहां के निर्यात व्यापार की एक खास बात यह है कि ब्रिटेन स्वनिर्मित वस्तुओं के अतिरिक्त बाहर से आई हुई वस्तुओं को भी जैसी की तैसी ही पुनर्निर्यात कर देता है।

ब्रिटेन में आने वाली वस्तुओं को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है —

(अ) भोजन की वस्तुएं—गेहूं, आटा, मक्का, जौ, दाल, चावल, रुई, डेरी की वस्तुएं, मछली, मांस, फल, चीनी, मसाले, चाय, कहवा, कोकोआ, मदिरा, तम्बाकू तथा सब्जी।

(ब) कच्चा माल—कपास, ऊन, सन, जूट, रेशम, पटुआ, रबर, फर, लकड़ी, तिलहन, खनिज तेल, ग्रीस, हाथीदांत, चमड़ा, रसायन व पदार्थ, कच्चा लोहा, तांबा, सीसा, मैंगनीज, जस्ता, टीन, सोना, चांदी इत्यादि।

(स) तैयार माल—ऊनी, सूती कपड़ा, चमड़े का सामान, लोहे का सामान, शीशा, बिजली का सामान, रेशमी वस्त्र, चीनी मिट्टी इत्यादि।

१९४७ में यहां पर आयात की गई वस्तुओं का मूल्य १७,८६० लाख पौंड था। संसार के कुल निर्यात का २१ प्रतिशत केवल ग्रेट ब्रिटेन द्वारा उपभुक्त है।

सन् १९५१ में ग्रेट ब्रिटेन के आयात का मूल्य व ब्योरा इस प्रकार था

वस्तु	लाख पौंड में
भोज्य व पेय पदार्थ	१२,९९०
कच्चा माल	१३,१५०
तैयार किया माल	८८५०
अन्य वस्तुएं	१५०
कुल माल	३५,१४०

ब्रिटेन से बाहर जाने वाली वस्तुएं—यहां से ८० प्रतिशत पक्के माल का ही निर्यात होता है। कोयला ही केवल एक कच्ची वस्तु है जो बाहर भेजी जाती है। अन्य वस्तुएं विशेषकर लोहे का सामान, ऊनी तथा सूती वस्त्र, रासायनिक पदार्थ, कागज, मशीनें, चमड़े की वस्तुएं, तम्बाकू, जूट, अस्त्र-शस्त्र तथा गोला-बारूद इत्यादि हैं।

१९४९ में यहां से भेजे गये माल का मूल्य १७,८४० लाख पौंड था। ध्यान देने की बात यह है कि १९३८ की अपेक्षा ब्रिटेन के वैदेशिक व्यापार में बहुत अवनति हो गई है। सन् १९५० में यह व्यापार फिर बढ़ गया और कुल निर्यात का मूल्य २२,५५० लाख पौंड था।

ग्रेट ब्रिटेन का वैदेशिक व्यापार यों तो संसार के सभी भागों से होता है परन्तु निम्नलिखित देशों के साथ विशेषकर होता है —

(१) उत्तरी अमरीका से आयात की प्रमुख वस्तुएं—लकड़ी, मांस, डेरी की वस्तुएं, खाल, चमड़ा, फर, गेहूं, कपास, मक्का, जौ, तम्बाकू, मशीनें, सूत, तेल, तांबा, जस्ता, चांदी,

शीशा, ग्रेफाइट, रबर की वस्तुएं इत्यादि। **निर्यात की जाने वाली वस्तुएं**—मशीनें, रासायनिक पदार्थ, विलास सामग्री, मदिरा, सूत, लोहे की वस्तुएं इत्यादि।

(२) **मध्य तथा दक्षिणी अमरीका और वेस्ट इंडीज से आयात की वस्तुएं**:—रबर, कोकोआ, कहवा, रूई, तम्बाकू, शोरा, चांदी, तेल, तिलहन तथा मसाले हैं। **निर्यात की वस्तुएं**—कपास, मशीनें, मदिरा तथा मद्यसार (spirits) हैं।

(३) **दक्षिणी अमरीका से आयात की वस्तुएं**:—मांस, गेहूं, मक्का, चमड़ा, खालें, लकड़ी, तांबा, ऊन, कहवा, चीनी, कोकोआ, नाइट्रेट, रबर तथा तेल हैं और **निर्यात की वस्तुएं**—मशीनें, औजार, शीशा, जहाज, इंजन, मोटर गाड़ियां, रासायनिक पदार्थ, लोहे का सामान, चमड़े का सामान तथा कोयला हैं।

(४) **उष्णकटिबंधीय पूर्वी तथा पश्चिमी अफ्रीका से आयात की वस्तुएं**:—ताड़ का तेल, हाथीदांत, रबर, गोंद, मसाले, कोकोआ, कहवा, रूई, लकड़ी, तिलहन, गन्ने की चीनी हैं। **निर्यात की वस्तुएं**—सूती वस्त्र, टीन की वस्तुएं, चाकू, बन्दूक तथा औजार हैं।

(५) **दक्षिणी अफ्रीका से आयात की वस्तुएं**—शुतुरमुर्ग के पर, ऊन, चमड़ा, हीरे, सोना, चाय, तांबा, मदिरा तथा फल। **निर्यात की वस्तुएं**—सूत, रासायनिक पदार्थ, लोहे का सामान, कपड़े, चमड़े की वस्तुएं —अंजन, मोटर गाड़ियां, मशीनें, औजार, हथियार तथा गोलाबारूद हैं।

(६) **चीन तथा जापान से आयात की वस्तुएं**—चाय, रेशम, रेशमी वस्त्र, चावल, चीनी, खिलौने तथा दियासलाई। **निर्यात की वस्तुएं**—सूती वस्त्र, लोहे का सामान, मशीनें, तम्बाकू, हथियार तथा गोला-बारूद हैं।

(७) **दक्षिण पूर्वी तथा दक्षिण पश्चिमी एशिया से आयात की वस्तुएं**:—तेल, चमड़ा रंगने की वस्तुएं, गेहूं, चावल, मक्का, जूट, कपास, मसाले, तिलहन, कहवा, चाय, नील, लकड़ी, हाथीदांत, ऊन, सोना, तम्बाकू, चमड़ा, गटापार्चा, रबर तथा दालें हैं। **निर्यात की वस्तुएं**—सूत, मशीनें, चमड़े की वस्तुएं, तम्बाकू, कोयला, कागज, अंजन, सूती वस्त्र तथा लोहे की वस्तुएं हैं।

(८) **आस्ट्रेलिया से आयात की वस्तुएं**:—मांस, मक्खन, गेहूं, आटा, ऊन, चांदी, सोना, शोरा, मदिरा, खालें इत्यादि हैं। **निर्यात की वस्तुएं**—अंजन, मोटर गाड़ियां, मशीनें, विलास सामग्री, रासायनिक पदार्थ तथा जहाज इत्यादि हैं।

(९) **पश्चिमी तथा मध्य यूरोप और रूस से आयात की वस्तुएं**:—डेरी की वस्तुएं, अंडे, चुकन्दर की चीनी, लकड़ी, गेहूं, फर, आटा, मदिरा, लोहे की वस्तुएं, चमड़ा, रासायनिक पदार्थ तथा प्लेटिनम इत्यादि हैं। **निर्यात की वस्तुएं**—कोयला, सूत, लोहे की वस्तुएं, मशीनें, कागज, चमड़े की वस्तुएं तथा मछली इत्यादि हैं।

(१०) **बाल्टिक प्रदेश से आयात की वस्तुएं**—डेरी की वस्तुएं, सुअर का मांस, अंडे, मछली, खालें, दियासलाई इत्यादि। **निर्यात की वस्तुएं**—कोयला, लोहे की वस्तुएं,

मशीन, सूती वस्त्र, जहाज इत्यादि है।

ग्रेट ब्रिटेन अपने व्यापार की निर्यात तथा आयात की वस्तुओं के लिये ब्रिटिश राष्ट्र-मंडल पर भी बहुत कुछ निर्भर रहता है। व्यापार का झुकाव सदा ही ग्रेट ब्रिटेन के पक्ष में रहता है।

निर्यात		*आयात*	
कुल का प्रतिशत		कुल का प्रतिशत	
भारत	[illegible] ४	भारत	७.३
दक्षिण अफ्रीका	८.५	कनाडा	८.३
आस्ट्रेलिया	७.७	आस्ट्रेलिया	७.३
कुल कामनवेल्थ	४९.७	कुल कामनवेल्थ	३६.२
यूरोप	२६.७	यूरोप	२९.०

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव—द्वितीय विश्वयुद्ध का ब्रिटेन के व्यापार पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। अब यह अमरीका पर अधिक निर्भर हो गया है। वहां की बनी हुई वस्तुएं अब बहुत महंगी पड़ती हैं इस कारण ब्रिटेन की औद्योगिक स्थिति कमजोर हो गई है और उसकी बहुत-सी पूंजी नष्ट हो गई है। अब ब्रिटेन में अतिरिक्त उत्पादन के लिये प्रयत्न हो रहे हैं जिससे आयात में कमी हो जाये और निर्यात अधिक हो सके।

ग्रेट ब्रिटेन के व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र तथा बन्दरगाह

लन्दन—संयुक्त राज्य (U K) की राजधानी और संसार भर में सबसे विशाल नगर तथा सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यह टेम्स नदी के दोनों किनारों पर बना हुआ है। ब्रिटेन का वितरण केन्द्र होने के कारण यहां निर्यात की अपेक्षा वस्तुओं का आयात अधिक होता है। बाल्टिक तथा भूमध्यसागर के बन्दरगाहों के साथ होने वाले वैदेशिक व्यापार पर अधिकतर लन्दन का ही अधिकार है। पूर्वीय देशों की चाय इत्यादि उपज तथा आस्ट्रेलिया की ऊन के लिये लन्दन एक प्रमुख मंडी है।

बर्मिंघम—मिडलैण्ड का व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र है। यहां पर तलवार, बन्दूक, लोहे के कलम, निब, साइकिल और मोटर के पुर्जे विशेषकर बनते हैं।

लिवरपूल—ब्रिटेन के पश्चिमी तट पर सबसे प्रसिद्ध बन्दर है। यहां पर संयुक्त-राष्ट्र अमरीका, कनाडा, दक्षिणी अमरीका, पश्चिमी अफ्रीका तथा पश्चिमी द्वीपसमूह से कच्ची वस्तुएं तथा भोजन के पदार्थ (कपास, अनाज, तेल, गोश्त, तम्बाकू इत्यादि) अधिक-तर आते हैं। यहां से ऊनी सूती वस्त्र, लोहे का सामान तथा रासायनिक पदार्थ बाहर भेजे जाते हैं। यहां पर वस्तुओं का निर्यात तथा आयात समीपवर्ती नगरों के लिये होता है।

मानचैस्टर—लंकाशायर के सूती वस्त्र उद्योग का प्रधान केन्द्र है। संसार भर में यह 'रुई की राजधानी' (Cotton Metropolis) के नाम से प्रसिद्ध है।

शैफील्ड में लोहे की भारी वस्तुएं तथा चाकू, कैंची, छुरी इत्यादि विशेषकर बनते हैं।

लीड्स—तैयार वस्त्रों, चमड़े की वस्तुओं तथा मशीनों का मुख्य केन्द्र है। ब्रिटेन का चमड़ा व्यापार यहां सबसे अधिक होता है और यहां साबुन बनाने तथा तेल शोधन के बड़े कारखाने हैं।

ब्रिस्टल—सेवर्न के मुहाने पर बहुत पुराना बन्दरगाह है। यहां अमरीका से तम्बाकू का व्यापार होता है।

हल—हम्बर नदी पर स्थित है। यहां से हैम्बर्ग तथा जर्मन आदि महाद्वीपीय नगरों के साथ व्यापार होता है।

ब्रैडफोर्ड—यार्कशं के वैस्ट राइडिंग का रेशम, मखमल तथा ऊन की वस्तुओं का प्रधान केन्द्र है।

साउथैम्पटन—इंगलैंड के दक्षिणी तट पर अमरीकन जहाजी मार्गों का अन्तिम प्रसिद्ध स्थान है।

सन्डरलैंड—वीयर नदी के मुहाने पर इंगलैंड का प्रसिद्ध पोत निर्माण केन्द्र है। यहां पर शीशे तथा रासायनिक पदार्थों के कारखाने हैं और रस्से भी बनाये जाते हैं।

ओल्डहैम—दक्षिणी लंकाशायर का डोरे, धागे और वस्त्र उद्योग का प्रसिद्ध केन्द्र है।

कार्डिफ—वेल्स का सबसे बड़ा नगर है। यहां से विदेशों को सबसे अधिक कोयला जाता है। यहां पर रासायनिक उद्योग, पोत निर्माण तथा लोहा ढालने के कारखाने हैं।

स्वानसी—वेल्स का दूसरे नम्बर का महान् नगर है। यहां पर लोहा, तांबा, चाँदी, जस्ता, टीन तथा सीसा गलाकर शुद्ध किये जाते हैं। स्पेन से लोहा तथा स्ट्रेट सैटिल मेंट और इन्डोनेशिया से खनिज तांबा यहां आता है।

ग्लासगो—क्लाइड नदी पर स्काटलैंड का सबसे बड़ा नगर है। ब्रिटेन के पश्चिम तट पर अमरीका से कच्चा माल मंगाने के लिए इसकी स्थिति बड़ी अच्छी है। यह पोत-निर्माण का प्रसिद्ध केन्द्र तथा संसार के सब से व्यस्त औद्योगिक प्रदेश का भी केन्द्र है।

एडिनबर्ग—फोर्थ की खाड़ी पर स्थित एक शिक्षा-केन्द्र है। यहां से वस्तुएं इधर-उधर वितरण की जाती हैं।

डंडी—स्काटलैंड का तीसरे नम्बर का नगर, जूट व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र तथा मछली व्यापार की मंडी है।

ऐबरडीन—स्काटलैंड का चौथे नम्बर का नगर है। यहां पर ऊनी वस्त्र, दरियां, रासायनिक पदार्थ, मशीन, सन का मोटा कपड़ा आदि वस्तुएं बनती हैं। संसार का सबसे बड़ा कंघों का कारखाना यहीं है।

बेलफास्ट—आयरलैंड में सन व्यवसाय तथा पोतनिर्माण का केन्द्र है।

डबलिन—आयरलैंड की राजधानी तथा प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहां पर पापलीन, वस्त्र, बिस्कुट, रंग, शराब (ह्विस्की तथा बीअर) आदि बनते हैं।

लिमरिक में सन का कपड़ा, मद्यसार (Spirits) तथा मदिरा बनाई जाती है।

जर्मनी

जर्मनी का क्षेत्रफल १,८१,६३० वर्गमील तथा आबादी ७ करोड़ है। प्रति वर्ग मील ६४४ व्यक्ति का औसत पड़ता है। १९३९ की वृहत् जर्मनी (आस्ट्रिया, सुडेटनलैंड सहित) का क्षेत्रफल २,२५,१९९ वर्गमील तथा आबादी ८ करोड़ थी।

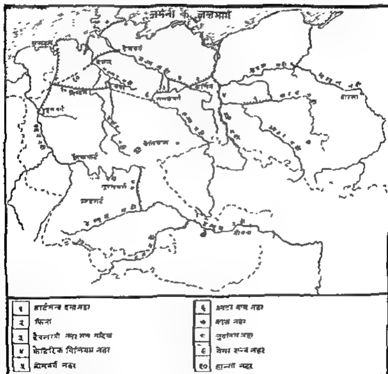
जर्मनी के औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति के साधन—निम्नलिखित प्राकृतिक तथा मानवी कारणों से जर्मनी एक महान् औद्योगिक तथा व्यापारिक देश बन गया है— (१) यूरोप के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश के मध्य स्थित है (२) लोहा, कोयला, पोटाश, जस्ता इत्यादि खनिज पदार्थों की प्रचुरता है (३) देश उपजाऊ है (४) उत्तम जल-मार्ग हैं, (५) जलवायु स्फूर्तिदायक है (६) वनसम्पत्ति के प्रचुर साधन हैं। इसके अतिरिक्त यहां के निवासियों तथा सरकार ने भी यहां की औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति में बड़ा योग दिया है। यहां की सरकार ने वैदेशिक व्यापार को प्रोत्साहन दिया तथा निवासियों ने एकमत होकर १८७१ में राष्ट्रीय औद्योगिक नीति को जन्म दिया। फ्रांस पर विजय प्राप्त करके ४ अल्सेस तथा लारेन और अल्सास प्रान्त प्राप्त किए। १८८८-८९ में जर्मनी ने संसार में उपनिवेशों की स्थापना की और वहां पर मंडियां बनाईं। इस प्रकार १९१४ में जर्मनी का उद्योग और व्यापार संसार में ब्रिटेन को छोड़ कर दूसरे नम्बर पर था।

जर्मनी की वन-सम्पत्ति तथा कृषि—जर्मनी की जलवायु सभी स्थानों पर महाद्वीपीय है। दक्षिण के पहाड़ वनों से भरे हैं और उत्तरी भाग में मैदान हैं। इसके दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग में छोटे जमींदारों और किसानों के खेत हैं और उत्तरी भाग में बड़े-बड़े जमींदार हैं। यहां पर सघन कृषि होती है और गेहूं, राई, जौ, चुकन्दर तथा आलू की फसलें उगाई जाती हैं।

यातायात—जर्मनी के जल, थल तथा वायु मार्ग सुव्यवस्थित हैं। रेलों की व्यवस्था संसार भर में अच्छी है। सन् १९४० में रेल मार्गों की लम्बाई ४३,००० मील थी। रेलें देश भर में फैली हुई हैं। १९३९ में यहां का हवाई यातायात भी किसी अन्य देश से कम नहीं था। दूसरे महायुद्ध में इसके यातायात को बहुत हानि पहुंची है और भविष्य में फिर उसी प्रकार बन सकेगी या नहीं कहना मुश्किल है।

जर्मनी के जलमार्ग (नदियां)—जर्मनी के मैदानों में जलमार्गों की व्यवस्था अति उत्तम है। इन मार्गों के विकास का यहां के उद्योग-धंधों और व्यापार पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। मुख्य नदियां राइन, एल्ब, ओडर तथा विस्चुला हैं। इन्हें सहायक करके नहरों

द्वारा परस्पर मिला दिया गया है इस प्रकार सारे देश में जलमार्गों की सुविधा हो गई है। राइन का संबंध पूर्व में वीसर से, पश्चिम में म्यूज़ से तथा दक्षिण में डैन्यूब से कर दिया गया है और फ्रांस के जलमार्गों से भी इसका संबंध है। ऐल्ब नदी सबसे घने आबाद भागों में बहती है और कील नहर द्वारा इसका संबंध बाल्टिक सागर से भी है। ओडर कृषि-प्रान्तों में बहती है और ऐल्ब से भी मिली हुई है। डैन्यूब में अधिक व्यापार नहीं होता। अन्य छोटी नदियों के नाम ऐम्स, इन, स्प्री मेन तथा ऐल्स्टर हैं। नदियों और नहरों के मार्ग की लम्बाई ७,००० मील के लगभग है।



चित्र न० ५६

जर्मनी की नहरें—*१९३८ में मिडलैंड कैनाल बनी, जिसके द्वारा पूर्व तथा पश्चिमी* भागों का संबंध स्थापित हुआ। ओडर, डैन्यूब नहर द्वारा डैन्यूब नदी भी जलमार्गों से मिला दी जावेगी। ओडर-विस्चुला नहर पूर्व की ओर मीस्टर तक बढ़ाई जा रही है। इसके द्वारा जर्मनी का रूस से सीधा संबंध स्थापित हो जावेगा। ऐल्ब, ओडर तथा राइन, मेन, डैन्यूब

नहरों द्वारा शीघ्र ही मध्य तथा उत्तरी जर्मनी का डेन्यूब से संबंध स्थापित किया जावेगा।

जर्मनी की खनिज सम्पत्ति—खनिज सम्पत्ति विशेषकर लोहे कोयले में जर्मनी का बहुत ऊंचा स्थान है। इन दोनों का यहां पर अपार भंडार है परन्तु पास-पास नहीं मिलते। यहां के मुख्य कोयला-क्षेत्र रूर, वेस्टफालिया, सार, साइलेशिया (Upper & Lower) सिक्सनी तथा सुगान (सैक्सनी) हैं। लोहा क्षेत्र वेस्टरवाल्ड (प्रशिया), लाह्-डील प्रदेश, अपर हैस प्रान्त तथा पीन साल्जगाइट्स (Peine Salzgites) प्रान्त हैं। १९१८ में लारेन तथा लक्समबर्ग से ७५ प्रतिशत लोहा निकाला जाता था और यूरोप भर में सब से अधिक होता था। (प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् ये दोनों प्रान्त जर्मनी से निकाल कर फ्रांस तथा बेल्जियम को दे दिये गये थे)। यहां पर जस्ता, सीसा और नमक भी बहुत मिलता है। जर्मनी में प्रति वर्ष ५ लाख टन खनिज तेल निकलता है।

१९३७ में जर्मनी के मुख्य खनिज पदार्थों का उत्पादन

(सहस्र मीट्रिक टन)

कोयला	१,८८,५१२	लोहा	६,७१६
लिगनाइट	१,८८,७०८	पोटाश	१,६७३
पहाड़ी नमक	२,७५३	खनिज तेल	४५१
तांबा	१,२६३	जस्ता	१६४

१९५० में जर्मनी में १८ करोड़ ६० लाख मीट्रिक टन बिटुमिनस तथा १६ करोड़ ५० लाख मीट्रिक टन लिगनाइट कोयला निकाला गया।

शिल्प उद्योग—जर्मनी संसार में प्रधान औद्योगिक देशों में से है। यहां उद्योगों में विज्ञान का प्रयोग सब से अधिक किया जाता है। यहां के उद्योग धंधों की वस्तुओं में लागत का व्यय सब से कम पड़ता है। वस्तुओं का ऊंचा स्तर, वैज्ञानिक प्रबन्ध, मशीनों का अधिक उपयोग, विक्रय में कम खर्चा तथा माल का पूरा-पूरा उपयोग यहां के शिल्प-उद्योगों की विशेषतायें हैं। परन्तु यहां के उद्योग प्रदेश विशेषकर रूर प्रदेश की सीमाओं के समीप स्थित हैं अतः उन केन्द्रों पर हवाई हमलों का भय हो सकता है। इसी कारण दूसरे महायुद्ध में इसके अधिकतर उद्योग धंधे नष्ट भ्रष्ट हो गये।

जर्मनी के प्रमुख शिल्प उद्योग

१—लोहा तथा इस्पात उत्पादन
२—रासायनिक उद्योग
३—बिजली का सामान
४—वस्त्र—ऊनी, सूती तथा रेशमी।

जर्मनी में लोहा तथा इस्पात का उद्योग—वर्तमान जर्मनी की औद्योगिक शक्ति का आधार लोहा तथा स्टील का उत्पादन है जिसका प्रवन्ध Cartels के हाथ में है। १९१८ तक इस धन्धे में जर्मनी यूरोप भर में अग्रगण्य था। यहा लोहा फ्रांस, स्वीडन, स्पेन से अधिकतर आता है। लोहे की खानो के समीप ही कोयले की प्रचुरता है, जलमार्गों द्वारा यातायात की बड़ी सुविधा है। जर्मनी में रूर, सार प्रदेश लोहे और स्टील का प्रमुख क्षेत्र है। यहा पर जर्मनी का ८० प्र० श० कोयला भी निकलता है। स्थानीय लोहा पर्याप्त नहीं होता इसलिए स्पेन तथा स्वीडन से अधिकतर मगाया जाता है। १९१९ तक रूर के औद्योगिक क्षेत्र में लारेन तथा लक्समबर्ग से काम चल जाता था। इस क्षेत्र में राइन द्वारा कच्चा माल मगाने और तैयार माल को बाहर भेजने की बड़ी सुविधा है। ऐसिन (Essen) बोकम (Bochum) डार्टमंड तथा डसेलडाफ इंजीनियरी तथा मशीना के केन्द्र हैं। हार्टज पर्वत, सैक्सनी तथा अपर साइलेशिया म भी लोहे और स्टील का उत्पादन होता है।

पोतनिर्माण क्षेत्र तथा केन्द्र—पोतनिर्माण उद्योग में भी जर्मनी ने बड़ी उन्नति की है। व्यापारी जहाजो के विचार से इसका पाचवा स्थान है। जर्मनी के पोत निर्माण क्षेत्र निम्नलिखित है—(१) एल्ब एस्चुरी पर हैम्बर्ग (२) ल्यूबेक की खाडी पर ल्यूबेक (३) वीसर पर ब्रीमन हैवन तथा ब्रीमन और (४) ओडर पर स्टेटिन

बर्लिन तथा सैक्सनी में बिजली का सामान बनता है।

रासायनिक उद्योग—रासायनिक उद्योग में जर्मनी सर्वप्रधान है। जर्मनी में वैज्ञानिक तथा शिल्प शिक्षा के प्रसार के कारण ही इस उद्योग की उन्नति हुई है। यहा की यूनिवर्सिटियो के प्रयोगात्मक अन्वेषणों से यहा पर पूरा-पूरा लाभ उठाया जाता है। पोटाश तथा लवण की प्राप्ति से भी बड़ा प्रोत्साहन मिला है। बर्लिन, फ्रैंकफर्ट, ड्रेसडन तथा लीपजिग प्रधान केन्द्र है

सूती तथा ऊनी वस्त्र उद्योग—जर्मनी के वस्त्र उद्योग में ऊनी, सूती तथा रेशमी वस्त्रों का बनाना सम्मिलित है। सूती वस्त्रो के कारखाने या तो देश भर में फैले है, परन्तु दो क्षेत्र—रूर कोयला क्षेत्र तथा सैक्सनी—प्रधान केन्द्र है। रूई संयुक्त राष्ट्र, ब्राजील तथा मिस्र से आती है। सूती वस्त्र उद्योग के प्रधान केन्द्र मचनग्लैडबाख (Munchen-gladbach) चेमनिट्ज तथा ज्विकवा है। ऊनी वस्त्रो के कारखाने कोयला क्षेत्रो पर है। आचेन (Aachen) चेमनिट्ज तथा ब्रीमन प्रधान केन्द्र है। रेशमी वस्त्रों के कारखाने रूर कोयला क्षेत्र पर स्थित है।

चुकन्दर की चीनी—चीनी के कारखाने सेक्सनी, साइलेशिया, हनोवर तथा पोमरानिया में है। शीशे, चीनी और मिट्टी के बर्तन सेक्सनी, साइलेशिया, थूरिंगिया, ब्रेडनबर्ग तथा सैक्सनी में बनते है। घड़िया, लकड़ी की चीजें तथा अल्कोहल आदि अन्य वस्तुओ के भी कारखाने हैं।

जर्मनी का वैदेशिक व्यापार

जर्मनी का विदेशों से बड़ा व्यापक संबंध है। हैम्बर्ग, ब्रीमन, राटरडम तथा ऐंटवर्प प्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह हैं। आयात की वस्तुओं में भोजन की वस्तुएं तथा कच्चा माल होता है। कोयला, कहवा, रूई, अनाज, ऊनी की वस्तुएं, तिलहन, लकड़ी तथा ऊन बाहर से आते हैं। लोहे तथा स्टील की वस्तुएं, मशीन, रासायनिक पदार्थ, चीनी तथा ऊनी सामान बाहर जाते हैं। द्वितीय महायुद्ध में कारखानों के नष्ट हो जाने से जर्मनी के व्यापार पर बुरा प्रभाव पड़ा है।

व्यापारिक नगर—बर्लिन—राजधानी है—मैदान के मध्य में होने से आवागमन की सुविधायें हैं। यह एक औद्योगिक तथा व्यापारिक नगर और रेलों का केन्द्र है। लन्दन को छोड़ कर यहां की आबादी सबसे अधिक है।

हैम्बर्ग—एल्ब नदी पर प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह वैदेशिक व्यापार का केन्द्र भी है।

लीपज़िग—यहां छापखाने का काम अधिक होता है और फर की बड़ी मंडी है।

ड्रेसडन—एल्ब नदी पर एक व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र है। मशीनों और मदिरा के लिये प्रसिद्ध है।

कोलोन—राइन नदी का बन्दरगाह है। रेलों का केन्द्र है। शराब और स्टील के लिये प्रसिद्ध है।

नरम्बर्ग—खिलौनों और पेंसिल के कारखानों के लिये प्रसिद्ध है।

ब्रीमन—वीसर नदी पर स्थित है। पोतनिर्माण के लिये प्रसिद्ध है।

मैगडेबर्ग—चीनी का महान् केन्द्र है।

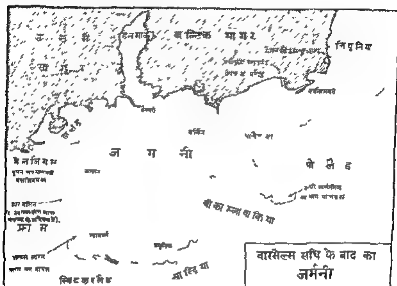
जर्मनी की उद्योग संबंधी कमियां—जर्मनी में यद्यपि लोहे और स्टील का उत्पादन बहुत अधिक होता है परन्तु अधिकतर लोहा बाहर से मंगाना पड़ता है। यहां का लोहा भी निम्न श्रेणी का होता है। यहां पर तांबा, टीन और बाक्साइट की भी बड़ी कमी है। मैंगनीज, क्रोमियम, टंगस्टन, निकिल आदि धातुओं का भी प्रायः अभाव है और बाहर से मंगानी पड़ती है। खनिज तेल भी नगण्य ही है। कपास तो बिल्कुल ही नहीं होती और वस्त्र व्यवसाय में जर्मनी आत्मनिर्भर नहीं है। जर्मनी में वनस्पति तेल तथा उष्ण कटिबंधीय उपज की वस्तुओं की भी बड़ी कमी है। रबर की कमी कुछ अंश तक ब्यूना (Buna) नामक बनावटी रबर द्वारा पूरी की जाती है।

जर्मनी में राजनीतिक परिवर्तन

जर्मन उपनिवेशों का बटवारा—१९१८ तक जर्मन साम्राज्य में अफ्रीका के अनेक उपनिवेश तथा प्रशान्त महासागर के अनेक द्वीप सम्मिलित थे परन्तु विश्वयुद्ध के पश्चात्

इससे अनेक उपनिवेश छीन कर निम्न रीति से बाट लिय गय थ —

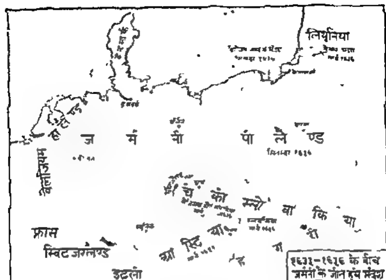
जमन पूर्वी अफ्रीका तो दक्षिण अफ्रीका सघ म मिला दिया गया। इसके अतिरिक्त जमन दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका बेल्जियम को टोगोलैड फ्रास को केमरून अग्रेजो को प्रशान्त महासागरीय उपनिवेशो का भूमध्य रेखा से उत्तर का भाग जापान को तथा दक्षिणी भाग आस्ट्रेलिया को दे दिया गया था।



चित्र न० ५७—१९१९ के बाद का जमनी

महाद्वीप स्थित अनेक भागों की क्षति—इसके अतिरिक्त जमनी के यूरोप महाद्वीप स्थित अनेक भाग भी इससे छीन लिए गए। अलसेस लारेन प्रात के निकल जाने से जनसख्या तथा लोहे और पोटाश की हानि हुई। स्लेसविग यपन तथा मालमडी स रक्षा सबधी सीमाए हटा दी गई। डानजिग बाल्टिक सागर का बन्दरगाह था। पोलड को दिये गये भाग से खनिज पदार्थों वनसम्पत्ति तथा कृषि प्रदेशो की हानि हुई। राइन का व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय महासभा (League of Nations) के अधिकार म चला गया। परन्तु १९३८ तक जमनी फिर एक शक्तिशाली तथा धनी राष्ट्र बन गया। इसने अनेक खोये हुए प्रदेशो पर अपना अधिकार कर लिया।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात की स्थिति—द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात १९४५ म जमनी को फिर चार महान राष्ट्रो ने बाट लिया था। इसका पूर्वी भाग रूस को उत्तर पश्चिमी भाग सयुक्त राज्य (U K) को दक्षिण-पश्चिमी भाग सयुक्त राष्ट्र को तथा



चित्र न० ५८

सन् १९३३ और १९३९ के बीच जर्मनी द्वारा प्राप्त नये क्षेत्र

पश्चिमी भाग फ्रांस को दे दिया गया था। संयुक्त राष्ट्र तथा संयुक्त राज्य (U K) ने पश्चिमी जर्मनी को प्रजातन्त्र कर दिया है। पश्चिमी जर्मनी को मार्शल सहायता भी मिली है और यहां पर औद्योगिक उन्नति तथा कृषि संबंधी विकास भी काफी हो गया है। परन्तु पूर्वी जर्मनी रूस के ही अधिकार में है।

आस्ट्रिया

वन, खनिज पदार्थ तथा उद्योग धंधे—यह एक छोटा-सा पहाड़ी देश है। यहां की जनसंख्या ६० लाख है। यहां खेती अधिक नहीं हो सकती और भोजन की वस्तुएं बाहर से मंगानी पड़ती हैं। वनों की अधिकता के कारण यहां पर पेंसिल, कागज तथा सेलूलोस बनाने के कारखाने हैं। यहां पर लोहा, कोयला, नमक तथा मैंगनीज भी मिलते हैं और धातु उद्योग किये जाते हैं। यहां पर काज, मोटरगाड़ियां तथा चमड़े का माल तैयार होता है।

व्यापार तथा नगर—तटरेखा न होने से वैदेशिक व्यापार विदेशी बन्दरगाहों पर आश्रित रहता है।

वीयना राजधानी के अतिरिक्त औद्योगिक व्यापारिक तथा शिक्षा-केन्द्र है। **ग्राज** लोहे की वस्तुओं के लिये प्रसिद्ध है। लिंज रेलों का केन्द्र है।

चेकोस्लोवाकिया

विस्तार तथा आबादी—प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् सन् १९१८ में बोहेमिया-साइलेशिया, मोराविया तथा स्लोवाकिया को मिला कर चेकोस्लोवाकिया को जन्म दिया गया। इसका क्षेत्रफल ४९,३५५ वर्गमील तथा आबादी १,२१,६४,६३१ है।

स्थिति की सुविधाएं—चेकोस्लोवाकिया की स्थिति पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक प्रदेशो तथा पूर्वी यूरोप के खेतिहर प्रदेशो के बीच में है। साथ ही बाल्टिक सागर और एड्रियाटिक सागर से भी बराबर दूरी पर है। इसलिये इसको अनेक व्यापारिक सुविधाए प्राप्त है। यह उद्योग और व्यापार का मिलनस्थान है। इसमें बन्दरगाह नही है और व्यापार के लिये यह दूसरे देशो के बन्दरगाहों पर निर्भर रहता है।

जलवायु, कृषि तथा वन—यहा की जलवायु कुछ समुद्री और कुछ महाद्वीपी है। वर्षा २० से ३० इंच विशेष कर गर्मियो में होती है। यहा की वर्षा का वितरण कृषि के लिये लाभदायक ही रहता है। यहा की भूमि उपजाऊ है। नदियो द्वारा सिंचाई का उत्तम प्रबन्ध है। इसी कारण कृषि की काफी उन्नति हुई है। गेंहू, राई, जौ, चुकन्दर और आलू की सघन खेती की जाती है। वनो की अधिकता के कारण यहा पर दियासलाई, कागज, खिलौने, बाजे (गायन वाद्य), खाचे (सामान भेजने के लिये) और लकडी के बैरल (बडे-बडे ढोल) बनते है।

खनिज पदार्थ तथा शिल्प उद्योग—मोराविया, बोहेमिया तथा स्लोवाकिया म बहुत कोयला मिलता है। जस्ता, तावा, सोना और चादी भी थोडा बहुत मिलते है। स्लोवाकिया के पहाडो पर टीन, निकिल, मैगनीज और तावा पाया जाता है। तेल के क्षेत्र भी है। यहा पर अनेक शिल्प उद्योग किये जाते है। देश की आय और राष्ट्रीय समृद्धि शिल्प उद्योगो पर ही निर्भर है।

शिल्प उद्योगों के तीन वर्ग—यहा के शिल्प उद्योग तीन वर्गों म विभाजित हो सकते है (१) वे उद्योग जिनके लिये कच्चा माल देश ही मे प्राप्त हो जाता है जैसे चीनी, अल्कोहल, चीनी के बर्तन और शीशे के कारखाने इत्यादि, (२) वे उद्योग जो अगत घरेलू पैदावार पर निर्भर है जैसे धातु के कारखाने, रासायनिक पदार्थ तथा चमडे के कारखाने, (३) वे उद्योग जिनके लिये कच्चा माल विदेशो से आता है जैसे सूती वस्त्रो के कारखाने।

आयात तथा निर्यात—इस देश में अपना कोई बन्दरगाह नही है। डैन्यूब, ऐल्ब तथा ओडर नदिया ही प्राकृतिक मार्ग है। रूई तथा ऊन आयात की प्रधान वस्तुए है, भोज्य-पदार्थ भी पर्याप्त मात्रा म मगाये जाते है। खाद, मशीनें, धातुए, जूते तथा कागज निर्यात किये जाते है।

प्रसिद्ध नगर—प्राग (प्राह)—राजधानी तथा प्रधान औद्योगिक केन्द्र है। यह रेलो का नगर भी है। ब्रून (ब्रूनो)—कारखानो का प्रधान नगर है। यहा पर कागज,

दियासलाई तथा चमड़े के बड़े-बड़े कारखाने हैं। विलसन में अनेक इंजीनियरी का सामान तथा धातु शोधन के कारखाने हैं। गोवलोन्ज शीशे के कारखाना का केन्द्र है। जलीन चमड़े के कारखाना के लिए प्रसिद्ध है।

रूमानिया

विस्तार तथा आबादी—प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व रूमानिया का क्षेत्रफल ५०,००० वर्गमील तथा आबादी ८० लाख के लगभग थी। १९१९ में बेसारेबिया (Bessarabia) ट्रान्सिलवानिया तथा बुकोविना के मिल जाने से इसका क्षेत्रफल १,२०,००० वर्ग मील तथा आबादी २ करोड़ के लगभग हो गई। यहां के ७५ प्रतिशत निवासी रूमानियन भाषा बोलते हैं।

उपज की वस्तुएं—रूमानिया अनाज का देश है। यहां पर खाद और सींचने की कमी, पूंजी का अभाव तथा बाजार सीमित है। इसीलिये यहां के केवल १० प्र० श० मनुष्य ही उद्योगों पर निर्भर है। ट्रान्सिलवानिया के पूर्वी तथा पश्चिमी प्रदेशों में गेहूं तथा मक्का की खेती होती है। खेती पुराने ढंग से होने पर भी यहां गेहूं बहुत पैदा होता है। चुकन्दर तम्बाकू तथा अंगूर गौण उपज की वस्तुएं हैं।

खनिज पदार्थ—रूमानिया में अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं जिनमें खनिज तेल सोना, तांबा, सीसा, मैंगनीज, चांदी, जस्ता तथा सुरमा महत्वपूर्ण हैं। पूर्वी मैदानों के पहाड़ी प्रदेश (Ploetsi) से ६० लाख टन से अधिक खनिज तेल का वार्षिक उत्पादन होता है। तेल उत्पादन में रूमानिया का संसार में छठा स्थान है। यह तेल नलों द्वारा काले सागर स्थित कोंस्टान्जा बन्दर से मिले हुए हैं। ट्रान्सिलवेनिया में कच्चा लोहा पाया जाता है।

पठार, वनस्पति तथा उद्योग—रूमानिया के पश्चिमी प्लेटों में ओक, बीच आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। शराब, कागज, आटा और रासायनिक पदार्थ बनाना यहां के प्रमुख उद्योग हैं।

प्रमुख नगर—*बुखारेस्ट*—*राजधानी तथा रेलों का केन्द्र है। यहां की आबादी ६ लाख ३० हजार है।*

गोलाट्स—डेन्यूब स्थित नदी बन्दर है। यहां से गेहूं तथा तेल का निर्यात होता है।

कौन्स्टांजा—*काले सागर पर स्थित रूमानिया का मुख्य बन्दरगाह है।*

फ्रांस

स्थिति, विस्तार तथा आबादी—फ्रांस के उत्तर तथा दक्षिण दोनों ओर समुद्री मार्ग हैं। अतः व्यापार के लिये इसकी स्थिति बड़ी अच्छी है। इसके उत्तर में इंगलिश चैनल है जो व्यापार का उत्तम राजमार्ग है। इसके पश्चिमी बन्दरगाहों से अमरीका और अफ्रीका से व्यापार आसानी से हो सकता है। और दक्षिणी बन्दरगाह एशिया, आस्ट्रेलिया तथा ब्रिटिश बन्दरगाहों से पास पड़ते हैं। फ्रांस का क्षेत्रफल २,१५,००० वर्ग मील है जो ग्रेट ब्रिटेन के दुगने से भी अधिक है। १९४६ में यहां की आबादी ४,०५,००,००० थी।

प्राकृतिक प्रदेश तथा जलवायु—फ्रास में दो प्रकार के प्राकृतिक प्रदेश है—पर्वतीय प्रदेश तथा मैदान। पर्वतीय प्रदेश में (१) आर्मोरिकन प्रायद्वीप (ब्रिटेनी तथा नारमडी) (२) मध्य के पठार, (३) अल्सेमलारेन प्रात तथा (४) आल्प्स, जूरा तथा पिरेनीज पर्वत सम्मिलित है। मैदानी भाग मे (१) रोन साओन की घाटी, (२) पेरिस बेसिन तथा (३) एक्विटेन का बेसिन अर्थात् पिरेनीज-मध्य के पठार और गोटाइन (Gotaine) के बीच का प्रदेश सम्मिलित है। फ्रास के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग की जलवायु समुद्री है तथा दक्षिणी भाग की भूमध्यसागरीय है। यहा की जलवृष्टि का वार्षिक औसत ३० इंच है।

फ्रास की मुख्य उपज—**अनाज तथा फल**—आर्थिक दृष्टि से फ्रास आत्मनिर्भर है। कृषि प्रधान देश होने के कारण बाहर से भोजन की वस्तुए नही मगानी पडती। देश की आधी जनता खेती में लगी हुई है। भूमि की बनावट तथा जलवायु की विभिन्नता के कारण वहा पर भिन्न भिन्न प्रकार की उपज होती है। अनाज में विशेषकर गेहू अधिक पैदा होता है। दक्षिणी भाग में नीबू, नारगी, अगूर, जैतून आदि फल अधिकता से पैदा होते है। शहतूत के पेडो पर रेशम के कीडे पाले जाते है। फ्रास म रेशम बहुत अधिक पैदा होता है।

फ्रास मे सुअर का गोश्त, मक्खन तथा चर्बी इत्यादि यहा की आवश्यकता के लिये काफी होती है। यहा ताजे फल, सब्जी, मेवा, पनीर तथा शराब की अतिरिक्त उपज होती है और इन वस्तुओ का निर्यात किया जाता है। रुई, मक्का, वनस्पति तेल, आलू और सूखी सब्जिया यहा पर काफी पैदा नही होती।

फ्रास के खनिज पदार्थ (लोहा)—खनिज पदार्थों में फ्रास पर्याप्त धनी देश है। **फ्रास में लोहा यूरोप के सभी देशों से अधिक होता है।** लारेन प्रात म लोहे का अपार भडार है। यहा का लोहा निम्न श्रेणी का है जिसमें धातु का अश ४० प्र श होता है। परन्तु म लोहे की खाने जर्मनी, बैल्जियम तथा फ्रास की कोयले की खानो के समीप है और यूरोप की औद्योगिक मडिया भी इनके समीप ही पडती है। कच्चा लोहा उत्तर म नारमडी तथा ब्रिटनी में और दक्षिण में पिरेनीज पर्वत माला मे भी पाया जाता है। नारमडी की खानो म यहा के लोहे का भडार बहुत बढ गया है परन्तु देश में कोयले की कमी है अत फ्रास को अपने पर्वतो की जलशक्ति से काम लेना पडता है। यहा के प्रमुख कोयला क्षेत्र लिले (Lille) के समीप उत्तर पूर्व मे स्थित है। और भी कई छोटी-छोटी कोयले की खाने है परन्तु देश की आवश्यकता पूर्ति के लिये काफी नही है। फ्रास के दक्षिण पूर्वी भाग में हाल ही म तेल क्षेत्र मिला है और सेंट मारसल (St. Marcel) के समीप तेल निकाला जाता है। यहा पर ससारभर म सब से अधिक बाक्साइट मिलता है जिससे अल्यूमिनियम बनाया जाता है। अल्सेस में पोटाश का भडार है और चीन को छोड कर यहा सुरमा भी सबसे अधिक प्राप्त होता है।

जलविद्युत—फ्रांस में जलविद्युत के विकास के लिए महान् साधन हैं। दक्षिणी भागों के कारखानों तथा यातायात में जलशक्ति का उपभोग हो सकता है। जलविद्युत अधिकतर आल्प्स तथा पिरेनीज पर्वतों से प्राप्त होती है। यों तो जलशक्ति के साधन देशभर में हैं परन्तु अभी तक वे काम में नहीं लाए जा रहे हैं और कोयले की भी कमी है, इसीलिये यहां का कच्चा लोहा अधिकतर बाहर भेज दिया जाता है।

फ्रांस के शिल्प उद्योग

यद्यपि फ्रांस एक महान् औद्योगिक देश है परन्तु यहां पर उद्योग-धंधों का इतना विकास नहीं हुआ है जितना कि ग्रेट ब्रिटेन में हुआ है। फ्रांस में बनी हुई वस्तुएं ऊंचे दर्ज की, सुन्दर नमूने की और कलापूर्ण होती हैं। सुन्दर लैस और वस्त्र, चीनी के बर्तन, आभूषण, सेंट व साबुन और टोपी तथा साजबाज की वस्तुओं के बनाने में फ्रांस से बढ़कर और कोई भी देश नहीं है।

फ्रांस का वस्त्र उद्योग—फ्रांस में (१) सूती कपड़ा (२) लोहे और स्टील की वस्तुएं (३) शराब और (४) विलास की वस्तुएं बहुत बनती हैं। वस्त्र उत्पादन में फ्रांस का संसार में चौथा स्थान है। यहां पर सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्र अच्छे नमूने के बनाये जाते हैं। यह काम यहां पर २०० वर्षों से होता आ रहा है। अल्सस प्रान्त में अब भी बहुत उम्दा वस्त्र बनाये जाते हैं। परिस बेसिन के उत्तरी कोयला क्षेत्र तथा रुऑन प्रान्त (Rouen) में अमरीकन रूई से बहुत ऊंचे दर्जे के सूती वस्त्र बनाये जाते हैं। और लिले (Lille) अमीयन्स, सेंट क्विन्टन तथा रुऑन (Rouen) इसके केन्द्र हैं। कच्चे माल की कमी और लड़ाई का खतरा पैदा होते हुए भी यह उद्योग युद्ध पूर्व स्तर पर पहुंच गया है।

ऊनी तथा रेशमी वस्त्र उद्योग—उत्तरी कोयला क्षेत्र ऊनी कपड़ों के लिये भी प्रसिद्ध है। घरेलू ऊन के अतिरिक्त यहां पर आस्ट्रेलिया, अर्जेन्टाइना और न्यूजीलैण्ड से भी ऊन मंगाई जाती है। राउबेक्स, रीम्स, अमीयन्स तथा लिले ऊनी वस्त्रों के केन्द्र हैं। फ्रांस के रेशमी वस्त्र भी जगत्प्रसिद्ध हैं। यह उद्योग रोन की घाटी के लियां प्रान्त में (Lyons district) में केन्द्रित है। यहां पर कच्चा रेशम जापान, चीन और इटली से भी आता है और कारखानों के लिये शक्ति कोयले की खानों और जलविद्युत द्वारा प्राप्त की जाती है।

फ्रांस में लोहे और स्टील का धंधा—१९१८ में लारेन प्रान्त के मिल जाने से फ्रांस में लोहा और स्टील के कारखानों की बड़ी उन्नति हुई। १९३८ में लोहे के उत्पादन में फ्रांस का संसार में तीसरा स्थान था। लारेन प्रान्त के लिये कोयला रूर क्षेत्र से आता है। यहां पर क्लेरमोंट (Clermont) में मोटरकारें, सेंट एटिन में रेलों के इंजन और लिले में कपड़ा बुनने की मशीनें बनाई जाती हैं।

बिजली की वस्तुएं—बिजली के सामान के लिये भी फ्रास प्रसिद्ध है। इस धंधे में यहा के १,८०,००० व्यक्ति लगे हे और अब युद्धपूर्व काल से बिजली के सामान का उत्पादन ड्योढ़ा बढ गया है। बिजली का सामान जितना तैयार होता है उसका छठा भाग निर्यात कर दिया जाता है।

जहाज बनाने का धन्धा—जहाज बनाने के काम में भी फ्रास में बडी उन्नति हुई है और अब ससार मे इसका पाचवा स्थान है। मार्सेल्स तथा लोन की एस्टयरी (Estuary) पोतनिर्माण के केन्द्र है।

शराब के उत्पादन में फ्रास संसार में सर्वप्रथम है। इस धंधे का मुख्य केन्द्र बोर्डो (Bordeaux) है।

रासायनिक पदार्थ—सन् १९४८ में रासायनिक पदार्थों के उत्पादन में फ्रास १९३८ के स्तर से बहुत आगे बढ गया। यहा के रासायनिक पदार्थों में गधक का तेजाब, कारबोनेट आफ सोडा, कारबाइड आफ कैल्शियम, शोरे का खाद, सुपर फासफेट, रगने का सामान, चमडा कमाने का सामान, रग तथा वार्निश आदि वस्तुए है। रग और वार्निश के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओ का उत्पादन बढ रहा है।

शक्ति की कमी होते हुए भी फ्रास के सभी उद्योगधधो में युद्ध के पश्चात् उन्नति ही हो रही है। कोयले के घरेलू उत्पादन और आयात से मिल कर यहा की केवल ८६ प्र श. आवश्यकता की पूर्ति होती है। यूरोप के अन्य देशो की भाति फ्रास में भी कोक की भट्टियो के लिए आवश्यक वस्तुओ की बडी कमी है।

फ्रास मे आवागमन के साधन

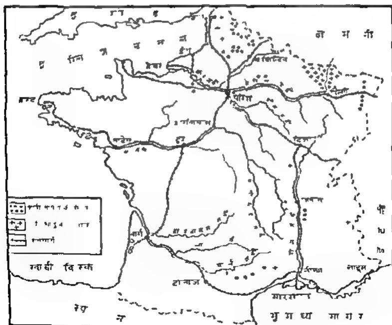
किसी देश की समृद्धि वहा के आवागमन के साधनो पर बहुत कुछ निर्भर रहती है। सन् १९३८ म फ्रास की माग व्यवस्था निम्न प्रकार थी—

प्रमुख सडकें	४०,००० मील
गौण सडक	१,५०,००० मील
स्थानीय सडक	२,२०,००० मील

वायु मार्ग—द्वितीय महायुद्ध से पूर्व फ्रास के वायुमार्गो का गमनागमन की दृष्टि से ससार में पाचवा तथा लम्बाई के विचार से तीसरा स्थान था। युद्धकाल के अन्त में फ्रास का हवाई यातायात नष्टप्राय हो चुका था परन्तु इसके पश्चात् फ्रास ने अपने हवाई मार्गो म आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है। अब यहा के हवाई मार्गो द्वारा यातायात मे १९३८ की अपेक्षा कई गुनी उन्नति हो गई है।

फ्रास के भीतरी जल मार्ग—फ्रास के भीतरी जल-मार्ग वस्तुओ को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने के लिए बडा महत्वपूर्ण कार्य करते है। यहा की नदिया नहरो द्वारा जुडी हुई है और इस प्रकार यहा पर जलमार्गो की पूर्ण व्यवस्था है। ये जलमार्ग देश के उत्तर-

पूर्वी तथा मध्य के प्रदेशों के लिये बड़े काम के हैं क्योंकि इन प्रदेशों में कोयला, भवन निर्माण सामग्री तथा खनों की उपज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जानी पड़ती है। यहां की मुख्य नदियों के नाम सीन, म्यूज (Meuse) साओन, रोन, गैरन, ल्वायर तथा ओइस (Oise) हैं। नदियों तथा नहरों का सम्मिलित जलमार्ग ५,५०० मील के लगभग है। कई नदियों पर कर (Toll) बिल्कुल नहीं लिया जाता। रोन नदी की धारा बड़ी तेज है कहीं-कहीं पर तो इसकी चाल १० मील प्रति घंटा है। फ्रांस की सरकार ने रोन तथा उसकी सहायक नदियों पर बांध बना कर जलविद्युत उत्पादन तथा सिंचाई की एक योजना बनाई है। इस योजना से ६० लाख टन वार्षिक कोयले की बचत होगी और गर्मियों में रोन के दक्षिणी भागों में सिंचाई भी हो सकेगी। रोन नदी ३०६ मील लम्बी है। यह नदी सिंचाई के लिये तो अधिक महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु इसकी घाटी दक्षिण यूरोप के पहाड़ों में प्राकृतिक राजमार्ग का काम देती है। इसी कारण उत्तरी तथा दक्षिणी यूरोप के बीच व्यापार का एक महत्वपूर्ण साधन रही है। सीन तथा उसकी नदियां फ्रांस में उत्तम जलमार्ग बनाती हैं। सीन नदी साओन घाटी के पश्चिमी पहाड़ों में निकलती है और पश्चिम की ओर पेरिस तक बहती है। इसकी लम्बाई ४८० मील है।



चित्र नं० ५९—फ्रांस के औद्योगिक केन्द्र तथा नदियाँ

फ्रास की नहरो की लम्बाई ३००० मील से भी अधिक है। मुख्य नहरो के नाम —(१) यस्ट (Est) जो म्यूज़ को मोसेल और साओन से मिलाती है। (२) नान्टीज़ ब्रेस्ट केनाल तथा (३) ल्वायर केनाल। फ्रास के जलमार्गो मे निम्नलिखित दोष है —(१) उत्तम बन्दरगाहो की कमी, (२) माल ले जाने म सुस्ती, (३) लम्बी यात्रा तथा कुछ नहरो में माल को रेलो तक जाने ले जाने में सुविधाओ का अभाव।

फ्रास का वैदेशिक व्यापार

फ्रास की आयात तथा निर्यात की वस्तुए —यूरोप भर मे केवल फ्रास ही ऐसा औद्योगिक देश है जो कि भोजन की वस्तुओ के लिये भी आत्मनिर्भर है। यहा पर कपास ऊन, तिलहन, चमडा तथा खालें बाहर से आती हैं। फ्रास के उपनिवेशो से चीनी, चावल, कहवा तथा जगली रबर आती हैं। शराब, डेरी की उपज, वस्त्रमाडल, सूती वस्त्र, कच्चा लोहा, रासायनिक पदार्थ, चमडा, मोटरगाडिया तथा चीनी का निर्यात होता है। शीशे का सामान अधिकतर सयुक्त राज्य (U K). बेल्जियम, स्वीडन, स्विटजरलैड तथा सयुक्त-राष्ट्र अमरीका को भेजा जाता है।

फ्रास अधिकृत साम्राज्य का क्षेत्रफल ४० लाख वर्गमील तथा आबादी १० करोड ७० लाख है। परन्तु इनमें से अनेक प्रदेश बजर हैं और उनकी आबादी भी घनी नही है।

फ्रास के वैदेशिक व्यापार म १९३८ में ५० प्र श तैयार माल की वस्तुओ का निर्यात होता था परन्तु अब ७२ प्र श बनी हुई वस्तुए बाहर भेजी जाती है। फ्रास का वैदेशिक व्यापार यूरोपीय देशो के ही साथ अधिकतर होता है। इसके अतिरिक्त सयुक्त राष्ट्र अमरीका, उत्तरी फ्रासीसी अफ्रीका तथा अन्य देशो से व्यापार होता है।

	(लाख फ्राक मे)	
	१९३८	१९४९
निर्यात	३,०५,९००	७८,२०,२२०
आयात	४,६०,६५०	९२,१७,६४०

फ्रास के व्यापारिक केन्द्र

पेरिस—फ्रास की राजधानी तथा व्यापारिक केन्द्र है। यहा से रेलें चारो ओर को जाती हैं।

हावर—सीन नदी पर स्थित एक प्रसिद्ध समुद्री बन्दर है। यहा से उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका के साथ व्यापक व्यापार होता है।

लियो (Lyons)—रोन नदी पर स्थित है। यह नगर रेशमी वस्त्र उद्योग के लिये जगत्प्रसिद्ध है। रोन तथा साओन की घाटी से रेशम प्राप्त होता है परन्तु अधिकतर रेशम चीन, जापान तथा इटली से आता है। रेशमी वस्त्र घरो में तथा छोटे छोटे कारखानो

में तैयार किये जाते हैं। लियों के आसपास ही बनावटी रेशम के भी कारखाने हैं। फ्रांस का ८० प्र० श० बनावटी रेशम लियों में ही तैयार होता है।

मार्सेल्स—भूमध्यसागर तट पर फ्रांस का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह है। स्थानीय जैतून से तेल की अधिकता तथा उष्णकटिबंधीय भागों से वनस्पति तेल की प्राप्ति की सुविधा होने से मार्सेल्स साबुन, मोमबत्तियां इत्यादि बनाने का एक प्रसिद्ध केन्द्र बन गया है।

बोर्डो (Bordeoux)—पश्चिमी तट पर स्थित मदिरा का केन्द्र है। पिछले कुछ दिनों से यहां पर जहाज बनाने में भी काफी तरक्की हुई है।

रूओन (Rouen)—सीन नदी पर स्थित सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र है।

लिले (Lille)—उत्तरी पूर्वी कोयला क्षेत्र पर सन के वस्त्रों के लिये प्रसिद्ध है। यहां पर सूती कपड़ा भी बनाया जाता है।

सेंट-एटीन (St Etinne)—फ्रांस के मध्य के कोयला क्षेत्र पर एक महान औद्योगिक नगर है। यहां पर लोहे का सामान तथा रेशमी फीते बनाये जाते हैं।

डनकर्क (Dunkirk)—फ्रांस के उत्तरी तट पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। दक्षिणी अमरीका के साथ यहीं से अधिकतर व्यापार होता है।

इटली

व्यापारिक दृष्टिकोण से इटली की स्थिति बड़ी ही अनुकूल है। यह देश तीन ओर समुद्र से घिरा हुआ है और संसार के महत्वपूर्ण भीतरी सागर (भूमध्य सागर) के बीच में स्थित है।

भौगोलिक विचार से इटली के तीन विभाग हैं —

१ उत्तरी मैदान तथा पर्वत

२ इटली का प्रायद्वीप

३ इटली के द्वीप

जलवायु—पहाड़ों से घिरा होने के कारण उत्तरी मैदानों पर समुद्री जलवायु का प्रभाव नहीं पड़ता। इसी कारण यहां की जलवायु महाद्वीपीय है। इटली के प्रायद्वीप प्रदेश की जलवायु भूमध्यसागरीय है।

आबादी तथा कृषि की उपज—इटली घना बसा हुआ देश है। घनी आबादी अधिकतर उत्तरी मैदान में ही केन्द्रित है। क्योंकि इस मैदान की मिट्टी और जलवायु भिन्न-भिन्न उपजों के अनुकूल है यहां पर सिंचाई के द्वारा अंगूर, गेहूं, मक्का, चावल, सन, पटुआ तथा चुकन्दर की खेती की जाती है। उत्तरी प्रांतों की घाटियों में विस्तीर्ण खेतों पर धान की फसल पैदा की जाती है। यहां पर खेती की सहकारी व्यवस्था नहीं है। यहां का दो तिहाई चावल यहीं पर खप जाता है। बाकी का एक-तिहाई चावल अर्जेन्टाइना, स्वीटज़रलैण्ड, जर्मनी तथा फ्रांस को निर्यात कर दिया जाता है।

अंगूर की उपज सारे ही देश में होती है। इसलिये यहाँ पर शराब अधिकतर बनाई जाती है। इटली के प्रायद्वीप में भूमध्यसागरीय जलवायु के कारण जैतून, नींबू, नारंगी, अंजीर तथा खुबानी की व्यापक उपज होती है। यहाँ शहतूत के पेड़ भी बहुत होते हैं। इसीलिये यूरोप भर में इटली सबसे अधिक रेशम उत्पादन करता है।

इटली
प्रधान कृषि उपज का वितरण

चित्र नं० ६०—कृषि का धंधा विशेषकर उत्तरी मैदान में ही केन्द्रित है।

खनिज सम्पत्ति—सिसली, टस्केनी, सार्डीनिया, लोम्बार्डी तथा पीडमौंट में खनिज

उद्योग का बहुत विकास हुआ है। गंधक सबसे महत्त्वपूर्ण खनिज पदार्थ है जो विशेषकर सिसली में मिलती है। एल्बा द्वीप तथा टस्केनी में लोहा मिलता है। इटली में पारा सब देशों से अधिक प्राप्त होता है। टस्केनी में मौंट अमियाटी (Monte Amiati) तथा इद्रिया पारे की प्रसिद्ध खान है। इटली में सर्वोत्तम श्रेणी का संगमरमर भी मिलता है। कोयले की कमी है परन्तु जलविद्युत का विकास हो रहा है। इटली की प्राकृतिक बनावट तथा अगम्य धाराएं जलशक्ति के विकास के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। सीसा, जस्ता, बॉक्साइट तथा मैंगनीज आदि अन्य खनिज पदार्थ भी इटली में पाये जाते हैं।

इटली के शिल्प उद्योग—इटली के शिल्प उद्योगों में बड़ी उन्नति हो रही है। यहां पर (१) सस्ते मजदूर (२) स्थानीय मंडियां (३) जलशक्ति (४) राजकीय सहायता (५) लोगों की कुशलता तथा साहस आदि की सुविधाएं हैं। यहां की कारीगरी की वस्तुओं में कलापूर्णता अथवा अर्द्ध-कलापूर्णता की विशेष छाप रही है। यहां की शीशे की वस्तुएं, जैसे मिट्टी के बरतन, संगमरमर की वस्तुएं तथा धातु-उपकरण आदि वस्तुओं में इटली के शिल्प-कौशल की झलक दिखलाई पड़ती है।

इटली का वस्त्र उद्योग—यहां पर ऊनी, सूती तथा रेशमी वस्त्रों के बड़े-बड़े कारखाने हैं। सागर जहाज तथा लोहे और स्टील का धंधा भी महत्त्वपूर्ण है। वस्त्रों के धंधे और व्यापार में इटली का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। १९२० से ३० तक रूई के आयात करने वाले देशों में इटली का पांचवां तथा ऊन में छठा स्थान था। निर्यात के दृष्टिकोण से भी कृत्रिम रेशम के डोरे तथा पटुआ निर्यात में प्रथम, सूती डोरे में दूसरा तथा कच्चे रेशम के निर्यात में इटली का तीसरा स्थान था। वस्त्र व्यवसाय में यहां के ४,७०,००० व्यक्ति तथा अनुपूरक उद्योगों में ३,८०,००० व्यक्ति लगे हैं। जितना वस्त्र यहां तैयार होता है उसका २८ प्र० श० निर्यात हो जाता है। कृत्रिम रेशों के उत्पादन में भी इटली यूरोप भर में सबसे प्रथम है। कृत्रिम रेशम के उत्पादन में १९३७ तक इटली का छठा स्थान था। कृत्रिम रेशम के लिये इटली में निम्नलिखित अनुकूल अवस्थाएं हैं—(१) जलविद्युत की प्रचुरता, (२) सस्ती कच्ची वस्तुएं, (३) कारीगरों की कुशलता तथा (४) रेशमी उद्योगों में कुशल कारीगरों की अधिक संख्या। यहां के कृत्रिम रेशम के उपभोग की प्रमुख मंडियां जर्मनी, हालैंड, डेनमार्क, भारतवर्ष, पीरू, चिली तथा ब्राजील हैं।

यातायात के साधन—इटली के रेल-मार्ग बड़े विकसित हैं। इटली के भीतरी भाग तथा मध्य यूरोप रेलों द्वारा ही बन्दरगाहों से मिले हुए हैं। १९४७ में यहां पर रेलमार्गों की लम्बाई १४५१५ मील थी। यहां पर नदियां तो बहुत हैं परन्तु नाव्य नदियां अधिकतर उत्तरी मैदानों में ही हैं। नदियों के नाम हैं—पो, टिसिनो, अड्डा (Adda) तथा अडीज (Adige)। दक्षिणी नदियों में केवल टाइबर तथा आर्नो ही नाव्य नदियां हैं। इटली की सड़कों की लम्बाई १९४२ में १,०८,६१६ मील थी।

जनसंख्या तथा देश के साधन—इटली की आबादी साढ़े ४ करोड़ से भी अधिक है। देश के वर्तमान साधनों पर इतनी आबादी का बोझ देश की शक्ति से अधिक ही है। प्राकृतिक साधनों की भी इटली में कमी है। ईंधन तो यहा है ही नहीं। तेल के अतिरिक्त यहा पर ६०,००,००० टन कोयला प्रतिवर्ष बाहर से मगाना पड़ता है। देश की खपत के लिये यहा पर कोयला भी पर्याप्त नहीं होता। कृषि की उपज में भी इटली आत्म निर्भर नहीं है। यहा पर कपास, गेहू और अनाज बाहर से मगाने पड़ते हैं। इन्ही सब कारणों से इटली एक निर्धन देश है।

इटली के प्रसिद्ध नगर—**मिलान**—आल्प्स की तलहटी में स्थित उत्तरी मैदान का सब से बड़ा नगर है। *यह रेशमी वस्त्र उद्योग का केन्द्र है जिस के लिये इटली यूरोप* भर में प्रसिद्ध है। यहा पर इजीनियरी के भी कारखाने हैं।

रोम—वर्तमान इटली की राजधानी है। यह दुनिया के सब से प्राचीन नगरों में से है। यहा की आबादी १० लाख से भी अधिक है।

नेपल्स का बन्दरगाह इटली के प्रायद्वीप के दक्षिण पश्चिमी तट पर एक सुन्दर खाड़ी पर स्थित है। यह पोत निर्माण का केन्द्र है। यहा के कारखानों में जलविद्युत का प्रयोग होता है।

ट्यूरिन (Turin)—उत्तरी मैदान का एक प्रसिद्ध नगर है। यहा पर मोटर कार बनते हैं।

ट्रीस्ट—उत्तरी मैदान के पूर्व में एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यूरोपीय मध्य देशों के लिये यह एक प्रसिद्ध पुनर्निर्यात व्यापारिक केन्द्र है। अब यह संयुक्त राष्ट्र सभ के अधिकार में है।

फ्यूम (Fiume)—इस्ट्रिया प्रायद्वीप के पूर्व में एक बन्दरगाह है। यहा पर माल इकट्ठा किया जाता है।

जिनोआ (Genoa)—उत्तरी मैदान का प्रसिद्ध समुद्री बन्दरगाह है।

वेनिस तथा जिनोआ—ये दोनों किसी समय में प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र थे। पूर्वीय *देशों की बहुमूल्य वस्तुएँ वितरणार्थ यहा लाई जाती थी और इन नगरों से यूरोप के भिन्न*-भिन्न देशों को उन का पुनर्निर्यात कर दिया जाता था। केप मार्ग के खुलने से इन नगरों का महत्व अब जाता रहा है।

इटली के आयात और निर्यात—इटली में बाहर से आने वाली प्रमुख वस्तुएँ—कपास, लोहा, ऊन, खनिज तेल, कोयला, इमारती लकड़ी, चीनी, कहवा तथा चाय है। यहा से बाहर जाने वाली वस्तुओं में फल और तरकारिया, कपास, रेशम तथा कृत्रिम रेशम, मोटरकारें तथा मदिरा इत्यादि सम्मिलित हैं।

पोलैंड

पोलैंड का संक्षिप्त परिचय—शताब्दियों से पोलैण्ड एक स्वतन्त्र राष्ट्र था। १८वीं शताब्दी के अन्त में रूस, प्रशा तथा आस्ट्रिया ने इसे आपस में बांट लिया। इस प्रकार १९१९ तक यूरोप के राजनीतिक नक्शे पर पोलैण्ड का नामोनिशान भी नहीं रहा। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् पोलैंड जिस पर कि अब तक जर्मनी, आस्ट्रिया तथा रूस का अधिकार था एक प्रजातन्त्र राज्य बन गया। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण पोलैंड जर्मनी और रूस के बीच मध्यस्थ राष्ट्र बन गया। १९१९ में पोलैंड स्वतन्त्र हुआ परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में फिर जर्मनी और रूस ने इसे बांट लिया। अब यह फिर स्वतन्त्र है परन्तु इसकी सीमाओं में परिवर्तन हो गया। पूर्वी पोलैंड जिसका क्षेत्रफल ७०,००० वर्ग मील है रूस के अधिकार में है। डानजिग और पूर्वी प्रशा के दक्षिणी भाग को पोलैंड में मिला कर, जिस का क्षेत्रफल ३६,००० वर्ग मील है, इस हानि को कुछ-कुछ पूरा किया गया है।

पोलैंड की सीमान्त रेखायें तथा जनता—पोलैंड चारों ओर स्थल से घिरा हुआ है। बाल्टिक सागर पर स्थित डानजिग और डीजिया द्वारा ही समुद्र तट पर पहुंचा जा सकता है। पूर्व में प्राइपट मार्शेज और दक्षिण में कार्पेथियन पर्वतों को छोड़कर पोलैंड के किसी ओर भी प्राकृतिक सीमायें नहीं हैं। यहां की जलवायु महाद्वीपी तथा जनसंख्या साढ़े ३ करोड़ के लगभग है जिसमें ६९ प्र० श० पोलिश जनता सम्मिलित है। शेष जनता यूक्रेनियन, श्वेत रूसी, यहूदी तथा जर्मन हैं।

कृषि की उपज—यह एक कृषि प्रधान देश है। यहां के ६० प्र० श० से भी अधिक मनुष्य खेती, वन उद्योग तथा मछली व्यवसाय में लगे हैं। कृषि योग्य आधी से अधिक भूमि पर राई और आलू की कृषि होती है।

खनिज और उद्योग—देश में खनिज पदार्थों की अधिकता होते हुए भी केवल १५ प्र० श० मनुष्य ही खान खोदने का काम करते हैं। ऊपरी साइलेशिया से प्रतिवर्ष ४ करोड़ टन से भी अधिक उत्तम श्रेणी का कोयला प्राप्त होता है। कार्पेथियन की तलहटी में गैलीशिया के तेल क्षेत्र से ५ लाख टन के लगभग पेट्रोलियम निकलता है। ऊपर साइलेशिया से सीसा और लोहा भी निकाला जाता है। देश के एक-चौथाई भाग पर वन फैले हुए हैं। लोड्ज, वारडोगोमजेज, साइलेशिया कोयला क्षेत्र, केलो स्टाक, क्रैकोव तथा वारसा के चारों ओर के क्षेत्रों में शिल्प उद्योगों का विकास हो गया है। लोडस सूती वस्त्रों के कारखानों का केन्द्र है। ऊपरी साइलेशिया में विशेषकर भारी धातुओं के कारखाने हैं। वारसा पोलैंड का एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध नगर है। यहां से सड़कें और रेलें चारों ओर फैली हुई हैं। डीनिया विस्तुला के मुहाने से कुछ पश्चिम की ओर डानजिग की खाड़ी पर स्थित है। यह डानजिग राज्य से बाहर है। डानजिग से पोलैंड की आवश्यकता पूर्ति नहीं होती थी और यह एक स्वतन्त्र नगर बना दिया गया था। इस बात से पोलैंड असन्तुष्ट था।

इसी कारण डीनिया एक उन्नत नगर हो गया। डानजिग १६३८ तक स्वतन्त्र नगर रहा फिर १६४५ तक जर्मनी के अधिकार में रहा परन्तु अब यह पूर्ण रूप से पोलैंड का बन्दरगाह है।

बाल्टिक प्रदेश

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् प्राचीन रूसी साम्राज्य में से चार नये राज्यों का निर्माण हुआ। इनके नाम इस्थोनिया, लटविया, फिनलैंड तथा लिथुआनिया है। इन राज्यों की आर्थिक उन्नति बहुत ही कम हुई है। यहा पर सड़के खराब, रेलो की कमी और अल्प मजदूरी होने के कारण देश निर्धन तथा लोगों का जीवन बड़ा कठिन है। आजकल इस्थोनिया, लटविया और लिथूनिया रूस में सम्मिलित है।

इस्थोनिया—बाल्टिक प्रदेश में सब से उत्तरी राज्य है। फिनलैंड की खाडी पर इस की स्थिति सैनिक सुरक्षा के विचार से बडी महत्वपूर्ण है। १६१८ तक इस्थोनिया रूस के अधिकार में एक बाल्टिक प्रान्त था। सितम्बर १६३६ में रूस ने इसके कुछ बन्दरगाहों पर सैनिक तथा जहाजी आधार केन्द्र स्थापित कर लिये। यहा के निवासी अधिकतर खेती करते है। यहा के उद्योगो तथा यातायात के साधनों को उन्नत करने के प्रयत्न किये जा रहे है। तालिन प्रसिद्ध नगर तथा बन्दरगाह है।

लटविया—यहा पर खेती, पशु-पालन तथा लकड़ी चीरना लोगों के धंधे है। मछली पकड़ना मुख्य धंधा है। यहा का सब से बड़ा नगर रीगा है। यह एक बन्दरगाह है और शिल्प उद्योगों के लिए प्रसिद्ध है।

लिथुआनिया—यहा पर खेती के साथ-साथ कारखानों का भी तेजी से विकास हो रहा है। यहा पर आटा पीसने, शराब खीचने, लकड़ी चीरने और चमड़े के कारखाने हैं जो जल-शक्ति से चलते है। यहा के जगलो से बहुमूल्य लकड़ी और दियासलाई तथा कागज बनाने के लिए कच्चा माल लिया जाता है। यहा की नदिया भी नाव्य है। कौनस राजधानी है। मेमल बन्दरगाह है। यहा से माल बाहर भेजा जाता है।

फिनलैंड—इस के पूर्व में रूस, दक्षिण में बाल्टिक सागर, पश्चिम में स्वीडन तथा नार्वे तथा उत्तर में उत्तरी ध्रुव महासागर है। यहा की जनसंख्या ३५ लाख है। अधिकतर लोग दक्षिण में बसे है। फिनलैंड के आधे से अधिक भाग पर वन है जिनमें फर, पाइन, मेपिल, एश तथा ओक के वृक्ष मुख्य है। यहा के उद्योग-धंधों का आधार यहा की वन-सम्पत्ति ही है। देश में ८५० से भी अधिक लकड़ी चीरने के कारखाने है। कागज, अखबारी कागज, सूखा सैलूलोज, काष्ठमंड तथा गत्ता यहा के वनों से प्राप्त होने वाली वस्तुएं है। आजकल फिनलैंड में सभी देशों से अधिक प्लाईवुड (Plywood) बनाई जाती है। यहा के वनों से अनेक उद्योगों के लिये कच्चा माल मिलता है। वन क्षेत्र भी बड़ा व्यापक है।

यहाँ के लोगों के मुख्य पेशा खेती करना तथा पशु-पालन या लकड़ी का काम है। बारहसिंघों (Reindeer) से दूध, मांस तथा खाल (वस्त्र) प्राप्त होते हैं। मछली पकड़ने का काम उन्नति पर है। यहाँ के अनेक बन्दरगाह तथा कटा तट मछली व्यवसाय के लिए अनुकूल हैं। फिर लोग उन्नतिशील हैं। यहाँ पर खनिज पदार्थों तथा यातायात के साधनों की बड़ी कमी है। इमारती लकड़ी, काष्ठमंड तथा कागज निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ हैं। हेलसिंकी यहाँ की राजधानी, बन्दरगाह तथा औद्योगिक नगर है। वाइबोग लकड़ी निर्यात का प्रमुख बन्दरगाह है। टुर्कू जहाजों का केन्द्र है।

प्रश्नावली

१ ग्रेट ब्रिटेन के विदेशी व्यापार की मुख्य विशेषताएँ बतलाइए और इसका क्या कारण है समझाइए। आयात निर्यात व्यापार की चार मुख्य वस्तुएँ बतलाइए और उन वस्तुओं के व्यापार के बन्दरगाहों के बारे में लिखिए।

२ फ्रांस के आन्तरिक जल मार्गों का विवरण लिखिए। उनका महत्व बतलाइए।

३ ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड को छोड़कर उत्तरी यूरोप में पश्मीने के कपड़े का व्यवसाय कहाँ स्थित है। इनके लिए कच्चा माल कहाँ से आता है? भारत में प्राप्त कच्चे माल पर यह व्यवसाय कहाँ तक निर्भर है?

४ यूरोप के मानचित्र पर कोयला वाले क्षेत्रों को दिखलाइए और यह बतलाइए कि लोहे की किन खानों के समीप कोयला उत्पन्न है।

५ जर्मनी का रूहर प्रदेश इतना बड़ा औद्योगिक केन्द्र कैसे बन गया—मनुष्य के प्रयत्नों से या प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण? प्राकृतिक सुविधायें कौन कौन सी हैं बतलाइए।

६ प्राकृतिक बनावट, उपज और जनसंख्या के विचार से इंग्लैंड और स्कॉटलैंड की तुलना कीजिए।

७ ग्रेट ब्रिटेन के किस भाग में ऊनी कपड़े का व्यवसाय केन्द्रित है? स्थानीय सुविधाओं को बतलाइए और इस व्यवसाय में लगे हुए चार शहरों के नाम बतलाइए।

८ लंकाशायर में सूती कपड़े के व्यवसाय के केन्द्रित होने के क्या भौगोलिक कारण हैं? ब्रिटिश सूती कपड़ा व्यवसाय की वर्तमान दशा का भी वर्णन कीजिए।

९ कोयला, तेल और जल विद्युत के दृष्टिकोण से फ्रांस का विवरण दीजिए।

१० फ्रांसीसी साम्राज्य के आर्थिक दृष्टिकोण से आत्म निर्भर होने की क्या संभावनाएँ हैं? विस्तार से लिखिए।

११ ग्रेट ब्रिटेन के तीन औद्योगिक व्यवसायों का वर्णन कीजिए और उनके स्थानीयकरण के भौगोलिक कारण बतलाइए।

१२ सामान्य रूप से ग्रेट ब्रिटेन किन प्रदेशो से भोज्य पदार्थ व सूती कपडे के व्यवसाय का कच्चा माल प्राप्त करता है और इस माग की पूर्ति पर लडाई का क्या असर पडा है ? इन वस्तुओ की कमी के निराकरण के लिये ग्रेट ब्रिटेन ने क्या कुछ किया है ?

१३ जर्मनी के प्रधान कोयलाक्षेत्र कौन २ से है और उनका नाव्य जलमार्गो से क्या सम्बन्ध है ? इन क्षेत्रो के मुख्य उद्योग-धधो का भी निरूपण कीजिये ।

१४ यूरोप के प्रमुख लोहा व कोयला क्षेत्रो का वर्णन कीजिये और उन भागो में स्थापित उद्योग धधो के विषय मे बतलाइये ।

१५. ग्रेट ब्रिटेन की व्यापारिक व राजनीतिक उन्नति के भौगोलिक कारण बतलाइये ।

१६ ग्रेट ब्रिटेन की जनसख्या का वितरण बतलाइये और वितरण में विभिन्नता का कारण दीजिये ।

१७ रूस व स्पेन प्रायद्वीप को छोड कर यूरोप महाद्वीप की आर्थिक आत्म-निर्भरता का वर्णन कीजिये । इस प्रदेश में उष्ण कटिबध की अनेक वस्तुए मगाई जाती थी जिनमें भोज्य पदार्थ व कच्चा माल दोनो ही सम्मिलित थे । इन वस्तुओ की माग की पूर्ति के लिये अब क्या किया जा रहा है ? समझा कर लिखिये ।

१८. ग्रेट ब्रिटेन में प्रस्तुत कोयले की सम्पत्ति का निरूपण कीजिये और बतलाइये कि वहा की कोयले की खानो का देश के औद्योगीकरण से क्या सम्बन्ध है ?

१९ ग्रेट ब्रिटेन का एक मानचित्र खीच कर उसके उद्योग-धधो के केन्द्रो को दिखलाइये ।

२० जर्मनी में आन्तरिक जलमार्गो के विकास व उन्नति पर एक लेख लिखिये ।

२१ फ्रास को प्राकृतिक भागो में विभाजित कीजिये और प्रत्येक का वर्णन विस्तार से करिये । अपने उत्तर के पूर्ण कारण दीजिये ।

२२ इस्पात उद्योग के विकास व उन्नति के लिये प्रस्तुत सुविधाओं के दृष्टि-कोण से ग्रेट ब्रिटेन और सयुक्तराष्ट्र अमरीका की तुलना कीजिये ।

२३ ग्रेट ब्रिटेन और जापान दोनो में ही रुई नही होती है और दोनो ही देश कपास तथा मडियो के लिये बाहर के देशो पर निर्भर रहते है । फिर भी इन देशो में सूती कपडे का व्यवसाय बहुत उन्नति कर गया है । ऐसा क्यो है ?

२४ रूस के आयात निर्यात व्यापार की विशेषताओं को समझाइये ।

२५ किन परिस्थितियों के कारण ग्रेट ब्रिटेन के लोगो ने इतनी उन्नति की है ? क्या उन परिस्थितियो पर अब भी भरोसा किया जा सकता है ? समझा कर उत्तर लिखिये ।

२६ ग्रेट ब्रिटेन में पोत निर्माण व्यवसाय के केन्द्र कौन २ से है और प्रत्येक को क्या भौगोलिक सुविधाये प्राप्त है ? टेम्स प्रदेश का इस व्यवसाय में बडा उच्च स्थान था ।

उस स्थान मे गिरने के क्या कारण है? विस्तार से लिखिये।

२७ यूरोप म चीनी के उत्पादन का विवरण लिखिये। चीनी के उत्पादन म यूरोप कहा तक आत्मनिर्भर है?

२८ रूस के आर्थिक जीवन म डोनेटज बेसिन का क्या महत्व है?

२९ ड्यूब नदी का प्रवाह एक मानचित्र पर दिखलाइये और लिखिये कि इस के मार्ग म पडने वाले विभिन्न देशो को इससे क्या आर्थिक लाभ पहुचता है?

३० ग्रेट ब्रिटेन को छोड कर यूरोप म सूती कपड़े के व्यवसाय का विवरण दीजिये।

३१ नार्वे हॉलैड या स्पेन का भौगोलिक विवरण दीजिये।

३२ हालैड प्रकृति पर मनुष्य के बढते हुए नियत्रण का एक नमूना है। हालैड म भूमि उपयोगिता को ध्यान म रखते हुए इस कथन पर अपने विचार प्रगट कीजिये।

३३ यूरोप के उन देशो न सब म अधिक उन्नति की है जहा कोयले व लोहे का विस्तृत भडार है। यह कथन कहा तक ठीक है। उदाहरण सहित उत्तर दीजिये।

३४ दक्षिणी पेनाइन श्रेणी का एक चित्र खीचिये और इसके ढालो पर स्थित उद्योग धधो का वर्णन कीजिये। इन धधो के स्थानीयकरण का कारण भी बतलाइये।

३५ रूस को व्यावसायिक व औद्योगिक क्षेत्रो म विभाजित करिये और मास्को प्रदेश का विस्तृत विवरण दीजिये।

३६ मारसेल्स हम्बर्ग और साउथम्पटन बन्दरगाहो की विशेषताओ को समझाइये।

३७ रूस की आर्थिक उन्नति व विकास का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि वहा की वनस्पति के वितरण का क्या प्रभाव पडा है?

३८ बेलजियम में लोहा और इस्पात व्यवसाय का विकास किन भौगोलिक परिस्थितियो म हुआ है? उनका वर्णन कीजिये।

३९ ब्रिटिश द्वीपसमूह का ऊनी व्यवसाय या जर्मनी के रासायनिक व्यवसाय पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

४० उत्तरी जर्मन मैदान का भौगोलिक वर्णन करिये।

४१ ब्रिटिश द्वीपसमूह म कृषि व्यवसाय का भौगोलिक विवरण दीजिये।

४२ डनमार्क म दूध के लिये पशुपालन का धधा इतना उन्नति क्यो कर गया है? कारण बतलाते हुए उत्तर दीजिये।

४३ नाव्य जलमार्गो के दृष्टिकोण से राइन और एल्ब नदियो की तुलना कीजिये और बतलाइये कि प्रत्येक ने अपने आसपास के प्रदेशो की आर्थिक उन्नति म क्या सहायता दी है?

४४ फिनलैड या बेलजियम किसी एक का भौगोलिक वृत्तान्त लिखिये।

४५ बरमिंघम टाउनसाइड या टीसमाऊथ किसी एक औद्योगिक क्षेत्र का भौगोलिक परिस्थितियों व प्राकृतिक साधनों का वर्णन कीजिये।

४६ लोरेन प्रदेश में स्थित वर्तमान इस्पात उद्योग के स्थानीयकरण तथा भौगोलिक परिस्थितियों का विवेचन करिये।

४७ बलजियम की खनिज सम्पत्ति और औद्योगिक उन्नति पर एक लेख लिखिये।

४८ जर्मनी को कृषि विभागों में विभक्त करिये और कारण सहित किसी एक कृषि प्रदेश का वर्णन करिये।

४९ ग्रेट ब्रिटेन में इस्पात उद्योग किन भौगोलिक परिस्थितियों में विकसित हुआ? और इस समय उसकी क्या दशा है? एक रेखाचित्र पर ग्रेट ब्रिटेन में इस उद्योग के प्रधान केन्द्रों को दिखाइये।

५० फ्रांस में रेशम और ऊनी कपड़े के व्यवसाय का भौगोलिक आधार बतलाइये। इन व्यवसायों की वस्तुओं का विदेशी व्यापार में क्या स्थान है? संसार की मंडियों में क्या वे स्पर्धा कर पाती हैं?

५१ उत्तरी इटली का एक मानचित्र खींच कर वहाँ का भौगोलिक विवरण दीजिये।

अध्याय :: ग्यारह

उत्तरी अमरीका

सामान्य परिचय—विस्तार की दृष्टि से उत्तरी अमरीका का तीसरा स्थान है। यह भूमण्डल के एक तिहाई भाग पर फैला हुआ है। इसका क्षेत्र फल ९० लाख वर्गमील और आबादी १६ करोड़ है। यह महाद्वीप उत्तर पश्चिम में एशिया तक चला गया है और उत्तर पूर्व में यूरोप से निकटतम है। जल मार्ग द्वारा एशिया और यूरोप से सम्पर्क की सुविधा के कारण अमरीका की स्थिति व्यापार के लिये आदर्श रूप है। पनामा नहर के खुलने से एशिया के साथ व्यापार की और भी सुविधा हो गई है। उत्तरी अमरीका की विभिन्न जलवायु में गेहूं, कपास, चुकन्दर, तम्बाकू, गन्ना, चावल, पटुआ, मक्का इत्यादि भिन्न प्रकार की कृषि की फसलें पैदा हो सकती हैं। पश्चिमी पर्वतों तथा पूर्वी उच्च प्रदेशों में खनिज पदार्थों की प्रचुरता है। कुछ खनिज पदार्थ तो यहां पर संसार भर में सब से अधिक होते हैं। यहां की नदियां और झीलें जल मार्गों के उत्तम साधन हैं।

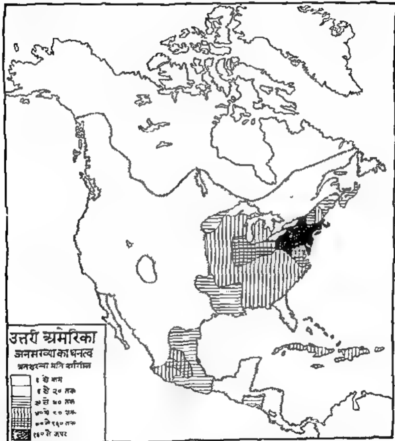
उत्तरी अमरीका के निम्नलिखित राजनैतिक विभाग हैं—

१—कनाडा
२—संयुक्तराष्ट्र तथा अलास्का
३—मैक्सिको
४—मध्य अमरीका तथा
५—पश्चिमी द्वीपसमूह

कनाडा

देश का विस्तार, जनसंख्या तथा भिन्न २ जातियां—कनाडा में १० प्रान्त सम्मिलित हैं जिनके नाम हैं —नोवास्कोशिया, न्यू ब्रन्सविक, प्रिंस एडवर्ड द्वीप, क्वीबेक, ओंटेरियो, न्यू फाउंडलैंड, मैनीटोबा, सस्केचवान, अल्बर्टा, तथा ब्रिटिश कोलम्बिया। इनके अतिरिक्त उत्तरी पश्चिमी राज्य तथा यूकेन राज्य भी सम्मिलित हैं। कनाडा का क्षेत्रफल ३५ लाख वर्गमील तथा १९४२ के अनुसार जनसंख्या १,१५,०६,६५५ है। देश का विस्तार अधिक होते हुए भी यहां के अनेक भाग हानिकारक जलवायु, भूरचना तथा मिट्टी की खराबी के कारण मनुष्यों के बसने के योग्य नहीं हैं। यूकन प्रान्त तथा उत्तर पश्चिमी राज्यों में उन्नति की गुंजायश ही नहीं है। कनाडा की अधिकतर आबादी संयुक्तराष्ट्र से लगी हुई एक तंग पट्टी में ही केन्द्रित है। इस पट्टी में अधिकतर ईरी, ओन्टेरियो तथा सेंट लारेंस नदी का मैदान तथा लारेन्शियन शील्ड सम्मिलित हैं। यहां पर कनाडा की ५० प्र

में जनसंख्या बसी हुई है। सब से घनी आबादी ओन्टेरियो प्रान्त में दोनों झीलों के उत्तरी तटों पर तथा क्वीबेक के लारेंशियन मैदानों में है। क्वीबेक तथा ओन्टेरियो के ७० नगरों में ही देश की आधी जनसंख्या बसी हुई है।



चित्र नं० ६१—उत्तरी अमरीका की जनसंख्या का घनत्व

कनाडा की आबादी में अनेक जातियों का सम्मिश्रण है जो पास रहते हुए भी अभी तक एक राष्ट्र नहीं बन पाई है। यहाँ पर २८ प्र० श० फ्रांसीसी, २६ प्र० श० अंग्रेज, १३ प्र० श० स्काच (स्काटलैंड वासी), १२ प्र० श० आयरलैंड निवासी और ५ प्र० श० जर्मन हैं। इन सभी जातियों में अपनी अपनी ढपली और अपना अपना राग है।

प्राकृतिक साधन—कनाडा में बड़े विशाल प्राकृतिक साधन हैं। खेती बारी, खान

खोदने, लकड़ी चीरने, मछली पकड़ने और भेड़ों के पालन में कनाडा का स्थान ब्रिटिश साम्राज्य में सर्वप्रथम है।

कनाडा में मछली पकड़ने की सुविधायें तथा मछली के धंधे का विकास—मछली पकड़ना कनाडा का एक मुख्य धंधा है। यहाँ पर नदियों, तटों तथा गहरे समुद्रों से मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। समुद्री मछली पकड़ने में नोवास्कोशिया तथा न्यूब्रन्सविक सब से प्रसिद्ध राज्य हैं। यहाँ की टूटी तटरेखा बन्दरगाहों की अधिकता नावों के लिये वनों की लकड़ी तथा तट के पास ही मछलियों की अधिकता इस धंधे के लिये बड़े ही उपयुक्त साधन हैं। कॉड, हालीवट, मकरल तथा हैरिंग मुख्य प्रकार की मछलियाँ हैं। पूर्वी तट पर मछली संसार भर में सब से अधिक पाई जाती हैं। कनाडा के पश्चिम में नदियों से मछली पकड़ी जाती है। कोलम्बिया, फ्रेजर तथा स्कीना नदियों में सालमन मछली अधिकतर मिलती है। यह प्रदेश मछलियों के लिये जगत्प्रसिद्ध है। यहाँ पर प्रतिवर्ष लगभग १६ करोड़ मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। पश्चिमी तट पर प्राप्त होने वाली बहुमूल्य मछलियाँ हैरिंग, कॉड तथा हैलीवट हैं। प्रिंस रुपर्ट इनका प्रधान केन्द्र है। कनाडा की नदियों और महान झीलों में भी स्थानीय उपयोग के लिये मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। १९४२ में कनाडा के ४२,००० व्यक्ति मछली उद्योग में लगे हुए थे। कनाडा की स्थानीय मंडियों में जितनी मछलियाँ की खपत होती हैं उससे तीन गुनी मछलियाँ यहाँ प्राप्त हो जाती हैं। इसी कारण इस देश की मछलियाँ बाहर की मंडियों में भेजी जाती हैं। कनाडा में अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागरीय तटों, झीलों तथा नदियों से कुल मछलियों का उत्पादन १ अरब ३० करोड़ पौंड वार्षिक होता है। *कनाडा में ७० जातियों की मछलियाँ, घोंघे और स्पंज आदि प्राप्त होते हैं जो व्यापार के लिये बड़े ही महत्त्वपूर्ण होते हैं।*

कनाडा में खेती का धंधा—यद्यपि कनाडा में कल कारखानों की काफी उन्नति हुई है परन्तु कनाडा मुख्यतः कृषिप्रधान देश है। देश की आय के लिये कृषि का धंधा बड़ा महत्त्वपूर्ण है। कनाडा में कृषि सम्बन्धी अनेक वस्तुओं का उत्पादन होता है। परन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार के अनाज विशेषकर उगाये जाते हैं। कृषि की उपज का ऊँचा भाव, अनुकूल ऋतु, मशीनों का अधिक उपयोग, खेती के धंधे में नयी खोज तथा उत्तम खाद इत्यादि के उपयोग से कनाडा ने अपनी कृषि की उपज में हाल ही में बड़ी भारी उन्नति कर ली है। कृषियोग्य भूमि में रेलों की पहुँच भी खेती की उन्नति में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है।

१९५० में कनाडा में भिन्न २ फसलों की उपज

(सहस्र बुशल)

गेहूँ	४,६१,७२०	सन	४,५४०
जई	४,२०,३२८	मिले-जुले अनाज	५५,६२८
जौ	१,७१,३२८	अन्य अनाज	१६,६२२
राई	१३,३४६	आलू	५३,५१८

कनाडा में गेहूं की उपज—कनाडा में गेहूं की उपज की मुख्य पट्टी ७०० मील लम्बी तथा २०० मील चौड़ी है जो मेनीटोवा, सस्केचवान तथा अलवर्टा के दक्षिणी भाग में कोणवत् फैली हुई है। गेहूं मई में बोया और सितम्बर तक काट लिया जाता है। कनाडा में गेहू की उपज का औसत साधारणतया १२ से १८ बुशल प्रति एकड़ रहता है जो संयुक्त राष्ट्र की उपज से बहुत ही कम है। परन्तु कनाडा में बड़े पैमाने पर गेहू की खेती की जाती है और मजदूरी की बचत के उपायों द्वारा यहा पर लागत का मूल्य भी कम पड़ता है। अब यहा गेहू की खेती में परिवर्तन हो रहा है। गेहू उत्पादन क्षेत्र पश्चिम की ओर को हटता जा रहा है। अब अधिक पैदावार में सस्केचवान का स्थान अलवार्टा को प्राप्त हो रहा है। गेहू की पैदावार देशीय खपत से पाच गुनी होती है इसी कारण ससार भर मे गेहू का निर्यात करने वाला प्रमुख देश हो गया है। कनाडा से लगभग तीन चौथाई प्रतिवर्ष बाहर भेजा जाता है। यहा का गेहू संयुक्त राज्य (U K) संयुक्त राष्ट्र अमरीका, अफ्रीका तथा दूरपूर्व के देशों को अधिकतर जाता है। पोर्ट आर्थर, फोर्ट विलियम, विनिपेग तथा मान्ट्रीयल गहू के प्रधान केन्द्र हैं। यहा पर गेहू केवल निर्यात ही नही किया जाता परन्तु पशुओ को भी खिलाया जाता है।

कनाडा की जौ, जई, आलू तथा पशु सम्बन्धी उपज—जई की उपज सस्केचवान, अलवर्टा, ओन्टेरियो, क्वीवेक तथा मेनीटोवा में मुख्यतया होती है। १९५० में १ करोड़ १० लाख एकड़ भूमि पर जई बोई गई थी। जौ की भी ६० प्र श उपज मेनीटोवा, सस्केचवान तथा अलवर्टा प्रान्तों ही में होती है। राई भी १० लाख एकड़ से अधिक भूमि पर बोई जाती है। इसकी पैदावार भी अधिकतर सस्केचवान, अलवर्टा, तथा मेनीटोवा में ही होती है। आलू ओन्टेरियो तथा क्वीवेक मे प्रधानतया उत्पन्न होता है। आजकल पशु धन तथा पशु सम्बन्धी उपज को बढ़ाने का भी प्रयत्न हो रहा है। इन वस्तुओं की द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् देशी और विदेशी माग बहुत बढ़ गई है। क्वीवेक और ओन्टेरियो के प्रान्तों में मुर्गिया, पनीर, अन्डे, दूध तथा दूध सम्बन्धी अन्य उपज की बड़ी तरक्की की जा रही है।

कनाडा की खनिज सम्पत्ति—कनाडा की खनिज सम्पत्ति में भी बड़ी उन्नति हो रही है। यहा पर नोवास्कोशिया, ब्रिटिश कोलम्बिया, क्वीवेक, ओन्टेरियो, अलवर्टा तथा यूकन खनिज-सम्पन्न प्रदेश हैं। सोने के उत्पादन में कनाडा का ससार में तीसरा स्थान है। और यहा संसार के ७ प्र श सोने का उत्पादन किया जाता है। ब्रिटिश कोलम्बिया, यूकन प्रदेश मे क्लोन्डाइक प्रान्त, नोवास्कोशिया, ओन्टेरियो तथा क्वीवेक सोने के प्रधान क्षेत्र हैं। **ससार की सब से मूल्यवान निकिल की खानें सेडवरी (ओन्टेरियो) में हैं। वहा संसार का ९० प्र श निकल प्राप्त होता है।** सैडबरी के ६० मील लम्बे तथा १५ मील चौड़े क्षेत्रफल में निकिल की ४० के लगभग खानें हैं। तांबा भी यहा का मूल्यवान

ग्रीन लैण्ड

अलास्का

यूकान

सयुक्त राष्ट्र

क्यूबेक

हडसन खाड़ी

न्यू फाउं

कनाडा के प्रकृति दत्त साधन

चित्र न० ६२

खनिज पदार्थ है जो ओन्टेरियो, क्वीबेक, तथा ब्रिटिश कोलम्बिया में विशेषकर निकाला जाता है ।

समार का ६५ प्र श ऐस्बस्टोस भी क्वीबेक की खानो से निकाला जाता है। चादी, जस्ता, सीसा और कोबाल्ट आदि धातुए भी यहा मिलती है। कच्चा लोहा विशेषकर टैकमाडा, ओन्टेरियो, नोवास्कोशिया, अल्बर्टा, सस्केचवान, राकी पर्वत तथा वैकुवर द्वीपो में निकाला जाता है। कनाडा का ४० प्र श कोयला नोवास्कोशिया से ही प्राप्त हो जाता है। कच्चा तेल (Crude Oil) तथा प्राकृतिक गैसे भी अलवर्टा के मैडिसन हैट तथा मैकन्जी बेसिन में विशेषकर मिलती हैं। सन् १९४६ में २१० लाख बैरल तेल निकाला गया। सन् १९४९ में ६० विभिन्न खनिज पदार्थों को मिला कर ९००० लाख डालर मूल्य का खानो मे उत्पादन हुआ। कनाडा की सरकार की ओर से खनिज पदार्थों की विस्तृत खोज हो रही है और इसके फलस्वरूप मेंटलरेन्स, सस्केचवान, लब्रेडर और उत्तरी पश्चिमी प्रदेश में लोहा, तेल, यूरेनियम के मिलने की सभावना है।

कनाडा की वन-सम्पत्ति—कनाडा के एक तिहाई भाग पर वन प्रदेश फैला है। उत्तरी भाग को छोडकर जहा यातायात की कठिनाई है, सभी वनों में लकडी चीरना ही मुख्य धधा है। बहुमूल्य लकडी के निर्यात में कनाडा का स्थान ससार के प्रमुख देशों में है। ब्रिटिश राष्ट्र मडल में केवल कनाडा ही ऐसा देश है जहा पर निर्यात योग्य बहुमूल्य इमारती लकडी की अधिकता है। केवल स्केंटिनेविया ही समार भर में इसकी स्पर्धा करता है। कनाडा की चिरी हुई लकडी के आधे से अधिक भाग की पूर्ति केवल ब्रिटिश कोलम्बिया से हो हो जाती है। यहा पर डगलस फर (Fir), हैमलाक, स्प्रूस, लाल सिडार तथा पाइन के वृक्ष अधिकतर होते है। पाइन तथा हैमलाक वृक्षों से इमारती लकडी और स्प्रूस के वृक्ष से कागज बनाने के लिये काष्ठमड प्राप्त होता है। १९३८ में कनाडा के वनों से ३ अरब ७६ करोड ८३ लाख ५१ हजार फीट तथा १९४७ में ५ अरब ३६ करोड २५ लाख ६५ हजार फीट लकडी प्राप्त हुई। सन् १९४९ में लकडी का यह उत्पादन ५ अरब २६ करोड ९० लाख फीट था।

कनाडा में उत्तरी वनों का महत्व—उत्तरी वनो की पट्टी का पूर्वी भाग विशेषकर क्वीबेक में, व्यापारिक दृष्टि से बडा महत्वपूर्ण है। पूर्वी कनाडा में नदियों की अधिकता, कडा जाडा तथा वसन्त ऋतु में बर्फ के पिघलने से बाढ का आना लकडी चीरने के उद्योग में बडे सहायक साधन है। जाडो में लकडी काटी जाती है और घोडो द्वारा पास की सुविधापूर्ण जमी हुई नदी के बर्फ पर पहुचा दी जाती है। पेडो को एक जगह बाध कर बेडा बना देते हैं और जब बर्फ पिघलती है ये बेडे धार के साथ बह कर लकडी चीरने के कारखानों में पहुचा दिये जाते हैं। कनाडा में जगलों को विशेषकर सुरक्षित रखा जाता है। बिना आज्ञा के वनों से कोई लकडी नहीं काट सकता और छोटे पेड तो काटे ही नहीं जा सकते। अग्नि से रक्षा के लिये ऊची २ चौकिया बनी हुई हैं, जिन पर

चौकीदार रहते हैं। इन वनों में फर (Fur) वाले पशु भी पाये जाते हैं। इन पशुओं की खाल और नमदे की अमरीका और यूरोप में बड़ी माँग रहती है। कनाडा की चिरी हुई लकड़ी के क्रमशः प्रमुख ग्राहक संयुक्त राज्य (U K) संयुक्त राष्ट्र अमरीका हालैंड अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया है।

कनाडा के जलमार्ग—कनाडा में सेंट लारेन्स तथा बड़ी झीलें नाव्य हैं। इनसे २००० मील प्राकृतिक लम्बा जलमार्ग बनता है। जाड़ा में ये जम जाती हैं। बड़े २ समुद्री जहाज सेंट लारेन्स द्वारा देश के १००० मील भीतर मांट्रियल तक आ सकते हैं। यहाँ पर माल छोटे २ जहाजों में लादकर इधर उधर ले जाया जाता है। सेंट लारेन्स के मुहाने पर कुहरे और तेज धारा के कारण कठिनाई अवश्य पड़ती है। यहाँ पर नदियों और झीलों को मिलाने के लिये १६०० मील लम्बी नहरें भी हैं।

कनाडा में जलविद्युत—कनाडा में जलशक्ति का महत्वपूर्ण विकास हुआ है और देश में कारखानों के लिये ६३% से विद्युत जल शक्ति से ही पैदा की जाती है। देश भर में सस्ती जल शक्ति (विद्युत) के कारण ही यहाँ पर औद्योगिक विकास सम्भव हुआ है और लोगों का जीवन स्तर भी ऊँचा हो गया है।

कनाडा के रेल मार्ग—रेलों के विकास के कारण ही कनाडा में बड़ी उन्नति हुई है विशेषकर पश्चिमी तथा उत्तर पश्चिमी कनाडा में रेल यातायात के ही कारण यहाँ की उपज में इतनी उन्नति सम्भव हो सकी है। कनाडा में अब दो महान रेल मार्ग हैं (१) कैनेडियन पैसिफिक रेल मार्ग तथा (२) कनेडियन नेशनल रेल मार्ग। ये दोनों ही रेल मार्ग महाद्वीप के एक छोर से दूसरे छोर तक जाते हैं। और इन में से अनेक शाखायें देश में इधर उधर फैली हैं। इन्हीं रेलों के कारण पश्चिमी कृषिक्षेत्र की उन्नति हुई है। यहाँ की रेल संयुक्त राष्ट्र की रेलों से भी मिली हुई हैं। सन् १९४९ में कनाडा के समस्त रेल मार्ग ५७ ००५ मील लम्बे थे।

कनाडा में औद्योगिक विकास—यहाँ पर कल-कारखानों की भी तीव्र उन्नति हो रही है। क्रमशः जनसंख्या में वृद्धि, रेलों के विकास जलशक्ति की प्रचुरता तथा खनी और वन-सम्पत्ति की विशाल उपज के कारण जल्दी ही कनाडा में उद्योग धंधों के विकास की सम्भावना है। यहाँ की कारखानों की वस्तुओं का मूल्य इस समय भी खनी की वस्तुओं के मूल्य से कहीं बढ़कर है। यद्यपि कनाडा रेलों का सामान खनी की मशीन लोहे और स्टील की वस्तुएं और वस्त्र इत्यादि विदेशों से मंगाता है परन्तु कारखानों की उन्नति के भावी विकास के कारण शीघ्र ही कनाडा आत्मनिर्भर हो जायगा।

कनाडा के उद्योग—कनाडा में विशाल प्राकृतिक साधनों के कारण मछलियों को नमक लगा कर बाहर भेजने, आटा पीसने, मक्खन तथा पनीर बनाने, लकड़ी चीरने कागज बनाने आदि उद्योगों की स्थापना हुई है। चमड़े का सामान, ऊनी और सूती वस्त्र लोहे तथा स्टील का सामान बनाने के भी कारखाने यहाँ पर हैं। उत्तम प्रकार की

मुलायम लकड़ी की प्रचुरता के कारण कनाडा में काष्ठमंड, कागज और कृत्रिम रेशम का धंधा विकसित हो सका है। यहा पर उद्योगों के लिये जलशक्ति तथा स्वच्छ और ताजे जल की भी सुविधाए है। कनाडा में ६ लाख से भी अधिक व्यक्ति कल-कारखानों में काम करते है।

कनाडा के प्रमुख उद्योग

उद्योग धन्धा	कारखाने
वनस्पति वस्तुए	५९१२
पशु उपज	४३२३
सूती व ऊनी वस्त्र	३२०४
कागज व लकड़ी	१३,८०६
लोहा व इस्पात	२५४८
अन्य धातुए	८१७
अन्य खनिज सम्बन्धी	१००९
रासायनिक	१०२६
बाकी और (विविध)	८०२

कनाडा में आयात तथा निर्यात की वस्तुएँ—कनाडा से निर्यात की वस्तुओं में ५२ प्र श मूल्य का तैयार माल और २६ प्र श मूल्य की कच्ची वस्तुए होती है। यहा से अखबारी कागज, काष्ठमंड, गोरन, गेहू, इमारती लकड़ी, पनीर, मछलिया, चादी, सोना, सुअर का मास, ताबा, फल, मोटर गाड़िया, खेती के औजार तथा खाद इत्यादि का निर्यात होता है। लोहे और स्टील का सामान, ऊनी और सूती वस्त्र, कोयला, टीन, रबर, खनिज तल और उष्णकटिबधीय तथा उपोष्णकटिबंधीय उपज आयात की मुख्य वस्तुए है। पहले यहा पर अधिकतर माल सयुक्त राज्य (U K) से आता था परन्तु अब सयुक्त राष्ट्र की वस्तुओं का ही अधिक उपभोग होता है। कनाडा और सयुक्त राष्ट्र के निवासियों की अभिरुचि भी समान ही है इसीलिये सयुक्त राष्ट्र से व्यापार बढ गया है।

आयात व निर्यात (लाख डालर में)
(१९४९)

सयुक्तराष्ट्र	१९५११९	सयुक्तराष्ट्र	१५०३५
ग्रेट ब्रिटेन	३०७४	ग्रेट ब्रिटेन	७०४९
अन्य स्टर्लिंग प्रदेश	१८६८	अन्य स्टर्लिंग प्रदेश	३२०१
पश्चिमी यूरोप	८३९	पश्चिमी यूरोप	२३६०
लैटिन अमरीका	१९२०	लैटिन अमरीका	१२५६
अन्य देश	३६२	अन्य देश	११२८
कुल योग	२७६१२	कुल योग	२९१२९

कनाडा के प्रसिद्ध नगर—हैलिफैक्स—नोवास्कोशिया की राजधानी और मुख्य बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय आदर्श है और यह जाडो में कभी नही जमता। यह छ मील लम्बा और एक मील चौडा है। इसमे बडे २ समुद्री जहाज ठहर सकते है। यद्यपि यह एक व्यापारिक केन्द्र है और यहा से मछली तथा खनिज पदार्थ बाहर जाते है परन्तु अब यहा चीनी शोधने और सूत कातने आदि के भी अनेक कारखाने खुल गये है।

चारलोटीटाउन (Charlotte town)—प्रिंस ऐडवर्ड द्वीप की राजधानी तथा प्रमुख नगर है। यहा पर लोमडिया पालने का धधा प्रसिद्ध है।

माण्ट्रीयल—क्वीबेक का सब से बडा नगर है। यहा पर व्यापार, कारखानो और शिल्प उद्योगो की बडी उन्नति हुई है।

टोरन्टो—ओन्टेरियो म माण्ट्रीयल की टक्कर का नगर है। यह एक प्रसिद्ध झील-स्थित बन्दरगाह है।

ओटावा—ओन्टेरियो प्रान्त म स्थित है। यह कनाडा की राजधानी है। यह काष्ठ व्यापार के लिए प्रसिद्ध, नदी स्थित बन्दरगाह है। यहा पर जलशक्ति का सब से प्रधान केन्द्र भी है।

वैनकुवर—ब्रिटिश कोलम्बिया में पैसिफिक तट पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय भी आदर्श है। यहा से गेहू, इमारती लकडी और खनिज पदार्थ बाहर भेजे जाते है।

विनिपैग—मैनीटोबा मे प्रान्तीय सरकार की राजधानी है। यह ससार भर मे गेहू का सब से प्रधान केन्द्र है।

न्यूफाउन्डलैंड

रचना—१९४० मे न्यूफाउण्डलैण्ड कनाडा का दसवा प्रान्त है। यह इग्लैण्ड का सबसे पुराना उपनिवेश है। भौगोलिक विचार से तो यह कनाडा के पूर्वी पर्वतो का ही सिलसिला है परन्तु यह द्वीप कही भी ऊचा नही है। यहा की जलवायु तर होने से अच्छी नहीं है। तर जलवायु और कम उपजाऊ भूमि के कारण कृषि की उन्नति नही होती।

मछली तथा वनसपत्ति की प्रचुरता—यहा की आबादी बिखरी है। कुल सख्या ३,१६,००० है। अधिकतर लोग चट्टानी तटो पर रहते है। इस द्वीप मे वन अधिक है। कहावत है कि न्यूफाउण्डलैंड मछलियो से घिरा हुआ वन है। यहा के लोगो का मुख्य धधा मछली पकडना है। यही उनकी समृद्धता का साधन है। ग्रैंड बैंक्स मछलियो का प्रसिद्ध केन्द्र है। जितनी मछलिया यहा पकडी जाती है उनका पाचवा भाग ब्राजील, पुर्तगाल, इटली और स्पेन को निर्यात किया जाता है। कनाडा, यूनान और पश्चिमी द्वीपसमूह को भी काफी मछलिया भेजी जाती है। यहा पर कागज भी बनता है और लोहा भी निकाला जाता है। कुल निर्यात का २५ प्र श भाग कागज होता है।

सेंटजोन्स राजधानी है और मछली व्यवसाय का केन्द्र है।

अमरीका के संयुक्त राष्ट्र

सामान्य परिचय : प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता—संयुक्तराष्ट्र संसार में सबसे धनी देश है। इसके मुकाबिले का संसार में और कोई धनी देश नहीं है। यहां की व्यापारिक महानता निम्नलिखित कारणों से है —(१) उत्तम जलवायु (२) प्रचुर प्राकृतिक साधन (३) कम घनी आबादी तथा (४) यहां के निवासियों का जातीय तथा सामाजिक परम्परागत कुशलता। यहां के मूल निवासी यूरोप से आये हुए लोग हैं जो अपने साथ ऊंची संस्कृति सभ्यता तथा व्यापारिक कुशलता भी लाये। यहां की जलवायु शारीरिक तथा मानसिक क्रियाशीलता के लिए उत्साहवर्धक है। यहां पर प्राकृतिक सम्पत्ति की प्रचुरता है विशेषकर खनिज, मछली, वन तथा कृषि साधनों की। भोजन की वस्तुएं भी यहां आवश्यकता से अधिक होती हैं। संयुक्तराष्ट्र में लोहे, कोयले, तांबे, खनिज तेल तथा कपास की कमी नहीं है। एक ओर तो यहां के प्राकृतिक साधन तथा दूसरी ओर कम घनी आबादी दोनों ही बातों के कारण यहां के निवासियों का जीवन स्तर बहुत ऊंचा हो गया है फलतः यहां के निवासियों को जीवन के लिए संघर्ष की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

स्थिति, विस्तार तथा विकास—संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी के थल भाग के ४ प्र. श. से भी अधिक भाग को घेरे हुए है। इसका क्षेत्रफल यूरोप से कुछ ही कम है। संयुक्तराष्ट्र की स्थिति इतनी अनुकूल है कि इसके पूर्वी भाग में अत्यधिक पैदावार और व्यापार की दृष्टि से अमरीका का सर्वोत्तम तथा उपजाऊ मैदान आ जाता है। पूर्व-पश्चिम तथा दक्षिण तीनों ओर से समुद्र में प्रवेश करने की सुविधाएं भी इसे प्राप्त है। इसके अतिरिक्त यूरोप से अधिक दूर होने के कारण यहां के उद्योग-धन्धे बड़े विकसित हो गये हैं। यूरोपीय युद्ध तथा आन्तरिक स्पर्धा इसके विकास में इसी कारण बाधा नहीं डाल सके। यहां के निवासी बहुत दिनों तक यूरोप की घटनाओं से तटस्थ रहे और उनकी नीति यही रही कि अमरीका अमरीकनों का है। आजकल अमरीका ने इस नीति को त्याग दिया है और अब अमरीका यूरोपीय राजनैतिक मामलों में प्रधान रूप से भाग ले रहा है।

सरकारी दृष्टिकोण—संयुक्तराष्ट्र की सरकार भी यहां के उद्योग-धन्धों को सदैव ही प्रोत्साहित करती रही है। इस सम्बन्ध में रूजवेल्ट की नई नीति (New Deal) का उल्लेख कर देना आवश्यक है। इस नई नीति का उद्देश्य था—अमरीका के प्राकृतिक साधनों को सुरक्षित रखना तथा विकसित करना, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहित करना, मजदूरों को खाली न रहने देना, कम उम्र के बच्चों से कारखानों में काम लेने और मजदूरों से अधिक परिश्रम लेने की प्रथा का अन्त करना।

हब्शी जनता—भिन्न-भिन्न दिशाओं में महान् उन्नति प्राप्त कर लेने पर भी संयुक्त-राष्ट्र की सरकार अभी तक रंग-भेद की समस्या को नहीं सुलझा सकी है। यहां के हब्शियों के साथ मनुष्योचित व्यवहार नहीं किया जाता था मानो वे मनुष्य है ही नहीं।

उनको उचित शिक्षा पूरा वेतन तथा वोट देने का भी अधिकार नहीं था। अब उनके साथ कुछ कुछ अच्छा व्यवहार होने लगा है।

विस्तार तथा आबादी—संयुक्त राष्ट्र का क्षेत्रफल २९,७७,१२८ वर्गमील है। १९४७ की जनगणना के अनुसार यहां की आबादी १४ करोड़ ५० लाख थी। १९४० के अनुसार आबादी का औसत ४४ व्यक्ति प्रति वर्गमील था। हब्शियों की आबादी १ करोड़ ३० लाख है। यहां की कुल आबादी का दशमांश हब्शी लोग हैं।

संयुक्तराष्ट्र में ४८ राज्य सम्मिलित हैं जिनमें प्रत्येक को समान अधिकार हैं। अब व्यक्तिगत राज्यों के अधिकार कम हो रहे हैं और फेडरल सरकार के अधिकार बढ़ते जा रहे हैं।

खेती की स्थिति—संयुक्तराष्ट्र की खेती की पैदावार संसारभर में सबसे अधिक है परन्तु अब खेती की महत्ता कम होती जा रही है। सौ वर्ष पूर्व यहां के ८० प्रतिशत मनुष्य खेती पर निर्भर थे परन्तु १९०० में यह संख्या ३७ प्र० श० और १९४४ में केवल २० प्र० श० ही रह गई थी और आजकल तो केवल १० प्र० श० मनुष्य ही खेती में लगे हुए हैं।



चित्र नं० ६३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका की प्रमुख आर्थिक उपज

सन् १९३५ से ३९ तक संयुक्त राष्ट्र की खेती की उपज निम्न प्रकार था —

मांस पशु	२७ प्र० श०	मुर्गियां	१२ प्र० श०
अनाज	१३ प्र० श०	दूध	०२ प्र० श०
कपास	९ प्र० श०	फल	३ प्र० श०
तम्बाकू	३ प्र० श०	चीनी	१ प्र० श०
आलू	४ प्र० श०	तिलहन	२ प्र० श०

संयुक्तराष्ट्र में गेहूं की पैदावार—देश की मुख्य पैदावार गेहूं है। गेहूं की पैदावार की मुख्य पट्टी में वे देश सम्मिलित हैं जहां गर्मियों के आरम्भ में हल्की वृष्टि हो जाती है और पतझड़ की ऋतु गर्म रहती है। गेहूं अधिकतर मोन्टाना, वाशिंगटन, इदाहो, नेब्रास्का, टैक्सास, ओक्लाहामा, कंसास, उत्तरी डाकोटा तथा इलिनोय में उत्पन्न होता है। कैलिफोर्निया की घाटी की भूमध्यसागरीय जलवायु भी गेहूं की उपज के अनुकूल है। १९४७ में गेहूं की पैदावार का अनुमान १,३५,६०,००,००० (एक अरब ३५ करोड़ ६० लाख) बुशल था। यह उपज सबसे अधिक थी। परन्तु यूरोप, अर्जेन्टाइना और आस्ट्रेलिया में गेहूं की पैदावार अधिक होने के कारण यहां की पैदावार घटने की आशा है फिर भी सन् १९५० में यहां १६,२७० लाख बुशल गेहूं उत्पन्न हुआ।

संयुक्तराष्ट्र में मक्का की उपज—संयुक्तराष्ट्र की दूसरी मुख्य उपज मक्का की है। मक्का की खेती गेहूं से भी अधिक भूमि पर की जाती है परन्तु मक्का की व्यापारिक महत्ता नहीं है। अधिकतर मक्का मनुष्यों और पशुओं के भोजन में ही काम आ जाती है और इसका निर्यात नहीं होता। मक्का के लिए अधिक गर्म और तर ग्रीष्म ऋतु चाहिए अतः मक्का की पैदावार गेहूं की पट्टी के दक्षिण और पूर्व में होती है। मिसिसिपी की घाटी का मध्य भाग इस उपज का प्रधान केन्द्र है। मक्का की पैदावार आयोवा, इलिनॉय, इंडियाना, मिसौरी और पूर्वी कंसास में होती है और सेंट लुइस, कंसास नगर तथा शिकागो मक्का की मुख्य मंडियां हैं। १९४७ में मक्का की पैदावार २,४०,१०,००,००० (दो अरब ४० करोड़ १० लाख) बुशल थी। सन् १९५० में उत्पादन की मात्रा बढ़कर ३१३१० लाख बुशल हो गई।

रुई, कपास, तम्बाकू तथा अन्य उपज की वस्तुएं—संयुक्तराष्ट्र की तीसरी मुख्य पैदावार की वस्तु रुई है जिससे सुबह के नाश्ते की चीजें बनती हैं। मक्का की पट्टी के दक्षिण में कपास की खेती होती है। उपजाऊ काली मिट्टी के कारण पूर्वी टैक्सास कपास की पैदावार के लिए प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त अरकन्सास, अलबामा, मिसिसिपी, जार्जिया तथा कैरोलिना में भी कपास पैदा होती है। जार्जिया तथा कैरोलिना में 'समुद्र-द्वीपीय' कपास उगाई जाती है। दुनिया की ६० प्र० श० कपास संयुक्तराष्ट्र में पैदा होती है और पश्चिमी यूरोप के देश अपनी ८० प्र० श० आवश्यकता के लिए संयुक्तराष्ट्र की कपास पर निर्भर रहते हैं। तिलहन भी एक प्रमुख गौण उपज है। इससे तेल और जानवरों के लिए खली बनाई जाती है। तम्बाकू, केन्टकी, वर्जीनिया, उत्तरी तथा दक्षिणी कैरो-लिना तथा टनीसी में उत्पन्न होता है। रिचमंड तम्बाकू निर्यात के लिए प्रमुख बन्दरगाह है। संयुक्तराष्ट्र में संसार का ४० प्र० श० तम्बाकू पैदा होता है। चावल और गन्ने की पैदावार भी होती है। सन् १९४९ में १६ लाख एकड़ भूमि से १९९०० लाख पौंड तम्बाकू पैदा हुई।

खनिज पदार्थ—संयुक्त राष्ट्र खनिज पदार्थों में भी संसार में सबसे बढ़कर है।

यहा पर एथ्रासाइट और बिटूमिनस कोयला खनिज तेल प्राकृतिक गैस, सीमेंट नमक लोहा, चादी सोना, ताबा, जस्ता बाक्साइट और सीसा आदि प्रमुख खनिज पदार्थों की प्रचुरता है। संयुक्तराष्ट्र म सारे पश्चिमी यूरोप स अधिक कोयला निकलता है। सयुक्तराष्ट्र में कोयले के पाच प्रमुख क्षेत्र हैं —

प्रधान कोयला क्षेत्र—(अ) अपलेशियन कोयला क्षेत्र—यहा पर पैंसिलवानिया से अलबामा तक बिटूमिनस कोयले की खान फैली हुई हैं। सयुक्तराष्ट्र का तीन चौथाई उत्तम कोयला यहीं से निकलता है।

(ब) दूसरा प्रधान कोयला क्षेत्र पूर्वी मीसरी प्रदेश है। इस भाग म इंडियाना केन्टकी तथा इलिनाय सम्मिलित है।

(स) पश्चिमी मीसरी कोयला क्षेत्र आयोवा म कन्सास और मिसौरी म स होता हुआ ओक्लाहामा तक फैला हुआ है।

(द) खाडी कोयला क्षेत्र—दक्षिणी अलबामा म टैक्सास तक फैला है। यहा लिगनाइट कोयला निकलता है।

(क) पश्चिमी कोयला क्षेत्र—पश्चिमी पहाड़ो म बिखरे हुए है। इस भाग म निम्न श्रेणी का बिटूमिनस तथा लिगनाइट कोयला प्राप्त होता है। औद्योगिक क्षेत्रो और समुद्र से दूर होने के कारण यहा अधिक प्रगति नही हुई। यहा की आबादी बिखरी और दश पहाडी है। प्रशान्त महासागर तट पर कोयले की बडी-बडी खानो का अभाव है।

खनिज तेल (पैट्रोलियम)—सयुक्तराष्ट्र म ससार का ६० प्र श पैट्रोलियम निकलता है। यहा पैट्रोलियम के चार प्रमुख क्षेत्र हैं —

(अ) सर्वप्रधान तेल क्षेत्र कन्सास से ओक्लाहामा तथा उत्तरी टैक्सास म होता हुआ लूसियाना म चला गया है। टैक्सास और ओक्लाहामा म बहुत अधिक तेल निकलता है।

(ब) अपेलेशियन क्षेत्र न्यूयार्क से केन्टकी तक फैला है। इसका उत्पादन अब घट रहा है।

(स) ओहियो—इन्डियाना तथा इलिनाय कभी तेल के बड़े क्षेत्र थे। अब अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं।

(द) पश्चिमी क्षेत्र म कैलिफोर्निया, कोलोरेडो, मोन्टाना तथा व्योमिंग शामिल हैं। कैलिफोर्निया में टैक्सास के ही बराबर तेल निकलता है।

तांबा तथा जस्ता—सयुक्तराष्ट्र की तीसरे नम्बर की धातु है। यह अधिकतर राकी पहाड म पाया जाता है। इसके प्रमुख स्थान ऐरिजोना मोन्टाना तथा न्यू मैक्सिको म हैं। सन् १९४९ में ७५३,००० टन ताबा निकाला गया। जस्ता, मिसौरी म तथा कन्सास ओक्लाहामा, मोन्टाना न्यू मैक्सिको तथा विस्कौन्सिन म निकलता है। सन् १९४६ मे उत्पादन की मात्रा ६ लाख टन थी।

सोना, चाँदी तथा लोहा—सोने की खानें कैलेफोर्निया, कोलेरेडो, आरिजोना, न्यू मैक्सिको यूटाह और नेवादा में हैं। चाँदी की खानें अरिजोना, नेवादा, कोलोरेडो और यूटाह में है। ससार की एक-चौथाई चाँदी तथा नवां भाग सोना सयुक्तराष्ट्र में मिलता है। ये दोनों धातुएं पास-पास मिलती हैं। सयुक्तराष्ट्र में सबसे अधिक सोना दक्षिणी डकोटा के ब्लैकहिल प्रान्त में निकलता है। कैलिफोर्निया को 'सुवर्ण-प्रान्त' कहते हैं। यहां पर नेवादा के पश्चिमी ढालों पर सोने की बडी खानें हैं। लोहे की खानें मिनसोटा, विसकौंसिन और मिशिगन में हैं। शिकागो, बफैलो और पिट्सबर्ग लोहे के काम के प्रधान केन्द्र हैं। सन् १९४९ में सयुक्तराष्ट्र में ८४० लाख टन कच्चा लोहा निकाला गया।

सयुक्तराष्ट्र ससारभर को अल्युमिनियम देता है। यह धातु अधिकतर अपेलेशियन पर्वतमाला में मिलती है। सयुक्तराष्ट्र में दुनियाभर के आधे तांबे, आधे सीसे, आधे जस्ते, चौथाई चान्दी और चौथाई अल्यूमिनियम की पूर्ति होती है और सोने को छोडकर ये सभी धातुएं यहां पर दुनिया भर से अधिक निकलती हैं। परन्तु यहां पर तेज मजदूरी, यातायात का अधिक व्यय तथा खानों का औद्योगिक क्षेत्रों से दूर होने की कठिनाइयां भी हैं।

सयुक्त राष्ट्र में मैंगनीज की बडी कमी है। मैंगनीज की खानें इधर-उधर छिटकी हुई हैं। सबसे महत्वपूर्ण खानें मौन्टाना में हैं।

खनिज पदार्थों की वर्तमान स्थिति—कच्ची धातुओं की अब यहां कमी होती जा रही है कारण यह है कि पिछले दो वर्षों में इन धातुओं का बहुत अधिक उपभोग हुआ है। अनुमान है कि यहां के तांबे की खानें १० वर्ष में समाप्त हो जायगी और अब भी यहां की आवश्यकता का आधा तांबा बाहर से मंगाया जाता है। यहां की सुरमे, एस्बस्टोस, अभ्रक, मैंगनीज तथा टंगस्टन की ३० प्र० श० आवश्यकता पूर्ति बाहर से मंगाकर की जाती है। ५० प्र० श० बाक्साइट तथा सारा का सारा क्रोमाइट प्लेटिनम, निकल और टीन भी बाहर से ही मंगाना पडता है।

जलविद्युत—सयुक्तराष्ट्र के उद्योगों के लिए जलविद्युत बडी महत्वपूर्ण शक्ति है। दक्षिणी अपलेशिया की सभी नदियां पीडमोन्ट पठार पर उतरते समय प्रपात बनाती हैं और फाल लाइन पर स्थित सभी नगरों के कारखानों की मशीन जलविद्युत से चलती हैं। मसीना के अल्यूमिनियम के कारखाने और मिनियापोलिस की आटे की चक्कियां भी जलशक्ति से ही चलती हैं।

उद्योग धंधे

लोहा तथा स्टील उद्योग—सयुक्त राष्ट्र का सबसे महत्वपूर्ण उद्योग लोहे तथा स्टील का उत्पादन है। इस उद्योग का सबसे अधिक विकास पश्चिमी पेंसिलवानिया तथा पूर्वी ओहियो में है। इस प्रदेश में कोयले के बडे विशाल क्षेत्र हैं—तैयार माल की खपत की

मदा है और सुपीरियर झील प्रान्त में लोहा समान में बहुत ही कम खर्च होता है। इस प्रान्त में कच्चा लोहा झील के बन्दरगाहों को भेज दिया जाता है और वहा से रेलों के द्वारा पिटसबर्ग तथा शिकागो इत्यादि औद्योगिक केन्द्रों को भेज दिया जाता है। इस प्रकार इन प्रदेशों को लोह और स्टील के उद्योग की सभी सुविधायें प्राप्त हैं। इस उद्योग का दूसरा प्रान्त अलबामा है परन्तु यहा पर कोयला लोह और चून की बहुतायत होते हुए भी खपत के बाजारों की बड़ी कमी है। क्योंकि यह प्रदेश बन्दरगाहों से बहुत दूर है। इस प्रान्त में ससार के सभी देशों से सस्ता स्टील बनता है और बर्मिंघम इसका प्रधान केन्द्र है।

१९६० में संयुक्तराष्ट्र में लोह और स्टील की बनी वस्तुओं का अनुमान १८ करोड़ टन के लगभग था जिसमें शुद्ध लोहा—रेल की पटरियां लोह की सलाखें छड़ चद्दर इमारती सामान आदि वस्तुएं थी। इसमें पिग आयरन ५६० लाख टन और इस्पात ७७० लाख टन था।

विशेष प्रान्तों में लोहे और स्टील के विशेष उद्योग—**संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न प्रदेशों में वहां की आवश्यकतानुसार विशेष प्रकार की लोहे और स्टील की वस्तुएं बनाई जाती है।** कृषि प्रधान प्रान्तों में खेती की मशीन बनती है और मध्य पश्चिम के लिए शिकागो मशीनों का मुख्य केन्द्र है। खेती की मशीनों का दूसरा प्रधान केन्द्र मिलवाकी है। न्यूइंग्लैण्ड के वस्त्र उद्योग प्रदेश में कपड़ा बुनने की मशीनों का प्रधान केन्द्र **वारसेस्टर** है। जलशक्ति की सुविधा के कारण बिजली की मशीनों और इजनों का मुख्य केन्द्र **न्यूआर्क** है। फिलाडेलफिया शिकागो पिटसबर्ग और सैंट लुइस रेल-केन्द्रों में रेलों के इजन बनते हैं और रेलों के कारखाने हैं। एटलांटिक, दक्षिणी मिसिसिपि और झीलों के प्रान्त के बन्दरगाहों में जहाज बनाये जाते हैं। मोटरगाड़ियों के बनाने का ससार भर में सबसे महान केन्द्र **डिट्रोइट** (Detroit) है। कला के प्रान्तों में टीन की चादरें अधिकतर *बनाई जाती हैं। देश में मजदूरी अधिक होने पर भी औद्योगिक मशीनों, रेल के इंजन,* बिजली की मशीनों मोटर गाड़ियों हवाई जहाज ट्रैक्टर आदि को संयुक्त राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा कम दामों पर बेच सकता है।

संयुक्तराष्ट्र का वस्त्र-उद्योग—**संयुक्तराष्ट्र अमरीका का दूसरा प्रधान उद्योग** *वस्त्र निर्माण उद्योग है जिसमें सूती वस्त्र उद्योग सबसे प्रधान है। सूती वस्त्रों का प्रधान* केन्द्र न्यूइंग्लैण्ड की रियासतों में है। इन रियासतों में तर जलवायु, जलशक्ति की प्रचुरता, दक्षिण से सस्ती कपास की प्राप्ति पसिलवानिया का सस्ता कोयला तथा देश की भीतरी मंडियों में सहज प्रवेश की सुविधायें हैं। फिलाडेलफिया भी सूती वस्त्रों का केन्द्र है। दक्षिण की अलबामा जार्जिया कैरोलिना आदि रियासतों में कुछ ही वर्षों से चीन तथा कनाडा की मंडियों के लिए मोटा कपड़ा बनने लगा है।

संयुक्त राष्ट्र में ऊनी वस्त्र उद्योग—उत्तर पूर्व में ऊनी वस्त्र उद्योग में बड़ी उन्नति हुई है। फिलाडेलफिया इसका प्रधान केन्द्र है। आस्ट्रेलिया और अर्जेन्टाइना से ऊन आती

है। बोस्टन ऊन की सबसे बडी मडी है। यहा से ऊन न्यूइग्लैण्ड की रियासतों को भेज दी जाती है। सयुक्तराष्ट्र रेशमी वस्त्रों के लिये भी प्रसिद्ध है। न्यूयार्क, न्यूजर्सी तथा पैंसिलवानिया इसके प्रधान केन्द्र हैं। वस्त्र निर्माण उद्योग में सयुक्त राष्ट्र जापान, चीन व भारत के साथ स्पर्धा नही कर पाता।

अन्य उद्योग—लकडी तथा जलशक्ति की अधिकता के कारण न्यूइग्लैण्ड की रियासतो मे कागज तथा काष्ठमड भी बनता है। मिनियापोलिस आटे की चक्कियों का सबसे महान् केन्द्र है। इनके अतिरिक्त मेन और न्यूयार्क में चीनी शोधन तथा डिब्बों में माम भरने का धधा होता है। कैलिफोर्निया में फलो और बाल्टीमोर में मछलियो को डिब्बो में भरने का धन्धा होता है। सयुक्तराष्ट्र में हाल ही में ४ लाख टन वार्षिक से भी अधिक बनावटी रबर का निर्माण होने लगा है।

यातायात व्यवस्था—सयुक्तराष्ट्र की रेलें—सयुक्तराष्ट्र में यातायात व्यवस्था में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सयुक्तराष्ट्र में ससार के सभी देशों से अधिक लम्बी रेलें है। पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण के सुदूरस्थित प्रदेशों को मिलाने और भीतरी प्रदेशों का समुद्रतट से सम्बन्ध जोडने के लिए यहा पर रेलो का जाल सा फैला हुआ है। १६४६ मे यहा २,३७,७६८ मील लम्बी रेले थी जो ससार की ४५ प्र श से भी अधिक है। यहा पर रेलो के तीन प्रादेशिक समूह हैं। उत्तरी, दक्षिणी तथा पश्चिमी समूह जिन पर क्रमश ४५ प्र श, १८ प्र श तथा ३५ प्र श आवागमन होता है। देश को पूर्व-पश्चिम पार करने वाली रेलें बडी महत्वपूर्ण है। इनके द्वारा पैसिफिक की रियासतो और मध्य के मैदानो की उपज पूर्वी औद्योगिक प्रदेशो म पहुचाई जाती है। प्रमुख रेले निम्नलिखित हैं —

१ **नार्दर्न पैसिफिक रेल**—न्यूयार्क से चलकर होती हुई शिकागो जाती है। यहा से यह रेल मिलवाकी तथा सेंट पाल होती हुई पेसिफिक तट स्थित सियाटिल नगर तक जाती है।

२. **यूनियन पैसिफिक रेल**—शिकागो से राकी पर्वत को पार कर सेन फ्रासिस्को और वहा से लास एंजिलीस तक जाती है। न्यू आरलियन्स देश के आरपार जाने वाली रेलो का प्रधान केन्द्र है।

३. **सदर्न पैसिफिक रेल**—न्यू आरलियन्स से लास ऐंजिलीस तक जाती है।

भीतरी प्राकृतिक जल-मार्ग—देश के भीतर महान झीलें तथा मिस्सिसिपी, मिसौरी मार्ग यातायात के प्राकृतिक साधन है।

महान् झीलो का मार्ग—महान् झीलें यद्यपि अनाज, कोयला, लोहा और तैयार माल को पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व लाने ले जाने के लिये बडी महत्वपूर्ण हैं परन्तु विभिन्न तल पर स्थित होने के कारण इनको एक दूसरी से मिलाने के लिये नहरो की आवश्यकता पडती है। इन नहरों में लाक्स (Locks) के कारण बडे २ जहाज धुर अन्त तक नही जा सकते। सुपिरियर और ह्यूरन झीलों को सूनहर मिलाती है। इन नहरों

से आवागमन इतना अधिक है कि पनामा और स्वेज दोनों को मिलाकर भी कम ही रहता है। फिर भी अपनी स्थिति के कारण ये झीलें बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं। यूरोप और अमरीका के मध्य होने वाला बहुत सा व्यापार इन्हीं से हो होता है।

मिसौरी मिसिसिपी जल-मार्ग—मिसौरी मिसिसिपी के जलमार्ग द्वारा जहाज मान्टाना राज्य स्थित महान् प्रपात तक जा सकते हैं। परन्तु यह मार्ग अधिक लाभकारी सिद्ध नहीं हो सका। कीचड़दार किनारों के कारण जहाजों के आने जाने में कठिनाई पड़ती है। यह मार्ग निस्सन्देह बड़ा तो है साथ ही उत्तर दक्षिण दिशा में मैक्सिको की खाड़ी पर समाप्त होता है। इसीलिए इस मार्ग पर अन्तर्देशीय व्यापार ही अधिक होता है वैदेशिक व्यापार कम।

हवाई यातायात—संयुक्त राष्ट्र में हवाई यातायात अन्य सभी देशों के योग से भी अधिक होता है। हवाई यातायात की यहां पर सभी सुविधायें हैं। यहां के हवाई मार्गों का सम्बन्ध कनाडा तथा दक्षिणी अमरीका के हवाई मार्गों से है और यहां से अटलांटिक तथा पैसिफिक के पार भी हवाई जहाज आते जाते हैं।

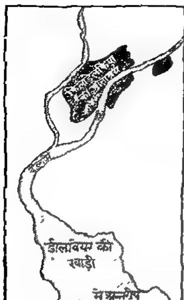
आयात तथा निर्यात की वस्तुएं—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में कच्चा माल या विलास सामग्री का ही आयात अधिकतर होता है। यहां जापान से चाय, भारत से चाय, चमड़ा तथा जूट, मलाया प्रायद्वीप से रबर तथा टीन, फिलीपाइन से चीनी और पटुआ, चीन से लोभिया और रेशम, आस्ट्रेलिया से ऊन तथा कनाडा से कागज और निकिल आदि वस्तुएं आती हैं। यहां से रुई, खनिज तेल तथा तम्बाकू का अधिकतर निर्यात होता है। निर्यात की अन्य वस्तुओं में लोहा और स्टील की वस्तुएं, मशीनें, मोटरकार और हवाई जहाज सम्मिलित हैं।

यूरोप तथा संयुक्त राष्ट्र के बीच का व्यापार अधिकतर एकपक्षीय ही है। संयुक्त राष्ट्र यूरोप को कपास, अनाज, तेल, मांस तथा तम्बाकू भेजता है। यूरोप से केवल विलास सामग्री की वस्तुएं ही संयुक्त राष्ट्र में आती हैं।

व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह—**न्यूयार्क**—संसार का दूसरे नम्बर का नगर और तीसरे नम्बर का महान् बन्दरगाह है। इसकी महत्ता के कई कारण हैं। इसका पोताश्रय प्राकृतिक है, यूरोप से निकटतम है। यहां से भीतरी नगरों से आने जाने की सहज सुविधा है। इसकी स्थिति कच्चे माल के तथा औद्योगिक प्रदेशों के बीच में है।

शिकागो—यह नगर अनाज तथा पशुओं की बड़ी मंडी है। शिकागो सब से बड़ा रेलों का केन्द्र है और झीलों के मार्ग के सिरे पर स्थित है। देश के बीचोबीच में स्थिति के कारण यहां पर आवागमन की सहज सुविधायें हैं। इसके आस पास का क्षेत्र बड़ा उपजाऊ है।

फिलाडेलफिया—आदर्श प्राकृतिक पोताश्रय है। कच्चे माल और कोयला-क्षेत्र के समीप होने के कारण ऊनी माल तथा अन्य उद्योगों का विशाल केन्द्र बन गया है।



चित्र न० ६४
फिलाडेलफिया की स्थिति

सेंट लुइस—यह नगर प्रेंगीज के मैदान में झीला और मैक्सिको की खाड़ी के बीच में स्थित है। इसके आसपास अनाज, पशु, कपास, तथा तम्बाकू का प्रदेश है। यह नगर रेलों का केन्द्र तथा औद्योगिक नगर है।

पिट्सबर्ग—संसार भर में सब से बड़ा लोहे के उत्पादन का केन्द्र है। इसके समीप ही लोहे, कोयले और चूने के पत्थर की बहुतायत है। इसके अतिरिक्त यह नाव्य नदियों के संगम पर स्थित है। प्राकृतिक गैस की सुविधा के कारण शीशे के कारखानों के लिये बड़ा ही उपयुक्त स्थान है।

बोस्टन—एटलांटिक तट पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। उत्तरपूर्वी औद्योगिक रियासतों के लिए माल मंगाने तथा वहां की वस्तुओं का इधर उधर वितरण करने के लिए यह एक महान् केन्द्र है।

गालवेस्टन—गालवेस्टन की खाड़ी के मुहाने पर स्थित है। दक्षिणी पश्चिमी रियासतों का व्यापार अधिकतर इसी नगर के द्वारा होता है। संसार भर में सब से बड़ा कपास का बन्दरगाह है। व्यापार की दृष्टि से यह संयुक्त राष्ट्र में केवल न्यूयार्क से ही दूसरे नम्बर पर है।

सेनफ्रांसिस्को—पैसिफिक तट पर केवल यही एक प्राकृतिक पोताश्रय है। कैलिफोर्निया की घाटी की उपज के निर्यात का केवल एक यही बन्दरगाह है। पनामा नहर के खुल जाने से इसकी महत्ता और भी बढ़ गई है।

कंसास—पशुओं की बड़ी मंडी है। यह नगर मक्का और कपास के क्षेत्रों के बीच स्थित है। यहां पर मांस और चमड़ा रंगने का व्यवसाय भी बहुत होता है।

न्यू आर्लियन्स—संसार भर में गेहूं और कपास के निर्यात का सब से महान केन्द्र है।

मैक्सिको

स्थिति और विस्तार—मैक्सिको की भौगोलिक स्थिति व्यापार के लिए बड़ी ही उपयुक्त है। इसके एक ओर एटलान्टिक और दूसरी ओर पैसिफिक महासागर है और संसार का सबसे प्रधान औद्योगिक देश संयुक्तराष्ट्र अमरीका इसके बिल्कुल समीप है।

यहा की सरकार निर्बल है। और इसी कारण यहा पर राजनैतिक क्रान्तिया और लूटमार बहुधा होती रहती है। यदि ये राजनैतिक और सामाजिक दोष न होते तो यहा का व्यापार और उद्योगधंध बहुत ही चमक उठते। यहा का क्षेत्रफल ७६३६४४ वर्गमील तथा १९४७ के अनुसार जनसंख्या २ करोड २७ लाख थी।

जलवायु तथा उपज की दशा—मैक्सिको का लगभग आधा भाग शीतोष्ण कटिबंध म और आधा उष्ण कटिबंध म है इसलिए इसमे दोनो ही प्रकार की जलवायु पाई जाती है। जलवायु के कारण वनस्पति भी कई प्रकार की होती है। यहा पर लगभग सभी प्रकार की वस्तुए उत्पन्न होती ह परन्तु यहा की १० प्र श भूमि पर ही खेती हो सकती है। अधिकतर भूमि पर खेती का प्रबन्ध भी अच्छा नही है। यदि आधुनिक ढग से खेती की जाय तो यहा पर कई गुनी पदावार बढ सकती है। यहा की मुख्य उपज मक्का तथा कहवा ह। उत्तर के घास के मैदानो म मौसम नामी पट्टुवे की भी व्यापक खेती होती है।

यहा पर वर्षा गर्मिया म होती है जो खेती के लिए काफी नही होती। इसीलिए सिचाई के विकास की बडी आवश्यकता है।

खनिज पदार्थ तथा उद्योगधधे—खनिज पदार्थों का तो मैक्सिको म अपार भडार है। यहा पर पैट्रोलियम चादी सीसा जस्ता तथा सोना सभी धातुए विद्यमान ह। पश्चिमी पर्वतश्रेणी ज्वालामुखी होन क कारण ही यहा खनिज पदार्थों की भरमार है। चादी तो यहा दुनियाभर म सबसे अधिक मिलती है। पेट्रोलियम सीसा और ताबा भी बहुत मिलता है। प्राचीनकाल म यहा सोना भी बहुत मिलता था। यहा के निर्यात म ८० प्र श भाग खनिज पदार्थ ही होते है। घरेलू आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए यहा कल कारखाने भी ह। चीनी, सिगार, सिगरेट और सूती वस्तुओ का निर्यात भी होता है। पर्वतो की अधिकता के कारण यातायात म अधिक व्यय होता है। प्रमुख नगरो को छोडकर उत्तम सडको का यहा अभाव है। मैक्सिको की खाडी पर कोई उत्तम पोताश्रय नहीं है। यहा पैसिफिक तट पर आदर्श पोताश्रय है परन्तु अभी तक वहा व्यापार म उन्नति नही हुई है।

मैक्सिको—राजधानी है। यह नगर चमडे और चमडे की वस्तुओ का केन्द्र है।

टैम्पिको तथा वैराक्रूज—ये दोनो बन्दरगाह है।

प्रश्नावली

१ खेती और खनिज उत्पादन के दृष्टिकोण से कनाडा का भौगोलिक विवरण दीजिये।

२ कनाडा में गेहू की खेती पूर्व से पश्चिम की ओर क्यो हटती जा रही है? इसके भौगोलिक कारण बताइये।

३ संयुक्तराष्ट्र अमरीका के प्रमुख खनिज प्रदेशो का वर्णन कीजिये।

४ 'औद्योगिक क्षेत्र में नवीन होते हुए भी सयुक्तराष्ट्र अमरीका ने विशेष औद्योगिक उन्नति कर ली है।" इस उन्नति के भौगोलिक कारण बतलाइये।

५ सयुक्तराष्ट्र अमरीका के लोहा व इस्पात उद्योग का भौगोलिक विवरण दीजिए।

६ उत्तरी अमरीका मे गेहू, मक्का, कपास और तम्बाकू की खेती कहा और किन भौगोलिक दशाओ में होती है? कपास या गेहू का व्यापार भी बतलाइये।

७ सयुक्तराष्ट्र अमरीका मे लोहे व इस्पात उद्योग के स्थानीयकरण के भौगोलिक कारण बतलाइये।

८ मेक्सिको की खनिज सम्पत्ति का विवरण दीजिये और उनकी सम्पूर्ण उन्नति की सम्भावनाये बतलाइये। उस देश में खनिज सम्पत्ति के उपभोग में विदेशियो का क्या हाथ रहा है? समझा कर लिखिये।

९ उत्तरी अमरीका में कोयला व लोहा उत्पादक क्षेत्रो की स्थिति बतलाइये और लिखिये कि गमनागमन व यातायात के साधनो का क्या असर पडा है।

१० उत्तरी अमरीका के प्रधान औद्योगिक व खनिज क्षेत्रो को बतलाइये और उनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट कीजिये।

११ सयुक्तराष्ट्र अमरीका मे प्रधान कोयला उत्पादक प्रदेशो और प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रो का क्या सम्बन्ध है?

१२ सयुक्तराष्ट्र अमरीका मे कोयला व तैल-सम्पत्ति के बारे म एक छोटासा लेख लिखिये।

१३ सयुक्तराष्ट्र अमरीका की प्रधान खनिज उपज कौन सी है और कहा पाई जाती है।

१४ ससार के विदेशी व्यापार मे आने वाली कौन सी वस्तुए सयुक्तराष्ट्र अमरीका में सबसे अधिक मात्रा में उत्पन्न होती है। उन वस्तुओ के अन्य उपज क्षेत्रो का भी हवाला दीजिये।

१५ "कनाडा में यातायात के साधनो के नवीन विकास मे खेती को बडा प्रोत्साहन मिला है।" इस उक्ति पर टिप्पणी कीजिये।

१६ सयुक्तराष्ट्र अमरीका मे कोयले की सम्पत्ति का विवरण दीजिये और बतलाइये कि उनकी सहायता से औद्योगिक विकास व उन्नति मे किस प्रकार सहायता मिली है।

१७ लोहा व इस्पात उद्योग के विकास के दृष्टिकोण से सयुक्तराष्ट्र अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन की तुलना कीजिये।

१८ सयुक्तराष्ट्र अमरीका के शिल्प उद्योग कौन से है और वे कहा पर केन्द्रित है?

१९ सयुक्तराष्ट्र अमरीका की औद्योगिक सीमा दक्षिणी रियासतो मे हट रही है। इसके कारण बतलाइये।

२० उत्तरी अमरीका में लोहे की खानों से लोहा प्राप्त करने की प्रगति बतलाइए।

२१ कनाडा के मछली पकड़ने के व्यवसाय पर एक लेख लिखिए।

२२ न्यू इग्लैण्ड स्टटस के औद्योगिक व्यवसाय का विवरण दीजिये। उसके इतने अधिक विकास का कारण बतलाइये।

२३ अपलेशियन प्रदेश का भौगोलिक विवरण लिखिये।

२४ संयुक्तराष्ट्र अमरीका में कोयले के अतिरिक्त दूसरी चालक शक्तियों के स्रोत किस प्रकार कहाँ स्थित हैं बतलाओ।

२५ रेडरिवर की घाटी या कैलिफोर्निया की घाटी का भौगोलिक विवरण दीजिए।

२६ पिटसबर्ग शिकागो मान्ट्रीयल और विनीपेग की उन्नति व विकास के कारण बतलाइये।

२७ संयुक्तराष्ट्र अमरीका में पशुपालन व्यवसाय ने क्या विकास किया है? संयुक्तराष्ट्र के गव्य की पेटी में केन्द्रित होने के क्या कारण हैं?

२८ उत्तरी अमरीका का झील प्रदेश कनाडा व संयुक्तराष्ट्र के उद्योगधन्धों का केन्द्र कैसे बन गया है? विशिष्ट उदाहरण देकर समझाइये।

२९ संयुक्तराष्ट्र अमरीका के गल्फ व दरगाहों की उन्नति व विकास के भौगोलिक कारण लिखिये और रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

३० निम्नलिखित के स्थानीयकरण के कारण बतलाइये —

(अ) संयुक्तराष्ट्र अमरीका का भारी लोहा व इस्पात उद्योग।

(ब) दक्षिणी रियासतों का सूती कपड़ा व्यवसाय।

३१ कैलिफोर्निया के आर्थिक भूगोल के विषय में लिखिये।

३२ कनाडा की सिंचाई योजनाओं का विवरण दीजिये।

३३ उत्तरी अमरीका महाद्वीप की आर्थिक उन्नति व विकास में सेंट लारेंस प्रदेश का क्या महत्त्व रहा है? समझाकर लिखिये।

३४ संयुक्तराष्ट्र अमरीका की उत्तरी पूर्वी रियासतों में शिल्प उद्योग के विकास के लिए क्या प्राकृतिक सुविधाएं प्राप्त हैं? समझाकर उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिये।

३५ निम्नलिखित बातों का कारण बतलाइये —

(अ) संयुक्तराष्ट्र के केलीफोर्निया प्रदेश में विशाल वृक्ष होते हैं।

(ब) संयुक्तराष्ट्र में अपने आप चलने वाली व मानव शक्ति को बचाने वाली मशीनों का उत्पादन बहुत अधिक है।

३६ सेंट लारेन्स निम्न भाग का भौगोलिक वर्णन कीजिये।

३७ संयुक्तराष्ट्र अमरीका में राकी पहाड़ के पूर्वी भागों की इतनी अधिक औद्योगिक उन्नति के कारण बतलाइये और विभिन्न महत्त्वपूर्ण उद्योगों का विवरण दीजिये।

३८ अपलेशियन प्रदेश में कोयले की खानें कहाँ कहाँ पाई जाती हैं? इनमें से

प्रत्येक का आर्थिक महत्व अलग २ बतलाइये और उसमे सम्बन्धित उद्योग धन्धा का विवरण दीजिये।

३९. संयुक्तराष्ट्र अमरीका के विभिन्न वनो का वितरण व आर्थिक मूल्य समझाइये।

४० कनाडा और संयुक्तराष्ट्र अमरीका के बीच होने वाले व्यापार का वर्णन कीजिये।

४१ कनाडा के प्ररी प्रदेशो की आर्थिक उन्नति का वर्णन कीजिए।

४२ जापान और संयुक्तराष्ट्र अमरीका के बीच होने वाले व्यापार की विशेषतायें बतलाइये।

४३ संयुक्तराष्ट्र अमरीका मे कपास की खेती और कनाडा मे गेहू की खेती का विवरण दीजिये और बतलाइये कि इनके आधार पर कौन से उद्योग धन्धे उठ खड़े हुए हैं।

४४ आहियो, मिसीसीपी और बड़ी झीलो मे सीमाबद्ध प्रदेश के मानव धन्धो व व्यवसायो का उल्लेख कीजिये।

अध्याय : : बारह

दक्षिणी अमरीका

दक्षिणी अमरीका उत्तरी अमरीका से कुछ छोटा है। महाद्वीपों में इसका नम्बर चौथा है। क्षेत्रफल के विचार से इसको तटरेखा अफ्रीका को छोड़कर और सभी महाद्वीपों की तुलना में कम है। इसके तट में कटानों की बड़ी कमी है। केवल दक्षिण पश्चिम में ही तट कुछ २ कटा फटा है। पश्चिमी तट ढालू और ऊंचा है। इधर केवल एक ही कटान है जिसे गयाकिल की खाड़ी कहते हैं। इसका पूर्वीतट नीचा और सीढ़ीदार है।

प्राकृतिक विभाग—दक्षिणी अमरीका के छ प्राकृतिक विभाग है जिनमें तीन ऊंचे प्रदेश और तीन नीचे प्रदेश है। ऊंचे प्रदेश में, (१) एंडीज (२) ब्राज़ील के पठार और (३) गायना के पठार सम्मिलित है और नीचे प्रदेश में (१) ओरीनोको (२) अमेजन तथा (३) पराना परागुवे नदियों के कछार हैं।

दक्षिणी अमरीका की नदियां—अमेजन, ओरीनोको, प्लाटा तथा कोलोरेडो यहां की प्रसिद्ध *नदियां है। अमेजन नदी ४००० मील लम्बी और संसार की सब से बड़ी* नदी है। इसका ढाल अधिक नही है। इसमें बड़े २ जहाज मुहान से १००० मील अन्दर तक और छोटे २ जहाज ऐंडीज पर्वत की तलहटी तक आजा सकते है। अमेजन और उसकी सहायक नदियां मिलकर ५०,००० मील लम्बा मार्ग बनाती है। अमेजन के किनारे आबादी और उपज की वस्तुओं की कमी के कारण और सारे ही अमेजन प्रदेश *में उपज की समानता के कारण अमेजन के जलमार्ग की अधिक महत्ता नहीं है।*

ओरीनोको तथा लाप्लाटा नदियां—उत्तरी भाग की ओरीनोको नदी भी १००० मील तक नाव्य है। व्यापार के दृष्टिकोण से पराना नदी का मार्ग बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मार्ग अर्जेन्टाइना, परागुवे तथा दक्षिणी ब्राजील के बीच में को जाता है। पराना और उरुगुवे मिलकर रियो डि लाप्लाटा कहलाती है। यह स्वयं एक नदी तथा सहायक नदी भी है क्योंकि इसमें दोनो ही विशेषतायें हैं। अन्तर्राष्ट्रीय नियम के अनुसार यह एक नदी है और इसकी चौड़ाई १३७ मील है। इसमे रेत बहुत जमती है और जहाज ज्वार के आने तक कभी २ भूमि पर ही टिक जाते हैं। ज्वार की ऊंचाई ३ फीट तक होती है। परन्तु हवाओं का प्रभाव और भी अधिक पड़ता है। दक्षिण पश्चिमी तेज हवायें विशेषकर पैम्पीरो (Pempero) हवायें नदी की सतह को इससे भी दुगना उठा या गिरा देती है।

जलवायु—दक्षिणी अमरीका का चार पंचमांश भाग उष्णकटिबन्ध में स्थित है अत: महाद्वीप के अधिकतर भाग की जलवायु उष्णकटिबन्धीय है। ३०° द से नीचे का

भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में हैं। महाद्वीपी जलवायु यहा है ही नही। आबादी बहुत बिखरी है। कुल आबादी साढे छ करोड है।

चित्र न० ६५—दक्षिणी अमरीका के राजनैतिक विभाग—देखिये दक्षिणी प्रायद्वीप में बन्दरगाहो की कमी है।

दक्षिणी अमरीका की अवनत दशा के कारण

१ निवासी—दक्षिणी अमरीका मे जाति का प्रश्न बडा महत्वपूर्ण है। श्वेत जाति के अधिकतर लोग यहा पर आरम्भ में सिपाहियो की भाति आये। उनका उद्देश्य यहा पर

लूटमार करना था, उन्हे यहा बसना नही था। प्रत्येक राज्य मे यहा के निवासियो मे वे धीरे धीरे घुलमिल गये। अब अर्जेन्टाइना, चिली, तथा उरुगुवे म श्वेत जाति की प्रधानता है, शेष आबादी इन्डियनो, हबशियो तथा मिलेजुले लोगो की है।

२ **जलवायु तथा रोग**—यहा के निवासी बुरी जलवायु तथा घातक ज्वर के कारण सुस्त तथा अकर्मण्य होते है। मृत्यु का औसत घना है। परन्तु अब दवाओ से बीमारियो को कम कर दिया है और वर्तमान विज्ञान की प्रगति मे दक्षिणी अमरीका को लाभ हो रहा है।

३ **राष्ट्रीयता का अभाव**—यहा की अवनति के कारणो म राष्ट्रीयता का अभाव भी है। एक प्रान्त के दूसरे प्रान्त वालो को बुरा-भला कहते है। राज्यप्रबन्ध की निर्बलता और सरकार की अस्थिरता यहा की उन्नति मे बडी बाधा डालती है। यहा के राज्यो मे क्रान्तिया बहुधा हुआ करती है। लोगो की जान माल सुरक्षित नही है। इसी कारण विदेशी भी पूजी लगाने मे हिचकते है और देश निर्धन है ही।

४ **खराब सडकें**—आवागमन की कठिनाइया है सडके खराब है और रेलो का विकास नही हो सका है।

५. **कोयले की कमी**—*दक्षिणी अमरीका म अन्य सभी उपयोगी खनिज पदार्थों* के होते हुए भी कोयले की कमी है। यहा की चट्टानें बहुत पुरानी नही है और उनकी परते भी नवीन है। पीरू और चिली मे अच्छी श्रेणी के कोयले की कुछ खान है। कोयले की कमी के कारण ही यहा के निवासी खेती तथा पशु सम्बन्धी कार्यो में लगे। पीरू, वेनेजुला, अर्जेन्टाइना, इक्वेडर, कोलम्बिया मे तेल निकल आने के कारण देश मे उद्योग धन्धो की उन्नति हो रही है। यहा की नदियो और झरनो की अधिकता के कारण काफी जलशक्ति भी मिल सकती है परन्तु यहा पर मजदूरो की कमी के कारण व्यय अधिक पडता है।

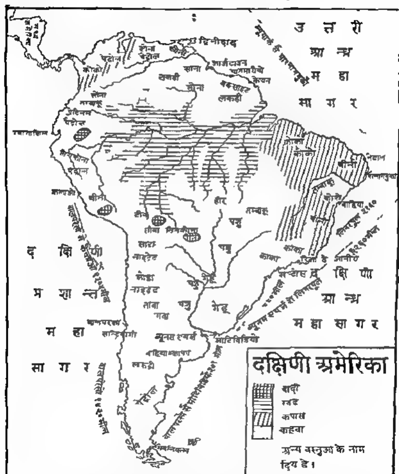
६. **यूरोप पर निर्भरता**—दक्षिणी अमरीका मे कच्ची वस्तुओ की उपज अधिकतर होती है और ये वस्तुए निर्यात के ही लिए होती है। यहा की उपज का ६० प्र श से भी अधिक भाग यूरोप को भेजा जाता है। फलत जब कभी यूरोप की माग युद्ध अथवा अन्य कारणो से कम हो जाती है तो यहा के लोगो को बडी हानि उठानी पडती है।

राजनैतिक विभाग—दक्षिणी अमरीका १२ भागो मे बटा है जिनके नाम है — पनामा, कोलम्बिया, इक्वेडर, वेनेजुला, गायना (डच, फ्रेंच तथा ब्रिटिश), ब्राजील, पीरू, बोलिविया, चिली, अर्जेन्टाइना, परगुवे तथा उरुगुवे। गायना को छोडकर अन्य सभी देश प्रजातन्त्र है।

१—कोलम्बिया

सामान्य वृत्तान्त—विस्तार के विचार से यह दक्षिणी अमरीका का पाचवें नम्बर का देश है। इसका क्षेत्रफल ४,४०,००० वर्गमील तथा आबादी ८० लाख है। अधिकतर

मनुष्य ४००० से ९००० फीट की ऊंचाई पर रहते हैं। इसके एक ओर एटलांटिक तथा दूसरी ओर पैसिफिक महासागर है और इसकी स्थिति बड़ी अनुकूल है। उपजाऊ भूमि होते हुए भी यहां पर खेती अधिक नहीं की जाती। स्थानीय उपभोग के लिए ही यहां पर कहवा, चावल, केला, रबर और गन्ना पैदा किया जाता है।



चित्र नं० ६६—दक्षिणी अमरीका की आर्थिक उपज

कहवे की उपज—ब्राजील को छोड़कर कहवे में इसका संसार में दूसरा स्थान है और हल्के कहवे में सर्वप्रथम है। कहवे का उत्पादन अधिकतर कार्डिलियरा की ढालों पर होता है। कार्डिलियरा की मिट्टी गहरी और उपजाऊ है, यह ज्वालामुखी की मिट्टी है जो

कहवे की उपज के अनुकूल है। माय के लिए प्राय केले के पेड लगाये जाते हैं और स्थायी माये के लिए अन्य वृक्षो से काम लिया जाता है। कहवे को उत्पादन क्षत्रों से मडियो मे और बन्दरगाहों तक ले जाने की बडी कठिन समस्या है। यह काम पशुओ द्वारा किया जाता है। यहा पर पशु सुअर, घोडे, भेड, बकरिया और खच्चर भी पाले जाते है।

खनिज पदार्थ—यह देश खनिज पदार्थ सम्पन्न है। सोना और चादी पर्याप्त मात्रा मे मिलते है। लोहा, कोयला और प्लेटिनम की भी खान हैं। अमरीका म खनिज तेल भी कोलम्बिया के अनक भागो में मिलता है और तेल के उत्पादन म दक्षिणी अमरीका म कोलम्बिया का दूसरा नम्बर है।

यातायात के साधन—अच्छी सडके यहा है ही नही और रेलो की भी कमी है। यहा की हानिकर जलवायु तथा भिन्न २ भागो के यातायात की कठिनाइयो के कारण यहा के आर्थिक विकास म बडी बाधा पडती है। बोगोटा राजधानी है और ८००० फीट की ऊचाई पर स्थित है। यहा की जलवायु बडी स्वास्थ्यवर्धक है।

२—वेनेजुला

विस्तार—आबादी, खेती तथा खनिज पदार्थ—यद्यपि यह देश कृषिप्रधान है परन्तु काफी धनी है। इसका क्षेत्रफल ३,५०,००० वर्गमील तथा आबादी ३५ लाख है। यहा की उपज के तीन प्रदेश है—खेती के प्रदेश, पशुपालन प्रदेश और वन प्रदेश। यहा पर गहू, चावल, तम्बाकू, मक्का, कहवा, गन्ना, कपास तथा लोबिया उत्पन्न होता है। यहा की आबादी का पाचवा भाग खेती म लगा है। पशुसम्पत्ति म यहा ४० लाख बैल, १ लाख भेड, १ लाख बकरी, ४ लाख घोडे और खच्चर तथा ३ लाख ६० हजार सुअर है। सोना, तावा, तेल, कोयला तथा लोहा मुख्य खनिज पदार्थ है। खनिज तेल म ससार भर में इसका तीसरा स्थान है और ससार का ६ प्र श तेल यहा निकलता है।

कराकस (Caracas) राजधानी है। वेलेंशिया भी प्रधान नगर है।

ला गुवेरा (La Guaira) तथा पोर्टो केबिलो (Porto Cabello) बन्दरगाह है।

३—इक्वेडर

विस्तार, आबादी, खनिज पदार्थ—दक्षिणी अमरीका का यह सबसे छोटा और निर्धन देश है। यह उत्तर पश्चिम में बसा हुआ है और इसके क्षेत्रफल का पाचवा भाग भूमध्यरेखा से उत्तर में है। इसका क्षेत्रफल २,८०,००० वर्गमील तथा आबादी ३० लाख है जिसमे ८ प्र श गोरे लोग है। आबादी का औसत प्रति वर्गमील १२ व्यक्ति है। यहा की अधिकतर आबादी कोको पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त चावल, कहवा तथा आइवरी नट (Ivory-nuts) भी उत्पन्न होते है। कहवे की खेती कोको और केले के साथ की जाती है जिससे कहवा सुरक्षित रहता है। कहवे की खेती

अधिकतर पश्चिम के मानाबी (Manabi) प्रान्त मे होती है। खनिज पदार्थों की प्रचुरता है, परन्तु अभी तक उनका विकास नही हुआ है। खनिज तेल भी यहा काफी है। इक्वेडर मे 'पनामा टोप' विशेषकर बनाये जाते हैं।

क्विटो (Quito) भूमध्यरेखा से ६००० फीट की ऊचाई पर है। यहा की जलवायु बडी सुहावनी है।

ग्वायाकिल—प्रसिद्ध बन्दरगाह है। निर्यात की वस्तुए यही से अधिकतर भेजी जाती हैं।

मान्टाडि तथा बाहिया केराक्वेज यहा के अन्य बन्दरगाह है।

४—बोलीविया

सामान्य परिचय—इस देश की आर्थिक प्रगति बडी मन्द रही है। यहा की आबादी ३० लाख है। मजदूरो की कमी के कारण औद्योगिक विकास मे बडी बाधा पडी है। यातायात के साधन अच्छे नही है और बोलीविया मे कोई बन्दरगाह भी नही है। खेती, पशुपालन और खान खोदना लोगो के मुख्य धन्धे हैं। सोना, चादी, तावा और टीन प्रमुख खनिज पदार्थ है। यहा पर ससार भर का २०प्र श तावा निकलता है। भेड, अल्पका तथा लामा व्यापक रूप से पाले जाते हैं। कहवा, कोको, चीनी, चावल और तम्बाकू मुख्य उपज की वस्तुए हैं। यहा के ६० प्र श निवासी इन्डियन हैं। राजनैतिक सत्ता ह्वीन व्यापारियो के हाथ में हैं।

लापाज (La Paz) राजधानी तथा व्यापारिक केन्द्र है।

५—चिली

चिली दक्षिणी अमरीका का एक प्रगतिशील देश है। यहा की आबादी ४३ लाख है। विस्तार की दृष्टि से दक्षिणी अमरीका मे चिली का सातवा स्थान है।

उत्तरी चिली—चिली का उत्तरी भाग रेगिस्तान है परन्तु औद्योगिक व्यापार का केन्द्र है। यहा पर नाइट्रेट आफ सोडा बहुत मिलता है जिसके निर्यात से देश को बडी आमदनी होती है। इस सोडे का प्रयोग खाद, रासायनिक पदार्थों और विस्फोटक पदार्थों मे किया जाता है। अब बनावटी नाइट्रेट के कारण चिली के इस उद्योग पर बडा प्रभाव पडा है। उत्तरी भाग में ही सोना, तावा और चादी भी पाये जाते हैं। तावा यहा की बहुमूल्य निर्यात की वस्तु है और ससार का १५ प्र श तावा यही से प्राप्त होता है।

मध्य चिली—मध्य चिली की जलवायु भूमध्यसागरीय है और यहा पर खेती अधिक होती है। यह भाग सबसे घना बसा हुआ और सबसे उन्नत प्रदेश है। यहा की खेती की उपज उत्तर के खनिज प्रदेशो में लोगो के निर्वाहार्थ भेज दी जाती है। इस देश मे जलशक्ति और कोयला दोनो ही प्रचुर मात्रा मे हैं। चिली मे शराब भी अधिक बनाई

जाती है जिसकी स्थानीय और पास की रियासतो मे बडी माग रहती है। कुछ शराब मध्य-यूरोप को भी भेजी जाती है।

दक्षिणी चिली—दक्षिणी चिली में भेडो और पशुओ के लिए विस्तृत चरागाह है। यहा की वनसम्पत्ति का पूरा लाभ नही उठाया जा रहा है।

सेंटियागो (Santiago) यहा का प्रसिद्ध नगर है।

वाल परेसो (Valpariso)तथा **इक्वीक** (Iquique) यहा के प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

६—ब्राजील

सामान्य परिचय—यह देश दक्षिण अमरीका के लगभग आधे भाग पर फैला है और विस्तार म सयुक्तराष्ट्र को ही टक्कर का है। १६४० म यहा की आबादी ४,१०,००,००० थी। साओपोलो में देश की ८० प्र श जनता रहती है। यहा के लोग अधिकतर पुर्तगीज भाषा बोलते है। समुद्रतट ४००० मील लम्बा है परन्तु बन्दरगाहो की कमी है। इसका उत्तरी तट नीचा तथा दलदलो है और दक्षिणी तट पथरीला है। देश में अनेक नदिया है। अमेजन सबसे लम्बी है (४००० मील)। इस देश के तीन-चौथाई भाग की जलवायु उष्णकटिबधीय है। अन्य भागो मे समशीतोष्ण जलवायु है। यह देश इतना लम्बा चौडा है और इसमे आर्थिक साधनो की इतनी सभावना है कि कभी २ तो इसे 'सुप्तादेश'' कहा जाता है। यातायात की कमी, पूजी का अभाव, सस्ते मजदूरो का न मिलना और उत्तरी भाग की हानिकर जलवायु इसकी उन्नति के मार्ग मे बाधाये है।

मुख्य उपज—लोगो का मुख्य धधा खेती है। यहा की मुख्य उपज कहवा, कोको, रबर, चीनी, तम्बाकू और कपास है। ससार को ८० प्र श कहवा यहीं से मिलता है। और यहा की सम्पन्नता सबसे अधिक कहवे के ही कारण है। ब्राजील के सभी प्रान्तों में कहवा उत्पन्न होता है। कहवा उत्पादन का सबसे अनुकूल भाग वह विस्तृत प्रदेश है जो कि उत्तर मे अमेजन से दक्षिण मे कैथरीना तक और पूर्व मे एटलाटिक तट से माटो ग्रासो रियासत के पश्चिमी सिरे तक फैला हुआ है। परन्तु इस विस्तृत प्रदेश के थोडे ही भाग में कहवा उत्पन्न किया जाता है। कहवे की खेती केवल साओपोलो, मिनास जिरायस, एस्पिरिट साटो, रियोडीजेंनिरो, पराना, वाहिया, परनम्बुको में ही होती है और इन्हीं भागो में देश का ९८ प्र. श. कहवा उत्पन्न होता है। केवल साओपोलो ही में देश की कुल उपज का दो-तिहाई कहवा उत्पन्न होता है।

साओपोलो (कहवा उत्पादन का प्रधान केन्द्र)—साओपोलो दक्षिणी अमरीका का ही नही बल्कि ससार का भी कहवा उत्पादन का प्रमुख केन्द्र है। इसके कई कारण है। (१) साओपोलो म पश्चिमी पर्वतमाला के ढाल से पराना नदी तक लगभग १८०० फीट ऊचा एक प्लेटो है जिसका ढाल पूर्व से पश्चिम को है। इस प्लेटो की भूमि

मे लोहे का मिश्रण है जो कहवा के लिए बड़ा लाभकारी होता है। (२) इस भाग की जलवायु स्फूर्तिवर्धक और गोरे लोगों के लिए अनुकूल है। १९४६-४७ में ब्राजील मे १३२ पौंड के दो करोड बोरे कहवे की उपज हुई थी। परन्तु १९३३-३४ मे यहा की उपज सबसे अधिक अर्थात् ३ करोड बोरे थी। कहवे की बिक्री पर सरकार का नियन्त्रण है। १९४० से कहवे की अतिरिक्त उपज का उपयोग प्लास्टिक की वस्तुएं बनाने में होने लगा है। सन् १९५० मे लगभग १५० लाख बोरे कहवा बाहर भेजी गई।

कोको तथा अन्य उपज—कोको के उत्पादन में भी ब्राजील का दूसरा नम्बर है। इसकी व्यापक खेती बाहिया मे की जाती है। यहा से दो-तिहाई कहवा सयुक्तराष्ट्र को भेज दिया जाता है। चीनी और तम्बाकू की उपज में भी ब्राजील का तीसरा स्थान है और इनके उत्पादन में और उन्नति की जा रही है। मक्का की खेती में ब्राजील का दुनिया मे चौथा स्थान है। केवल सयुक्तराष्ट्र, रूमानिया और अर्जेन्टाइना ही इससे बढकर है। अब कपास म भी उन्नति की जा रही है। यहा छोटे रेशे की उत्तम श्रेणी की कपास उत्पन्न होती है। एकड राज्य तथा अमेजोना और पारा की रियासतो मे रबर खूब मिलता है। दूसरे महायुद्ध के समय इसकी बडी उन्नति हुई। १९४० में यहा १८,००० टन और १९४९ में २८,००० टन रबर उत्पन्न हुई थी।

पशुपालन—खेती के बाद मे पशुपालन का धधा महत्वपूर्ण है। यहा पर सुअर, भेंड, घोडे तथा अन्य पशु बडी सख्या म पाले जाते है। यह देश ससार के सुअर पालने वाले देशों म एक प्रमुख देश है।

पशुओ की सख्या (१९४९)
(लाख में)

गाय, भैंस	४६२	बकरी	८०
सुअर	२४५	घोडे	६७
भेंड	१८९	बैल	११८

ब्राजील की खनिज सम्पत्ति—यद्यपि यहा पर खनिज सपत्ति की प्रचुरता है परन्तु इनका व्यापारिक उपयोग नही होता। क्रोमाइट, अभ्रक, जिरकोनियम, ग्रेफाइट, मेंगनीज, कोयला, लोहा, सोना, नमक तथा हीरे इत्यादि यहा के प्रमुख खनिज पदार्थ है। मेंगनीज म ब्राजील का दुनिया म तीसरा स्थान है। लगभग सारे ही मेंगनीज का निर्यात होता है। इसकी खान अधिकतर मिनास जिरायस मे हैं। निजारथ के समीप बाहिया राज्य म भी कुछ मेंगनीज निकलता है। कोयला रियो ग्रान्डडिसूल, साटा कैथरिना, पराना तथा साओपोलो मे पाया जाता है। १९४८ म १० लाख टन कोयला उत्पादन हुआ था। लोहे की खान मिनास जिरायस म है। इटाबीरा (Itabira) मे यहा की सरकार को नयी लोहे की खान मिली है जोकि ससार की प्रमुख खानो मे से है। सोना भी अधिकतर

मिनास जिरायस में मिलता है। यहा पर जलविद्युत शक्ति के लिए भी काफी आशा की जाती है।

ब्राजील मे शिल्प उद्योगो की भी उन्नति हो रही है। यहा पर ऊनी, सूती वस्त्रो, चीनी शोधन, शराब बनाने तथा फलो को डिब्बा म भरने के धन्धे किये जाते है। यहा के उद्योगो को सरकारी सरक्षण प्राप्त है। यहा सूती, ऊनी, रेशमी तथा कृत्रिम रेशम के वस्त्रो, जूट के सामान, कागज, तम्बाकू और चीनी बनाने के कारखाने है। यहा से कहवा, सुरक्षित मास, रबर, कपास, खाले, चमडा, तम्बाकू, कोको, मास, चीनी तथा इमारती लकडी का निर्यात और अधिकतर तैयार माल का आयात होता है। अमरीका के अन्य देशो की अपेक्षा ब्राजील अफ्रीका से निकटतम पडता है। पश्चिमी अफ्रीका यहा से १६०० मील दूर है। यूरोप से अमरीका जाने वाला हवाई मार्ग यहीं को होकर जाता है।

रियोडिजैनिरो—राजधानी तथा बन्दरगाह है। इसका आदर्श पोताश्रय है।

सान्टोस—दक्षिण में है। यहा से कहवे का निर्यात होता है।

बाहिया तथा **परनम्बुको** से चीनी, कपास और तम्बाकू का निर्यात होता है।

७—अर्जेन्टाइना

विस्तार, भूमि तथा जलवायु—विस्तार तथा आबादी के विचार से ब्राजील से दूसरे नम्बर का देश है। इसका क्षेत्रफल १० लाख वर्गमील तथा आबादी १ करोड़ तीस लाख है। यहा के निवासी अधिकतर दक्षिणी यूरोप से आये हुए लोग है। इस देश में बडी उन्नति हुई है। यहा की जलवायु ठडी और भूमि समतल है जिससे यहा यूरोपियनो के बसने और रेलो के बनाने की सुविधाये है। यहा की पराना, परागुवे तथा उरुगुवे नदियों में नावे चल सकती है।

कृषिप्रधान देश—यहा खनिज पदार्थो की अधिकता नही है। यह देश कृषिप्रधान होने से दक्षिणी अमरीका का "अन्न भंडार" है। पूर्वी भाग में खेती की अधिक उन्नति हुई है और यहा सभी अनाज उगते है। गेहू, जई, मक्का और तिलहन यहा की मुख्य उपज है। १६५० मे अर्जेन्टाइना मे ६० लाख मीट्रिक टन गेहू, २० लाख टन जई और १४ लाख टन तिलहन और ६० लाख टन मक्का पैदा हुई थी। कपास, आलू, चीनी, तम्बाकू, चावल और चाय भी उत्पन्न होती है। संयुक्तराज्य (U K) मे अर्जेन्टाइना के गेहू और तिलहन की बडी बिक्री होती है।

इसके दक्षिण पश्चिमी भाग में भेड, बकरे, सुअर और घोडे बहुत पाले जाते है। यहा पर मास को ठडा रखने का प्रमुख उद्योग होता है और यहा पर मास को ठडा रखने का दुनिया में सबसे बडा कारखाना है। यहा पर आटा पीसने, वस्त्र बनाने, मशीनें और गाडिया बनाने, रसायनिक पदार्थो और तम्बाकू के भी कारखाने है। यहा की सरकार अधिकतर पशुपालक भूमिधरो के अधिकार में है।

यातायात के साधन—इस देश में २७,००० मील लम्बा रेलमार्ग है। सभी रेलो की चौड़ाई समान माप की नहीं है इसी कारण कठिनता पड़ती है। यहा सबसे लम्बी रेल की लाइन ब्यूनस आयर्स से वाल परैसो तक ६०० मील लम्बी है। साल्टा (अर्जेन्टाइना) से एन्टोफोगस्टा (चिली) तक एक नया रेलमार्ग बनाया जा रहा है। अर्जेन्टाइना में ३२,००० मील लम्बी सड़के है जिनके द्वारा चिली, युरुगुवे तथा परागुवे से व्यापार की बड़ी सुविधा है।

निर्यात तथा आयात की वस्तुएँ—यहा से निर्यात की प्रमुख वस्तुए अनाज, मास, अलसी, ऊन और तम्बाकू है। यहा पर लोहे और स्टील की वस्तुए, सूती और ऊनी वस्त्र तथा रेलों की मशीने बाहर से आती है।

निर्यात (१९५०)
(हजार मीट्रिक टन)

गेहू	२७४४	ऊन	८६
जई	१६२	खाल	१७
मास	१६४	तिलहन	१३१ ७४

ब्यूनस आयर्स—अर्जेन्टाइना की राजधानी और प्रमुख बन्दरगाह है। यह प्लाटा नदी पर स्थित है। यहा का तीन चौथाई निर्यात और चार पचमाश आयात यही से होता है। व्यापारिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से यह नगर अर्जेन्टाइना में सबसे बढकर है। इसमे दोष केवल इतना ही है कि प्लाटा नदी कम गहरी है और यहा झामो से लगातार मिट्टी निकाली जाती है।

रोजेरियो—का आदर्श पोताश्रय और गेहू निर्यात का प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

८—युरुगुवे

सामान्य परिचय—अर्जेन्टाइना और ब्राजील के मध्य यह दक्षिणी अमरीका का सबसे छोटा देश है। इसका क्षेत्रफल ७२,१५३ वर्गमील और १९४८ में आबादी २३,१८,२०० थी। यहा पर स्पेनिश भाषा बोली जाती है। यहा के ५० प्र श निवासी यूरोपियनो की सतान है जो अधिकतर स्पेन और इटली के निवासी है।

जलवायु—भौगोलिक दृष्टिकोण से युरुगुवे अर्जेन्टाइना के घास के मैदानो का ही सिलसिला है। इसके तट पर १२० मील तक दक्षिणी एटलांटिक तथा ६०० मील तक प्लाटा और युरुगुवे नदिया बहती है। देश पहाडी तो नहीं है परन्तु इसमें नीची पहाड़िया बहुत सी हैं। यहा की जलवायु शीतोष्ण है। यहा का न्यूनतम ताप ३५° और उच्चतम ६०° फ रहता है।

खनिज पदार्थ—इस देश में सोना, तांबा, चांदी, लोहा, टीन, पारा, अभ्रक, स्लेट पत्थर, जिप्सम, कोबल्ट और सगमरमर बहुत है, परन्तु खनिज उद्योगो का विकास अभी नहीं हुआ।

मुख्य उद्यम—यहां के निवासियों के मुख्य उद्यम भेड़ और पशु पालना है। यह धंधा दक्षिण और पश्चिम के भागों में अधिकतर होता है। यहां के कुल निर्यात का ६८ प्र श पशु और पशुओं से प्राप्त होने वाली अन्य वस्तुएं होती हैं।

खेती की उपज—यहां भूमि के कुल ७ प्र श भाग पर ही खेती की जाती है। गेहूं, मक्का, जई और तिलहन यहां की मुख्य उपज हैं। शराब भी यहां बहुत बनती है। कुल शराब का उत्पादन १ करोड़ ५० लाख गैलन से भी अधिक होता है।

निर्यात की विशेष वस्तुएँ—ऊन, मांस और खालें हैं। तिलहन, गेहूं, मक्का, मक्खन और इमारती पत्थर भी बाहर भेज जाते हैं। तेल, पट्रोल, कोयला, सूती वस्त्र, चीनी, लोहा, औजार तथा मशीनों का आयात किया जाता है। यहां का समुद्री व्यापार विशेषकर ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, अर्जेन्टाइना तथा जर्मनी से होता है।

माँटीवीडियो—प्लाटा नदी पर स्थित है। देश का प्रमुख केन्द्र है। देश का वैदेशिक व्यापार यहीं से अधिकतर होता है। इस नगर में कई पशु वध-केन्द्र (Slaughter Houses) हैं। १९६४ में यहां की जनसंख्या ९,००,००० थी।

पसान्डू, साल्टो तथा मर्सीडीज अन्य नगर हैं।

९—पीरू

चिली के उत्तर में है। घटना मुद्रा के कारण यहां उन्नति नहीं हो सकी। इसका क्षेत्रफल ४,८२,००० वर्गमील और आबादी ७० लाख है। आबादी का औसत प्रति वर्गमील १३ व्यक्ति पड़ता है। यहां की आधी आबादी गोरों की और आधी इन्डियनों की है। यहां पर आर्थिक साधनों की विभिन्नता है। ऊंचे पहाड़ी पठारों में सोना, चांदी और तांबा पाया जाता है। यहां पर खनिज तेल भी निकाला जाता है। चीनी, कपास, तम्बाकू, मक्का, इन्डिया रबर तथा कहवा यहां की खेती की प्रमुख उपज है। यहां की सबसे गंभीर समस्या है 'पूंजीपतियों का अभाव'। यहां के तेल-क्षेत्रों और अन्य खनिज पदार्थों पर संयुक्त राष्ट्र और कनाडा का अधिकार है। यहां की कपास की उपज आस्ट्रेलिया और जर्मनी के अधिकार में है। *यहां की रेलें अंग्रेजों के हाथ में हैं। यहां के पेरों के स्वामी इटली वाले हैं* और चीनी के कारखानों के मालिक जर्मन लोग हैं।

लीमा—राजधानी तथा व्यापारिक केन्द्र है। १९६८ में यहां की आबादी ७,६७,०५४ थी।

प्रश्नावली

१ चिली को प्राकृतिक विभागों में विभाजित करिये और प्रत्येक का वर्णन कीजिये।

२. बोलीविया का भौगोलिक विवरण दीजिये।

३ भूमध्यरेखीय दक्षिणी अमरीका के आर्थिक विकास में क्या बाधायें हैं?

४ दक्षिणी अमरीका की उपज की आर्थिक वस्तुएं कौन-कौन हैं ? यूरोप महाद्वीप मे भारतीय उपज की किन वस्तुओ से स्पर्धा रहती हैं ?

५ ब्राजील पर एक सक्षिप्त लेख लिखिये और इसकी प्रमुख निर्यात वस्तुओ का विवरण दीजिये ।

६ अर्जेन्टाइना के आर्थिक साधनो का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि किन २ वस्तुओ मे भारतीय वस्तुओ के साथ ग्रेट ब्रिटेन मे यह राज्य स्पर्धा करता है ?

७ अर्जेन्टाइना, चिली और ब्राजील के साथ होने वाले भारतीय व्यापार का वर्णन कीजिये । यह भी बतलाइये कि भविष्य मे इस व्यापार मे किस प्रकार के हेरफेर की सभावनायें हैं ।

८ दक्षिणी अमरीका मे भेडो के वितरण पर एक लेख लिखिये और बतलाइये कि किन प्राकृतिक दशाओ मे यह पशु फलता-फूलता है ? अपने उत्तर को मानचित्र द्वारा स्पष्ट करिये ।

९ दक्षिणी अमरीका के किन्ही पाच समुद्री बन्दरगाहो के नाम लिखिये और बतलाइये कि देश के किन भागो का व्यापार वहा से होता है ? प्रत्यक की निर्यातिक वस्तुओं का भी हवाला दीजिये ।

१० दो अमरीका म से किस म चावल की अत्यधिक उपज होने की सभावनायें है ?

अध्याय : : तेरह

अफ्रीका महाद्वीप

अफ्रीका एक पिछड़ा हुआ महाद्वीप है। यहाँ की आर्थिक सामाजिक तथा राजनैतिक दशा सभी महाद्वीपों से गिरी हुई है। इस हीन दशा के कारण ये हैं—(१) समुद्र



चित्र नं० ६७—अफ्रीका के राजनैतिक विभाग

तट मे चट्टानो और उत्तम पोताश्रयो का अभाव, (२) अफ्रीका का तट बिल्कुल सपाट है और इसमें खाड़िया नही है।

अफ्रीका की अवनति के कारण—(१) पर्वतमालाओ का घेरा जो इसे चारो ओर से घेरे हुए है और जिसके कारण यहा की नदियों में झरने और तेज बहाव पैदा हो गये हैं, (२) मिट्टी उपजाऊ नही है। (३) जलवायु स्वास्थ्य के लिये हानिकर है। अफ्रीका के उत्तर पश्चिमी और दक्षिणी भागों म मरुस्थल है और यहा के अधिकतर प्रदेश उष्ण-कटिबंध में होने के कारण यहा की जलवायु सुस्ती पैदा करने वाली है। इसी जलवायु के कारण आज भी अनेक भीतरी भागो की खोज नही हो सकी है। यहा अनेक रोग फैलते रहते है जिसके कारण देश की आर्थिक उन्नति में बाधा पड़ती है। इन्ही भौगोलिक तथा जलवायु सबधी कारणो से अफ्रीका महाद्वीप में आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति नही हो सकी है।

अफ्रीका की समस्यायें—अफ्रीका की आर्थिक उन्नति में आजकल अनेक बाधायें है। अफ्रीका की उन्नति इन बाधाओ को दूर होने पर ही सभव हो सकती है। ये बाधायें निम्नलिखित है—(१) वस्तुओं के लाने और ले जाने के लिये अच्छे मार्गों की कमी और अधिक व्यय के कारण अफ्रीका के भीतरी भागों से व्यापार में बाधा पड़ती है। यद्यपि कुछ रेलें बन भी गई है परन्तु प्रगति बहुत धीमी है।(२)अफ्रीका मे विदेशी तैयार माल की माग बहुत कम है। यहा के निवासियो का जीवन स्तर नीचा होने से इन लोगों को अच्छे वस्त्रो, मकानों और समान की आवश्यकता ही नही पड़ती। ससार की मंडियो में अफ्रीका के माल की माग नही है। यहा की उष्णकटिबंधीय उपज अर्थात् नारियल का तेल, गोला, कोको और रबर इत्यादि वस्तुएं अफ्रीका की अपेक्षा दक्षिण पूर्वी एशिया, इन्डोनेशिया, पश्चिमी द्वीप समूह और दक्षिणी अमरीका से आसानी से प्राप्त हो सकती है और जबतक ये देश इन वस्तुओ की पूर्ति करते रहेगे अफ्रीका से मगाने की आवश्यकता ही क्या पडेगी? अफ्रीका के भूमध्यरेखीय भागो के विकास से भारत के वैदेशिक व्यापार को कुछ हानि हो सकती है क्योकि तब भारत और श्रीलका के चहवे, गोले और रबर आदि वस्तुओं को ग्रेट ब्रिटेन म मध्य अफ्रीका की वस्तुओ से मुकाबला लेना पडेगा। परन्तु यह बात मध्य अफ्रीका के यातायात के साधनो की उन्नति पर निर्भर होगी। (३) मजदूरों की कमी है। गोरे लोग तो यहा के उष्ण भागो में काम नही कर सकते और हबशियो की आवश्यकतायें कम है। पूर्वी अफ्रीका मे तो कुछ एशियाई और भारतीय मजदूरो द्वारा इस कठिनाई को दूर किया गया है। पश्चिमी अफ्रीका में वहा के निवासी काम पर लगाये गये है परन्तु ये लोग मूर्ख, वहमी और सुस्त है और उनके रहन सहन का ढंग भी स्वास्थ्य नियमो के अनुसार नही है।

अफ्रीका महाद्वीप म केवल तीन प्रदेशों मे उन्नति हुई है। वे है—(१) अल्जीरिया और ट्यूनिस के फ्रासीसी उपनिवेश—यहा भूमध्यसागरीय जलवायु के कारण गोरे लोग

बस गये हैं और सुविधापूर्वक कार्य करते हैं, (२) मिश्र तथा (३) दक्षिणी अफ्रीका। अन्य भाग बहुत पिछड़े हुए हैं यद्यपि वहां पर आर्थिक विकास के साधनों की कमी नहीं है।

अफ्रीका की कृषि उपज (१९५०)
(हजार मीट्रिक टन में)

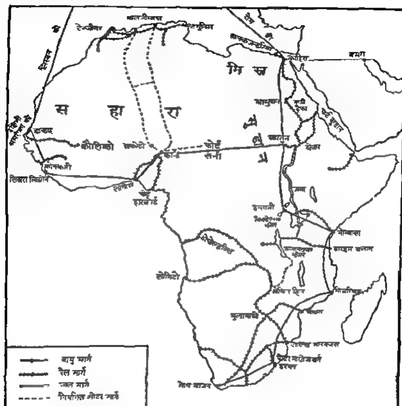
वस्तु	मात्रा	वस्तु	मात्रा
रसदार फल	७१७	रबड़	१८,७८,६६६
कोको	७७०	सीसल	३१०
कहवा	७,१००	चीनी	२३,१००
कपास	५,७६०	चाय	५५०
मूगफली	१०,७००	तम्बाकू	३१००
ताड़ के तेल की वस्तुएं	८७३	ऊन	१८७१

अफ्रीका के मुख्य खनिज (१९५०)
(हजार मीट्रिक टन में)

वस्तु	मात्रा	संसार का प्र. श.
सुरमा	१०७६१	२८ ३
एसबेस्टोस	१७४	१६ ४
क्रोम	३७६	४७ ०
कोयला	३०,०३५	२
कोबल्ट	६,७०८	८७ ४
ताम्बा	५००	२२ २
हीरे (हजार कैरट)	१४,८६९	९४ ४
सोना (हजार औंस)	१३ ४३६	५५ ४
लोहा	३,९३१	४ २
जस्ता	१२९	६ ८
मैंगनीज	८२०	५४ ७
फॉसफेट	६१५५	३१ ९
चांदी	७४९	४ ७
टीन	२४	१४ ४
शीशा	१०८	७ २

अफ्रीका के छ राजनैतिक विभाग हैं —(१) ब्रिटिश अफ्रीका, (२) फ्रांसीसी अफ्रीका, (३) बेल्जियन अफ्रीका, (४) पोर्तुगीज अफ्रीका, (५) इटालियन अफ्रीका और (६) स्वतन्त्रराज्य।

ब्रिटिश अफ्रीका के भी तीन भाग हैं —(१) ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका, (२) ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका तथा (३) ब्रिटिश दक्षिणी अफ्रीका।



चित्र न० ६८—अफ्रीका में यातायात के साधन

अफ्रीका की आबादी कुल १३ करोड़ है जिसमें आधे के लगभग मुसलमान हैं। यहाँ पर गोरों की संख्या ३५ के पीछे १ पड़ती है। अफ्रीका के आदि लोगों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(१) बौने (२) हब्शी (३) हैमाइट बौने अपने रहन सहन में बहुत पिछड़े हैं और अधिकतर काँगो बेसिन में पाये जाते हैं। ये खेती नहीं करते बल्कि शिकार करके अपना पेट पालते हैं।

हब्शी लोग सहारा के दक्षिण में केप प्रदेश तक फैले हैं और सवाना घास के मैदानों में उनकी संख्या विशेष अधिक है। उनके गाँव हैं, पशु पालते हैं और खेती

करते है।

हैमाइट लोग सब से अधिक सभ्य हैं और उनके रहन-सहन का स्तर भी ऊंचा है। अफ्रीका के उत्तरी भाग में वे विशेषकर रहते हैं और अधिकतर मुसलमान धर्म को मानते हैं।

ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका

इस भाग में गैम्बिया, सियरा लियोन, गोल्डकोस्ट तथा नाइजीरिया सम्मिलित हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग ३,७१,३६३ वर्गमील तथा १९४६ के अनुसार जनसंख्या २,३०,०० ००० है। यहा की हानिकारक जलवायु, रोगों का प्रकोप, आवागमन के मार्गों की कमी और बन्दरगाहो का अभाव यहा के आर्थिक विकास में बाधक हैं। पश्चिमी अफ्रीका में तो प्राकृतिक पोताश्रय न होने से माल लादने और उतारने की बडी समस्या है। किनारा सपाट और रेतीला होने से बडे जहाज बडी दूरी पर लगर डालते हैं और माल और मनुष्य डोंगियो द्वारा किनारे तक लाये और ले जाये जाते हैं। अब गोल्डकोस्ट में टकोरादी (Takoradi) पोताश्रय बनाया गया है। यह कृत्रिम पोताश्रय है और यहा पर छोटे-बडे जहाज ठहर सकते हैं। यहा गोरे लोग काम नहीं कर सकते इसलिये यहीं के निवासी काम पर लगाये जाते हैं।

गैम्बिया—यहा की भूमि और जलवायु मूंगफली की उपज के लिये उत्तम है। यही लोगों का मुख्य धधा है। गोरे लोग यहा नहीं रहते, देशी लोग ही खेती करते हैं। यहा की प्रधान उपज तो मूंगफली ही है परन्तु चावल, मक्का और कपास भी खूब पैदा होती है। बाथरस्ट राजधानी है।

गोल्डकोस्ट—यह भाग कृषि और वन साधनों से सम्पन्न है। अधिकतर निवासी किसान है। कोको, कोला, नारियल का तेल, नारियल इत्यादि प्रधान उपज की वस्तुएं हैं। रबर और कपास भी थोडी बहुत होती है। महोगनी की लकडी का निर्यात होता है। सोना, मैंगनीज और हीरे भी यूरोपियन लोग निकालते हैं। सड़कें भी बन गई हैं और मोटर योग्य सडकों की लम्बाई ६४०० मील है। नदिया नाव चलाने योग्य नहीं हैं। रेल मार्ग कुल ५०० मील लम्बा है। **कुमासी, अक्रा और टकोरादी** प्रमुख व्यापारिक केन्द्र हैं।

सियरा लियोन—इस देश का दक्षिणी और पश्चिमी भाग चपटा और नीचा है और उत्तरी तथा पूर्वी भाग ऊंचा और टूटा-फूटा है। चावल यहा की मुख्य उपज और यहा के निवासियों के भोजन की मुख्य वस्तु है। अन्य प्रमुख भोजन की वस्तुएं मक्का, बाजरा, मूंगफली तथा नारियल हैं। नारियल का तेल और उसकी बनी वस्तुएं, कोला, अदरख, कोको, कहवा, तथा मिर्च यहा से बाहर भेजी जाती है। यहा पर लोहा, हीरा, सोना और प्लेटिनम आदि खनिज पदार्थ मिलते हैं। परन्तु इनका व्यापारिक लाभ नहीं उठाया जा रहा है। यहा पर बडे २ कारखानों की कमी है परन्तु कपडा बुनना और चटाई बनाना आदि कुटीर उद्योग होते हैं। ये वस्तुएं घरेलू उपभोग के लिये ही बनती हैं।

फ्रीटाउन—प्रसिद्ध व्यापारिक मंडी है और प्रायद्वीप के उत्तरी सिरे पर एक प्राकृतिक पोताश्रय पर बसा हुआ है।

ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका

पूर्वी अफ्रीका में अंग्रेजों का साम्राज्य अंग्रेजों के आधीन मिश्री सूडान से दक्षिणी अफ्रीकी संघ तक फैला हुआ है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल २,२४,६६० वर्गमील और आबादी ४० लाख है जिनमे २४,००० यूरोपियन हैं। युगान्डा, कीनिया, टैंगानीका तथा न्यासालैंड उष्णकटिबन्ध मे स्थित हैं परन्तु इन भागों की ऊंचाई ४००० से ६००० फीट तक होने के कारण यहा यूरोपियन लोग स्थायी रूप मे बस गये हैं। इसी कारण इस भाग मे बड़ी उन्नति हो गई है। अधिकतर खेती का काम गोरे लोगों के हाथ में है। यहा के देसी लोगों से ये लोग खेती में सहायता लेते हैं। कहवा, चाय, मक्का, सीसल (पटुआ) और गेहूं यहा की प्रधान उपज हैं। डेरी की वस्तुएं और ऊनी वस्त्र यहा बनाये जाते हैं। और चमड़ा काफी मात्रा में बाहर भेजा जाता है।

युगान्डा—यह प्रदेश एक ऊँचे प्लेटो पर स्थित है। यहा का जलवायु सम है और यहा का तापक्रम वर्ष भर लगभग समान ही रहता है। यहा के लोगों का मुख्य साधन खेती है। खेती करना और पशु पालना ही यहा के देसी तथा यूरोपीय लोगों के प्रधान धंधे हैं। इस देश की समृद्धता का प्रधान साधन कपास की फसल है। इसके साथ २ सड़कों और रेलों के विकास, नगरों की स्थापना आदि के कारण भी पिछले बीस वर्षों में यहा पर काफी तरक्की हुई है। ब्रिटिश राष्ट्र मंडल में भारत को छोड़ कर सब से अधिक कपास युगान्डा में ही उत्पन्न होती है। तम्बाकू, कहवा, चाय और रबर आदि भी पैदा होते हैं। टीन, सोना और नमक भी प्राप्त होते हैं। दक्षिणी युगान्डा की म्यौरासाडू (Murrasandu) नामक टीन की खान में ५०० आदमी काम करते हैं। यहा पर भिन्न २ प्रकार के सुन्दर दृश्यों और पशुओं को देखने के लिये अनेक यात्री आते रहते हैं। शिकार के लिये कुछ क्षेत्र अलग सुरक्षित कर दिये गये हैं। यहा पर रेलों, सड़को, नदियों और हवाई जहाजों के मार्ग भी हैं।

ऐन्टेब—राजधानी है। कम्पाला एक व्यापारिक केन्द्र है। जिंजा विक्टोरिया झील पर एक बन्दरगाह है।

कीनिया—पूर्वी अफ्रीका में यह एक बड़ा राज्य है। इसका उत्तरी भाग जिसमें देश का तीन-पाचवां भाग सम्मिलित है, सूखा और बंजर है। इसका दक्षिणी भाग एक पतली पट्टी है जिसमें नीची भूमि और एक पठार सम्मिलित है—पठार ४००० से १०००० फीट ऊँचा है। दक्षिणी भाग में ही सब फसलें पैदा होती है। खेती ही प्रधान धंधा है। कहवा, मक्का, गेहूं, चाय, चीनी और नारियल मुख्य उपज हैं। कीनिया की खेती में कुछ बाधायें अवश्य हैं। (१) उपजाऊ प्रदेश अधिकतर समुद्रतट से दूर हैं। वस्तुओं को इधर-उधर लाने ले जाने म अधिकतम व्यय होता है क्योंकि सभी वस्तुएं मंडियों में

पहुचाने के लिये स्वेज़ नहर के मार्ग से आती-जाती हैं। इस मार्ग में कर (Tax) अधिक पड़ता है। यहा की सभी आवश्यकतायें यहीं से पूर्ण हो जाती हैं और आसपास के देशो को कुछ वस्तुओ का निर्यात भी किया जाता है। डेरी की वस्तुएं यूरोप को भेजी जाती हैं।

नैरोबी—राजधानी है। **मोम्बासा**—प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

टैंगानीका—यह देश प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व जर्मनी के अधिकार में था और जर्मन पूर्वी अफ्रीका कहलाता था। अफ्रीका का यह एक बहुत प्राचीन देश है। इस देश का क्षेत्रफल जर्मनी, डेनमार्क, हालैंड, बैल्जियम और ग्रेट ब्रिटेन के सयुक्त क्षेत्रफल से भी अधिक है। यहा का मुख्य धधा और आय का मुख्य साधन खेती है। पशु भी पाले जाते हैं। यूरोपीय और यहा के निवासी सभी इन दोनो धधो को करते हैं। सीसल पटुआ, कहवा, चाय, तम्बाकू, नारियल, गेहूं और जौ की खेती होती है। टैंगानीका के असली निवासियों का पशुपालन भी विशेष उद्यम है। अभ्रक, टीन, कोयला, मैंगनीज़ और हीरे भी यहा पाये जाते हैं। यहा से निर्यात की मुख्य वस्तु सीसल पटुआ है। इस के बाद मूल्य में हीरो का नम्बर है। यहा की हीरे की खान दुनिया भर में सब से बड़ी है। १६४५ में यहा पर १० लाख पौंड मूल्य के हीरे निकाले गये थे।

यहा यातायात के साधनों की कमी है। केवल दो ही रेलें हैं —(१) केन्द्रीय रेल मार्ग, टैंगानीका झील से दारस्सलाम तक और (२) एक छोटी लाइन मोशी से टोंगा बन्दरगाह तक कहवा तथा सीसल पहुंचाने के लिये।

दारस्सलाम प्रसिद्ध बन्दरगाह और राजधानी है।

जंजीबार और पेम्बा—ये दोनो द्वीप टैंगानीका से कुछ दूर समुद्र में हैं। दोनो ही द्वीप समतल हैं। जलवायु उष्ण होते हुए भी यूरोपियनो के लिये अस्वास्थ्यकर नहीं है। निर्यात के लिये खेती की उपज केवल लौंग और नारियल है। इन द्वीपों में आवागमन सड़कों और जलमार्गों द्वारा होता है। रेलें यहा नहीं हैं। पहले जंजीबार पूर्वी किनारे का प्रसिद्ध बन्दरगाह था। परन्तु मोम्बासा और दारस्सलाम की उन्नति के साथ २ इसके व्यापार में कमी होती जा रही है।

न्यासालैंड—यह एक कृषिप्रधान देश है। यहा पर गोरे और काले लोगों का मुख्य धधा खेती ही है। यहा की मुख्य उपज तम्बाकू, चाय, सीसल, कपास, कहवा और रबर हैं। देश में सोना, तांबा, लोहा, अभ्रक, कोयला और मैंगनीज आदि खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। यहा की जलवायु यूरोपियनो के लिए उत्तम है। यह उपनिवेश किनारे से १३० मील दूर है।

बेरा—पुर्तगीज़ पूर्वी अफ्रीका में एक व्यापारिक नगर है।

जोम्बा—यहा की राजधानी है।

उत्तरी रोडेशिया—यह एक विस्तृत अंग्रेजी राज्य है। यह कांगो और जैम्बीसी नदी के जलविभाजक स्थान पर स्थित है। इस देश में अधिकतर अफ्रीका के ऊंचे पठार

सम्मिलित है परन्तु जैम्बीसी, काफू और लोगवा नदियो की घाटिया भी इसी में सम्मिलित है। यहा के पठारो पर भी अधिक गर्मी पडती है और यहा यूरोपियन लोगो के लिए उपयुक्त जलवायु नही है। यहा पर यूरोपियन लोग स्थायी रूप मे रहते है और व्यापार इत्यादि कार्य करते हैं। यहा पर खेती और पशु-पालन के सुन्दर साधन हैं। यहा की मुख्य फसले कपास, मक्का, गेंहू और तम्बाकू है। यहा के भिन्न भागो म सुअर, भेड, बकरिया और चौपाये पाले जाते है। खानें खोदन का कार्य अभी प्रारम्भिक दशा में है। यहा पर कोयला, ताबा, सोना, जस्ता और टीन निकाले जाते है।

पैंडला और लुसाका—ये दोनो ही नगर व्यापार के केन्द्र है।

दक्षिणी रोडेशिया—उत्तरी रोडेशिया की अपेक्षा अधिक उन्नत है। यह अधिकतर एक ऊचा पठार है और यहा की जलवायु शीतोष्ण है। यहा पर खनिज पदार्थों की प्रचुरता है। इन्ही खनिज पदार्थों के कारण यहा लोग बस गये है। सोना सब से अधिक और अनेक स्थानो में पाया जाता है। क्रोमियम भी व्यापक रूप में पाया जाता है और इसके उत्पादन में रोडेशिया का स्थान बहुत ऊचा है। चादी, सीसा, लोहा, ताबा, कोयला और टीन भी यहा निकाले जाते ह। यह देश कृषि और पशुपालन के लिए बड़ा उपयुक्त है। तम्बाकू, मक्का और कपास यहा की मुख्य फसले है। पशुपालन का धधा कृषि से भी अधिक महत्वपूर्ण है। यहा के सुन्दर घास के मैदानो में सभी जगह पशु पाले जाते हैं। यहा पर ग्रेट ब्रिटेन से उत्तम जाति के पशु मगाकर पशुओं की नस्ल सुधारने में उल्लेखनीय कार्य हो रहा है।

बुलावेयो और सेलिसबरी यहा के प्रसिद्ध नगर है।

ब्रिटिश सोमालीलैंड—यह एक छोटा सा देश है जो ऐंगीट्रिया और इटालियन सोमालीलैंड के मध्य लाल सागर पर स्थित है। इसका अधिक महत्व तो कुछ नही है परन्तु राजनैतिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण है। अपनी स्थिति के कारण यह लाल सागर पर अधिकार किये हुए है। यहा की स्थानीय आवश्यकता के लिए जौ और मक्का आदि फसलें पैदा की जाती है। यहा के लोगों का मुख्य धन भेड और पशु ही है।

बरबरा तथा जेला—यहा के मुख्य नगर है।

ऐंग्लो इजिप्शियन सूडान—यह प्रदेश अग्रजो और मिश्रवालो के सम्मिलित अधिकार म है। यहा की जलवायु भिन्न-भिन्न भागो में भिन्न भिन्नप्रकार की होने से यहा की उपज भी अनेक प्रकार की है। सबसे मुख्य उपज कपास की है। यहा से निर्यात की वस्तुओ म ७६ प्र श भाग कपास ही होती है। कपास की खेती नीली और सफेद नील के बीच के उपजाऊ प्रदेश म जिसे जजीरा (Gazeira) कहते है सबसे अधिक होती है। इस प्रदेश में हाल ही मे नीली नील के सैनर स्थान पर बाध बनाकर सिचाई का प्रबन्ध किया गया है। नील की घाटी के खार्तुम के उत्तरी भाग में भी कपास उत्पन्न होती है। दक्षिणी भाग में रबर और बहुमूल्य लकडी के विशाल वन है। सूडान का मध्यभाग एक विस्तृत

घास का मैदान है जिसमे कृषि और पशुपालन का धधा होता है। मध्य भाग में रबर, कहवा और गोंद भी प्राप्त होते हैं। व्यापार का प्रसिद्ध मार्ग नील नदी है। रेल मार्ग हैफा से आबू हमीद होता हुआ खार्तूम तक गया है। खार्तूम से एक लाइन लाल सागर स्थित पोर्ट सूडान तक गई है।

खार्तूम तथा अलओबेद प्रसिद्ध नगर हैं।

दक्षिण अफ्रीकी सघ

विस्तार तथा निवासी—इस सघ मे केप आफ गुड होप नैटाल, आरज फ्री स्टेट तथा ट्रासवाल सम्मिलित हैं। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ४,७२,४९४ वर्गमील और १९४७ के अनुसार आबादी १ करोड १२ लाख है। इसमे २३ लाख गोरे ७ लाख काले, सवा दो लाख इन्डियन और ३४,००० मलाया निवासी हैं। मलाया के निवासी उन दासो की सन्तान है जो कि १७ वी शताब्दी मे यहा मलाया से लाये गये थे।

यहा की जलवायु गोरे लोगो के लिए स्वास्थ्यप्रद है। गोरे लोगो के यहा बस जाने से रग-भेद की समस्या उत्पन्न हो गई है क्योंकि अन्य जातियां यहा पर पहले ही से बसी हुई है। दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका जो पहले जर्मनी के अधिकार में था अब सघ के ही शासन मे है।

सोने और हीरे की खानें—अफ्रीका के इस ब्रिटिश राज्य की आर्थिक उन्नति का कारण यहा के खनिज पदार्थ हैं। यह भाग खनिज पदार्थों का अपार भडार है। यहा पर अधिकतर सोना और हीरे पाये जाते हैं। हीरो की तो दक्षिण अफ्रीका ही एकमात्र भडार है और ससार का आधा सोना भी यहीं से प्राप्त होता है। अभी तक यहा के आर्थिक ढाचे का आधार विशेष रूप से सोना ही रहा है परन्तु भविष्य मे इसके उत्पादन की कमी से यह आधार डावाडोल हो सकता है। अब धीरे २ खेती और उद्योगधधों को नया आधार बनाया जा रहा है परन्तु यदि सोने की खाने शीघ्र ही समाप्त हो गईं तो ये नवीन आधार आर्थिक भार उठाने मे सफल सिद्ध नही होंगे। यही गम्भीर समस्या आजकल अफ्रीकी सघ के सामने है। हीरो का सबसे प्रसिद्ध क्षेत्र किम्बरले, केप प्रान्त में है। दक्षिणी अफ्रीका मे मैंगनीज बहुत मिलता है। मैंगनीज की बड़ी २ खानें भी केप प्रान्त मे ही है। मछली व्यवसाय भी अफ्रीका की आय का एक सम्भावित साधन हो सकता है परन्तु अभी तक इसका पूर्ण विकास नही हो सका है। इस प्रदेश के आर्थिक विकास मे दो ही बाधायें हैं —(१) यहा के देसी लोगो की घनी आबादी, (२) मजदूरो के लिए काले लोगों पर निर्भरता।

केप आफ गुड होप प्रान्त—यहा पर चरागाहो की अधिकता है। मजदूरो और जातिभेद की समस्या, खेती में कठिनाई तथा यातायात की असुविधाओ के कारण यहा पर आर्थिक उन्नति नही हो सकती है। यहा कोई प्राकृतिक पोताश्रय नही है और नदियो द्वारा व्यापार नही हो सकता। इसके दक्षिण पश्चिम भागो की भूमध्यसागरीय जलवायु

म फल उगाये जाते हैं। यहा खनिज पदार्थों विशेषकर हीरो की प्रचुरता है। ससार के ६० प्र श हीरे किम्बरले में प्राप्त होते हैं। गेहू, जई, राई, तम्बाकू और बाजरा खेती की मुख्य उपज है।

केप टाउन—कोयले का बन्दरगाह और राजधानी है। यह रेलो का केन्द्र है और भिन्न २ समुद्री व्यापारिक मार्गों का मिलन स्थान है। यहा की १७ लाख आबादी में ८१ लाख गोरे लोग है।

नेटाल—यह देश सदा हराभरा रहता है। नेटाल को प्राय दक्षिणी अफ्रीका का "उद्यान प्रान्त" कहते हैं। यहा के लोगो का मुख्य धधा खेती करना है। यहा पर गन्ना, चाय, तम्बाकू, मक्का, कहवा, कपास, चावल और केले की व्यापक खेती होती है। कोयला यहा का मुख्य खनिज पदार्थ है। यह सर्वोत्तम श्रेणी का होता है।

डरबन—एक व्यापारिक केन्द्र तथा मुख्य बन्दर है।

पीटरमेरिट्सबर्ग—राजधानी है।

यहा पर भारतीयो की आबादी काफी है गोरो की कम। १८६० म दास प्रथा का अन्त हो जाने से पहले पहल भारतीय कुली नेटाल में मजदूरो की कमी के कारण बुलाये गये थे।

ट्रासवाल—यहा के लोगो का मुख्य धधा खान खोदना है। सोना, कोयला, लोहा, हीरे, प्लेटिनम, सीसा, चादी, टीन और ताबा यहा के मुख्य खनिज पदार्थ है। जौन्सबर्ग के पश्चिम स्थित विटवाटर्स रैंड अपनी सोने की विशाल राशि के कारण आजकल बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। यहा की चट्टानें सोने के अरो से भरी हुई है। सस्ते देसी मजदूरों और कोयले की समीपता के कारण इस रैंड प्रदेश में सुवर्ण उद्योग में महत्वपूर्ण उन्नति हुई है। १६२४ में दुनियाभर के सोने का ५० प्र श भाग यही से प्राप्त हुआ था। यहा कोयला उत्तम श्रेणी का नही है फिर भी देश की औद्योगिक उन्नति में इससे बडी सहायता मिली है। हीरे की खान प्रीटोरिया के समीप है। गन्ना, कपास और तम्बाकू प्रधान उपज की वस्तुए है। ऊचे वैल्ड में जहा भेड-बकरिया असख्य है, पशुपालन का धधा होता है।

प्रीटोरिया—राजधानी है।

जोन्सबर्ग—दक्षिणी अफ्रीका का सबसे बडा नगर और सुवर्ण उद्योग का केन्द्र है।

ओरेंज फ्री स्टेट—यहा की जलवायु शीतोष्ण है और देश चरागाह प्रधान है। ऊचे वैल्ड और प्रान्त के पूर्वी भागो के पास के मैदानो में चौपाये और भेडें पाली जाती है। यहा पर दुग्धशाला उद्योग भी होता है। अब कृषि पर भी ध्यान दिया जाने लगा है। दक्षिण-पूर्वी भागो म कैलेडन नदी के बेसिन में गेहू खूब पैदा होता है और इस भाग को 'दक्षिण-अफ्रीका का अन्न भडार' कहते है। यहा मक्का और मोटा अनाज भी उत्पन्न होते है। खनिज पदार्थों की कमी है।

ब्लोमफोन्टेन—राजधानी, प्रधान व्यापारिक नगर और रेलो का प्रसिद्ध केन्द्र है।

दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका—१९१८ तक यह जर्मनी के अधिकार में था। इस प्रदेश में पशुपालन का धंधा प्रसिद्ध है। **बसूटोलैंड**—पहाडी प्रदेश है। यहा की जलवायु खेती और पशुपालन दोनो ही धंधा के अनुकूल है। बेचुआनालैंड में सारी आबादी देशी लोगो की है। इस प्रदेश का मुख्य धन चौपाय, भेडें और बकरिया हैं।

मिश्र देश

व्यापार के दृष्टिकोण से इस देश की स्थिति बडी अनुकूल है। यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक राजमार्ग अर्थात् स्वेज नहर मार्ग के सिरे पर बसा हुआ है जिसके द्वारा यूरोप और एशिया के बीच व्यापार होता है। इसलिए मिश्र देश को पुनर्निर्यात व्यापार के विकास के लिए पर्याप्त सुयोग प्राप्त है।

नील की महत्ता—भूमध्यसागरीय जलवायु वाले उत्तरी डेल्टा प्रदेश को छोड़कर मिश्र की जलवायु विशेषकर मरुस्थलीय है। मिश्र का ९७ प्र श क्षेत्रफल मरुस्थल है। **यदि नील नदी न होती तो सारा का सारा मिश्र सहारा की भांति बंजर देश होता।** मिश्र देश का क्षेत्रफल ३,७३१,००० वर्गमील है जिसम मे नील केवल १२,००० वर्गमील प्रदेश को ही सींचती है। मिश्र की लगभग सारी ही आबादी (१,४०,००,०००) देश के इसी सिंचित भाग म रहती है।

मिश्र की खेती—मिश्र की जलवायु ऐसी है कि सिंचाई की सहायता से यहा सारे साल ही खेती हो सकती है। यहा के खेती के ढंग पुराने और नवीन ढंगो के मिले-जुले है। पुरानी दराती (हंसिया), लकडी के हल, रहट (Water Wheel) इत्यादि सिंचाई के नवीन साधनो, हलो, ट्रेक्टरो इत्यादि के साथ २ प्रयोग म लाये जाते हैं। यहा पर सस्ते मजदूरो की घनी संख्या है और खेतो के छोटे होने के कारण नवीनतम मशीनों का अधिक प्रयोग नही हो सकता। कपास, ईख, चावल, मक्का और गेहूं यहा की मुख्य उपज हैं। यहा की सबसे महत्वपूर्ण उपज कपास है जिस पर कि देश की आय निर्भर है। मिश्र एक कृषिप्रधान देश है जिसमें कही २ उद्योगधंधे भी होते हैं।

खनिज पदार्थ—मिश्र के खनिज पदार्थ रेगिस्तान में प्राप्त होते है। यहा पर पैट्रोलियम और फासफेट्स प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। लाल सागर के तट पर खनिज तेल के उत्पादन मे वृद्धि हो रही है। तेल का प्रमुख क्षेत्र रास गरीब है जिससे १३,००,००० टन वार्षिक खनिज तेल निकलता है। ऐस्फाल्ट भी यहा काफी मिलता है। फिर भी मिश्र काफी मात्रा में तेल (विशेषकर मिट्टी का तेल) बाहर से मगाता है। यहा पर भोजन पकाने और जलाने म ४ लाख टन तेल व्यय होता है परन्तु यहा पर केवल ७५,००० टन तेल निकलता है। हाल ही में लाल सागर के दूसरे तट पर रासमद मे एक नई तेल की खान का पता लगा है। यहा पर केवल एक ही कुआ है जिसमे ४० टन शुद्ध तेल प्रति दिन निकलता है। यह खोज बडी महत्वपूर्ण हुई है।

नील नदी का मार्ग—नील नदी एक उत्तम जलमार्ग भी बनाती है। मिश्र मे से बहने

वाली प्रधान नदी सफेद और नीली नील मे मिलकर बनती है। सफेद नील विक्टोरिया झील से निकलकर उत्तर की ओर एक समतल प्रदेश में को बहती है। इस नदी मे सारे साल ही पानी रहता है। नीली नील ऐबीसीनिया के पहाडो मे निकलती है। गर्मियो में इस नदी में बाढ आया करती है। दोनों नदिया खार्तुम मे मिल जाती हैं और मिश्र मे बहती हुई भूमध्यसागर में जा गिरती हैं। इस नदी में असवान बाध तक बिना रुकावट के जहाज आ सकते है।

मिश्र की रेलें—रेलो का काम सरकार के अधिकार में हैं। मुख्य रेल की लाइन सिकन्दरिया से अस्वान तक जाती हैं। काहिरा से एक लाइन दक्षिण को जाती हैं और सूडान रेल से जा मिलती है। स्वेज नहर मिश्री राज्य में ही है। इस नहर के कारण मिश्र की स्थिति सैनिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हो गई है। कपास ही यहा से निर्यात की प्रमुख वस्तु है जिसका मूल्य कुल निर्यात का ९५ प्र श से भी अधिक होता है। इसके सिवा बिनौले, अनाज और तरकारिया भी बाहर भेजी जाती हैं।

काहिरा—मिश्र की राजधानी और अफ्रीका का सबसे बडा नगर है।

सिकन्दरिया—वैदेशिक व्यापार का प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

सैयद बन्दर—स्वेज नहर के उत्तरी सिरे पर कोयले का बन्दरगाह है। यह एक पुनर्निर्यात केन्द्र भी हैं।

मिश्र वास्तव में अंग्रेजों के अधिकार में पिछली शताब्दियो म आया था। १९१४ में यह अंग्रेजो की सरक्षता मे आ गया। १९३६ में अंग्रेजो ने इसे एक स्वतन्त्र देश स्वीकार कर लिया परन्तु कुछ विशेष बातो में अभी तक भी इस पर अंग्रेजो का प्रभुत्व है।

ऐबीसीनिया

साधारण परिचय—यह अफ्रीका का एक बडा देश है जिसकी आबादी लगभग एक करोड है। यह एक ज्वालामुखी का पठार है। यहा की जलवायु स्वास्थ्यकर तथा स्फूर्तिदायक है। यहा पर कृषि, वन तथा पशु-साधनो के होते हुए भी आर्थिक उन्नति अधिक नही हुई है। इस देश में समुद्र तट नही है। यहा का वैदेशिक व्यापार फ्रासीसी सोमालीलैंड के बन्दरगाह जीबूटी द्वारा किया जाता है।

यह देश आगे चल कर कपास का प्रधान देश हो सकता है। यहा की मुख्य उपज कहवा गेहू, कपास, जौ और मिर्च है। यहा की ऊबड़-खाबड़ पहाडियो और घाटियो में खनिज सम्पत्ति बताई जाती है परन्तु यातायात के साधनो का अभाव है। रेलों और नदियो द्वारा चीजो को लाना ले जाना बडा कठिन है। आर्थिक विकास की आशा और, वर्तमान अवनत दशा के कारण इटली वाले अपने देश से यहा आ कर बस गये। यहा पर लोहे, ताबे, कोयले और गधक की खानें है जिनका व्यापारिक अथवा औद्योगिक विकास नही हो सका है। यहा पर कुशल कारीगरो, पूजी और यातायात के साधनों की बडी कमी है।

अदीस अबाबा—राजधानी है। यह ८००० फीट की ऊंचाई पर बसा हुआ है। अडोवा तथा गोन्डर अन्य व्यापारिक केन्द्र है।

अल्जीरिया तथा ट्यूनिस—उत्तरी अफ्रीका की सब से महत्वपूर्ण रियासते है। इनमे किनारे की पट्टी शामिल है। लोगो का प्रधान धधा खेती है। पातालतोड कुओ से भूमि को सीच कर अगूर की वेल, अनाज और तम्बाकू उगाया जाता है। पशु-पालन का धधा भी बडा ही महत्वपूर्ण है। निर्यात की वस्तुए शराब अनाज, जेतून का तेल, लोहा, जस्त और सीसा है। आयात की वस्तुये सूती वस्त्र, मशीने तथा धातु के वर्तन है।

ट्रिपोली—ट्यूनिस की राजधानी है। यहा की आबादी बहुत कम है।

ऐल्जीयर्स—अल्जीरिया की राजधानी है। कोयले का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। ये दोनो रियासते फ्रास के अधिकार में है।

प्रश्नावली

१ एक मानचित्र पर अफ्रीका के स्वर्ण प्रदेशो को दिखलाइये।

२ खनिज सम्पत्ति और पशुपालन व्यवसाय के दृष्टिकोण से दक्षिणी अफ्रीका की वर्त्तमान आर्थिक दशा का निरूपण कीजिये।

३ भूमध्यरेखीय अफ्रीका में ब्रिटिश अधिकृत भागो के आर्थिक साधनो का वर्णन कीजिये। इन साधनो को उन्नत व विकसित बनाने की क्या सभावनाय है? इनके विकास से भारत के व्यापार पर क्या असर पडेगा?

४ "मिश्र नील नदी का वरदान है।" इस उक्ति पर अपने विचार स्पष्ट करिये।

५ मिश्र की स्थिति का विश्व व्यापारिक मार्गों की दृष्टि से क्या महत्व है?

६ दक्षिणी अफ्रीका मे सिचाई के लिय अभी हाल में क्या कुछ किया गया है? भविष्य में इस ओर क्या सम्भावनायें है?

७ भूमध्यरेखीय अफ्रीका के पिछडे होने के क्या कारण है?

८ अफ्रीका पर अपना आधिपत्य रखने में ग्रेट ब्रिटेन का क्या आर्थिक मतलब था?

९ नील की घाटी की स्थिति बतलाइये, इसका भौगोलिक वर्णन दीजिये और इस के महत्व, विकास व उन्नति के भौगोलिक कारण बतलाइये।

१० 'सोने की खान दक्षिणी अफ्रीका का आधार है।" इस कथन पर विचार प्रगट कीजिये।

११ दक्षिणी अफ्रीका मे युद्ध के फलस्वरूप होने वाली आर्थिक उन्नति का विवरण दीजिये। दक्षिणी अफ्रीका उपयोगी सामग्री के लिये भारत पर कहा तक निर्भर है? इन वस्तुओ को प्राप्त करने के वैकल्पिक सूत्र उपस्थित है या नही?

१२ अबीसीनिया के आर्थिक विकास और वर्तमान दशा का वर्णन कीजिये।

अध्याय : : चौदह

आस्ट्रेलिया

स्थिति—आस्ट्रेलिया संसार का सब से छोटा महाद्वीप परन्तु सब से बड़ा द्वीप है। यह सारा-का-सारा ही दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है और संसार के प्रमुख व्यापारिक मार्गों से दूर पड़ता है। इसका ४० [redacted] ग क्षेत्रफल उष्ण कटिबन्ध में तथा शेष भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है।

धरातल—साधारणतया इसका धरातल समतल है। इसमें विस्तृत मैदान और पठार सम्मिलित हैं। इसके पूर्वी भाग में एक पर्वतमाला उत्तर से दक्षिण तक २००० मील से भी अधिक लम्बी है। इस श्रेणी का नाम "डिवाइडिंग रेंज" है। इस श्रेणी की समुद्र से दूरी २५ से १२० मील तक है। इसके तटीय मैदान बड़े उपजाऊ हैं। पूर्वी पर्वत माला तथा पश्चिमी पठारों के बीच में नीचे मैदान है।

तटरेखा तथा जलवृष्टि—इस महाद्वीप की तट रेखा लगभग सपाट ही है। केवल पूर्वी और उत्तर पश्चिमी भाग में कुछ कटाव है। पूर्वी तट पर वर्षा अधिक होती है। उत्तरी आस्ट्रेलिया के मानसूनी भागों में भी गर्मी में काफी वृष्टि होती है। आस्ट्रेलिया के मध्य-भाग और पश्चिमी तटीय भाग साल भर सूखे रहते हैं इसीलिये इन भागों को "आस्ट्रेलिया का जीवन-हीन हृदय" कहते हैं। वास्तव में आस्ट्रेलिया के दो तिहाई भागों में २०" से भी कम वर्षा होती है।

इस महाद्वीप का क्षेत्रफल ३० लाख वर्गमील तथा आबादी ८० लाख के लगभग है। यहां की अधिकतर आबादी, एक पतली पट्टी पर रहती है जोकि सिडनी के ऊपर से आरम्भ होकर ऐडीलेड के चारों ओर फैली है और कुछ आबादी दक्षिण पश्चिमी कोने में है। यहां की आबादी का औसत २ व्यक्ति प्रतिवर्ग मील पड़ता है।

१९५० के अनुसार आस्ट्रेलिया की आबादी और क्षेत्रफल

	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	आबादी	प्रति १०० वर्ग-मील आबादी
न्यूसाउथ वेल्स	३,०९,४३३	३२,२५,२४२	१०४२
विक्टोरिया	८७,८८४	२२,०२,८६६	२,५०७
क्वीन्सलैंड	६,७०,५००	११,८२,७६२	१७७
दक्षिणी आस्ट्रेलिया	३,८०,०७०	७,००,२५७	१८४
पश्चिमी आस्ट्रेलिया	९,७५,९२०	५,५७,९१८	५७

	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	आबादी	प्रति १०० वर्ग-मील आबादी
तस्मानिया	२६,२१५	२,७६,३८६	१०६६
उत्तरी राज्य	५,२३,६२०	१५,३०३	३
आस्ट्रेलिया की केपिटल टैरिटरी	९३९	२०,७७२	२२१२
	२९,७४,५८१	८१,८५,४३९	२७५

आबादी—आस्ट्रेलिया की आबादी बाहर से आने वालो के कारण बहुत बढ गई है यद्यपि वर्तमान काल में यहा की आबादी प्राकृतिक रूप से ही अधिक बढी है। १८५२–६१ से पूर्व आस्ट्रेलिया की आबादी में ७६ प्र श वृद्धि बाहर से आये लोगो के कारण हुई थी। परन्तु फिर बाहर से लोगो का आना कम हो गया और १९२२–३१ में बाहर से आये लोगो के कारण आबादी में २६ प्र श ही वृद्धि हुई। अब तो यहा की आबादी प्राकृतिक वृद्धि ही पर निर्भर है।

आबादी का घनत्व विक्टोरिया के अतिरिक्त और कही भी अधिक नही है। जलवायु तथा अन्य कारणो से आस्ट्रेलिया के पूर्वी और दक्षिणी भाग निश्चित रूप से आबादी के केन्द्र हो गये है। मध्य और पश्चिमी जलहीन भागो में लोगों को बसने के लिये कोई आकर्षण ही नही है। परन्तु क्वीन्सलैड, न्यूसाउथवेल्स, विक्टोरिया और दक्षिणी आस्ट्रेलिया में बसने के लिये काफी सुविधाए है। अत यहा की आबादी के कई गुनी बढ जाने की सम्भावना हो सकती है।

मजदूरो का अभाव—श्वेत नीति—मजदूरो की कमी के कारण यहा के उद्योग-धधो का विकास नही हुआ है। यद्यपि आस्ट्रेलिया का उत्तरी भाग उपजाऊ है और यहा पर चावल, चीनी और कपास पैदा हो सकती है परन्तु यहा पर गर्मी अधिक पडती है और गोरों के रहने के लिये उपयुक्त नही है। आस्ट्रेलिया मे एशियाई मजदूरो को जाने की इजाजत नही है। आस्ट्रेलिया की आवास नीति का उल्लेख करना यहा ठीक ही होगा। आस्ट्रेलिया की 'श्वेत नीति' के दो पक्ष है। (१) आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से योग्य व्यक्तियो को आकर्षित करना तथा (२) अनिच्छित अथवा अयोग्य व्यक्तियो के आने पर रोक लगाना।

श्वेत नीति के दो दृष्टिकोण—इस नीति के दो आधार है सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण। सामाजिक दृष्टिकोण तो उन लोगो की रोक के लिये है जो यहा पर मिलजुल कर एक नही हो सकते। इन में सभी एशियाई और दक्षिणी तथा पूर्वी यूरोप के निवासी भी सम्मिलित है। आर्थिक दृष्टिकोण का कारण यह है कि बाहर से आने वालो से मजदूरी में कमी के कारण यहा के निवासियो का जीवन-स्तर नीचा हो जाने का भय है। प्रत्यक्ष रूप से तो इस नीति में जाति अथवा रग-भेद की गध नही है परन्तु इस श्वेत

नीति के कारण उत्तरी आस्ट्रेलिया का विकास तब तक सम्भव नहीं जब तक कि गोरे लोग उष्णकटिबन्धीय रोगों और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त न कर लें। इस नीति के कारण एशिया के घने बसे हुए देशों में कटुता की भावना उत्पन्न हो रही है।

यातायात के साधन—आस्ट्रेलिया में जलमार्गों का अभाव है। यहां की नदियां छोटी और तेज बहने वाली हैं। सब से प्रसिद्ध नदी मरे दक्षिण में है। डार्लिंग और मुरम्बिजी इसकी सहायक नदियां हैं। मरे १३०० मील लम्बी है पर नाव चलाने योग्य नहीं। बरसात में मरे स्थित अलबरी और डार्लिंग स्थित बोर्क नगरों के बीच स्टीमर चलते हैं।



चित्र नं० ६९—आस्ट्रेलिया की आर्थिक उपज। यहां के कोयला क्षेत्र अधिकतर पूर्वी भाग में हैं। सोने की खानें पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम में हैं।

रेलों का विकास धीरे २ ही रहा है। रेल व्यवस्था में सब से बड़ी त्रुटि यह है कि भिन्न २ राज्यों में भिन्न २ चौड़ाई की पटरियों का प्रयोग होता है। यहां पर २७,००० मील लम्बा रेल मार्ग है। एक रेल की लाइन पर्थ से आगस्टा तक १४२५ मील लम्बी है जो महाद्वीप के आर-पार चलती है। हवाई मार्गों की यहां बड़ी सुविधा है। यहां की जलवायु और देश की बनावट इस के अनुकूल है। १९४९ में यहां ४८,२३९ मील लम्बा हवाई मार्ग था।

आस्ट्रेलिया की भौगोलिक स्थिति और दशाओं का यहां के आर्थिक विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। यूरोप और अमरीका से यह देश दूर पड़ता है इसलिये आबादी घनी नहीं हो सकी। यदि यहां सोने की खोज न हुई होती तो यहां की प्रगति और भी मन्द हुई

होती। यहां की खनिज सम्पत्ति के कारण लोग यहां आ कर बसे और उन्होंने अपनी पूंजी भी लगाई जिससे यहां के विकास में सहायता मिली। जब आस्ट्रेलिया के पूर्वी भाग में सोने के उत्पादन में कमी हो गई तो लोग यहीं बस गये और खेती और पशु-पालन में लग गये।

खेती की उपज *'गेहूं'*—आस्ट्रेलिया में खेती बहुत बड़े भाग में नहीं होती। १९४९-५० के अनुसार यहां पर कुल २ करोड़ एकड़ भूमि पर खेती होती थी। खेती-योग्य आधी से अधिक भूमि पर गेहूं की खेती होती है। आस्ट्रेलिया में गेहूं जाड़े की फसल है और गर्मियों के आरम्भ में ही काट ली जाती है। गेहूं की पैदावार के मुख्य प्रदेश मरे नदी के उपजाऊ मैदान और भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेश हैं। यहां का अधिकतर गेहूं संयुक्त राज्य (U.K.) को और थोड़ा बहुत चीन तथा जापान को जाता है। आस्ट्रेलिया ने सबप्रथम गेहूं का निर्यात १८८३ में हुआ था। गेहूं के निर्यात का मुख्य केन्द्र गीलोंग है।

चावल की उपज—*गेहूं के अतिरिक्त अधिकतर भूमि पर जौ, ईख, जई और चावल की खेती है।* यहां पर चावल पहले-पहल १९२५ में व्यापारिक दृष्टिकोण से न्यू-साउथवेल्स के सिंचाई वाले भागों में बोया गया था और तभी से यह एक महत्वपूर्ण उपज रही है। १९३० तक यहां के चावल से घरेलू आवश्यकता की पूर्ति होकर थोड़ा बहुत निर्यात होता था परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में दक्षिण पूर्वी एशिया के चावल प्रधान देशों पर जापान का अधिकार हो जाने से आस्ट्रेलिया के चावल की मांग बहुत बढ़ गई। १९४४ में न्यू-साउथवेल्स में चावल उत्पादन का एक नया क्षेत्रफल तैयार किया गया।

विविध फसलों का उत्पादन व क्षेत्रफल १९५०

	क्षेत्रफल (००० एकड़)	उत्पादन (००० बुशल)		क्षेत्रफल (००० एकड़)	उत्पादन (००० बुशल)
गेहूं	१२२४०	२१८,७७१	मक्का	१६८	६३१३
जई	१३४८	२३४७१	गन्ना	७८१	५८४५
जौ	१०६०	१९५६३			

भेड़ें तथा अन्य पशु—आस्ट्रेलिया में भेड़ों का पालना बहुत ही महत्वपूर्ण उद्योग है। यहां पर केवल रूस को छोड़ कर संसार के अन्य सभी देशों से अधिक भेड़ें पाली जाती हैं। न्यूसाउथवेल्स, क्वीन्सलैंड, विक्टोरिया, पश्चिमी तथा दक्षिणी आस्ट्रेलिया में भेड़ें ऊन के लिये पाली जाती हैं। परन्तु आस्ट्रेलिया में ऊन का उत्पादन विशेष रूप से निर्यात के लिये होता है। और देश में इसका प्रयोग वस्त्र अथवा अन्य कोई वस्तु बनाने में बहुत कम होता है। आस्ट्रेलिया की ३० प्र० श० से अधिक ऊन संयुक्त राज्य (U.K.) को जाती है। फ्रांस, जापान, बेल्जियम और जर्मनी भी यहां की ऊन मंगाते हैं। आस्ट्रेलिया के लगभग सभी देशों में मांस और दूध की वस्तुओं के लिये मवेशी पाले जाते हैं।

खनिज सम्पत्ति (सोना)—आस्ट्रेलिया में खनिज सम्पत्ति पर्याप्त मात्रा में है। १६४२ में खानो मे साढे सात लाख व्यक्ति काम करते थे। प्रारम्भ में सोने की खानों के कारण विक्टोरिया और न्यूसाउथवेल्स मे बाहर के लोगो का ताता लग गया। आजकल भी आस्ट्रेलिया मे ससार का ४ प्र श से अधिक सोना प्राप्त होता है। सोना यहा पर महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ है। विक्टोरिया मे बैलाराट और बैंडिगो सोने की प्रसिद्ध खाने हैं। न्यूसाउथवेल्स अब सोने के लिये प्रसिद्ध नही रहा। क्वीन्सलैंड में सोने की प्रसिद्ध खान एक हैम्पटन मे है। आजकल आस्ट्रेलिया का आधे से भी अधिक सोना पश्चिमी आस्ट्रेलिया में निकलता है जहा पर कालगूर्ली और कूलगार्डी सोने की प्रसिद्ध खाने है।

लोहा तथा अन्य खनिज पदार्थ—आस्ट्रेलिया में सब से महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ लोहा है। यह न्यूसाउथवेल्स, क्वीन्सलैंड, तस्मानिया, दक्षिण पश्चिमी तथा दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया मे पाया जाता है। कच्चा लोहा दक्षिणी आस्ट्रेलिया मे मिलता है। चादी, महाद्वीप में कई स्थानो पर मिलती है। परन्तु चादी की सब से प्रसिद्ध खान न्यूसाउथवेल्स के ब्रोकन हिल प्रान्त में है। इन्ही खानो मे चादी के साथ-साथ सीसा और जस्त भी मिलता है। टीन और ताबे की भी अधिकता है परन्तु अभी ठीक तरह निकाले नही जाते। ताबे की सब से प्रसिद्ध खानें उत्तरी क्वीन्सलैंड और दक्षिणी आस्ट्रेलिया में है। यहा पर हीरे और अन्य बहुमूल्य पत्थर भी मिलते है।

आस्ट्रेलिया के शिल्प उद्योग—आस्ट्रेलिया के शिल्प उद्योग अभी तक प्रारम्भिक दशा में हैं। यहा की बिखरी हुई और अल्प जनसख्या, रेलो और सडको की कमी तथा यहा के निवासियो का खेती और खानो की ओर अधिक झुकाव होने के कारण शिल्प उद्योगो का अधिक विकास नही हो सका। उद्योग-धधे अधिकतर नगरो मे ही केन्द्रित है। वहा मजदूरो की सुविधा है। यहा आटा पीसने, ऊन कातने और बुनने, फर्नीचर बनाने तथा लोहे और स्टील की वस्तुए तैयार करने के कारखाने है।

निर्यात की वस्तुए—आस्ट्रेलिया मे बाहर जाने वाली वस्तुए ऊन, गेहू, सोना, खाले और चमडा, मक्खन, आटा, चीनी, जमा हुआ मास, फल, शराब और पनीर है। ऊन फ्रास, जापान, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, सयुक्त राष्ट्र और रूस को और गेहू भारत, ग्रेट ब्रिटेन और दक्षिणी अफ्रीका को भेजा जाता है। समस्त निर्यात का आधा माल सयुक्त राज्य (U K) को जाता है।

आयात की वस्तुए—यहा पर धातु तथा धातु का सामान, बुना हुआ और बना हुआ कपडा, खाने-पीने की वस्तुए, दवाये, रासायनिक पदार्थ और कागज बाहर से आते है। ४० प्र श से भी अधिक वस्तुए सयुक्तराज्य (U K) से आती है।

प्रसिद्ध नगर—**मैल्बोर्न**–विक्टोरिया की राजधानी है। यह प्रसिद्ध बन्दरगाह और औद्योगिक नगर भी है।

सिडनी—न्यूसाउथवेल्स की राजधानी है। पोर्ट जैक्सन के दक्षिण में स्थित है। इसका आदर्श पोताश्रय है। औद्योगिक तथा राजनैतिक केन्द्र होने के अतिरिक्त जहाजी बेड़े का केन्द्र भी है।

ब्रिसबेन—क्वीनलैंड की राजधानी है। यह प्रसिद्ध बन्दरगाह और औद्योगिक केन्द्र भी है। यहां से ऊन, जमा हुआ गोश्त, मक्खन, सुअर का मांस, चर्बी, खाल और चमड़ा बाहर जाता है।

ऐडीलेड—दक्षिणी आस्ट्रेलिया की राजधानी है। इसका बन्दरगाह पोर्ट एडीलेड है। यहां से लकड़ी, गेहूँ, आटा, तांबा, खाल, जमा हुआ गोश्त, फल और शराब बाहर भेजे जाते हैं।

पर्थ—पश्चिमी आस्ट्रेलिया की राजधानी, व्यापारिक नगर और औद्योगिक केन्द्र है। फ्रीमेन्टल इसका बन्दरगाह है। यहां से ऊन, सोना और इमारती लकड़ी बाहर जाती है।

होबर्ट—तस्मानिया की राजधानी और रेलों का केन्द्र है। इसका पोताश्रय बड़ा उत्तम है। और इसका व्यापार अधिकतर सिडनी के साथ होता है। यहां से ऊन, सोना, टीन, चांदी, लकड़ी, फल, अनाज बाहर जाते हैं।

न्यूजीलैंड

विस्तार तथा आबादी—न्यूजीलैंड के राज्य में उत्तरी द्वीप, दक्षिणी द्वीप, स्टुअर्ट द्वीप तथा अन्य अनेक छोटे-छोटे द्वीपसमूह सम्मिलित हैं जो कि आसपास के समुद्र में १५० से ३५० मील तक फैले हुए हैं। इसका क्षेत्रफल १,०३,५२६ वर्गमील तथा आबादी १८ लाख है। ८३ प्र० श० आबादी गोरे लोगों की है। १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहां गोरों की संख्या एक हजार से कम थी परन्तु उपनिवेशों की स्थापना और सोने के लालच से यहां पर अनेकों लोग आकर बस गये हैं। अधिकतर लोग ग्रेट ब्रिटेन से आये। अब तो आबादी में प्राकृतिक रूप से वृद्धि हो रही है। असली माओरी लोग (मूल निवासी) तो अब केवल ८ प्र० श० ही रह गये हैं। ऐंग्लो माओरी ३·५ प्र० श० और अन्य लोग केवल ५ प्र० श० ही हैं।

दक्षिण का ग्रेट ब्रिटेन—उत्तरी और दक्षिणी द्वीप क्षेत्रफल में बहुत बड़े हैं और इस राज्य का अधिकतर भाग इन्हीं से बनता है। न्यूजीलैंड को कभी २ "दक्षिण का चमकदार ब्रिटेन" (*Brighter Britain of the South*) कहते हैं। ब्रिटिश साम्राज्य का केवल यही भाग है जहां के निवासियों के रहन-सहन का ढंग और आदतें, यहां के दृश्य, तापक्रम और बनावट ग्रेट ब्रिटेन से मिलते-जुलते हैं। यहां के मूल निवासी माओरी लोग हैं यद्यपि वर्तमान काल में उनकी आबादी कुल ५ प्र० श० ही है। ब्रिटेन से आये हुए लोग अब यहां पर स्थायी रूप से बस गये हैं और ९७ प्र० श० आबादी उन्हीं लोगों की है।

जलवायु—न्यूज़ीलैंड का अधिकतर भाग समुद्र के प्रभाव में है और यहा के ताप-क्रम और जल-वृष्टि पर समुद्र का प्रभाव पड़ता है। यहा गर्मियो मे अधिक गर्मी और सर्दियो मे अधिक सर्दी नही पडती।

भू-रचना—यहा का धरातल विशेष रूप से पहाडी है। दक्षिणी द्वीप मे पश्चिम की ओर दक्षिण से उत्तर तक एक पर्वत-श्रेणी है। इस श्रेणी को दक्षिणी आल्प्स (Southern Alps) कहते है। इन पर सदैव बर्फ जमी रहती है। न्यूज़ीलैंड में सब से व्यापक मैदान कैन्टरबरी मैदान कहलाते हैं। ये मैदान दक्षिणी द्वीप में पूर्व की ओर बीच के भाग में है। न्यूज़ीलैंड विशेषकर चरागाहो का देश है और इसके ९६ प्र श० भाग पर पशुपालन सम्बन्धी उद्योग होते हैं। यहा पर पशु-पालन, डैरी के काम और भेडो के पालने के लिए चारे की फसले अधिकतर उगाई जाती है।

भेड तथा पशुपालन सम्बन्धी धन्धे—यहा का वैनाज का बादशाह भेड है। न्यूज़ीलैंड में भेडो की सख्या प्रति वर्गमील के विचार से ससार के अन्य किसी भी देश से अधिक है। यहा की नम आबहवा, रसदार घास के मैदान, ठड पैदा करने वाले यत्रो का प्रचार और गौण उपज का पूरा २ लाभ उठाये जाने के कारण भेडो के पालने में बडी सफलता मिली है। न्यूज़ीलैंड के सभी मैदानो में भेडें ऊन और मास के लिये व्यापक रूप से पाली जाती हैं। केन्टरबरी के मैदान और आसपास के नीचे भाग भेडो के लिये सबसे प्रसिद्ध प्रदेश हैं। इन्ही भागो म देश की भेडो का एक चतुर्थाश से अधिक भाग पाला जाता है। मास और डैरी की उपज के लिये पशु-पालन एक महत्वपूर्ण उद्योग होता जा रहा है। न्यूज़ीलैंड में डैरी का धधा सहकारी आधार पर प्रचलित है। सरकार इस पर कडा निरीक्षण रखती है। यहा से किसी ऐसी वस्तु का निर्यात नही किया जाता जिसके कारण न्यूज़ीलैंड की उपज के शुभ नाम पर किसी प्रकार का कलक लग।

खेती तथा खनिज पदार्थ—यहा पर १९४७ के अनुसार २० लाख एकड म कुछ अधिक भूमि पर खेती होती थी। गेहू, जौ, जई, आलू तथा घास यहा की मुख्य फसले है। सभी खनिज पदार्थ थोडी थोडी मात्रा में यहा पाये जाते है। नियलाइट, चादी, सोना, कोयला और पैट्रोलियम मिलते हैं। इनमें से कोयले के सिवाय अन्य पदार्थों का विकास नही हुआ है।

शिल्प उद्योगो का विकास—न्यूज़ीलैंड म कारखानो का विकास बहुत ही कम हुआ है। शिल्प उद्योग अधिकतर यहा की मुख्य पैदावार पर ही निर्भर हैं। विखरी आबादी तथा ससार के मुख्य व्यापारिक मार्गों से दूर होने के कारण न्यूज़ीलैंड एक महान् औद्योगिक देश नहीं हो सका है। चमडे की वस्तुए के बनाने, ऊनी और सूती वस्त्रों के बुनने, फलो को टिब्बो मे भरने, फर्नीचर बनाने और डेरी सम्बन्धी उपज तैयार करने के यहा पर अनेक कारखाने है। सन् १९४५ में यहा पर शिल्प उद्योगो में १,२६,००० व्यक्ति काम करते थ।

न्यूज़ीलैंड में नदियां तो बहुत हैं परन्तु इनमें अधिकतर नाव्य नहीं है। न्यूज़ीलैंड मे ३००० मील से भी अधिक लम्बे रेलमार्ग हैं जिनकी दिशाओं पर भूप्रकृति का बडा प्रभाव पडा है। पहाड़ी देश होने के कारण अधिकतर मार्गो के लिये बडा धन व्यय कर के लगातार सुरगे बनानी पडी है। न्यूज़ीलैंड में सडको का शीघ्रतापूर्वक विकास हो रहा है।

आयात तथा निर्यात—इस देश मे पशु-पालन सम्बन्धी उद्योगो का कितना विकास हुआ है, यहा से निर्यात की वस्तुओ मे इस बात का अनुमान ही सहज हो सकता है। ऊन, मक्खन, जमा हुआ मास, पनीर, खाल, चमडा इत्यादि वस्तुए कुल निर्यात के ६० प्र श मूल्य की होती हैं। मोटरकार, तेल, इमारती लकडी, सिगरेट लोहे और स्टील की चादरे, सूती वस्त्र और बाडो के तार आयात की मुख्य वस्तुए है। यहा का सब से अधिक व्यापार ग्रेट ब्रिटन से होता है। सयुक्त राष्ट्र, फ्रास, जर्मनी आदि से भी इसका व्यापारिक सबध है।

प्रमुख नगर—वैलिंगटन, आकलैंड, डुनेडिन, क्राइस्टचर्च, नहसन और इन्वरकार्गिल प्रमुख व्यापारिक केन्द्र हैं।

वैलिंगटन—उत्तरी द्वीप मे पोर्ट निकल्सन पर स्थित न्यूज़ीलैंड की राजधानी है। यह नगर सब से प्रसिद्ध वितरक तथा सहायक केन्द्र है। यहा पर तटीय व्यापार भी अधिक होता है।

आकलैंड—न्यूज़ीलैंड का सब से बडा नगर है। उत्तरी द्वीप के एक तग जल सयोजक पर स्थित होने से यह समुद्री व्यापार का केन्द्र हो गया है। यहा से डेरी की उपज का निर्यात होता है। सोना निकालने और गोंद इकट्ठा करने का भी यह एक प्रसिद्ध केन्द्र है।

डुनेडिन—दक्षिणी द्वीप का प्रमुख नगर है।

इन्वरकार्गिल—यह भी दक्षिणी द्वीप का एक प्रसिद्ध नगर है।

क्राइस्टचर्च—दक्षिणी द्वीप के केन्टरबरी मैदान का एक प्रसिद्ध नगर है।

प्रश्नावली

१ आस्ट्रेलिया के आर्थिक विकास व उन्नति के भौगोलिक कारणो का विस्तार से निरूपण करिये।

२ आस्ट्रेलिया म भेड पालने का व्यवसाय इतना उन्नत है और ऊन खूब होता है परन्तु ऊनी कपडे का व्यवसाय बिल्कुल नही के बराबर है। इसका क्या कारण है, समझा कर लिखिये।

३ आस्ट्रेलिया के प्रमुख उद्योग धधो व खेती का वर्णन कीजिये।

४ आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड की प्रमुख निर्यात वस्तुए कौन-कौन सी हैं? भारत और इन देशो के बीच इन वस्तुओ के व्यापार की भविष्य में क्या सभावनाए हैं?

५ आस्ट्रेलिया के पूर्वी और पश्चिमी तटीय प्रदेशो की आर्थिक उन्नति का विवरण दीजिये और बतलाइये कि जलवायु का क्या और कहा तक प्रभाव पडा है।

६ "आस्ट्रेलिया के विकास में मुख्य बाधाए यहा की अकेली स्थिति और कम जनसख्या है।" इस उक्ति पर अपने विचार प्रगट कीजिये।

७ आस्ट्रेलिया के दक्षिणी पश्चिमी भाग में जनसख्या के घनत्व के कारण बतलाइये।

८ आस्ट्रेलिया में जनसख्या का वितरण समझाइये।

[सकेत—आस्ट्रेलिया मे जनसख्या का औसत घनत्व दो मनुष्य प्रति वर्गमील है। इस प्रकार यह महाद्वीप ससार म सब से कम आबाद राज्य देश है। इस देश की जनसख्या का ५० प्रतिशत भाग ब्रिसबेन, सिडनी, मेलबोर्न, एडीलेड, पर्थ और होवर्ट आदि बडे-बडे नगरों में निवास करता है।

इस महाद्वीप में जनसख्या का वितरण वर्षा, तापक्रम, सिंचाई की सुविधाओ, खनिज पदार्थों और यातायात के साधनो से प्रभावित हुआ है। पश्चिम का रेगिस्तानी भाग जहा वर्षा की मात्रा १० इन्च से भी कम है यह प्राय ऊजड-सा है। प्रत्येक आठ वर्गमील में १ मनुष्य निवास करता है। उत्तर में सवाना घास के मैदानो में उच्च तापक्रम के कारण प्रत्येक वर्ग मील में केवल एक मनुष्य का औसत पडता है। विक्टोरिया और न्यूसाउथवेल्स आस्ट्रेलिया के सब से अधिक आबाद प्रदेश हैं। इन प्रदेशो में २०"—३०" तक वर्षा होती है और पूर्वी तटीय प्रदेश में बहुत बडे-बडे शहर हैं जो सब बन्दरगाह भी हैं। इसीलिये आबादी घनी है। मरे नदी की निचली तलहटी में सिंचाई के साधनो की सुविधा होने की वजह से आबादी घनी है। पश्चिमी आस्ट्रेलिया में सोने की खानो के पता लग जाने से कुछ प्रदेशो में आबादी का घनत्व बढ गया है।]

९ आस्ट्रेलिया और न्यूजीलंड में लकडी का उपयोग किस प्रकार किया जाता है?

१० पिछले कुछ सालो में दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया ने वाणिज्य और व्यापार में बडी प्रगति की है। यह किस प्रकार सम्भव हो सका है?

११ आस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली खनिज वस्तुओ और धातुओ का नाम लिखिये। यह भी बतलाइये कि यहा की खनिज सम्पत्ति ने किस प्रकार आर्थिक उन्नति में सहायता दी है?

अध्याय : : पंद्रह

एशिया

सामान्य परिचय—क्षेत्रफल और आबादी के विचार से एशिया सब से बड़ा महाद्वीप है। यह महाद्वीप समस्त भूमण्डल के एक-तिहाई भाग पर फैला है। इसकी आबादी भी दुनिया की आधी है। अधिकतर आबादी दक्षिण-पूर्वी भाग अर्थात् भारत, चीन, जावा और जापान में है।

व्यापार की कठिनाइयां, पहाड़ो और मरुस्थलो की बाधाएं—एशिया में व्यापार के विकास के लिये कुछ भौतिक असुविधाएं हैं। (१) **एशिया का विस्तार तथा भूमि की बनावट**—विशाल विस्तार होने के कारण एशिया के भीतरी भाग खुश्क हैं। यहां तक समुद्री हवायें नहीं पहुंच सकती। अधिक विस्तार के ही कारण ये भाग अन्य देशों से दूर पड़ते हैं और अवनत दशा में हैं क्योंकि थलमार्गो द्वारा जलमार्गों की अपेक्षा व्यापार में कठिनता होती है। एशिया की प्राकृतिक बनावट के कारण भी व्यापार में बाधा पड़ती है। इस के मध्य भाग में पामीर के प्लेटो से चारों ओर को फैली हुई पर्वतमालाएं उत्तर और दक्षिण भाग को एक दूसरे से अलग करती हैं। पामीर से हिमालय, काराकोरम, थियानशान और अल्टाई की श्रेणियां पूर्व की ओर और हिन्दुकुश और सुलेमान की श्रेणियां पश्चिम की ओर को फैली हुई हैं। इसके अतिरिक्त पूर्वी और पश्चिमी भाग भी पहाड़ो और मरुस्थलों के बीच में आ जाने से एक दूसरे से अलग हो गये हैं। इस प्रकार उत्तरी और दक्षिणी भागों तथा पूर्वी और पश्चिमी भागो के बीच यातायात कठिन ही नहीं वरन् कहीं-कहीं तो असम्भव हो गया है।

(२) **हानिकर जलवायु**—एशिया के विस्तार, आकार और बनावट के कारण ही यहां की जलवायु में विषमता और विभिन्नता आ गई है। इसके उत्तरी भागो में, जोकि एशिया के आधे से भी अधिक भाग को घेरे हुए है, खेती और मनुष्यों के रहने के लिये अनुकूल जलवायु नहीं है। मध्य के मरुस्थल बिल्कुल बंजर है। एशिया के केवल दक्षिण-पूर्वी भाग ही ऐसे प्रदेश हैं जहां की मानसूनी और भूमध्यरेखीय जलवायु खेती और उद्योग-धंधो के लिये अनुकूल हैं।

एशिया के भिन्न-भिन्न देशो के निवासी भिन्न-भिन्न जाति और धर्म के हैं और उनकी भाषा भी भिन्न हैं।

एशिया की भिन्न भिन्न जातियां—एशिया में एसी सभी प्रकार की जातियां पाई जाती हैं जो विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं। यहां के तीन पचमांश निवासी मंगोलियन जाति के हैं। ये लोग साइबेरिया, जापान, कोरिया, मंचूरिया, मंगोलिया, चीन

इन्डोचीन, ब्रह्मा, इन्डोनेशिया, मलाया प्रायद्वीप, फारमोसा और हिमालय की ढालो पर बसे हुए है। काकेशस जाति के लोग, ऊपरी और मध्य गगा, सिंध के मैदानो, ईरान, अफगानिस्तान, सीरिया, ईराक और अरब में पाये जाते हैं। नीग्रो (हब्शी) जाति के लोग मलाया प्रायद्वीप, अन्डमान द्वीप और दक्षिणी भारत म मिलते हैं।

एशिया की आबादी—एशिया के सभी स्थानो में जनसख्या का वितरण समान रूप मे नही है। गगा, सिंध के मैदानो, चीन के तटीय प्रदेशो, जापान और जावा में प्रति वर्गमील १०० से भी अधिक मनुष्य पाये जाते हैं। मध्य एशिया के पठारों, अरब और एशियाई रूस के उत्तरी ठडे प्रदेशो में आबादी बहुत कम है। चीन, भारत, जापान, कोरिया तथा दक्षिण पूर्वी कुछ भागो में आबादी बहुत घनी है। मृत्यु सख्या का औसत अधिक होते हुए भी प्राकृतिक रूप से जनसख्या में प्रतिवर्ष बडी वृद्धि होती रहती है। यूरोप के अतिरिक्त निवासी तो १९वी शताब्दी में अमरीका महाद्वीप में चले गये थे परन्तु एशिया के अतिरिक्त निवासियो ने बाहर के देशो म प्रयास नही किया। एशिया के देशो मे प्रति वर्गमील आबादी के घनत्व का औसत इस प्रकार है —भारत वर्ष में १६८, श्रीलका में १६६, चीन में १५५, जावा और मदुरा में ६१०, जापान में ३२५ और कोरिया में २००। यह घनत्व औद्योगिक देशो की अपेक्षा बहुत ऊचा है। उदाहरण के लिये १९४७ के अनुसार प्रति वर्गमील आबादी का औसत रूस में १५, सयुक्त राष्ट्र में ३० और फ्राम म ११८ ही था। खेती के योग्य भूमि के विचार से एशिया में आबादी का घनत्व और भी ऊचा है उदाहरणार्थ भारत में ३४५, पाकिस्तान में ४०८, जापान में १३००, कोरिया म ६२६, जावा और मदुरा में ४५२, चीन म ४२५, श्रीलका में ४४४ और ब्रह्मा म २८० है।

एशिया में खेती की उपज—एशिया के प्रत्येक देश में खेती ही लोगों का प्रधान धधा है। जापान में भी १९४७ में ५२ प्र श लोग खेती म लगे हुए थे। भारतवर्ष मे ६७, थाइलैंड म ८१, कोरिया में ७३, ब्रह्मा म ७०, फिलीपाइन मे ६६ और मलाया म ६१ प्र श मनुष्य खेती करते है। एशिया के देशो में खेती प्रधानता ग्रेट ब्रिटेन, सयुक्तराष्ट्र, जर्मनी, फ्राम आदि औद्योगिक प्रदेशो से बिल्कुल ही भिन्न बात है। इन प्रदेशो में खेती करने वाले लोगो की सख्या क्रमश ६ प्र श (१९३१), १७ प्र श (१९४०) २६ प्र श (१९३९) और ३६ प्र श (१९३१) थी। दूसरी विशेष बात यह है कि एशिया के सभी देशो मे भिन्न भिन्न फसले पैदा होती है। चावल की खेती तीन देशो में प्रधानतया होती है। थाइलैंड में कृषियोग्य कुल भूमि के ९४६ प्र श, इन्डोचीन में ८३ प्र श और ब्रह्मा में ७२ प्र श भूमि पर चावल की खेती होती है। अन्य देशों में भी विशेषकर दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशो में भूमि के अधिकतर भाग पर निर्यात के लिये ही खेती की फसले बोई जाती है। ये फसले नारियल, ईख, जूट, रबर तथा मनीला पटुआ है। इसी कारण एशिया के देशों की आर्थिक स्थिति अनिश्चित तथा क्षतिसम्भव रहती है।

एशिया का व्यापार—अधिक विस्तार के कारण एशिया के वैदेशिक व्यापार में बाधा नहीं पड़ी। *एशिया में यूरोपीय लोगों के आगमन के कई शताब्दी पूर्व भारत, फारस* तथा पश्चिमी एशिया का वैदेशिक व्यापार बहुत उन्नत दशा में था। उस समय अरब के निवासी यहां की बनी वस्तुएं ले जाकर इटली वालों के हाथ बेचते थे। इसी व्यापार को हड़पने के *लिए पुर्तगाली, अंग्रेज और फ्रांसीसी व्यापारी भारत में आये*। स्वेज मार्ग के खुलने और यूरोप वालों का एशिया पर राजनैतिक अधिकार हो जाने के कारण उस व्यापार की रूप रेखा ही बदल गई। संसार के सभी देशों को एशिया से कच्चा माल और भोजन सामग्री प्राप्त होती है तथा पश्चिमी देशों की बनी हुई वस्तुओं की खपत भी अधिकतर यहीं होती है।

एशिया के तीन विभाग—एशिया को कुछ लोगों ने (अ) सुदूर पूर्व (ब) मध्य पूर्व और (स) निकट पूर्व इन तीन भागों में बांटा है। सुदूरपूर्व में साधारणतया भारतीय संघ, पाकिस्तान, चीन, मलाया, थाइलैंड, इन्डोचीन, इन्डोनेशिया तथा जापान सम्मिलित हैं। मध्य पूर्व में अफगानिस्तान, अरब, ईरान, ईराक और इजराइल शामिल हैं। सुदूरपूर्व अर्थात् भारत, पाकिस्तान चीन और जापान बहुत उन्नत दशा में हैं। चावल, कपास, जूट, तम्बाकू, गन्ना (ईख), अफीम, रेशम इमारती लकड़ी, खनिज तेल, चाय, महुवा इत्यादि यहां व्यापक रूप से पैदा होते हैं। इस प्रदेश में व्यापारिक उन्नति भी बहुत हुई है। मध्य पूर्व को आर्थिक विकास के लिये सुन्दर सुअवसर प्राप्त हैं। यहां पर खनिज तेल, सोना, गेहूं, कहवा, कपास, खाल और चमड़ा व्यापक रूप में पाया जाता है। इस समय यातायात की असुविधा और राजनैतिक अव्यवस्था इस की उन्नति में बाधक है।

जापान

जापान की उन्नति के कारण—इस देश में गत साठ वर्षों में बड़ी औद्योगिक उन्नति हुई है। इस आश्चर्यजनक उन्नति के कुछ भौगोलिक कारण हैं। प्रथम तो चीन तथा अन्य पूर्वीय देश इसके पास ही स्थित हैं जहां से इसे कच्चा माल सुविधापूर्वक प्राप्त हो सकता है और तैयार माल आसानी से बिक सकता है। यहां की सरकार ने भी औद्योगिक विकास में सक्रिय सहायता पहुंचाई है। जापान की सरकार ने प्रारम्भ ही से देश में कारखाने स्थापित किये, विदेशों से विशेषज्ञ बुलवाये, बैंक खोले और संसार के अन्य उद्योग प्रधान देशों के ढंग ही अपने देश में प्रचलित किये। दूसरे, यहां की उत्तम जलवायु के कारण जापान में रेशम इत्यादि अनेक कच्ची धातुएं उत्पन्न होती हैं। तीसरे, यहां पर मजदूर सस्ते और काफी संख्या में मिलते हैं। *चौथे यहां के लोग मितव्ययितापूर्वक रहते हैं*। पांचवें, अपने देश को स्वतन्त्र तथा सम्मानित बनाने की प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर जापानियों ने अपने देश में औद्योगिक विकास के लिये भगीरथ प्रयत्न किया।

***ग्रेट ब्रिटेन से समानता**—जापान तथा ग्रेट ब्रिटेन में अनेक बातें बिल्कुल ही समान*

हैं। दोनों ही अनेक द्वीपों से मिल कर बने हैं और दोनों की जलवायु भी शीतोष्ण है। दोनों के पास महान् जहाजी बेड़े हैं और दोनों ही संसार की बड़ी शक्तियों में गिने जाते हैं। जापान भी ग्रेट ब्रिटेन की भांति सभ्यता तथा धार्मिक विचारों की सुविधा के दृष्टि-कोण से एशिया के समीप और अपनी राजनैतिक स्वतन्त्रता के निर्वाह के लिये महाद्वीप से काफी दूर है। अपनी बनाई हुई वस्तुओं की बिक्री के लिये दोनों ही के पास काफी बड़े-बड़े साम्राज्य हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व जापान के साम्राज्य में ४ बड़े-बड़े तथा सैकड़ों छोटे-छोटे द्वीप शामिल थे परन्तु युद्ध के उपरान्त कोरिया स्वतन्त्र हो गया, मंचूरिया और ताइवान चीन को दे दिये गये, क्यूराइल और दक्षिणी साखालीन रूस को मिले और रियूकियू द्वीप अमरीका के अधिकार में चला गया। सम्भव है अब ये प्रदेश फिर जापान के अधिकार में न आ सकें।

जापान की रचना तथा जलवायु—जापान स्वाम की आकृति केले की पत्ती के समान है। इस में होकैडू, होन्शू, कियूशियू और शिकोकू चार बड़े-बड़े द्वीप हैं। देश पहाड़ी है और इस में भूकम्प प्रायः आया करते हैं। एक दिन में चार बार का औसत रहता है परन्तु बड़े-बड़े भूचाल वर्षों में कभी-कभी आ जाते हैं। यहां की जलवायु में महाद्वीपी और समुद्री का सम्मिश्रण है। गर्मी में वर्षा और जाड़ों में सूखा रहता है। यहां की जलवायु पर अक्षांशों और समुद्री धाराओं का बड़ा प्रभाव पड़ता है। उत्तर पश्चिमी मानसून और बेरिंग धारा के प्रभाव से कठिन जाड़ा पड़ता है। गर्मियों में उत्तरी जापान का तापक्रम ८०° फा० तक हो जाता है और पहाड़ों के कारण इसका पश्चिमी भाग पूर्वी भाग की अपेक्षा अधिक शुष्क रहता है। अतः पूर्वी जापान में जाड़ा हल्का रहता है। केवल वही भाग ठंडे रहते हैं जहां ठंडी धाराओं का प्रभाव पड़ता है। सितम्बर में प्रायः टाइफून आया करते हैं जिन के कारण तटों पर बड़ी हानि होती है।

जापान की तट रेखा बन्दरगाह और नदियां—जापान की तट रेखा बड़ी लम्बी है। इसकी लम्बाई १७,००० मील है। यहां की ९ वर्गमील भूमि पर एक मील तट का औसत पड़ता है। अधिक उपज और आबादी वाले मैदान समुद्र तट के समीप हैं। इसी कारण यहां के निवासी अधिकतर नाविक और व्यापारी हो गये हैं। दुर्भाग्य की बात यही है कि उत्तम पोताश्रय वाले गहरे कटानों पर, पृष्ठ प्रदेशों की भूमि ऊंची-नीची होने के कारण, बड़े-बड़े बन्दरगाहों का विकास नहीं हो सका है। उपजाऊ मैदानों के तटों के समीप समुद्र छिछला है। नदियों के चौड़े मुहानों पर रेत जम जाती है और आमों द्वारा उनको लगातार गहरा किया जाता है जिससे कि समुद्री जहाज नदियों में प्रवेश कर सकें। जापान में नदियां कम हैं और जो हैं भी वे छोटी और तेज बहने वाली हैं। फिर भी वे सिंचाई और जल-शक्ति के लिये बड़ी उपयोगी हैं।

जापान की खेती और उपज की वस्तुएं—देश अधिकतर पहाड़ी है और इसी कारण

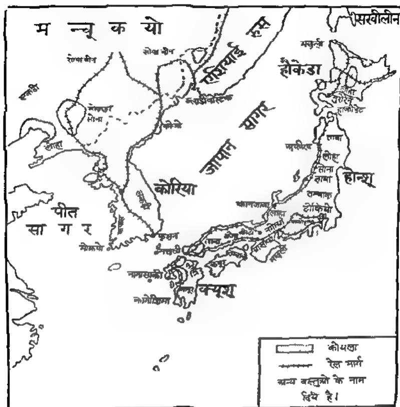
उपजाऊ मैदान कम है। इसकी भूमि के केवल छठे भाग पर ही खेती हो सकती है जोकि सयत्न ढग से की जाती है। छोटे २ बिखरे हुए खेतो पर बडी-बडी मशीनो द्वारा कार्य नही हो सकता फिर भी अधिक खाद और कडे परिश्रम द्वारा यहा की प्रति एकड उपज बहुत अधिक हो गई है। सब से अधिक भूमि पर चावल बोया जाता है। चावल यहा सब से अधिक पैदा होता है। १६३७ मे यहा की ५३ प्र श भूमि पर चावल बोया गया था। जापान के दक्षिणी और मध्य भाग की उपोष्णकटिबन्धीय जलवायु, गर्मियो में अधिक जल-वृष्टि और नदियो द्वारा लाई हुई मिट्टी के उपजाऊ मैदानो मे सिचाई की सुविधा के कारण जापान देश चावल के उत्पादन में सर्वप्रधान हो गया है। चावल के अतिरिक्त यहा पर गेहू, चाय, जौ, मोटे अनाज और बाले भी पैदा होती हैं। भोजन सम्बन्धी वस्तुओं मे जापान पूर्णतया आत्म-निर्भर है। यहा की भोजन की आत्मनिर्भरता अन्य औद्योगिक देशो से ६५ प्र श बढी हुई है।

जापान की वन सम्पत्ति—वन-सम्पत्ति और उससे लाभ उठाने में जापान कनाडा और स्कैंडिनेविया से पीछे नही है। जापान के ५५ प्र श भाग पर वन फैले हुए हैं। वनो से जापान को आर्थिक लाभ यह है कि उनमे बहुमूल्य लकडी, लकडी का कोयला, ईंधन, काष्ठ मद्य और खाने की चीजें अखरोट और फल इत्यादि सभी प्रचुर मात्रा मे मिलती हैं। वन सम्बन्धी समस्त उपज का ७४ प्र श भाग बहुमूल्य लकडी और २४ प्र श लकडी का कोयला होता है। बहुमूल्य लकडी की प्राप्ति कोणधारी और चौडी पत्ती वाले पाइन, ओक और मेपिल वृक्षो से होती है। जापान के वनो में बहुमूल्य बास, काफूर के वृक्ष, मोम, शहतूत और वार्निश की वस्तुओ के वृक्ष भी बडी सख्या मे पाये जाते हैं।

पशु-पालन सम्बन्धी बाधाए—वातावरण सम्बन्धी और आर्थिक बाधाओ के कारण जापान में पशु सम्बन्धी धधो का विकास नही हो सका। यहा के पहाडो का ढाल इतना अधिक है कि उनपर पशु नही चर सकते। यहा की उपोष्णकटिबन्धीय जलवायु चारा उगाने मे उपयुक्त नही है। पहाडी भागों की घासे कठिन, मोटी और पशुओ के अयोग्य होती हैं। डेरी की उपज की ओर लोगों की विशेष रुचि नही है इसी कारण इनकी बिक्री के लिये बाजार भी सीमित है। लम्बी, गर्म और तर गर्मी की ऋतु भेडो के लिये अच्छी नही होती। अत भेडें भी नही पाली जा सकती। यहा के निवासियो को उन, दूध, मक्खन और पनीर आदि वस्तुओ के लिये विदेशो का मुह ताकना पडता है।

मछली का धधा—जापान की आय का असाधारण साधन मछली व्यवसाय है। मछली के धधे में जापान दुनिया भर में सब से बढ कर है और यहा की वार्षिक मछलियो की सख्या ससार की मछलियो की २५ प्र श के लगभग रहती है। यहा के ६० प्र श मछुये किनारे की मछलियो को पकडने म लगे रहते है। किनारे की मछलियो मे सारडीन, हैरिंग, मैकरेल, ट्राउट, काड, डाग सालमन, यलोटेल, फ्लैट फिश और शैल फिश अधिकतर

होती है। अब यहाँ समुद्र की मछलियों का धंधा भी धीरे-धीरे बढ़ रहा है। मछली का धंधा कोरिया, फारमोसा और साखालीन में होता है।



चित्र न० ७० जापान की आर्थिक सम्पत्ति

जापान में जनसंख्या की समस्या और उसका उपाय—जापान की जनसंख्या तेजी से साथ बढ़ रही है। १९४० में जापान खास की आबादी ७ करोड़ तीस लाख से कुछ ऊपर थी। तब से यहाँ पर ८ लाख की वार्षिक वृद्धि हो रही है। यह बढ़ती हुई जनसंख्या जापान के लिये गम्भीर समस्या का रूप धारण करती जा रही है। इस समस्या को हल करने के लिये यहाँ की सरकार खेती की उन्नति, बंजर भूमि के सुधार, कारखानों के विकास और वैदेशिक व्यापार की बढ़ोतरी की ओर विशेष ध्यान दे रही है। अकेली खेती से ही इस बढ़ती हुई आबादी का निर्वाह नहीं हो सकता। इसके लिये जापान की वर्तमान भूमि से चौगुनी से भी अधिक भूमि और चाहिये। जापान में कृषि योग्य भूमि के प्रतिवर्ग मील पर

२३३४ मनुष्यों का औसत है जब कि यह औसत ब्रिटन में २१३०, बेल्जियम में १३०६, जर्मनी में ८०६, इटली में ८१६ और फ्रांस में ४६७ पड़ता है। इस समय समस्त भूमि का १५ प्र श भाग ही कृषि योग्य है और अधिक से अधिक प्रयत्न करने पर भी ४० लाख एकड़ नई भूमि को सुधारा जा सकता है। जापान की सरकार यहा के लोगों को ब्राजील, पीरू तथा अर्जेन्टाइना इत्यादि देशों में प्रवास के लिये भी प्रोत्साहित करती है परन्तु इस प्रवास से ही जापान की जनसंख्या की समस्या के हल होने में सन्देह है। इस समस्या का वास्तविक हल तो व्यापार और कारखानों की उन्नति और यहा के निवासियों के जापानी साम्राज्य के कम बसे हुए भागों में प्रवास द्वारा ही हो सकता है।

आवागमन के साधन—जापान एक पहाड़ी देश है इसी कारण यहा के आवागमन के साधनों की प्रगति मंद रही है। इस समय जापान में रेल मार्गों की लम्बाई १०,००० मील से कुछ अधिक है। थल मार्गों के आवागमन की बाधाओं और जल मार्गों की सुविधाओं के कारण जापान के व्यापारिक जहाजों के विकास को प्राकृतिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।

खनिज पदार्थों की स्थिति—जापान के कारखानों की उन्नति में एक विशेष बाधा यह पड़ती है कि **जापान खनिज सम्पत्ति में समृद्ध नहीं है।** अधिकतर खनिज पदार्थ यहा नहीं पाये जाते। यहा पर केवल कोयला, सोना, तांबा और गंधक ही मिलते हैं।

जापान में कोयले का उत्पादन—जापान का सब से प्रमुख खनिज पदार्थ कोयला है। समस्त खनिज पदार्थों के ६० प्र श मूल्य का लोहा यहा प्राप्त होता है। जापान के कोयला क्षेत्र सारवालीन से फारमोसा तक सभी द्वीपों में बिखरे हुए हैं। सब से अधिक कोयला उत्तरी क्यूशियू और होकेडो में मिलता है। जापान के कोयले का ६० प्र श भाग केवल क्यूशियू से ही प्राप्त होता है। क्यूशियू की चिकूहो खान समुद्र के समीप है और इस क्षेत्र में घनी आबादी है। होकेडो में कोयले के समस्त उत्पादन का १७ प्र श भाग निकाला जाता है। यातायात की असुविधा और आबादी की कमी के कारण अधिक मात्रा में कोयला नहीं निकाला जा सकता। सन् १९५१ में ४०३७० हजार मीट्रिक टन कोयला निकाला गया।

सोना—कोयले के पश्चात् सब से महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ सोना है। सोना उत्तरी हान्शू और दक्षिणी क्यूशियू में ही निकलता है। खनिज सोना अधिकतर तांबे और चांदी के साथ मिला रहता है।

तांबे की खान—सोने के बाद तांबे का नम्बर है। जापान की कुल खनिज वस्तुओं का १३ प्र श भाग तांबा होता है। तांबा सभी द्वीपों में निकलता है। परन्तु आशिओ, बैशी, कोसाका, हिटाची और सगनोसेकी इन पाच खानों से ही जापान का ७५ प्र श से भी अधिक तांबा प्राप्त होता है। तांबे के उत्पादन में जापान का दुनिया में चौथा नम्बर है। केवल कनाडा, चिली और संयुक्तराष्ट्र इस से बढ़ कर हैं।

खनिज तेल—खनिज पदार्थों में चौथा नम्बर खनिज तेल का है। १९४९ में जापान में १३० लाख बैरल खनिज तेल का उत्पादन हुआ था। यह उत्पादन कुछ अधिक नहीं है। जापान का तेल उत्पादन दुनिया के उत्पादन का ० १२ प्र श है और ससार में इसका १७वा नम्बर है। तेल क्षेत्र पश्चिमी होन्शू में है। होकेडू, फारमोसा और साखालीन में भी छोटे मोटे तेल क्षेत्र पाये जाते हैं। गधक यहा पर प्रचुर मात्रा में मिलती है क्योकि ये द्वीप ज्वालामुखी निर्मित है। गधक की आवश्यकता खाद बनाने में पड़ती है। स्थानीय माग से बहुत अधिक मात्रा में गधक बचती है और निर्यात कर दी जाती है।

लोहा—खनिज लोहा यहा बहुत कम होता है। लोहे की दो ही खाने है—एक तो होन्शू के पूर्वी तट पर सेंडी म और दूसरी होकेडू के मुरोरान में है। जापान मे सीसा, चादी, जस्ता, टीन, मैंगनीज और सुरमा भी मिलता है।

जलशक्ति—जलशक्ति म जापान बड़ा भाग्यवान् है। यहा की कुल जलशक्ति के ६० प्र श भाग का विकास भी हो चुका है। यहा का विषम धरातल, तेज धाराए और भारी वर्षा जल विद्युत के विकास के लिये आदर्श दशाए है। जल विद्युत की नवीन योजनाएं अधिकतर मध्य होन्शू के पूर्वी तथा दक्षिणी ढालो पर स्थित है। जापान में सब से प्रथम जल-विद्युत का कारखाना बीवा झील की एक धारा पर क्यूटो में १८९२ में खोला गया था।

जलशक्ति का प्रयोग—जापान में जलशक्ति का अधिकतर प्रयोग कारखाने चलाने, नागरिक यातायात और मकानो में रोशनी करने में किया जाता है। ९१ प्र श मकानो और कारखानो मे बिजली से काम लेने के लिये तार लगे हुए है जबकि सयुक्त-राष्ट्र जैसे उद्योग प्रधान देशो मे भी केवल ७५ प्र श मकानो में ही बिजली से काम लिया जाता है। सन् १९५० में जापान ने ३२,५४२० लाख किलोवाट बिजली का उपयोग किया।

शिल्प उद्योग—जापान म अनेक महत्वपूर्ण शिल्प उद्योग किये जाते है जिन म लाखो आदमी काम करते है—जैसे रेशम के कारखानो में ४,१०,०००, कपड़ा बुनने म २,०५,०००, सूत कातने में १,६५,०००, जहाज बनाने मे १,००,०००, शराब खीचने में ९०,०००, रेशम कातने मे ८८,०००, पुस्तके आदि छापने में ७०,०००, ऊनी कपड़ा बुनने में ४५,०००, रगने मे ५०,०००, मशीनो के काम मे ४४,०००।

कपड़ा बुनना—कपड़ा बुनने म जापान में उल्लेखनीय उन्नति हुई है। इस उद्योग में और धधो के सभी मनुष्यो को मिला कर भी अधिक मनुष्य काम करते है। जापान का बुना हुआ कपड़ा जापान के निर्यात व्यापार का सब से प्रमुख आधार है।

रेशम के तागो को लपेटना जापान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्योग है। रेशम उत्पादन और रेशम के निर्यात में जापान दुनिया भर में सब से आगे है। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि जापान में रेशमी कपड़ा बुनने का विकास नही। देश में तैयार किया हुआ

८० प्र श० से भी अधिक रेशम कच्चे रूप में ही बाहरी देशों को निर्यात किया जाता है ।

औद्योगिक विकास की सुविधाएं—जापान की औद्योगिक उन्नति का अनुमान सूती वस्त्रों के कारखानों की बढती हुई सख्या से लगाया जा सकता है। इस उद्योग के लिये यहा पर अनेक सुविधाए है—जैसे सस्ती मजदूरी, कोयले की समीपता, चीन, जापान, भारत तथा सयुक्तराष्ट्र आदि देशों से माल मगाने की सुविधा और साथ ही साथ तैयार माल की खपत के लिये चीन का बाजार आदि सुविधाए हैं। सूती वस्त्रो के केन्द्र हैं ओसका कोबे, नागोया और टोकियो। ओसाका को जापान का मानचैस्टर कहते हैं। बीस वर्षों में ही ओसाका की इतनी उन्नति हुई है कि यह जापान का सब से बड़ा नगर हो गया है और इसकी जनसख्या २२,५६,००० हो गई है। यह नगर समुद्र के समीप स्थित है। नहरो और नदियो द्वारा जहाजों म माल मिल के क्षेत्र में आ सकता है। सारे जापान के १० प्र श तकुवे यही पर लगे हैं। यहा पर रुई बाहर से आती है और प्राय सब से अधिक मात्रा में रुई का ही आयात होता है।

लोहे और स्टील का धधा—जापान मे लोहे और स्टील के कारखानो की बडी कमी है। औद्योगिक विकास तथा राष्ट्रीय सरक्षण से महत्वपूर्ण होने के कारण जापानी सरकार इन लोहे और स्टील के उद्योग को बड़ा प्रोत्साहन दे रही है। उत्तरी किंयूशियू के यावाता नगर में लोहे और स्टील का एक बहुत बडा कारखाना खोला गया है। नागासाकी और कोबे मे जहाज बनाये जाते है।

अन्य उद्योग—यहा पर दियासलाई, छाते, खिलौने और कागज बनाने के भी बडे-बडे कारखाने हैं। रबर के कारखानो की भी उन्नति हो रही है। रासायनिक पदार्थ भी बनाये जाने लगे है। जापान म बडे सुन्दर बर्तन बनाये जाते हैं और दुनिया मे इनकी बडी माग है।

वैदेशिक व्यापार—जापान के वैदेशिक व्यापार मे अब बडी उन्नति हो गई है। किसी देश की उन्नति कच्चे माल के मगाने, तैयार माल को बेचने और व्यापार को अपने लिये लाभकारी बनाने की योग्यता पर निर्भर होती है। अपने औद्योगिक विकास के प्रारभ से ही जापान ने अपने निर्यात और आयात व्यापार में सन्तुलन रखने के लिये कठोर प्रयत्न किया है। १९३४ तक जापान मे निर्यात की अपेक्षा आयात अधिक हुआ करता था।

निर्यात और आयात—सन् १९५० में जापान के वैदेशिक व्यापार मे ८२०० लाख डालर का निर्यात और ९५९० लाख डालर का आयात हुआ। जापान से बाहर जाने वाली चीजें—कच्चा रेशम (२३ प्र श), सूती वस्त्र (२१ प्र श), रेशमी सामान (८ प्र श), कपडे (५ प्र श), बर्तन (३ प्र श), चाय, तम्बाकू (३ प्र श) जापान म आने वाली वस्तुए—कपास (३० प्र श), मशीनें और धातुए (१५ प्र श), भोजन की वस्तुए (११ प्र श), ऊन (७ प्र श), अन्य सामान (३७ प्र श)।

युद्धपूर्व का वैदेशिक व्यापार—द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व जापान का अधिक व्यापार संयुक्तराष्ट्र के साथ होता था। जापान में २५ प्र. श. माल संयुक्त राष्ट्र से आता था और १७ प्र. श. माल वहां जाता था। इसके अतिरिक्त एक-तिहाई के लगभग आयात और निर्यात व्यापार जापान अपने आधीन देशों से करता था।

वर्तमान स्थिति—युद्ध के उपरान्त जापान के व्यापार को बड़ी हानि हुई है। इस की उत्पादन शक्ति भी बहुत गिर गई है। अब यहां का निर्यात पहले से १० प्र. श. ही रह गया है। अब व्यापार के पुनरुत्थान के प्रयत्न किये जा रहे हैं। १९५२ तक यहां के व्यापार को युद्धपूर्व स्तर पर लाने के लिये एक योजना बनाई गई है। अब जापान और राष्ट्र मंडल के पांच देशों अर्थात् आस्ट्रेलिया, भारतवर्ष, न्यूज़ीलैंड, दक्षिण अफ्रीका और संयुक्तराज्य (U K) के बीच एक व्यापारिक समझौता हो गया है। इस समझौते के अनुसार जापान इन देशों को सूती वस्त्र, मशीनें, कच्चा रेशम, रासायनिक पदार्थ, कृत्रिम रेशम, ऊनी वस्त्र, रेशमी वस्त्र और कागज भेजेगा और इनके बदले ये देश जापान को कच्ची ऊन, कच्चा लोहा, नमक, रुई, अनाज, पट्रोल, रबर, टीन, जूट, तिलहन, कोयला, मैंगनीज़ और चमड़ा देंगे।

जापान के व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह

जापान के मुख्य नगर और व्यापारिक केन्द्रों के नाम ये हैं—टोकियो, ओसाका, नागोया, कोबे, याकोहामा तथा क्योटो। ये सभी नगर एक दूसरे के समीप हैं और समुद्र से भी अधिक दूरी पर नहीं हैं।

ओसाका—यह जापान का एक औद्योगिक केन्द्र है। इसे प्रायः 'धूयें का नगर' कहते हैं। यहां कल-कारखानों की अधिकता के कारण सारे माल शहर में धुआं छाया रहता है। यह नगर सूती वस्त्रों के लिये विशेषकर प्रसिद्ध है। यह ओसाका की खाडी पर बसा हुआ है और जलमार्गों द्वारा जापान के सभी भागों और विदेशों से सम्बन्धित है। इस नगर में उत्तम जलमार्गों की सभी सुविधाएं हैं इसी कारण इसे 'जापान का वेनिस' भी कहते हैं। परन्तु इसके पृष्ठ प्रदेश में कच्चे माल की कमी है। इस नगर में सूत कातना, पुस्तक छापना, जिल्द बांधना, लोहे और स्टील की वस्तुएं तथा मशीन बनाना, कागज की वस्तुएं बनाना और जहाज बनाना आदि उद्योग होते हैं। नगर के भीतर और बाहर जलमार्गों की सुविधा, समतल और विस्तृत भूमि की अधिकता, कच्चे माल, ईंधन और मजदूरों की सुलभता और पूंजी की प्रचुरता के कारण औद्योगिक विकास में ओसाका जापान के अन्य सभी नगरों से बढ़ गया है।

कोबे—ओसाका से केवल २० मील के अन्तर पर एक बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय प्राकृतिक तथा गहरा है। समुद्रतट की एक पतली पट्टी पर स्थित होने के कारण यहां पर औद्योगिक विकास के लिये स्थान ही नहीं है। कोबे को ऊंची पर्वतमाला घेरे हुए है

इसी कारण यह नगर केवल दो मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। यहां पर दियासलाई, रबर की वस्तुए और जहाज बनाने के उद्योग होते हैं।

टोकियो—राजधानी है। यह नगर हान्शू के पूर्वी तट पर स्थित है। ससार का यह तीसरे नम्बर का महान् नगर है। योकोहामा और टोकियो इस के दो बन्दरगाह हैं। याकोहामा जापान के सर्वोत्तम पोताश्रयो मे से है। यह पोताश्रय गहरा, विस्तृत और सुरक्षित है। टोकियो छिछला है और इस मे बड़े-बड़े जहाज नही आ सकते। टोकियो के प्रमुख उद्योग पुस्तके छापना, जिल्द बाधना, बिजली का सामान बनाना, धातु के बर्तन और रबर और शीशे की वस्तुये बनाना है। यहा पर भूचाल अधिक आते हैं जिन से कारखानो और मकानो को बडी हानि होती है।

नागोया—यह नगर ओसाका और टोकियो के बीच हान्शू के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ है। इसका पोताश्रय कृत्रिम होने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। वायुयान बनाने वाला प्रसिद्ध मित्सुबीशी (Mitsubishi) कारखाना इसी नगर मे है। कच्चे रेशम की रीलें बनाना यहा का प्रमुख धधा है। यहा पर मिट्टी और चीनी के बर्तन और सूती वस्त्र भी बनाये जाते हैं। क्योटू जापान का प्राचीन औद्योगिक नगर है। जापानी साम्राज्य का यह सस्कृति केन्द्र भी है। वाकायामा ओसाका से ४० मील दक्षिण की ओर एक प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है।

कोरिया (चोसन)

सामान्य परिचय—कोरिया पहले जापान के अधिकार मे था परन्तु अब स्वतन्त्र है। यह देश पहाडी है। इसके पूर्वी और उत्तरी भाग अधिक पहाडी और दक्षिणी और पश्चिमी भाग समतल मैदान हैं। खेती योग्य भूमि इन्ही मैदानो मे है। देश का ७६ प्र श भाग वनों से ढका है। वृक्षो को आजादी से काटा जाता है और उनके स्थान पर फिर पेड नही बोये जाते। इसी कारण यहा के वनो की दशा अच्छी नही है। और दक्षिणी पहाडिया अब बिल्कुल नगी रह गई हैं। उत्तरी और मध्य कोरिया के पहाडी वन प्रदेशो में खेती होने लगी है। लोग जगलो को जला डालते हैं और इस प्रकार साफ की हुई भूमि पर गेहू और मोटे अनाज बोये जाते हैं। जब उपज कम होने लगती है तो किसान *अन्य भागों में इसी प्रकार भूमि साफ कर लेते है। इसी प्रकार पुराने वन अब नष्ट* हो गये हैं। पूर्वी तटीय प्रदेश पतला होने के कारण खेती के योग्य नही है। खेती तो अधिकतर पश्चिमी मैदानों में ही सीमित है। खेती योग्य भूमि कुल भूमि की २१ प्र श है। *चावल, बाजरा, तम्बाकू, लोबिया, कपास इत्यादि मानसूनी प्रदेशो की फसलें* बोई जाती हैं। चावल सब से अधिक भाग (खेती योग्य भूमि के २७ प्र श) पर बोया जाता है और यहा की प्रधान उपज भी है। उत्तरी कोरिया में गेहू और जौ गर्मियो मे बोये जाते हैं। जापानियों ने कपास की खेती को भी प्रोत्साहन दिया है। सोना, लोहा और कोयला यहा के मुख्य खनिज पदार्थ हैं।

सिओल—राजधानी है और रेल द्वारा मुकडन से मिला हुआ है।

दूसरे महायुद्ध के बाद—कोरिया का देश ८५,२२६ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है। यहाँ की आबादी २५० लाख है। चीन, जापान और रूस से घिरा होने के कारण कोरिया की आज़ादी हमेशा संकट में रही है। सन् १९१० से सन् १९४५ तक यह जापान के अधिकार में था। सन् १९४५ में ३८° उत्तरी अक्षांश रेखा को आधार व विभाजक मानकर इसे दो भागों में बांट दिया गया। उत्तरी कोरिया में रूस का आधिपत्य हुआ और दक्षिणी कोरिया में अमरीका का। सन् १९४८ में दोनों राष्ट्रों की सेनायें हट गई और उत्तरी व दक्षिणी कोरिया के राष्ट्र स्वतंत्र हो गये। वास्तव में ये दोनों प्रदेश एक ही हैं परन्तु प्राकृतिक सम्पत्ति के कारण उत्तरी कोरिया ने अधिक तरक्की की है। उत्तरी कोरिया में कोयला व लोहा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं यद्यपि सोने की खानें दक्षिणी कोरिया में हैं। उत्तरी कोरिया में उद्योग-धंधे भी खूब विकसित हैं और सूतीवस्त्र बनाना, जलविद्युत उत्पन्न करना, रासायनिक वस्तुएं, सीमेन्ट और तेल साफ करना यहाँ का मुख्य उद्योग है। उत्तरी कोरिया भोजन के दृष्टिकोण से भी आत्म-निर्भर है।

उत्तरी कोरिया में ४८००० वर्गमील क्षेत्रफल है और ८० लाख आदमी रहते हैं। दक्षिणी कोरिया का क्षेत्रफल ३७००० वर्गमील है और जनसंख्या २०० लाख है।

पिछले दो सालों में उत्तरी व दक्षिणी कोरिया के बीच युद्ध के कारण, वहाँ की खेती व उद्योगधंधों को बड़ी हानि पहुंची है।

कोरिया में ३५०० मील लम्बे रेल-मार्ग हैं और पूसान, सैनसिहो तथा प्यूमान क्रमशः रेशम, लोहे व रासायनिक उद्योगों के लिये प्रसिद्ध हैं।

फारमोसा

इसे ताइवान भी कहते हैं। यह द्वीप पश्चिमी प्रशान्त महासागर में स्थित है। फारमोसा का जलडमरूमध्य इसे चीन से अलग करता है। इसकी लम्बाई २५० मील और औसत चौड़ाई ८० मील है। यहाँ की आबादी ४० लाख है। यह द्वीप भी पहाड़ी है और इसकी जलवायु उष्णकटिबन्धीय देशों के समान है। आबादी अधिकतर पश्चिमी और उत्तरी मैदानों में है। मैदानों में चीनी लोग रहते हैं और पहाड़ी ढालों पर मलाया के लोग बस गये हैं।

फारमोसा की ७५ प्र० श० भूमि पर वन फैले हैं। उष्णकटिबन्धीय मैदानी जंगल तो चीनी लोगों ने काट डाले हैं इसीलिये लकड़ी इत्यादि की प्राप्ति केवल पहाड़ी कोणधारी वनों से ही होती है। यहा के पहाड़ी वनों से भिन्न-भिन्न उपज की प्राप्ति होती है। इन में सब से महत्वपूर्ण वस्तु कपूर है। यहा की भूमि तथा जलवायु खेती के योग्य है और यहा की मुख्य फसलें चावल, चाय और ईख हैं।

कीलंग—यहा का मुख्य व्यापारिक केन्द्र व बन्दरगाह है।

चीन

स्थिति, सीमा, विस्तार—चीन का देश एशिया का एक-चौथाई क्षत्रफल घेरे हुए है और एशिया की आधी आबादी भी यही रहती है। कोरिया साइबेरिया, रूसी तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, भारत, ब्रह्मा और इन्डोचीन आदि देश इसकी सीमा बनाते है। इसका क्षत्रफल ४४ लाख वर्गमील है जाकि रूस को निकाल कर यूरोप के बराबर है। वास्तव म यह एक महादेश है। इसम २० बड बड प्रान्त है जो विस्तार तथा आबादी म यूरोप के कई देशो से कम नही है।

तट रेखा—चीन की तट रेखा लियोकिंग में यालू नदी के मुहान से लेकर दक्षिण पश्चिम म क्वाटूग के युगिंग तक ५४३० मील लम्बी है। इसके उत्तरी तट पर छिछले रेतीले किनारे है जिन म से नदियो न काट कर मार्ग बना लिय है और इन्ही मार्गों द्वारा गमनागमन हो सकता है।

तीन भाग—चीन के तीन भाग है—(१) चीन खास (२) पूर्वी तुर्किस्तान और (३) तिब्बत। मगोलिया और मचूरिया के देश जो पहले चीन के अधिकार में थ अब इससे अलग हो गये है।

चीन की अवनति के कारण—चीन एक विशाल देश है। यह कृषि खनिज और वन-सम्पत्ति से सम्पन्न है। यहा की भूमि उपजाऊ है और नदियो द्वारा सिंचाई हो सकती है। इतन साधनों के होते हुए भी चीन एक पिछड़ा हुआ देश है। विश्व व्यापार में इसका स्थान नगण्य है। अनेक भौगोलिक कारणो से यह देश आर्थिक उन्नति नही कर सका है। इसके पूर्वी भाग को छोड कर सारा देश पहाडो और रेगिस्तानो से भरा हुआ है। इसी कारण पृथ्वी के अन्य भागो से इसका सम्बन्ध स्थापित नही हो सका है। इसी पृथक्ता के कारण यहा के निवासी निर्धन, अशिक्षित तथा अन्य देशो की घटनाओं से अनभिज्ञ रह गये। यूरोप और अमरीका से चीन के सम्पर्क को अभी १०० वर्ष भी नही हुए है। चीन का पूर्वी भाग ही समुद्र से सम्बन्धित है। चीन के पश्चिमी भागो की उपज लम्बी दूरी और मार्गों की असुविधा के कारण पूर्वी तट पर आसानी से नही लाई जा सकती। नाना प्रकार की जलवायु और उपज होन के कारण यहा वैदेशिक व्यापार की आवश्यकता हो प्रतीत नही होती। एक प्रदेश मे भोजन की वस्तुओ की कमी पडने पर दूसरे भागो से उसकी पूर्ति हो जाती है। रेलें केवल उत्तरी भाग म ही है। दक्षिणी भाग म रेलो की कमी है। यहा की सरकार निर्बल है और विदेशियो को सदेह की दृष्टि से देखती है। विदेशी व्यापारी और विदेशी जहाज थोडे से बन्दरगाहो पर आ सकते है जिन्हे सधि बन्दर' कहते है।

भावी आशा—चीन इतना साधन सम्पन्न और घना बसा हुआ देश है कि भविष्य म यह एक महान् औद्योगिक देश और ससार की बडी मडी हो सकता है। यहा के अधिकतर निवासी बडे मेहनती, विनम्र, हसमुख तथा काम पर अडन वाले हैं।

चावल की खेती—चीन के निवासियों का मुख्य धंधा खेती है। यहां की मानसूनी जलवायु और उपजाऊ भूमि खेती के अनुकूल है। ह्वांगहो, यांगटसीक्यांग और सीक्यांग नदियों के बेसिनों में खेती की सभी सुविधाएं हैं। चावल की खेती सारे ही देश में होती है। यांगटसीक्यांग नदी के समस्त बेसिन में चावल प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होता है। यहां की प्रति एकड़ चावल की उपज का औसत १६०० पौंड है। इस देश के किसान मेहनती हैं। खूब खाद डालते हैं और भूमि उपजाऊ है इसीलिये उपज भी अधिक होती है।

अन्य फसलें—कपास की खेती उत्तर-पूर्वी तटीय भागों विशेषकर क्यांगसू, शान्टुंग और होपिआई (Hopei) में होती है। क्यांगसी और फुकीन (दक्षिण-पूर्व में) चाय के लिये प्रसिद्ध हैं। तम्बाकू अनेक प्रान्तों में होता है और इसका घरेलू उपयोग और निर्यात भी काफी होता है। इनके अतिरिक्त रेशम, सोयाबीन, ईख और अनेक प्रकार के पौधे भी यहां मिलते हैं।

खेती में सुधार योजना—चीन में खाद्यान्नों की कमी है इसी कारण यहां की सरकार खेती की उपज विशेषकर खाद्यान्नों की उपज को बढ़ाने में प्रयत्नशील है। १९४६-४७ में चीन में २ करोड़ २० लाख मीट्रिक टन गेहूं और ४ करोड़ ८० लाख मीट्रिक टन चावल उत्पन्न हुआ था जबकि यहां २ करोड़ ४० लाख मीट्रिक टन गेहूं और ५ करोड़ १० लाख मीट्रिक टन चावल की आवश्यकता पड़ती है। हाल ही में चीन सरकार ने एक योजना बनाई है जिसके अनुसार किसानों को अपनी भूमि को सुधारने के लिये आर्थिक सहायता दी जाया करेगी।

पशु-सम्पत्ति—उत्तरी शुष्क भागों में घोड़े और खच्चर माल ढोने के काम आते हैं। चौपाये देश के सभी भागों में पाले जाते हैं। उत्तरी और पश्चिमी भागों में असंख्य भेड़ें हैं। पश्चिम के सेचवान (Szechwan), उत्तर पूर्व के शान्टुंग होपे (Hopei) और अन्हवे (Anhwei) और दक्षिण पूर्व के क्वान्टुंग प्रदेशों में सुअर पाले जाते हैं।

चीन की खनिज सम्पत्ति—चीन में खनिज सम्पत्ति पर्याप्त मात्रा में है। ऐसा अनुमान है कि चीन में कोयले का भंडार संयुक्तराष्ट्र अमरीका को छोड़कर संसार में सबसे अधिक है। यहां पर कोयले की बड़ी बड़ी खानों के निम्नलिखित प्रदेश हैं—(१) शान्टुंग पर्वत, (२) शांसी प्रान्त, (३) सेचवान (Szechwan) और (४) यूनान। इनके अतिरिक्त छोटी २ खानें देश भर में बिखरी हुई हैं। खनिज पदार्थों का सबसे महत्व-पूर्ण प्रदेश सेचवान और यूनान के मध्य का भाग है जिसमें सभी खनिज पदार्थ मिलते हैं। टंगस्टन धातु, जिसको मिलाकर स्टील और बिजली के बल्बों के न जलने वाले तार बनाये जाते हैं चीन में इतनी अधिक पाई जाती है कि संसार की मंडी पर चीन का ही अधिकार है। यह धातु क्यांगसी, हूनान और क्वान्टुंग में पाई जाती है। चीनी टंगस्टन का प्रधान ग्राहक जर्मनी है। **लोहा** भी कई स्थानों पर मिलता है परन्तु बहुत ही कम और निम्नश्रेणी का होता है। चीन में लोहे का बड़ा अभाव है। लोहे का मुख्य क्षेत्र यांगटसी

क्याग की घाटो में है। सुरमे में चीन का ससार पर एकाधिकार है। इस धातु का प्रयोग सीसे को कठोर बनाने और टाइप के लिये उपयुक्त धातु बनाने मे होता है। सुरमा सबसे अधिक हुनान (Hunan) मे मिलता है। क्वान्टुग, यनान, क्यागसी और क्वीचाऊ में भी थोडा बहुत पाया जाता है। चीन मे टीन भी बहुमूल्य खनिज पदार्थ है। यह अधिकतर दक्षिणी पश्चिमी चीन के उस टीन प्रदेश में पाया जाता है जोकि मलाया मे से होता हुआ इन्डोनेशिया तक चला गया है। इस प्रदेश मे अधिकतर टीन यनान, क्यागसी और हुनान प्रान्तो में मिलता है। इन धातुओ के अतिरिक्त चीन मे सोना, ताबा, ऐस्ब्रेस्टोस, जिप्सम तथा ग्रेफाइट भी पाये जाते हैं।

खनिज उद्योग विकास में बाधाएं—चीन की प्रमुख खानें देश के भीतरी भागो मे स्थित है इसी कारण उनका भली भाति और पूरा-पूरा उपयोग नही किया जा सकता है। यहा पर यातायात के साधनो का अभाव है और खनिज क्षेत्रो से बन्दरगाह बहुत दूर पडते है। लोहा और कोयला पास-पास नही मिलते। यहा के खनिज उद्योग के विकास मे यही बडी बडी बाधाए हैं।

शिल्प उद्योग भी अविकसित दशा में है। यहा पर पुराने ढगो से काम होता है और कारखानो की उपज कठिनता से देश की माग की पूर्ति कर सकती है। यहा पर रेशमी, ऊनी तथा सूती वस्त्र, सिगरट, वनस्पति तेल, मिट्टी के बर्तन तथा सुनहरी वार्निश के पीतल के बर्तन बनाने के कारखाने है। हाल ही में लोहे और स्टील के कारखानो की ओर भी ध्यान गया है। शघाई मे जहाज बनाने का कार्य भी आरम्भ हो गया है।

आवागमन के साधन—चीन देश का धरातल अधिकतर पहाडी और पठारी है इसलिये सडको, रेलो और नदियो द्वारा आवागमन बडा कठिन है। यहां पर कुल १०,००० मील लम्बा रेलमार्ग है। यहा बहुत-सी सडके भी हैं जिनके द्वारा भीतरी व्यापार किया जाता है। १९४० मे कुल राजमार्गो (सडको) की लम्बाई ७१,००० मील थी। यहा पर व्यापारिक महत्व की प्रसिद्ध सडके निम्नलिखित है। शेचवान से हुनान तक, हान्चुग से पेहो तक, शेचवान से यन्नान तक, लाशान से सीचाग तक और सीचाग से सियागून (Hsiangun) तक।

चीन की नदियाँ और उनके मार्ग—चीन की नदिया सिचाई और माल ढोने दोनो ही दृष्टियो से बडी महत्वपूर्ण है। यहा की प्रधान नदिया यागटसीक्याग, ह्वागहो, सीक्याग तथा पीहो है। यागटसीक्याग मे मुहाने से १००० मील तक जहाज आ सकते हैं। मध्य चीन में व्यापार, उद्योग और आवागमन सम्बन्धी यही प्रमुख मार्ग है। इसी के द्वारा चीन के अनेक भाग वैदेशिक व्यापार के लिये खुल गये हैं। चीन की दूसरी बडी नदी ह्वागहो या पीली नदी है। इस नदी की बाढ के कारण लाखो जानो और असख्य धन की हानि हुई है। यह नदी २७०० मील लम्बी है। परन्तु इसमे नावे नही चल सकती। इसकी धारा तेज है, कहीं-कहीं झरने है या नदी के पेटे मे रेत भर जाने से बहुत छिछली हो गई है जिससे

इसमें छोटी-छोटी नावें ही चल सकती हैं, होनान के कुछ भाग में और अपने मुहाने से केवल २५ मील तक ही इसमें धुवाकश चल सकते हैं। सीक्याग नदी यूनान के पहाड़ो से निकलती है और पूर्व की ओर बहती है। इस नदी में सर्वत्र ही नावें चलाई जा सकती हैं।

आबादी—चीन में कभी जनगणना नहीं हुई इसीलिये यहां की जनसंख्या के विषय में लोगो के भिन्न भिन्न अनुमान हैं। नवीनतम सूचना के अनुसार यहा की आबादी तिब्बत, मंगोलिया और समुद्र पार स्थित चीनियों को मिला कर ४५ करोड ६० लाख हैं।

चीन की आबादी का वितरण बड़ा ही विषम है। सब से अधिक आबादी के प्रदेश निम्नलिखित हैं —(अ) तटीय मैदान, जो उत्तर में मंचूरिया की सीमा से दक्षिण में हैनान द्वीप तक फैला है, (ब) ह्वागहो, यागटसीक्याग तथा सीक्याग नदियों के मैदान और (स) पी हो की घाटी।

चीन में आबादी का वितरण—नदियों की लाई हुई मिट्टी, पर्याप्त जल-वृष्टि और गर्मियों के उच्च तापक्रम के कारण ये सभी प्रदेश खेती के योग्य हैं। चीन की अधिकतर आबादी का निर्वाह खेती पर है। तीनों बड़ी नदियों के निचले बेसिनों की आबादी का प्रति वर्गमील औसत ५०० मनुष्यों से भी अधिक पड़ता है। तिब्बत, सिनक्याग और मंगोलिया मरुस्थलीय पठार हैं अतः यहा आबादी भी कम है। इन प्रदेशों में आबादी का औसत कहीं भी १६ व्यक्ति प्रति वर्गमील से अधिक नहीं है। यूनान यद्यपि एक प्लेटो है परन्तु इसमें कई उपजाऊ घाटियां और बहुमूल्य खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। इसी लिये इस प्रदेश में भी घनी आबादी है।

चीन की तीनों नदियों के बेसिनों में भिन्न भिन्न प्रकार की भू रचना, मिट्टी, जलवायु तथा उपज पाई जाती है और ये तीन विभिन्न प्राकृतिक प्रदेश बनाते हैं जिनका वर्णन साथ के पृष्ठ की तालिका में दिया गया है।

वैदेशिक व्यापार—वैदेशिक व्यापार में चीन बहुत ही पीछे है। रेशम, कपास, चाय, कोयला और सोमिया ही चीन की व्यापारिक उपज हैं। इसीलिये चीन विदेशों को कच्चा माल अधिकतर भेजता है। इनके सिवाय यहां से टीन, चीनी, खाल, बरतन और काम की धनी हुई वस्तुएं भी बाहर भेजी जाती हैं। यहा के निर्यात की वस्तुओं में सूती वस्त्र, धातु के बरतन, मशीन, जहाज बनाने का सामान, अस्त्र-शस्त्र, गोलाबारूद, दियासलाई और अफीम सम्मिलित हैं। यहा के व्यापार का अभी श्रीगणेश ही हुआ है और यहा के व्यापार में भावी उन्नति की बड़ी आशा है।

व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह—चीन के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं—टीन्टसिन, शघाई, हेंग्चाऊ (Hongchow), कैन्टन, नानकिंग, हैंकाऊ और फ्यूचौ।

शघाई—चीन का सब से प्रसिद्ध बन्दरगाह है। चीन का ४० प्र० श० से भी अधिक वैदेशिक व्यापार इसी के द्वारा होता है। यह यागटसीक्याग नदी के मुहाने के समीप एक ज्वार-युक्त स्टान पर स्थित है। यहा पर रेशमी और सूती वस्त्रों के कारखाने हैं। आधुनिक चीन

का यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है और यागटसीक्याग का प्राकृतिक मार्ग है। इसका पोताश्रय कम गहरा है, इसी कारण बड़े-बड़े जहाजो को तट से दूर लगर डालना पड़ता है।

नदियो के बेसिन	जलवायु	भूमि की प्रकृति	उपज
(१) ह्वागहो (उत्तरी चीन)	शीतोष्ण मानसूनी, जाड़ो मे बड़ा जाड़ा और शुष्क गर्मी मे गर्म और वर्षायुक्त	(अ) पी-ह्वो की घाटी (ब) लोयस मिट्टी का मैदान (स) बाढ के मैदान	गेहू, जौ, बाजरा और सोयाबीन
(२) यागटसी-क्याग (मध्य चीन)	उपोष्णकटिबधीय मानसूनी—सभी ऋतुओ मे वर्षा होती है	(अ) लाल नदी का बेसिन (ब) ईचाग की तग घाटिया (स) मध्य के मैदान (द) डेल्टा प्रदेश	चावल, चाय, कपास, रेशम, कोयला और लोहा
(३) सीक्याग (दक्षिणी चीन)	उष्णकटिबधीय मानसूनी सभी — ऋतुओ मे गर्मी तथा वर्षा	(अ) पश्चिम में यत्रान का उच्च पठार (ब) डेल्टा प्रदेश	चावल, कपास, रेशम

हैकाऊ—यागटसीक्याग और हान नदियो के सगम पर स्थित है। यह एक प्रसिद्ध नदी-बन्दर है और यहा पर रेशमी और सूती वस्त्रो और स्टील बनाने के कारखाने है।

टीन्टसिन—यह पीपिग का बन्दरगाह है और उत्तरी चीन की उपज के लिये प्रमुख द्वार है।

नानकिंग—चीन की राजधानी है, यहा रेशमी और सूती वस्त्रो के कारखाने है।

हागकाग—दक्षिणी चीन मे सीक्याग के मुहाने के समीप एक द्वीप पर स्थित बन्दरगाह है। यह अग्रेजो के अधिकार मे है परन्तु व्यापार के लिये सभी देशो को आजादी है। इसका पोताश्रय बड़ा ही उत्तम और आदर्शरूप है। आस्ट्रेलिया, भारत और सयुक्त राज्य (U K) के बीच यह बन्दरगाह एक पुनर्निर्यात केन्द्र का काम करता है।

विक्टोरिया—यह भी द्वीपस्थित एक नगर है और दक्षिणी चीन की उपज के लिये व्यापार का द्वार है।

मचूकुओ

स्थिति, विस्तार तथा उपज—पहले इसे मचूरिया कहते थे। वैसे तो यह देश स्वाधीन है परन्तु जापान के आर्थिक प्रभाव के क्षेत्र में है। यह देश मगोलिया के पठार के पूर्व मे स्थित है, इसका क्षेत्रफल ४,६०,००० वर्गमील है। सारा का सारा ही देश मैदान है और इसके उत्तरी भाग मे आमूर नदी बहती है। यद्यपि यहा के लोग खेती पर ही निर्भर हैं परन्तु यहा केवल १४ प्र श भूमि ही खेती के योग्य है। शेष भागों पर जगल, चरागाह अथवा बजर भूमि है। सोयाबीन, गेहू, बाजरा, मक्का, जौ और चावल यहा की खेती की प्रधान उपज है। यहा खेती योग्य भूमि के एक-चौथाई भाग पर सोयाबीन बोया जाता है और ससार भर की आधी सोयाबीन यही उत्पन्न होती है। इसीलिये मचूकुओ 'ससार का सोयाबीन प्रदेश' कहलाता है। यहा की सबसे प्रधान उपज सोयाबीन है। इससे चटनी, मुरब्बे या शाक-भाजी बनती है। इससे तेल भी निकाला जाता है जो छतरिया, वार्निश, बरसाती, साबुन और स्याही बनाने में काम आता है।

खनिज पदार्थ—मचूकुओ में खनिज पदार्थों की कमी नही है। सोना, कोयला और लोहा यहा पर निकाला जाने लगा है। खेती की उपज और खनिज सम्पत्ति के कारण यहा पर कारखानो का विकास भी आरम्भ हो गया है और विशेषकर दक्षिणी भागों में। यहा के कारखाने जापानियो के प्रबन्ध में है।

यातायात के साधनों की कमी—यातायात के साधनो की सुविधाए न होने के कारण देश की उन्नति में बाधा पडती है। सडक कीचड से भरी रहती है। रेलो के विकास होने पर देश मे उन्नति सम्भव होगी। **मुकडन**—यहा की राजधानी है। टीन्टसिन और पोर्टआर्थर से इसका सम्बन्ध है। **न्यूच्वांग और डेरियन** यहा के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

मचूकुओ की महत्ता—मचूकुओ की आर्थिक सम्पत्ति तथा भौगोलिक स्थिति के कारण इसके तीनो पडौसी देश अर्थात् चीन, जापान और रूस इसकी ओर सदैव आकर्षित रहते हैं। रूस यहा के हिमयुक्त बन्दरगाहो पर सदा आखें लगाये रहा। चीन ने अपनी अतिरिक्त जनसख्या के लिये इसे अपना उपनिवेश बनाना चाहा। परन्तु दूरपूर्व का यह बहुमूल्य उपहार जापान को प्राप्त हुआ और १९४५ तक इसपर जापान का ही राजनैतिक और आर्थिक प्रभाव रहा।

जापान मचूकुओ को प्राप्त करने के लिये जी-जान से लगा था। इसके कई कारण थे —(१) जापान और रूस के युद्ध के समय मचूकुओ प्रथम रक्षा पक्ति का काम देता, (२) मचूकुओ की कृषि, पशु तथा खनिज सम्पत्ति से जापान को अपने कारखानो के लिये कच्चे माल की प्राप्ति होती, (३) जापान में आबादी बहुत बढ गई थी और देश पर भार स्वरूप थी। मचूकुओ में कम आबादी के कारण जापानी लोग मचूकुओ में प्रवास कर सकते थे, (४) जापानी तैयार माल की मचूकुओ मे बडी खपत होती।

फिलीपाइन द्वीपसमूह, इन्डोचीन और इन्डोनेशिया

मलाया प्राय द्वीप, थाइलैंड तथा इन्डोचीन की जलवायु मानसूनी है। इन्डोनेशिया और मलाया प्रायद्वीप के कुछ भागों की जलवायु भूमध्यरेखीय है।

फिलीपाइन द्वीपसमूह

फिलीपाइन १९४६ से पूर्व संयुक्त राष्ट्र अमरीका के आधीन था। इसके पश्चात् जुलाई १९४६ म यह देश प्रजातन्त्र राज्य बन गया।

विस्तार, आबादी तथा खेती—इस देश का कुल क्षेत्रफल १,१५,००० वर्गमील तथा आबादी १,३०,००,००० हैं। यहा की अधिकतर आबादी लूजोन, सीबू द्वीप और बोहोल तथा पनय और नग्रोस (Paney and Negros) के कुछ भागों मे सीमित है। मिडानाऊ, पालावान, मिडोरो, बसीलान तथा समर द्वीपों मे आबादी बहुत कम है। इस प्रकार फिलीपाइन में आबादी की समस्या सख्या सम्बन्धी नहीं परन्तु अनुचित विभाजन सम्बन्धी है। इस समस्या का हल यह हो सकता है कि घन बसे हुए प्रदेशों में मनुष्यों को अविकसित परन्तु साधन-सम्पन्न मिडानाऊ के द्वीप मे प्रवास करने के लिये प्रोत्साहन दिया जाय। यहा की समस्त भूमि के केवल १४ प्र श भाग पर ही खेती होती है। ३५ लाख मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। चावल, ईख, मक्का, नारियल, तम्बाकू और मनीला पटुआ यहा की प्रधान उपज हैं। यहा के निवासी अधिकतर चावल खाते हैं। भोजन की वस्तुओं के विचार से यह देश आत्मनिर्भर नही है। १९३६ म यहा की सरकार ने समीपवर्ती देशों से चावल मगाने के लिये एक "राष्ट्रीय चावल तथा अनाज सघ" की स्थापना की। जब य द्वीप जापान के अधिकार मे थे तब यहा पर अनाज, मीठे आलू और अन्य खाद्य पदार्थों के उत्पादन को प्रोत्साहन दिया गया जिससे बाहर से आये हुए अनाज पर निर्भरता कम हो जाये। यहा खेती की ६० प्र श भूमि पर चावल और मक्का की उपज होती है।

चीनी का निर्यात—चीनी का उत्पादन निर्यात के लिये होता है। साधारण दिनों म चीनी का निर्यात मूल्य यहा के समस्त निर्यात का एक-तिहाई से भी अधिक होता है। यहा प्रतिवर्ष १० लाख टन चीनी का उत्पादन होता है। परन्तु स्थानीय उपभोग म १,१८,००० टन से अधिक चीनी नही लगती। इसी कारण पर्याप्त मात्रा मे चीनी बाहर भेजी जाती है।

नारियल की वस्तुएँ, तम्बाकू और मनीला पटुआ—नारियल तथा उससे बनी हुई वस्तुओं का भी यहा से अधिक निर्यात होता है और इस काम मे यहा के ४० लाख व्यक्तियों का निर्वाह होता है। यहा पर २ लाख मीट्रिक टन वजन का मनीला पटुआ पैदा होता है जो सयुक्तराष्ट्र और सयुक्तराज्य को भेज दिया जाता है। तम्बाकू से सिगार

बनते हैं जो ८८ प्र श संयुक्त राष्ट्र में भेज दिये जाते हैं। इस काम में यहा ६ लाख मनुष्य लगे हैं। जापानियों ने तम्बाकू उत्पादन को बड़ा प्रोत्साहन दिया है।

खनिज सम्पत्ति—खनिज पदार्थों का विकास भी हो रहा है। सोना पिछले दस वर्षों से खूब निकाला जा रहा है। लोहा, तांबा, मेंगनीज और क्रोम भी यहा निकलते हैं। इन मूल धातुओ का उत्पादन १९४० में १५ लाख टन के लगभग हुआ था। इस देश में तेल और कोयले की भारी कमी है।

उद्योग-धधे—फिलीपाइन में उद्योग-धधों का विकास बहुत कम हुआ है। यहा पर सिगरट, रस्से, चमकदार बटन और टोप बनते हैं। कपड़ो पर कसीदा काढ़ा जाता है और फलों को डिब्बों में भरा जाता है।

निर्यात तथा आयात—फिलीपाइन से चीनी, नारियल का तेल, गोले की गिरी, तम्बाकू, कढे हुए वस्त्र और इमारती लकडी का बाहर के देशों को निर्यात किया जाता है। सूती वस्त्र, लोहे और स्टील की वस्तुए, गाडिया, रेशमी वस्त्र, कागज, भोजन की वस्तुए, सिगरट, खनिज तेल, रासायनिक पदार्थ, दवाइया, खाद और यातायात की मशीने बाहर से यहा मगाई जाती है। सूती वस्त्र, लोहे और स्टील की वस्तुएँ और भोजन सामग्री अधिक मात्रा में आती हैं। निर्यात और आयात व्यापार अधिकतर संयुक्त राष्ट्र से होता है।

थाईलैंड (स्याम)

विस्तार तथा आबादी—इस देश का क्षेत्रफल २,००,००० वर्गमील से कम है। यह देश ब्रह्मा से भी छोटा है। यहा की आबादी १,५०,०००,०० (डेढ करोड) है। अधिकतर आबादी नदियो की घाटियों और मैदानों में सीमित है जहा चावल की उपज हो सकती है। मध्य थाईलैंड के मीनम और मीकाग नदियों के मैदानों में सब से घनी आबादी है। उत्तरी थाईलैंड में आबादी बहुत कम है। अधिकतर निवासी थाई जाति के हैं जो चिं थान से यहा आये थे। यहा पर चीनियो की सख्या २५ लाख है। ये लोग खाना और बगीचो में काम करते हैं। मध्य का मैदान जिस में मीनम नदी बहती है सब से अधिक उपजाऊ है। थाईलैंड के ऊपरी भाग में अनेक पहाडी श्रेणियां है।

खेती, खनिज तथा वन-सम्पत्ति—देश के ७० प्र श भाग पर वन फैले हुए हैं। समस्त क्षेत्रफल के केवल १० प्र श भाग पर खेती होती हैं। यहा के ८३ प्र श लोग खेती करते हैं। चावल यहा की मुख्य उपज है। नारियल, तम्बाकू, मिर्चे, कपास, रबड और सागौन की लकडी यहा की अन्य उपज की वस्तुए हैं। यहा पर खेती योग्य भूमि के ९४ प्र श भाग पर चावल बोया जाता है जिस के लिये सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। थाईलैंड के थोडे ही भाग पर चावल की खेती योग्य (७० इच के लगभग) वर्षा होती है। बाढ के पानी को खेतो तक ले जाने के लिये नहर और खाइया बनाई गई है। यहा पर अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं परन्तु टीन के अतिरिक्त अन्य वस्तुओ का विकास

अभी तक नहीं हो सका है। इस देश में वोल्फ्राम, सुरमा, कोयला, तांबा, सोना, लोहा, मैंगनीज, हीरे, चांदी, जस्ता और जिरकन (Zircon) की खानें हैं।

उद्योग-धंधे—यहां पर कोई विशेष उद्योग-धंधे नहीं होते। यहां की सरकार ने कुछ दिनों में एक कागज का, एक सूती वस्त्रों का और दो चीनी के कारखाने खोले हैं।

निर्यात तथा आयात वस्तुएं—यहां से भेजी जाने वाली प्रमुख वस्तुएं हैं —चावल, टीन, रबर और सागौन। यहां से चावल और सागौन की लकड़ी भारतवर्ष को जाती हैं। यहां पर बाहर के देशों से कपड़ा, धातु का सामान और मशीनें आदि आती हैं। भारतवर्ष से यहां पर सबसे अधिक और इसके अतिरिक्त सूती वस्त्र, सूत तथा अफीम मंगाई जाती है। थाईलैंड में पहले सूती वस्त्र जापान से आता था परन्तु जापान का एकाधिकार समाप्त हो जाने से भारत को सूती वस्त्र के बदले में चावल मंगाने का सुयोग प्राप्त है।

सरकार का कर्तव्य—*यहां की सरकार का कर्तव्य यह है कि यहां के उद्योगधंधों को विदेशियों के हाथों से निकाल ले। यहां का खनिज उद्योग अंग्रेजों और आस्ट्रेलियनों* के हाथों में, टीक के कारखाने अंग्रेजों के और चावल के कारखाने चीनी लोगों के हाथों में हैं। यहां की सरकार अब चावल के साथ-साथ कपास, तम्बाकू और सोयाबीन की खेती को भी प्रोत्साहन दे रही है।

प्रसिद्ध नगर—बैंगकाक—मीनम नदी पर स्थित है। यह राजधानी और प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इस नगर में बहुत-सी नहरें बहती हैं इसी कारण इसे 'पूर्व का वेनिस' कहते हैं।

मलाया

मलाया के तीन राजनैतिक विभाग हैं और यह देश ब्रिटिश प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत है। राजनैतिक विभाग ये हैं —(१) स्ट्रेट सैटिलमेंट, (२) मलाया राज्य संघ और (३) देशी राज्य।

आबादी का वितरण—१९३९ में मलाया की आबादी ५३ लाख थी। जनसंख्या के विभाजन में यहां पर कई विशेषतायें हैं। अधिकतर आबादी पश्चिमी भाग की उस पट्टी में है जिसकी औसत चौड़ाई ४० मील है और जो प्रायद्वीप में उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है। यह भाग बगीचे की खेती और खनिज पदार्थों के लिये प्रसिद्ध है। वनों की अधिकता के कारण पूर्वी भाग में आबादी कम है। यहां की आबादी में ४५ प्र. श. मलय *लोग हैं, शेष में चीनी, भारतीय तथा यूरोपीय हैं। चीनी लोग ३९ प्र. श. तथा* भारतीय १४ प्र. श. हैं।

खनिज पदार्थ—मलाया दुनिया भर में सब से अधिक टीन उत्पादन देश है। टीन यहां का विशेष खनिज पदार्थ है और कभी-कभी तो दुनिया भर का ४० प्र. श. टीन यहां निकाला जाता है। टीन पर निर्यात कर यहां की राजकीय आय का एक विशेष साधन

है। इस देश मे बाक्साइट, वोल्फाम, लोहा, मैगनीज, चूना, कोयला, सोना, चीनी मिट्टी और सलिया आदि विषमय खनिज पदार्थ भी मिलते है।

उपज की वस्तुएं—मलाया की विशेष उपज की वस्तुए रबर, नारियल, चावल, ताड का तेल, अनन्नास हैं। कहवा, चाय, तम्बाकू, केला आदि भी यहा उत्पन्न होते हैं। समस्त भूमि के ६५ प्र श भाग पर रबर की खेती होती हैं और १४ प्र श भाग पर चावल उत्पादन होता है जो घरेलू उपयोग में ही लग जाता है। यहा का चावल यहा के लिये पर्याप्त नही होता।

निर्यात तथा आयात की वस्तुएं—रबर, टीन, गोले की गिरी और डिब्बो में बन्द अनन्नास यहा से बाहर भेजा जाता हैं। यहा के निर्यात में ६० प्र श भाग टीन और रबर का होता है। कुल निर्यात का ३ प्र श भाग भारत मे आता है जिस में गन्ना, गोंद, लाख, कपडा और चमडा रगने का सामान होता हैं। मलाया विदेशो से चावल, चीनी, दूध, तम्बाकू, लोहा और स्टील, गाडिया, मशीने तथा खनिज तेल मगाता है। ६० प्र श चावल और सारा-का-सारा दूध बाहर से ही आता हैं। भारत से कोयला और कोक, सूती वस्त्र अनाज, चमडा, खालें और जूट का सामान यहा आता है।

उद्योग धंधे—रबर तथा टीन उद्योग मे अग्रेजों की पूंजी लगी हुई है। शेष वस्तुओ पर चीनी लोगों की। यह देश उद्योग प्रधान नही है। टीन गलाने के अतिरिक्त यहा पर शराब, रबर की वस्तुए, साबुन, दियासलाई, सिगार, बिस्कुट, चाय और अनन्नास को डिब्बो मे भरने के छोटे-छोटे उद्योग धधे किये जाते है।

भावी आर्थिक उन्नति—मलाया को भावी आर्थिक उन्नति दो बातों पर निर्भर है। पहली तो इसकी रबर के लिये विदेशो की लगातार माग और दूसरी यह कि देश मे एक ऐसे ढाचे की स्थापना की जाय जो उन वस्तुओ की उपज पर निर्भर न हो जिनकी कीमते बार-बार बदलती रहती है। कृत्रिम रबर के सयुक्त राष्ट्र में अधिक प्रयोग म आने से यहा की रबर का भविष्य तो अनिश्चित है। इसमें लाभ तभी हो सकता है जबकि रबर का उत्पादन कृत्रिम रबर की अपेक्षा सस्ता पडे।

सिंगापुर—आबादी ५ लाख है। सुदूर पूर्व का एक बहुत प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह एक पुनर्निर्यात केन्द्र है। यहा मलाया की उपज, रबर, टीन, गोला इत्यादि इकट्ठी करके सयुक्तराष्ट्र, सयुक्त राज्य (U K) और जापान को भेजी जाती हैं। यहा से अनन्नास, ममाले और लोहा भी विदेशों को भेजा जाता है।

इन्डोचीन

विस्तार, जनसंख्या तथा खेती की उपज—इन्डोचीन का क्षेत्रफल २,८६,००० वर्गमील और आबादी २,३८,००,००० के लगभग हैं। (इन्डोचीन के उस भाग को जहा अनामी लोगो की बहुलता है वीयटनाम कहते हैं। इस प्रजातन्त्र राज्य की नीव

१९४५ के आरम्भ में पडी थी) इन्डोचीन की आबादी में वितरण की बडी विषमता है। यहा के मैदानो की आबादी बहुत घनी और पहाडी प्रदेशो की बडी बिखरी है। यहा की आबादी का ७८ प्र श भाग यहा की भूमि के केवल १३ प्र श भाग पर ही बसा हुआ है। यहा के मैदानो में भी आबादी सर्वत्र एक समान नही है और न वे समान रूप से विकसित ही हुए हैं। लाल नदी (Red River) के उपजाऊ मैदानो की आबादी बहुत घनी है परन्तु कम्बोडिया के मैदान इतने घने बसे हुए और उपजाऊ नही हैं। इस अन्तर का विशेष कारण यह है कि लाल नदी (Red River) के मैदानो म रहने वाले अनामी लोग इन्डोचीन में सबसे बुद्धिमान और मेहनती है परन्तु कम्बोडिया के निवासी अधिकतर उदासीन है। इस देश के निवासियो का प्रधान उद्यम और आय का साधन खेती है। चावल यहा की प्रधान उपज है। यहा पर चावल का वार्षिक उत्पादन ७० लाख टन के लगभग होता है जिस म से १५ लाख टन निर्यात के लिये बच जाता है। दूसरी प्रधान उपज मक्का की है इस की भी काफी मात्रा निर्यात के लिये बची रहती है। इसके अतिरिक्त यहा पर तिलहन, नारियल, मिर्च और रबर की भी पर्याप्त उपज होती है। यहा पर ३ लाख टन मछली प्रतिवर्ष पकडी जाती है जिन म से ३० हजार टन मछलिया निर्यात की जाती है। इन्डोचीन म पशु-पालन का धधा महत्वपूर्ण नही है। यहा पर चौपाय खेती के काम के लिए पाले जाते है। दूध और मास का धधा नही किया जाता। पशुओ के लिये अच्छे चरागाह नही है। अधिकतर भूमि पर खेती की जाती है। इसीलिये पशु-पालन के धधे का विकास नही हुआ।

खनिज सम्पत्ति—इन्डोचीन खनिज सम्पन्न देश है परन्तु खनिज उद्योग का पूर्ण विकास नही हो सका है। यहा पर कोयला, टीन, जस्ता, वोल्फ्राम, सीसा, चादी, सुरमा, क्रोम, लोहा, फास्फेट्स, टगस्टन, मैंगनीज, बाक्साइट, ग्रेफाइट, ताबा और पहाडी नमक मुख्य खनिज पदार्थ है।

उद्योग धधे, निर्यात तथा आयात की वस्तुए—इस देश म चावल, चीनी, सीमेंट, अल्कोहल, सिगरट, साबुन और दियासलाई बनाने के कारखाने है। यहा से निर्यात की प्रमुख वस्तुए है —चावल, रबर, मक्का, कोयला, मछली, सीमट, चीनी, मिर्च, सिगरट, क्रोमियम, मैंगनीज, बीअर शराब और सोडियम क्लोराइड। यहा की आयात की वस्तुए है—औटी हुई कपास, लोहा और स्टील, कागज, कागज का सामान, रेशम, मशीने, मोटरकार और पुर्जे, कोयला तथा आलू इत्यादि। भारत यहा से चावल मगाता है और रूई, जूट का सामान और अफीम भेजता है।

हनोई—राजधानी है। यहा की आबादी १,२९,००० है।

साइगोन (Saigon) और फान राग (Phan Rang) यहा के प्रमुख बन्दरगाह है।

इन्डोनेशिया

द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व इस देश का नाम डच ईस्ट इन्डीज (पूर्वी द्वीपसमूह) था। १९४५ में इन्डोनेशिया वालों ने जावा, मदुरा तथा सुमात्रा में प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना की। अब डच सरकार ने भी इन्डोनेशिया को प्रजातन्त्र मान लिया है।

क्षेत्रफल तथा आबादी—इन्डोनेशिया का संयुक्त राज्य जनवरी सन् १९५० में अधिकृत रूप से माना गया। इसका क्षेत्रफल ७,३५,००० वर्गमील और आबादी ६ करोड़ १० लाख (१९३१) है। इन्डोनेशिया में जावा, मदुरा, सुमात्रा, बोर्नियो तथा अन्य कई छोटे-छोटे द्वीप सम्मिलित हैं जिनका पूर्व से पश्चिम तक विस्तार ३००० मील से भी अधिक है।

उपज की प्रमुख वस्तुएं—ईख, रबर, कोला, चाय, तम्बाकू, कहवा, मसीला पटुआ तथा इमारती लकड़ी यहा की उपज की प्रमुख वस्तुएं हैं। डच बोर्नियो, सिलीबीस, मारा-वाक और जावा के तेल क्षेत्र बड़े महत्वपूर्ण हो गये हैं। इनसे संसार का ३ प्र श तेल निकलता है। सुमात्रा में पालमबग (Palambang) तथा उत्तरी पूर्वी बोर्नियो में तारावान (Tarakan) यहा के दो प्रमुख तेल के केन्द्र हैं। संसार का १८ प्र श टीन भी इन्डोनेशिया में मिलता है। इसमें से दो तिहाई टीन बका द्वीप में और एक तिहाई बैलिटन में निकलता है।

इन्डोनेशिया में जावा द्वीप सबसे अधिक उन्नत है। यहा पर चीनी उद्योग बहुत ही उन्नत और संगठित रूप में है।

बटाविया तथा **सुराबिया** प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र हैं।

जकार्ता (बटाविया)—राजधानी और उत्तम पोताश्रय है।

(१) इन्डोनेशिया की आबादी, क्षेत्रफल और आबादी का घनत्व

द्वीपों के नाम	क्षेत्रफल	आबादी	प्रतिवर्ग मील आबादी का घनत्व
जावा तथा मदुरा	५१,०३५	४,१७,१८,३६४	८१८
सुमात्रा	१,८२,८६७	८२,५४,८४३	७८
बोर्नियो	२,०८,२८५	२१,६८,६६१	—
अन्य द्वीप	२,६०,८०४	१,८३,४३,४२४	६
इन्डोनेशिया	७,३३,००१	७,३८,८५,३६२	८२६

चीनी तथा यूरोपीय लोग—इन्डोनेशिया की आबादी में ९७४ प्र श इन्डोनेशिया वाले हैं। यूरोपियन और चीनी लोग केवल २५ प्र श हैं। इन में से ८० प्र श यूरोपियन जावा में और बाकी में से अधिकतर सुमात्रा में रहते हैं।



चित्र नं० ७१ ईस्ट इंडीज़—इंडोनेशिया के संयुक्त राज्य पूर्व से पश्चिम तक ३००० मील में फैले हैं।

२—आबादी का वितरण

द्वीपों के नाम	यूरोपियन	चीनी	अन्य एशियाई लोग	इन्डोनेशिया के निवासी
जावा और मदुरा	१,९७,५७१	५,८२,२३१	५२,३६०	४०,८,९१,०९३
अन्य द्वीप	४७,८४६	६,५०,७८३	६७,२६६	१,८२,४६,६७४

इन्डोनेशिया की खेती—इन्डोनेशिया में खेती दो प्रकार की होती हैं —कृषि और उद्यान कृषि (Plantation)। इन्डोनेशिया के निवासी तो खाद्य पदार्थों की कृषि स्थानीय उपभोग के लिये करते है। यहा की मुख्य उपज चावल की है जो खेती योग्य भूमि के ४५ प्र श भाग पर होती है, मक्का २३ प्र श भाग पर, जड़वाली फसले १४ प्र श भाग पर, दाले ६ प्र श पर और तम्बाकू २ प्र श भाग पर बोया जाता हैं। उद्यान कृषि का विकास डचो द्वारा हुआ है। इसकी मुख्य उपज की वस्तुएं रबर, गन्ना, कहवा, चाय, ताड का तेल, सिनकोना और तम्बाकू है। इन्डोनेशिया की उत्पादनशीलता का महत्व यहा की निर्यात वस्तुओ के मूल्य स भली भांति समझ म आ सकता है।

३—ससार की मंडियों में भेजी जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में इन्डोनेशिया का भाग समस्त विश्व व्यापार का प्रतिशत (१९३९ के अनुसार)

सिनकोना की छाल ९१%, रोयेदार घूहा ७२%, मिच ८६%, रबर ३७%, नारियल की बनी वस्तुए २७%, मीमल पटुआ ३८%, चाय १६%, गन्ने की चीनी ६%, महवा ५%, ताड के तेल से बनी वस्तुए २४%, पेट्रोल ८%, टीन २७%, वाक्साइट ७%।

४—१९३८ में व्यापार की दिशा समस्त व्यापार का प्रतिशत

देश	निर्यात	आयात
यूरोप	२७	५०
अमरीका	१५	१३
एशिया (मिंगापुर को छोड कर)	१३	२५
मिंगापुर	१७	[redacted]
अन्य देश	१८	५

निकट तथा मध्यपूर्व के देश

पाँच समुद्रों के देश—टर्की, सीरिया, ईराक, अरब, अफगानिस्तान, ईरान और फिलस्तीन आदि देश प्राय पाँच समुद्रों के देश कहे जाते हैं। पश्चिमी एशिया के इस भाग म कैस्पियन सागर, काला सागर, लाल सागर, भूमध्य सागर तथा ईरान की खाडी है। आर्थिक दृष्टि मे अरब, ईरान तथा अफगानिस्तान महत्वपूर्ण देश है। मध्य पूर्व के अधिकतर देशों में प्राकृतिक सम्पत्ति (साधनों) का अभाव है। इन देशों के औद्योगिक विकास म बहुत समय लगेगा। इन देशों को अपनी आवश्यक वस्तुए पश्चिमी अथवा पूर्वी देशों से मगानी ही पडेगी। थोडे बहुत औद्योगिक विकास के लिये भी इन देशों को खेती, जलविद्युत तथा सिचाई के विकास के लिये भारी २ यत्रों को विदेशों से ही मगाना पडेगा।

सीरिया

सामान्य विवरण—इस देश का क्षेत्रफल ६०,००० वर्गमील और आबादी ३० लाख है। यहा की आय का मुख्य साधन खेती है। इस देश के पश्चिमी भाग मे जहा भूमध्यसागरीय जलवायु है फल, अगूर, गेहू, कपास और जौ पैदा होते हैं। (यहा की गेहू और जौ की अतिरिक्त उपज से भारत को लाभ हो सकता है यदि उचित मूल्य पर इस देश मे समझौता हो जाय)। इसके मध्य तथा पूर्वी भाग म पशुओं के लिये चरागाह है। दमिश्क और बगदाद के बीच रेगिस्तान म से होकर सडक गई है। इसके अतिरिक्त बेरुत, दमिश्क, ट्रिपोली तथा लवेनन के अन्य नगरों के बीच उत्तम सडकें हैं। इस देश के औद्योगिक विकास म सुदृढ उन्नति होती जा रही है। यहा पर ऊनी और सूती कपडों के कई कारखाने खुल गये हैं। सीमेंट, साबुन, रेशम, दियासलाई, सिगरट और फलों को डिब्बों मे बन्द कर के भेजने के उद्योगों मे अच्छी उन्नति हुई है। यह देश खनिज पदार्थों

मे सम्पन्न तो नही है परन्तु यहा पर तेल, लोहा, सीसा, तावा तथा अन्य धातुओ का पता लगा है। सगमरमर और इमारती पत्थर यहा पर खूब मिलते है।

ट्रिपोली, बेरुत, और सईदा यहा के प्रमुख बन्दरगाह है।

अलीपो तथा दमिश्क प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है।

ईरान

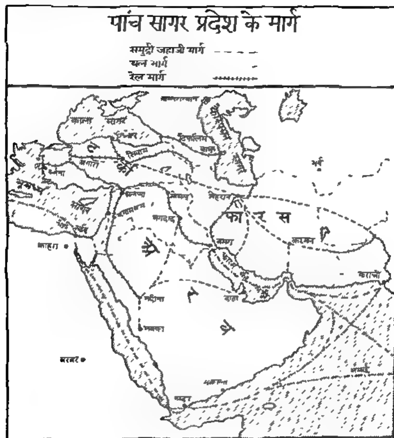
ईरान की जलवायु, उपज तथा तेल क्षेत्र—इस देश का क्षेत्रफल ६ लाख वर्गमील से अधिक और आबादी डेढ करोड के लगभग है। इसका भीतरी भाग पहाडी है। मध्य तथा पूर्वी भाग रेगिस्तानी है परन्तु दक्षिण पश्चिमी और कुछ उत्तरी भाग उपजाऊ है। यहा पर फल, गेहू, चावल, कपास और तम्बाकू सिचाई द्वारा उत्पन्न किये जाते है। ईरान मे सभी प्रकार की जलवायु पाई जाती है। फारिस की खाडी के तटीय भाग अत्यन्त गर्म और ऐल्बुर्ज पहाड के उच्च प्रदेश अत्यन्त ठडे है। जलवायु के विचार से इसके तीन भाग है —(अ) कैस्पियन सागरीय भाग, (ब) मध्य का पठार और (स) फारिस की खाडी का प्रदेश। मध्य प्रदेश मे कडी सर्दी पडती है। ईरान मे खनिज तेल, कोयला और लोहा पाया जाता है। परन्तु तेल के अतिरिक्त अन्य पदार्थ निकाले नही जाते। देश के दक्षिण पश्चिमी भाग मे २५ वर्गमील के लगभग क्षेत्रफल म तेल क्षेत्रो मे एक ब्रिटिश कम्पनी तेल निकालने का कार्य करती है। इन तेल क्षेत्रो को १४५ मील लम्बी नलो की दुहरी लाइन जोकि दारे-खजीना और अहवाज मे से जाती है, अबादान (Abadan) के तेल शोधन कारखानो मे मिलाती है। तेल उत्पादन मे ईरान का दुनिया भर मे चौथा नम्बर है।

तेल की स्थिति—ईरान मे अबादान के उत्तर पश्चिम स्थित ऐंग्लो ईरानियन कम्पनी के तेल क्षेत्रो मे १९४५ में १,७०,००,००० टन तेल निकला गया था। अबादान से तेल जहाजो द्वारा निर्यात कर दिया जाता है। इस कम्पनी को देशी मजदूरो द्वारा तेल निकलवाने मे बडी कठिनाई पडती है। फारिस की खाडी स्थित बहरीन (Bahrein) तेल क्षेत्र मे अब तेल कम होता जा रहा है। ऐंग्लो-ईरानियन कम्पनी मे ब्रिटिश सरकार का भाग ५२.५५ प्र श है। इस कम्पनी के अधिकार मे २५००० व्यक्ति कार्य करते है। *अब षाहरान मे एक नये तेल क्षेत्र का पता चला है। पिछले कुछ दिनो से ईरान की* सरकार और इस कम्पनी के बीच झगडा चल रहा है। जिसके कारण उत्पादन बन्द-सा है।

कोवेट (Kowait) तेल क्षेत्र मे जो कि फारिस की खाडी पर स्थित है, खूब तेल निकलता है। यहा से भी नलो द्वारा तेल जहाजो मे भर कर बाहर भेजा जाया करेगा।

खेती—ईरान की भूमि के बारहवे भाग पर खेती होती है। यहा पर मुख्य उपज की वस्तुए—गेहू, जौ, चावल और कपास है। चावल, ईख और तम्बाकू भी पैदा होते है।

सरकार ने यहा पर सिचाई की योजना बनाई है और यह आशा की जाती है कि देश की उपज में शीघ्र ही वृद्धि होगी।



चित्र न० ७२

उद्योग धंधे—ईरान में वर्तमान ढग के अनेक कारखाने खुल गये हैं। कराज, कहरीज़ाक (Kahrizak) और शाहाबाद में बडे २ चीनी के कारखाने हैं। शाही, तबरेज, तेहरान और यज्द म सूती कपडे के, तबरेज और इस्फहान में ऊनी कपडे के और चालूस में रेशमी कपडे के कारखाने हैं। यहा पर सिगरट, साबुन, शीशे का सामान भी बनाया जाता है और चमडा रगने और डिब्बा म फल भरने का धधा भी किया जाता है।

आवागमन के साधन—ईरान में आवागमन के साधनों की कमी के कारण बड़ी कठिनाई पड़ती है। यहाँ पर केवल एक ही रेल की लाइन है जो कैस्पियन तट को फारिस की खाड़ी के प्रदेशों से मिलाती है। यह रेलमार्ग तेहरान में को होकर जाती है। इस रेलमार्ग से द्वितीय महायुद्ध में रूस को माल भेजने में बड़ी सहायता मिली थी। तबरेज को काजवीन से और रूम को यज्द से मिलाने के लिये रेल की मार्गें बनाई जा रही हैं। तेहरान को पाकिस्तान सीमास्थित जाहिदान से मिलाने के लिये भी एक योजना विचाराधीन है। इस प्रकार भविष्य में ईरान से पाकिस्तान होकर भारत में आने का सीधा मार्ग हो जाने की पूरी सम्भावना है। ईरान में सड़क बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहाँ पर १५,००० मील लम्बी मोटर योग्य सड़कें हैं। भीतरी व्यापार इन्हीं सड़कों पर निर्भर है। यहाँ के वायु मार्ग सरकार के अधिकार में हैं और तेहरान, तबरेज, मशद और इस्फहान में उत्तम हवाई अड्डे बने हुए हैं।

ईरान से पेट्रोलियम, कालीन, गलीचे, सूखे फल, (मेवे) पशु, अफीम, ऊन, चावल और गोंद का निर्यात होता है। सूती वस्त्र, चीनी, चाय तथा मशीन बाहर से मंगाई जाती हैं। भारत ईरान से कालीन, रेशम, ऊन, गोंद, मेवे और पेट्रोल इत्यादि चीजें मंगाता है। ईरान भारत से चाय, चीनी, और कपड़ा मंगाता है।

व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह—**तेहरान**—यह नगर ऐल्बुर्ज पर्वत की तलहटी में स्थित है। यह देश शताब्दियों से ईरान का राजनैतिक केन्द्र रहा है। यहाँ की आबादी ६ लाख है। यह नगर कलापूर्ण बुनाई के कामों जैसे दरियों, गलीचों और साथ ही साथ मदिरा के लिये भी प्रसिद्ध रहा है।

शीराज—फारिस की खाड़ी से १२० मील पूर्व की ओर ४५०० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ की स्वादिष्ट मदिरा, गुलाब का अर्क और गुलाब का इत्र प्रसिद्ध है।

तबरेज—ईरान की उत्तर पश्चिमी सीमा पर स्थित है। इसकी ऊँचाई ४००० फीट तथा आबादी ३ लाख है। यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र है। इसके समीप की उपजाऊ भूमि में बड़ी मात्रा में अंगूर और फल उत्पन्न होते हैं।

बन्दर अब्बास तथा बुशहर—फारिस की खाड़ी पर प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं। यहाँ पर कुहरे और आँधी की बाधायें न होने से हवाई उड़ान के लिये आदर्श दशायें हैं। इन दोनों बन्दरगाहों द्वारा भारत और पाकिस्तान से महत्वपूर्ण व्यापार होता है।

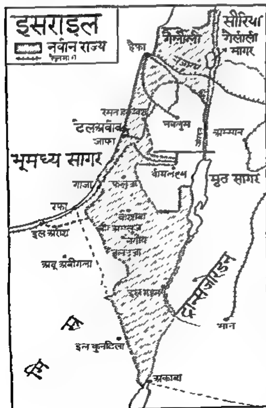
फिलस्तीन

देश की बनावट—यह देश पहले अंग्रेजों के अधिकार में था। इसका क्षेत्रफल ६,००० वर्गमील और आबादी १५ लाख है। फिलस्तीन का तटीय भाग पतला और उपजाऊ है और यहाँ पर भूमध्यसागरीय जलवायु रहती है। तटीय मैदान ही यहूदियों के नये उपनिवेशों का प्रधान केन्द्र है। इस देश के मध्यभाग में चूने की पहाड़ियाँ हैं और पूर्व की ओर जार्डन की धंसी हुई घाटी (Rift Valley) तथा मृत सागर

(Dead Sea) है।

उपज की वस्तुएं—यहां के निवासियों का प्रमुख धंधा खेती है और गेहूं, जौ, नारंगी, अंजीर और तम्बाकू यहां की प्रधान उपज की वस्तुएं हैं। फलों में यहां की सबसे मुख्य उपज की वस्तु नारंगी है और फिलस्तीन की प्रसिद्ध निर्यात की वस्तु भी। यहां पर अंगूरी शराब बनाने और खाने के लिए भी काफी अंगूर पैदा होते हैं जिनकी देश और विदेशों में काफी खपत होती है।

खनिज पदार्थ—खनिज पदार्थों का अभी तक यहां विकास नहीं हुआ। मृतसागर में पोटाश, ब्रोमाइन, मेगनेशियम और क्लोराइड का अनन्त भंडार भरा है। इनके अतिरिक्त फिलस्तीन में नमक, फासफेट्स, जिप्सम, मैंगनीज, तांबा, गंधक और खनिज तेल भी मिलता है।



चित्र नं० ७३

थोड़ी बहुत मछली भी पकड़ी जाती है परन्तु व्यापार नगण्य ही है चौपायें, भेड़, बकरियां, गधे, घोड़े और ऊंट भी पाले जाते हैं।

इसराइल

सामान्य परिचय—मई में इसका विभाजन हुआ और यहूदिया के लिए एक नए राज्य का निर्माण हुआ और इस ही का नाम इसरायल राज्य है। इसमें गैलिली से लेकर गाजा की नाक तक सारा तटीय भाग सम्मिलित है। इसका क्षेत्रफल ७००० वर्गमील है। इस देश की आबादी में अधिकतर यूरोपीय प्रवासी लोग, विशेषकर रूसी, जर्मन, आस्ट्रेलियन तथा स्पेन के निवासी शामिल हैं। इन लोगों ने देश के आर्थिक ढांचे को बिल्कुल ही बदल दिया है। इन्होंने यहां की प्राकृतिक

सम्पत्ति का विकास किया, खेती तथा औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि की और उत्पादन तथा वितरण के उन्नत साधनों की स्थापना की। अन्य पूर्वी देशों की भांति यहां के उद्योगधंधे सरकार के अधिकार में नहीं हैं परन्तु जनता की प्रेरणा और उत्साह से उन्नति कर रहे हैं।

नगर—यहां के प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों के नाम —जाफा, हैफा और तेल अवीव हैं।

हैफा—देश का प्राकृतिक द्वार है। यह बन्दरगाह और रेलों का केन्द्र भी है। साबुन बनाना यहां का मुख्य उद्योग है। यहां से साबुन, अनाज और फल मुख्यतः निर्यात किये जाते हैं।

ईराक

रचना, विस्तार, तथा आबादी—वर्तमान ईराक का राज्य प्रथम विश्वयुद्ध की सन्तान है। इसका पोषण ब्रिटिश अधिकारियों के प्रयत्नों और उदारता के फलस्वरूप हुआ। यह देश अरब और फारिस के पठारों के मध्य स्थित है। इसका क्षेत्रफल १,४५,००० वर्गमील है। इस देश का अधिकतर भाग मैदान है जिसमें फरात और दजला नाम की नदियां बहती हैं। ईराक का उत्तरी भाग सीरिया के मरुस्थल का ही भाग है। इस भाग में पानी की कमी है और यह भाग खेती के अनुकूल नहीं है। यहां की जनसंख्या ६० लाख के ऊपर है जिसमें ३० लाख अरबी मुसलमान शामिल हैं।

सिंचाई और खेती—ईराक के केवल ८ प्र. श. भाग पर खेती होती है। यहां के ८ प्र. श. में भी अधिक मनुष्यों का निर्वाह खेती द्वारा होता है। यहां की प्रमुख उपज खजूर, तम्बाकू, कपास और गेहूं हैं। दक्षिणी भाग में जोकि नदियों का मैदान है खेती होती है। यहां सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। इसमें फरात और दजला नदियां और उनसे निकली हुई अनेक नहरें और नालियां बहती हैं। इस मैदान के दक्षिणी भाग में सदैव बाढ़ का भय रहता है विशेषकर बसन्त ऋतु में जबकि कुर्दिस्तान और अनातूलिया के पर्वतों पर बर्फ पिघलता है। खजूर यहां की सर्वप्रधान उपज रही है। संसार की ८० प्र. श. खजूर यहीं होती है। खजूर अधिकतर बसरा-क्षेत्र में उत्पन्न होती है, डिब्बों में बन्द की जाती है और प्रायः यूरोप और संयुक्तराष्ट्र अमरीका को भेज दी जाती है। चीनी, चाय और कहवे के सिवाय अन्य सभी खाद्य पदार्थों के विचार से ईराक आत्मनिर्भर है।

खेती और उद्योग धंधों की कठिनाइयां—खेती के उन्नत तरीकों, सिंचाई के व्यापक साधनों, अधिक पूंजी और आवागमन की सुविधाओं के प्राप्त होने पर ईराक में कई गुणी अधिक जनसंख्या निर्वाह कर सकेगी। ईराक में उद्योग धंधों का भी अधिक विकास नहीं हुआ है। यहां पर कपड़ा बुनने, साबुन, वनस्पति घी, सिगरेट और सीमेंट बनाने के कारखाने हैं। कुशल मजदूरों की कमी और दूरस्थित देशों से मशीनों को मंगाने की कठिनाइयों के कारण यहां के उद्योगों धंधों का गला घुटा हुआ है।

खनिज पदार्थ (पेट्रोलियम)—खनिज तेल के अतिरिक्त यहां पर कोई खनिज वस्तु महत्वपूर्ण नहीं है। तेलक्षेत्र उत्तरपूर्वी भागों में स्थित है। यहां से भूमध्यसागर स्थित

हैफा और ट्रिपोली तक १२०० मील लम्बी नलो की एक लाइन जाती है। ईराक में प्रतिवर्ष ४० लाख टन से भी अधिक पैट्रोलियम निकलता है। ईराक पैट्रोलियम कम्पनी को बडी सुविधाए प्राप्त हे। इसका क्षेत्र ईराक, फिनस्तीन, ट्रामजोर्डन, सीरिया और लैबनान तक फैला हुआ है। इसकी बडी उन्नति हो रही है। १९४५ में किर्कुक तेल क्षेत्र से ४० लाख टन तेल प्राप्त हुआ था। यह तेल पम्पो द्वारा ट्रिपोली, लेबनान और हैफा भेज दिया जाता है। हैफा मे तेल को साफ करते है। ट्रिपोली म तेल शुद्ध नही किया जाता है।

ईराक पैट्रोलियम कम्पनी का विचार अपनी नलो की लाइनो को १६ इच व्यास के नलो द्वारा दुहरा करने का है जिससे उत्पादन बढ जायगा परन्तु स्टील के नल अभी मिल नही रहे है।

निर्यात तथा आयात—ईराक से निर्यात की प्रमुख वस्तुए अनाज, दाले और आटा, खजूर और घोडे है। यहा पर लोहे और स्टील की चीज, सूती वस्त्र, चीनी, चाय, रासायनिक पदार्थ रेशम की चीजें, खाले और चमडा बाहर मे मग।या जाता है।

बसरा, बगदाद, मोसल तथा किर्कुक व्यापारिक केन्द्र है।

अफगानिस्तान

सामान्य परिचय—कुछ समय पूर्व तक अफगानिस्तान में प्रवेश करना प्राय असम्भव समझा जाता था। यह देश पहाडी और बजर है। खेती केवल नदियो की घाटियो में सिचाई द्वारा की जाती है। गेहू, जौ और तम्बाकू यहा खेती की प्रमुख उपज है। यहा पर फल व्यापक रूप से उगाये जाते है और फलो का व्यापार होता है। अफगानिस्तान में कई प्रकार की खनिज वस्तुए मिलती है। मध्य अफगानिस्तान के पहाडो में लोहा और कोयला बडी मात्रा में पाये जाते है। यहा पर पशु मास और ऊन के लिए पाले जाते है। यातायात की असुविधा, पूजी के अभाव और जलवायु की कठोरता के कारण व्यापार और वाणिज्य में बडी बाधा पडती है। इस देश का अधिकतर व्यापार पाकिस्तान, ईरान और तुर्किस्तान आदि समीपस्थित देशो के साथ ही होता है। यहा से उन, फल और रेशम का निर्यात होता है। सूतीवस्त्र, धातुए, चमडा, हथियार और गोलाबारूद आयात की प्रमुख वस्तुए है।

काबुल, कन्धार तथा हिरात *यहा के मुख्य व्यापारिक केन्द्र है।*

अफगानी लोग बडे वीर और निर्भीक होते है। अतिथियो की रक्षा में अपने प्राण तक दे देते हैं। अब इस देश में व्यापार और उद्योगधधो की पर्याप्त उन्नति हो रही है।

अरब

विस्तार, प्राकृतिक दशा, व्यापार की स्थिति—अरब का देश अनेक स्वतन्त्र रियासतो में विभाजित है यद्यपि इसके कुछ भाग अग्रजो के सरक्षण में है। अरब का बहुत बडा भाग समुद्र से घिरा हुआ है और यहा से समुद्र में प्रवेश करने की बडी सुविधा है। अरब का क्षेत्रफल १२ लाख वर्गमील है और यहा की आबादी ६० लाख है। यह देश एक

मरुस्थल है इसमें कोई झील अथवा नाव्य नदी नहीं है। इसका अधिकतर भाग पहाड़ी है केवल समुद्र के समीप ही निम्न भूमियां हैं। अरबी घोड़े प्रसिद्ध होते हैं। समुद्र के समीप की निम्न भूमि में खेती होती है। यहां का प्रसिद्ध मोका कहवा यमन में उत्पन्न होता है। फारिस की खाड़ी से मोती निकाले जाते हैं। मरुस्थलीय जलवायु, यातायात की असुविधाएं और निवासियों के अस्थायी रहनसहन के ढंग के कारण देश के व्यापार में बड़ी बाधा पड़ती है। कहवा, खजूर, मोती और शुष्क फल (मेवे) निर्यात की वस्तुएं हैं और वस्त्र, अस्त्रशस्त्र, खानाबारूद, चीनी, तथा चावल आयात की वस्तुएं हैं।

मक्का, मदीना, जिद्दाह और मस्कत यहां के मुख्य नगर हैं।

अदन—अरब के दक्षिण पश्चिम में लालसागर के प्रवेश द्वार से १०० मील ऊपर की ओर एक अंग्रेजी उपनिवेश है। यह हवाई और समुद्री बेड़े के लिए महत्वपूर्ण सैनिक स्थान है।

एशियाई तुर्की अथवा अनातूलिया

सीमायें तथा विस्तार—इस देश का क्षेत्रफल २,९०,००० वर्गमील और आबादी १ करोड़ ५० लाख है। एशिया यूरुप अफ्रीका के मिलनस्थान के समीप स्थित होने से इस देश के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस देश के चारों ओर प्राकृतिक सीमायें हैं। इसके पश्चिम में ईजियन सागर, दक्षिण में भूमध्यसागर और ईराक और पूर्व में पहाड़ स्थित हैं। स्वेज मार्ग के खुलने से पूर्व यूरोप और एशिया के बीच आनेजाने वाले कारवां मार्ग पर तुर्की का अधिकार था। भारत और यूरोप के मध्य का रेलमार्ग भी तुर्की ही में होकर सम्भव हो सकता है।

औद्योगिक विकास की सम्भावना—परम्परागत रूढ़ियों की दासता, धार्मिक कट्टरता और लोहे और कोयले के अभाव के कारण इस देश के राजनैतिक और औद्योगिक विकास में बाधायें पड़ती रही हैं। स्वनामधन्य अनातुर्क की प्रगतिशील नीति के कारण अब इस देश की बहुमुखी उन्नति का सुयोग प्राप्त हुआ है।

भौगोलिक विभाग—भौगोलिक दृष्टिकोण से इस देश को तीन भागों में बांटा जा सकता है।—(अ) दक्षिणी तथा पश्चिमी तट के भूमध्यसागरीय प्रदेश (ब) उत्तरी तटीय प्रदेश तथा (स) मध्य के पठार जहां की जलवायु अत्यन्त विषम है।

खेती—यहां के लोगों का मुख्य धंधा खेती है और यहां के ७५ प्र० श० मनुष्यों का निर्वाह खेती से ही होता है। रसदार फल, जैतून, अंगूर और तम्बाकू की खेती भूमध्यसागरीय तट प्रदेशों पर होती है। गेहूं, जौ और कपास भी यहां पर उत्पन्न होते हैं।

पशु—यहां पर भेड़ों की संख्या १ करोड़ २० लाख के लगभग है। भेड़ों के ऊन से दरियां और गलीचे बनाये जाते हैं। बकरियों के बालों से मोहेर नाम का महीन वस्त्र बनाया जाता है।

खनिज पदार्थ—इस देश में अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं। कोयला, सीसा, तावा, क्रोमियम, बोरामाइट तथा एमरी (Emery) यहा पर पाये जाते हैं परन्तु खनिज पदार्थों का पूरा २ लाभ नहीं उठाया जाता है। ससार का एक छठा भाग क्रोमियम यही मिलता है। इसकी खानें समस्त एशिया माइनर तथा दक्षिण में भूमध्यसागरीय तट पर छिटकी हुई है। इस देश में अपार वनस्पति तथा पर्याप्त जलशक्ति भी है जिसका उपयोग नहीं किया जा रहा है। बड़े कारखानों की अपेक्षा घरेलू उद्योगधंधे ही अधिक महत्वपूर्ण हैं। यहा की बनी हुई प्रमुख वस्तुए दरी, कालीन, सिगरेट, चीनी, तथा सूती कपड़े हैं।

यातायात के साधन—इस देश में यातायात की सुविधाओ की कमी है। देशभर में कुल ५००० मील लम्बा रेल-मार्ग है। वर्तमान काल में यहा के वैदेशिक व्यापार में काफी उन्नति हो गई है। यहा से तम्बाकू, मुनक्का, ऊन तथा रुई का निर्यात और यहा पर लोहे और स्टील की वस्तुए, वस्त्र तथा चीनी का आयात होता है।

इस देश में बड़े २ नगरों की सख्या अधिक नहीं है। अंकारा, अनातूलिया के भीतरी भाग में स्थित है और राजधानी है। इस्मीर, अदाना, कोनिया तथा बुरसा अन्य बड़े नगर हैं।

प्रश्नावली

१ दक्षिणी पूर्वी एशिया में चावल के उत्पादन का वर्णन कीजिये।

२ जापान के लोगो के भोजन में दूध व गोश्त की अपेक्षा मछली का अधिक महत्व है। क्यो ? इसका पूरा विवरण दीजिये।

३ ईराक में खजूर का उत्पादन किन भौगोलिक व आर्थिक दशाओ के आधीन है ?

४ मीकाग नदी की घाटी का वर्णन कीजिये और उसका आर्थिक महत्व बतलाइये।

५ ईरान के विकास व उन्नति के भौगोलिक व आर्थिक कारण बतलाइये।

६ "चीन की खनिज सम्पत्ति तो बहुत है पर उसके उद्योगधन्धे की अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।" इसका क्या कारण है ?

७ जापान के महत्व और आर्थिक विकास में होकैडो और क्यूशू का क्या भाग रहा है ?

८ एशिया में टीन निकालने के व्यवसाय का महत्व बतलाइये।

९ "अरब में उन्नति व विकास की बडी सभावनायें हैं।" इस कथन से आप कहा तक सहमत हैं ? उदाहरण देते हुए समझाइये।

१० कोरिया को ३८° अक्षाश से दो भागों में बाटने के विचार से आप कहा तक सहमत हैं ? इस प्रकार के विभाजन का कोरिया के साधनो पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? सक्षेप में लिखिये।

११ ईरान या जावा का भौगोलिक विवरण दीजिये और हाल में हुए परिवर्तनो का विशेष रूप में हवाला दीजिये।

१२ जापान में रेशम के कीड़ों को पालने के व्यवसाय का वर्णन कीजिये।

१३ "चीन की कृषि बागवानी है न कि हमारी ऐसी खेती"। इस उक्ति पर अपने विचार प्रगट कीजिये और बतलाइये कि किन प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण ऐसा है?

१४ 'प्रमुख कच्चा माल प्राप्त न होने पर भी जापान एक प्रमुख औद्योगिक देश बन गया है।' इस उक्ति पर अपने विचार प्रगट कीजिये।

१५ "मंचूरिया की प्राकृतिक सम्पत्ति के कारण विभिन्न राष्ट्रों में बड़ी लाग-डाट रही है और इसी कारण इस का नाम 'सुदूरपूर्व का युद्ध क्षेत्र' पड़ गया है। इस कथन पर अपने विचार प्रगट कीजिये।

१६ निम्नलिखित का वर्णन कीजिये—

(अ) जापान का रेओन व्यवसाय।

(ब) चीन का रुई व्यवसाय।

१७ जापान की कृषि का वर्णन करिये।

१८ उत्तरी चीन के बड़े मैदान का भौगोलिक वर्णन करिये।

१९ चीन के प्राकृतिक साधनों व आर्थिक परिस्थितियों का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि इनके विकास की क्या सम्भावनाएं हैं।

२० दूसरे महायुद्ध से पहिले जापान के प्रमुख उद्योग धन्धे कौन २ से थे? वे कहां पर केन्द्रित थे? और विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल कहां से प्राप्त होता था?

२१ दूसरे महायुद्ध से पहले जापान के रेशम व्यवसाय व चीनी मिट्टी उद्योग की क्या दशा थी? यूरोप की स्पर्धा में इनकी क्या परिस्थिति थी?

२२ ह्वांगहो नदी के बहाव का क्षेत्र बतलाइये और बतलाइये कि इसका उत्तरी चीन के आर्थिक जीवन में क्या महत्त्व है?

२३ व्यापार में जापान ने इतनी उन्नति किस प्रकार की? अपनी भौगोलिक असुविधाओं का सामना करके उन पर विजय किस प्रकार पाई? उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिये।

२४ जापान की प्राकृतिक वनस्पति का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि देश के विभिन्न भागों में इसका उपयोग किस प्रकार होता है?

२५ चीन के जेचवान बेसिन का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि दूसरे महा-युद्ध में इसका विकास कैसे हुआ?

२६ चीन में कृषि के पिछड़े होने के क्या कारण हैं? भारतीय किसानों की अपेक्षा चीनी किसान किस मामले में आगे बढ़े हुए हैं? चीन की खेती को और अधिक समृद्धिशाली बनाने के तरीके बतलाइये।

२७ चीन में अकाल-ग्रस्त भाग कौन से हैं और वहां पर अकाल पड़ने के भौगो-लिक कारण क्या हैं?

२८ जगलो को काटने से आप क्या समझते है ? इससे जापान के आर्थिक जीवन पर क्या असर पड़ा है ? इसके प्रभावो को दूर करने के लिये क्या कुछ किया जा रहा है ?

२६ जापान के औद्योगीकरण का विवरण लिखिये और बतलाइये कि किस प्रकार भौगोलिक दशाओ के आधार पर उद्योग-धधो का स्थानीयकरण हुआ है ?

३० चीन में उद्योग-धधो के विकास का वर्णन कीजिये ।

३१ जापान को जलवायु सम्बन्धी विभागो में बाट कर प्रत्येक का वर्णन करिये ।

✓३२. चीन को प्राकृतिक भागो में बाटिये और किन्ही दो भागो का भौगोलिक विवरण दीजिये ।

३३ चीन में आर्थिक विकास व उन्नति की समावनाओ पर एक छोटा-सा लेख लिखिये ।

३४ एशिया महाद्वीप के साथ जापान के बढते हुए व्यापार का कारण बतलाइये ।

३५ जापान की प्रमुख उपज चावल, चाय, और कच्चा रेशम है। इन वस्तुओ के उत्पादन का वितरण बतलाइये और बतलाइये कि जापान में इन वस्तुओ की सफल खेती के लिये क्या कुछ किया गया है ?

३६ व्हागहो और यागटीसीक्याग घाटियो की खेती की उपज व मानव व्यवसायो मे इतना अन्तर होने का क्या कारण है ? विस्तार से उत्तर दीजिये ।

३७ चीन में जापान की तरह राजनैतिक व सामाजिक उथलपुथल न होने का क्या कारण है ? समझा कर लिखिये ।

३८ जापान का रेशम व्यवसाय किन भौगोलिक परिस्थितियो पर आधारित है ? जापान की ये भौगोलिक परिस्थितिया दक्षिणी यूरोप की दशाओ से किस प्रकार भिन्न है ?

३६ चीन की खनिज सम्पत्ति का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि इसके उपभोग के लिये कौनसी सुविधायें या बाधायें प्रकृति ने प्रस्तुत की है ?

४० जापान द्वीपसमूह की भौगोलिक दशाओ व परिस्थितियो का वहा के लोगो के व्यवसाय या उद्यम पर क्या असर पडा है ? विस्तार से उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिये ।

परिशिष्ट

कुछ परिभाषायें—(*British Association Glossary Committee* के आधार पर)

कृषि (*Agriculture*)—भूमि पर फसल उगाने की रीति व धंधे को कृषि कहते हैं। इसके अन्तर्गत पशुपालन भी सम्मिलित है।

कृषियोग्य भूमि (*Arable Land*)—खेती की वह सब भूमि जिसको फसल उगाने के लिये तैयार किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत जोते हुए खेत, उद्यान, अंगूर के बगीचे, थोडे समय के लिये छोडी हुई भूमि व घास के मैदान आदि आते हैं।

मिश्रित कृषि (*Mixed Farming*)—खेती की वह प्रणाली जिसमें फसलें उगाना और पशुओं का पालना समान रूप से महत्त्वपूर्ण होता है।

मिली जुली खेती (*Mixed Cultivation*)—मिली जुली खेती में एक ही खेत या भूमि के टुकडे में दो या अधिक फसलें उगाई जाती हैं। बहुधा वृक्षों और छोटे पौधो या जडदार फसलों को साथ साथ उगाया जाता है।

मध्यस्थ फसल (*Catch Crop*)—(१) वह फसल जो साल के उस छोटे से काल में भीतर तैयार की जाती है जब भूमि पर मुख्य फसलें नहीं होती। (२) छोटे छोटे पौधों या जडदार वस्तुओं की वह फसल जो वृक्षों या झाडियों की मुख्य फसल के पकने के पहले उगाई जाती है।

उद्यम (*Industry*)—(१) आर्थिक लाभ के लिये किया गया धन्धा। (२) साधारणतया इसका अर्थ केवल खाना का खोदना, शिल्प उद्योग और दस्तकारी होता है। ये धन्धे खेती, वाणिज्य और निजी नौकरी से भिन्न हैं।

उद्योग-धन्धे (*Industries*)—कुछ विशेष कार्य में संलग्न मिलें व फैक्टरी तथा मिलों का समूह।

प्राथमिक उद्यम (*Primary Industry*)—प्रकृति द्वारा दी हुई सामग्री को एकत्रित करने से सम्बन्ध रखने वाला उद्यम जैसे खेती करना, मछली मारना, लकडी काटना, शिकार करना व खान खोदना।

गौण उद्यम (*Secondary Industry*)—प्राथमिक उद्यम से उपलब्ध सामग्री से मनुष्योपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना जैसे शिल्प उद्योग, वस्तुनिर्माण और शक्ति उत्पादन।

व्यावसायिक उद्यम (*Pertiary Industry*)—प्राथमिक अथवा गौण उद्यम के आधार पर स्थित, परन्तु उन से भिन्न प्रकार के व्यवसाय जो प्राथमिक व गौण उद्यम के कार्य सचालन मे सहायता पहुँचाते हैं जैसे—यातायात, व्यापार, मुद्रा विनिमय, पूजी, सदेशवाहन, शासन, विभिन्न नौकरियाँ तथा वकालत, डाक्टरी आदि।

भारी उद्योग (*Heavy Industry*)—वे गौण उद्यम जिनमे भारी वस्तुओ का निर्माण होता है। इसके चार आधार हैं—(१) कच्चे माल का भारीपन, (२) निर्माणित वस्तु का गुरुत्व, (३) वस्तुओं के मूल्य व तोल का सम्बन्ध, (४) काम में लगे हुए मजदूरो में आदमियो की सख्या, (५) हयशक्ति की मात्रा।

छोटे-मोटे उद्योग (*Light Industry*)—वे गौण उद्यम जो भारी उद्योगो की श्रेणी म नही आते।

आधारभूत उद्योग (*Basic Industry*)—गौण उद्यम के वे भारी उद्योग जो राष्ट्रीय आर्थिक महत्त्व के होते हैं या जिनकी उत्पादित वस्तुओ का अन्य उद्योगो में उपयोग किया जाता है।

उद्योग की स्थिति (*Location of Industry*)—किसी देश की औद्योगिक क्रियाओ का भौगोलिक वितरण।

उद्योग का स्थानीयकरण (*Localization of Industry*)—किसी उद्योग या व्यापार का कुछ विशेष जिलो या प्रदेशो में केन्द्रित होना।

प्राकृतिक साधन (*Natural Resources*)—प्रकृति द्वारा दी गई वे वस्तुएँ व परिस्थितिया जिन्हे देश की आर्थिक उन्नति के लिये प्रयोग किया जा सकता है।

व्यापार सतुलन (*Balance of Trade*)—किसी देश के निर्यात व आयात के मूल्यो का परस्पर सम्बन्ध।

मण्डियां (*Markets*)—(१) बेनहम के अनुसार वे क्षेत्र जहा किसी वस्तु के उत्पादक व उपभोगी इस प्रकार फैले हो कि एक प्रदेश के मूल्य का दूसरे प्रदेश के मूल्य पर भी असर पडे। (२) साधारणतया वह प्रदेश जहा किसी वस्तु की उपभोगी जनता निवास करती है और फलत उस वस्तु की माग वहा अधिक होती है।

कच्चा माल (*Raw materials*)—वे सभी वस्तुएँ जिनसे एक विशेष उद्योग अथवा विभिन्न रीतियो द्वारा अन्य वस्तुओ का निर्माण या उत्पादन हो सके। कभी कभी इसके अन्तर्गत शक्ति उत्पादन के स्रोतो को भी ले लेते हैं पर यह ठीक नही।